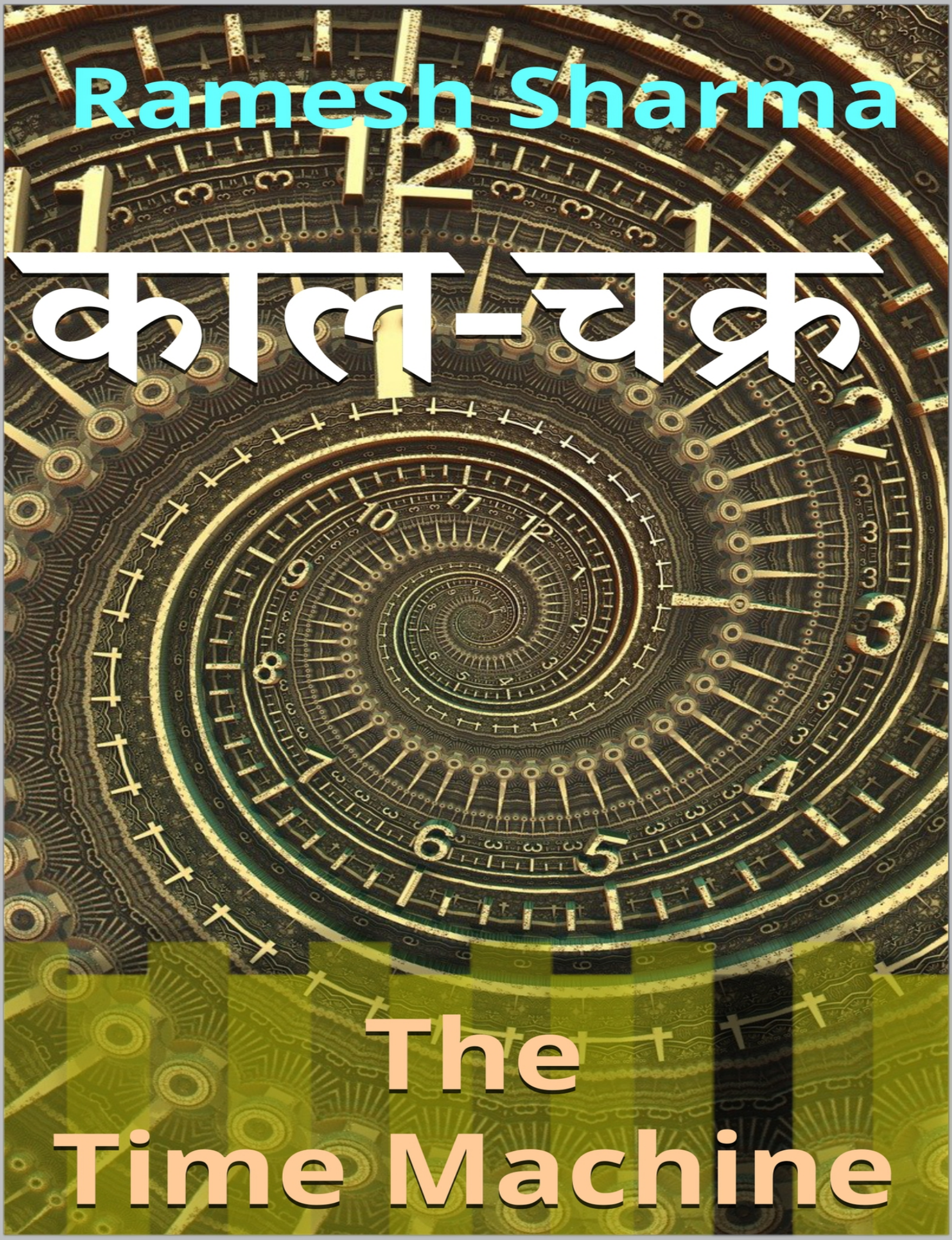

Ramesh Sharma

काल-चक्र

The Time Machine

काल- चक्र

The Time Machine

लेखक - रमेश शर्मा

इस उपन्यास में वर्णित सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं और पूरी तरह लेखक के दिमाग की उपज है। इनका किसी भी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। अगर ऐसा कुछ होता है, तो ये संयोग मात्र ही होगा और लेखक इसके लिए बिलकुल भी जिम्मेदार नहीं है।

=====

पुस्तक परिचय

काल चक्र - **THE TIME MACHINE**

ये कहानी है एक लड़की आभा अरोड़ा की, जो अपने मंगेतर की मौत के बाद दिल्ली जैसे शहर को छोड़ कर अपनी जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए वर्ष 2010 में देहरादून आती है। देहरादून में उसके साथ कुछ ऐसी घटनाएँ होती है जो उसकी समझ से बिल्कुल परे होती होती है। देहरादून में उसकी मुलाकात कुछ ऐसे लोगों से होती है, जिनका मानना था कि वो आभा से पहले भी देहरादून में ही मिल चुके है, जब कि आभा ने अपनी जिंदगी में पहली बार देहरादून में कदम रखा था।

कई जगहों को देख कर आभा को खुद ये अहसास होता है कि वो उन जगहों पर पहले भी आ चुकी थी। लेकिन किसी व्यक्ति को देख कर उसे ऐसा कोई आभास नहीं होता, जब तक कि वो महेश ओबेरॉय से नहीं मिलती। महेश ओबेरॉय को देख कर आभा को अजीब से अपने पन का अहसास होता है।

ये कहानी है फ़िज़िक्स के प्रोफ़ेसर महेश ओबेरॉय की, जिस की मंगेतर ज्योति सरीन की हत्या 1961 में उसी दिन हो जाती है, जिस दिन उन दोनों की शादी होने वाली होती है। लाख कोशिशों के बाद भी पुलिस ये पता नहीं लगा पाती कि ज्योति की हत्या आखिर किसने और क्यों की थी। ज्योति की हत्या एक रहस्य बन कर रह जाती है।

महेश ओबेरॉय ज्योति से दीवानगी की हद तक इतना प्यार करता है कि वो फिर से ज्योति से मिलने के लिए, उसकी जान बचाने के लिए एक टाइम मशीन का निर्माण करने में जुट जाता है।

ये कहानी है ज्योति सरीन नाम की लड़की की, जो महेश ओबेरॉय से बचपन से प्यार करती है। समय के साथ उनके प्यार को दोनों परिवारों की मंजूरी भी मिल जाती है। मगर ज्योति के भाग्य में सुख नहीं लिखा होता। महेश के साथ अपनी शादी के दिन ही उसकी रहस्यमय परिस्थितियों में मौत हो जाती है।

इस से अधिक यहाँ कुछ लिखना शायद इस अनोखी कहानी के साथ अन्याय होगा। जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ती जाएगी, धुंध छंटती जाएगी और कई रहस्यों से पर्दा उठेगा, जो आप को चौंका देगा।

देहरादून की पृष्ठभूमि में लिखा गया ये उपन्यास जो आप का परिचय कराएगा 1961 और 2010 - 11 के देहरादून से। अनोखे विषय पर लिखा गया ये एक अनोखा, तेज गति और दिलचस्प उपन्यास है जो शुरू से ले कर अंत तक आप को बांधे रखेगा। इसे पढ़ना शुरू करने के बाद आप इसे एक ही बैठक में पूरा पढ़ना चाहेंगे।

लेखक की कलम से

इस रचना बारे में मुझे अधिक कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। पुस्तक परिचय पहले ही दिया जा चुका है।

इस रचना के संदर्भ में बस इतना ही लिखना चाहूँगा कि मेरे लिए टाइम मशीन और टाइम ट्रैवल पर एक उपन्यास लिखना बिल्कुल भी आसान काम नहीं था। ये एक ऐसा विषय है जिसे गहन अध्ययन के बाद ही एक कहानी में पिरोना संभव हो पाया है।

इस विषय पर आप ने कई पुस्तकें पढ़ी होंगी, कई फ़िल्में भी देखी होंगी। मगर इस उपन्यास की कहानी उन सब से अलग, एक विशेष कहानी है। काल्पनिक होते हुए भी ये कहानी आप को वास्तविकता के बहुत करीब लगेगी।

मेरी हिंदी और अंग्रेजी में लिखी गई सभी पुस्तकों को मिला कर इस रचना का नंबर ग्यारहवां है। इस से पहले मेरी लिखी गई सभी दस रचनाओं को मेरे प्रबुद्ध पाठकों ने बहुत पसंद किया है।

मेरी हर पुस्तक बारे में मेरे पाठकों की मिली प्रतिक्रियाओं ने मुझे और अच्छा, और नया तथा और तेज रफ़्तार उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिलती है। मेरी नवीनतम रचना " काल- चक्र, **THE TIME MACHINE**" लिखने में मैं आप की नजरों में कितना कामयाब रहा हूँ, ये तो आप लोगों की प्रतिक्रिया मिलने पर ही पता चलेगा।

अपनी तरफ से मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ कि ये उपन्यास पढ़ कर आप को निराशा नहीं होगी। मुझे पूरी उम्मीद है कि ये उपन्यास आप की उम्मीदों पर पूरी तरह खरा उतरेगा।

मेरे नए पाठकों की सुविधा के लिए मेरे पूर्व प्रकाशित पुस्तकों की सूची इस प्रकार है:-

- वो आखिरी गोली
- पुराने पापी
- **Behind The Crimes**
- वो मैं नहीं
- **The Blackmailer**
- **Bad Company**
- नाकाम कोशिश
- दंगा
- साज़िश
- बे - नक़ाब

मेरी उपरोक्त सभी रचनाएँ AMAZON पर उपलब्ध है। मुझे आप की अमूल्य राय का इंतज़ार रहेगा।

लेखक - रमेश शर्मा

Email - rameshsharma606@yahoo.com

=====

काल- चक्र

The Time Machine

लेखक - रमेश शर्मा

ये कहानी शुरू होती है भारत के हरे भरे और सुन्दर पहाड़ियों से घिरे नगर देहरादून से।

वो दिन 25 मई 1961 का दिन था। देहरादून भारत के उत्तर में स्थित एक अर्ध विकसित नगर था। अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण वो सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र था। दिल्ली और हरिद्वार से देहरादून आने और वापस जाने के लिए दो लेन की रोड थी, जिसे हाइवे कहा जाता था।

देहरादून शहर से पहाड़ियों की तरफ जाने वाली एक सड़क का नाम पता नहीं क्यों, अमृतसर रोड़ था, जिसके रास्ते में एक प्राकृतिक झील पड़ती थी, जिसे बंधन झील कहा जाता था। बंधन झील पर 1939 में अंग्रेजों द्वारा एक लकड़ी का पुल बनाया गया था, जो अभी भी इस्तेमाल होता था।

बंधन झील अधिक गहरी तो नहीं थी, सिर्फ 25 फुट गहरी थी और गोलाई में ना हो कर लम्बाई में थी, इसी वजह से झील के उस पार जाने की सुविधा के लिए उस पुल का निर्माण करना जरूरी समझा गया था क्यों की झील लम्बाई में बनी थी।

झील के दोनों लम्बे किनारों पर छोटे छोटे कॉटेज बने हुए थे, जिन्हें केबिन कहा जाता था। अधिकतर केबिन देहरादून और उसके पड़ोसी, पर कदरन छोटे शहर राजनगर में रहने वालों के ही थे, जिन्होंने वहां ज़मीन खरीद कर वे कॉटेज बना लिए थे।

कुछ लोग तो वो केबिन बाहर से आये हुए सैलानियों को ठहरने के लिए, कुछ दिनों के लिए भाड़े पर देते थे और कुछ लोग उन केबिनों को छुट्टियाँ मनाने के लिए खुद ही इस्तेमाल करते थे और गर्मियों में झील में मछलियाँ पकड़ने का लुत्फ़ उठाते थे।

बंधन झील पर वो लकड़ी का पुल बनने के पहले झील के इस पार से उस पार जाना बहुत मुश्किल काम था क्यों की झील के बाकी दो किनारों पर पहाड़ियां और झरने थे। पहाड़ियां किसी दीवार की तरह सीधी थी, जिन पर चढ़ कर झील पार करना

लगभग असंभव था। दोनों तरफ से सड़कें आ कर झील के किनारे समाप्त हो जाती थी।

पुल बनने के बाद देहरादून और झील के उस पार बने एक कदरन छोटे शहर राज नगर आना जाना बहुत आसान हो गया था। पहले जहाँ पहाड़ियों का लम्बा चक्कर लगा कर आना जाना पड़ता था, अब पुल बनने के बाद वो रास्ता सीधा और आसान हो गया था।

अमृतसर रोड़ और बंधन झील पर पुल बनने के बाद उस पहाड़ी इलाके में जहाँ आवाजाही बहुत मुश्किल थी, वो आसान हो गई थी। इसी वजह से उस इलाके के सब से बड़े कारखाने, जनरल मोटर्स के निर्माण का काम 1936 में शुरू हुआ था, 1940 आते आते वो कारखाना शुरू भी हो चुका था।

देहरादून में उत्तर दिशा में वहां का प्रसिद्ध कॉलेज, देहरादून कॉलेज था जहां अंग्रेजी, इंजीनियरिंग, नर्सिंग, कला और विज्ञान की पढाई होती थी। उस कॉलेज की स्थापना 1930 में हुई थी।

देहरादून एक ऐसा शहर था जहाँ लोग आपस में घुलमिल कर बड़े प्यार से रहते थे और लोगों के बीच पारिवारिक रिश्ते थे।

सूरज होटल नाम की एक छोटी सी होटल जनरल मोटर्स के कारखाने के पास ही थी, जहाँ कारखाने में काम करने वाले लोग दिन भर की कड़ी मेहनत बाद शाम को घर जाने से पहले कुछ पीने के लिए, खास कर शराब पीने के लिए थोड़ी देर वहां बैठ जाया करते थे।

उस शाम सूरज होटल के एक केबिन में महेश ओबेरॉय अकेला बैठा था। महेश एक 27 वर्षीय खूबसूरत नौजवान था जिसके बाल काले और आँखें नीली थी। देखने में वो किसी फ़िल्मी हीरो से कम नहीं था और हमेशा ही सज धज कर रहता था। महेश ओबेरॉय देहरादून कॉलेज में फ़िज़िक्स का प्रोफ़ेसर था।

हमेशा खुश और तरोताजा रहने वाला महेश काफी उदास नजर आ रहा था। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और लगता था कि वो कई दिनों से ठीक से सो भी नहीं पाया था। उसने एक नजर टेबल पर पड़े समाचार पत्र 'देहरादून टाइम्स' पर डाली। अख़बार के पास ही चार खाली गिलास पड़े थे। मतलब वो तब तक चार पेग पी चुका था और पांचवां पेग उसके सामने था।

उसके पांचवें पेग के पास ही उसका सिगरेट का पैकेट और लाइटर रखा था। सामने एक एशट्रे पड़ी थी जिसमे पांच बुझी हुई सिगरेट के टुकड़े मसले पड़े थे। महेश ने अपना गिलास उठाया और एक घूँट भरा। गिलास नीचे रख कर वो उस अख़बार में छपी खबर पढ़ने लगा।

खबर का शीर्षक था,

“ एक स्थानीय लड़की की अपनी गाड़ी सहित बंधन झील में गिरने से मौत।”

खबर के साथ ही एक 27 साल की एक खूबसूरत लड़की की तस्वीर भी छपी थी। वो तस्वीर ज्योति सरीन की थी, जो महेश ओबेरॉय की मंगेतर थी। ज्योति के बाल हल्का भूरापन लिए हुए काले थे और वो नजर का चश्मा लगाए हुए थी। चश्मे के पीछे उसकी आँखें चमक रही थी और उसके होठों पर एक मन मोहक मुस्कान थी। वो बहुत खूबसूरत लड़की थी।

ज्योति की तस्वीर देखते देखते महेश की आँखों में आँसू छलछला आये। उसने अपने हाथ में पकड़ी सिगरेट एशट्रे में मसली और अपने आंसू पोंछे।

तभी एक हाथ में एक जलती हुई सिगरेट थामे, काले रंग का जैकेट, सफ़ेद शर्ट और दूसरे हाथ में अपना हैट थामे करण मल्होत्रा ने उस केबिन में प्रवेश किया जहाँ महेश अकेला बैठा था।

करण एक 27 साल का, बिलकुल भी सुन्दर नहीं दिखने वाला, मुहांसों चेहरे वाला आदमी था, जिस के सर बाल थोड़ा थोड़ा उड़ना शुरू हो चुके थे। करण महेश का बचपन का मित्र था। करण के चेहरे पर घाव के दो निशान थे। एक उसके ललाट पर और एक उसके गाल पर। उसके ललाट पर लगा घाव ताज़ा लग रहा था। करण एक पुलिस इंस्पेक्टर था।

करण ने वहां अकेले बैठ कर शराब पीते महेश को ध्यान से देखा और उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए बोला,

“तो आज के बाद तुम्हारा इरादा हमेशा यहाँ सूरज होटल में ही रहने का है क्या?” और एक आखिरी कश ले कर उसने अपनी सिगरेट टेबल पर रखे एशट्रे में बुझा दी।

“शायद।” अखबार पर अपनी नज़रें जमाये हुए महेश ने जवाब दिया।

“पहले तो तुम यहाँ बहुत कम आते थे? मेरे बुलाने पर भी नहीं आते थे?” करण बोला और तभी उसकी नजर अख़बार में छपी उस खबर पर पड़ी, जिसे महेश बार बार

पढ़ रहा था।

“आप के लिए क्या लाऊँ करण सर? आप का वही पसंदीदा या कुछ और?” वेटर ने केबिन के दरवाजे पर खड़े खड़े करण से पूछा।

“वही लाओ यार।” करण बोला और वेटर सर हिला कर चला गया। फिर वो महेश की तरफ मुड़ कर बोला,

“देखो महेश, मुझे पता है कि तुम्हें ज्योति की कमी बहुत खल रही है। मुझे भी उसकी कमी महसूस होती है। पर सच्चाई ये है कि वो हमें छोड़ कर जा चुकी है। तुम्हारे इस तरह दुःखी होने से और तुम्हारे इस तरह शराब पीने से वो वापस नहीं आ जाने वाली। तुम चिंता क्यों करते हो, मैं उसकी मौत की पूरी छानबीन करूँगा और सच का पता लगाऊंगा।”

लेकिन ऐसा कहीं से भी नहीं लगा कि उसकी बात का कोई असर महेश पर हुआ हो। वो चुपचाप बैठा रहा, और फिर उसने अपना हाथ टेबल पर रखे सिगरेट के पैकेट की तरफ बढ़ाया और उस में से एक सिगरेट निकाल कर अपने होठों से लगाई। अपने लाइटर से उसने सिगरेट जलाई।

“तुम ने ये सिगरेट कब से पीना शुरू कर दिया?”

महेश ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने इस तरह सिगरेट का कश लिया जैसे उसने करण की बात सुनी ही नहीं थी। तभी वेटर करण के ऑर्डर का ड्रिंक ले कर आया और उसने करण के सामने गिलास रखा।

“कौन हो सकता है वो जिसने ज्योति पर गोली चलाई और फिर उसकी कार बेकाबू हो कर ब्रिज की रेलिंग तोड़ती हुई नीचे झील में गिर गई? कार का पिछले हिस्सा पिचका हुआ था जैसे उसकी कार को किसी ने पीछे से टक्कर मारी थी। कौन करेगा ऐसा घिनौना काम? ज्योति की तो किसी से कोई दुश्मनी भी नहीं थी? सब उस से प्यार ही करते थे। वो मेरी जिंदगी थी, उसके साथ ही मेरा भी सब कुछ ख़तम हो गया।” महेश धीरे से बोला।

उसने अपना सर उठा कर करण की तरफ देखा, तो उसकी आँखों में आंसू भरे थे जो छलक कर उसके गालों पर बहने लगे थे।

“मैं जानता हूँ महेश, मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूँ महेश।” करण बोला और उसने अपने गिलास से एक घूँट भरा।

”और मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कि इतनी रात को वो कार ले कर वहां क्या करने गई थी? मुझे इसका कोई कारण समझ में नहीं आ रहा है। सुबह तो हमारी शादी होने वाली थी।”

“ये तो मुझे भी अभी तक पता नहीं चला है है महेश। मैं तो तुम्हारी बेचलर पार्टी ख़तम हो जाने के बाद रात भर तुम्हारे साथ तुम्हारे केबिन में ही था। ज्योति के घर पर भी तो उस रात पार्टी थी। मैं उसकी सभी सहेलियों से पूछताछ कर चुका हूँ। सभी ने बताया कि वे ज्योति को सही सलामत और खुश छोड़ कर अपने अपने घर गई थी। फिर ज्योति घर से क्यों निकली? क्या वो तुम्हारे पास आ रही थी? मगर क्यों? ये पहेली सुलझ नहीं रही है।” इसके साथ ही करण ने एक और घूँट लिया।

“वो डूब कर मर गई? वो तो पानी के पास जाने से ही घबराती थी।”

कारण सोच पूर्ण मुद्रा में अपना सर हिलाने लगा। अचानक महेश ने अपना सर उठाया और करण के ललाट पर लगे घाव की तरफ देखते हुए बोला,

“ये तुम्हारे माथे पर चोट कैसे लग गई?”

“बताया तो था, तुम्हारी पार्टी में अधिक शराब पी कर रात को बाथरूम जाते समय गिर गया था।” करण जल्दी से बोला।

अचानक ही करण कुछ चिंतित नजर आने लगा और कुछ सोचते हुए उसने फिर से एक घूँट भरा।

“देहरादून बहुत शांतिपूर्ण जगह है। इस तरह की घटना या अपराध का यहाँ होना आम बात नहीं है। मैंने अपनी अब तक जिंदगी में यहाँ किसी का खून हो जाना बहुत कम देखा और सुना है।” महेश बोला और उसने उत्तर की अपेक्षा में करण की तरफ देखा।

“महेश, जैसा कि मैंने कहा है, खूनी को पकड़ने के लिए मैं अपनी पूरी ताकत लगा दूँगा। मैं वादा करता हूँ कि ज्योति का हत्यारा जल्दी ही हमारी गिरफ़्त में होगा।” करण दृढ़ स्वर में बोला।

“धन्यवाद।” महेश ने कहा और उसने टेबल पर पड़े अख़बार को उल्टा रख दिया, जिसमे ज्योति की तस्वीर छपी थी।

करण ने ऐसा दर्शाया मानो उसने महेश को अखबार उल्टा करते हुए नहीं देखा था। वो चुपचाप बैठा सिगरेट के कश लगाते रहा। सिगरेट ख़तम होने के बाद उसने उसे

टेबल पर पड़े एशट्रे में बुझाया और अपने गिलास में बची हुई थोड़ी सी शराब का एक बड़ा घूँट भर कर गिलास खाली कर दिया।

फिर उसने इशारे से वेटर को बुलाया। वेटर तुरंत हाज़िर हुआ।

“मेरे ड्रिंक के साथ ही महेश के ड्रिंक भी मेरे खाते में लिख लो।”

“ठीक है सर।” वेटर ने कहा और सर झुका कर वापस चला गया।

“अच्छा होगा, अगर अब तुम भी घर जाओ। मैं नहीं चाहता कि तुम यहाँ बैठे पीते रहो और बाद में हमें किसी नाली में पड़े मिलो।” करण ने महेश से कहा।

महेश ने टेबल पर पड़ा अख़बार उठाया और खड़ा हो गया। दोनों साथ साथ चलते हुए होटल से बाहर आ गए। महेश अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ा तो करण बोला,

“मैं तुम्हारे पीछे पीछे आ रहा हूँ क्यों कि तुम ने बहुत पी रखी है। मैं चाहता हूँ कि तुम सकुशल अपने घर पहुँच जाओ।”

“मैं ठीक हूँ। तुम चिंता मत करो। इतना नशा नहीं हुआ है कि गाड़ी ठीक से ना चला पाऊँ। क्या तुम ने मुझे जरा भी लड़खड़ाते हुए देखा है?”

“मैं जानता हूँ कि तुम नशे में नहीं हो। अगर तुम नशे होते, और जरा भी लड़खड़ाते, तो मैं तुम्हें गाड़ी ही नहीं चलाने देता।” करण मुस्कराते हुए बोला। “मुझे कोई परेशानी नहीं है। मुझे भी उसी तरफ ही जाना है।” और करण अपनी गाड़ी में सवार हो गया, जो उसे पुलिस इंस्पेक्टर होने के नाते सरकार से मिली थी।

महेश बहुत अच्छी तरह से गाड़ी चला रहा था और करण उसके पीछे पीछे महेश के घर तक पहुंचा। महेश उतर कर अपने घर चला गया, मगर करण अपनी गाड़ी में ही बैठा रहा। स्टैरिंग पर रखे उसके हाथों में जरा सा कंपन हुआ और उसकी नज़रें उस सफ़ेद घर पर पड़ी, जो महेश के घर के लेफ्ट साइड में था। ये वो घर था, जहाँ ज्योति सरीन रहती थी।

करण ने अपनी जैकट की जेब से एक चपटा सा फ़्लास्क निकाला जो शराब रखने के काम आता है। फ़्लास्क खाली था। करण ने गाड़ी की सीट के नीचे हाथ डाला और वहां से एक शराब की बोतल निकाली। उसने उस में से एक बड़ा सा घूँट लिया और बोतल वापस अपनी जगह पर रखने की बजाय अपने हाथ में ही रखी। उसने कार स्टार्ट की, उसको बैक किया और वहां से रवाना हो गया।

करण गाड़ी चलाता हुआ अपने घर की तरफ जा रहा था। बीच बीच में वो बोतल से शराब के घूँट भर रहा था। वो थोड़ा चिंतित लग रहा था, और थोड़ा नर्वस भी। उस समय सड़क पर कोई भीड़ भाड़ नहीं थी और वो बिना किसी रुकावट के अपने घर की तरफ बढ़ता चला गया।

01

उपरोक्त घटना को 49 साल बीत चुके थे और उस दिन 4 मई 2010, मंगलवार का दिन था और जगह थी हरिद्वार। सुबह का समय था और वो एक बहुत खूबसूरत दिन था।

दिल्ली की नंबर प्लेट वाली एक कार हरिद्वार से निकली और देहरादून जाने वाले हाइवे पर दौड़ रही थी। हाइवे से सीधा देहरादून तक पहुँचने का रास्ता थोड़ा लम्बा था, पर देहरादून से चालीस किलोमीटर पहले एक पतली सड़क पड़ती थी जिसे अमृतसर रोड के नाम से जाना जाता था और देहरादून जाने के लिए वो एक शॉर्ट कट था। इस सड़क से देहरादून मात्र बाईस किलोमीटर की दूरी पर पड़ता था।

शाम होने में ज्यादा वक्त नहीं था जब वो कार अमृतसर रोड़ पर मुड़ी।

उस कार को 26 वर्षीय खूबसूरत लड़की, जिसका नाम आभा अरोड़ा था, चला रही थी।

आभा बहुत खूबसूरत युवती थी। लम्बा कद, कंधे तक आते घने काले बाल, बड़ी बड़ी खूबसूरत आँखें और उसने ऊपर के होंठ पर एक तिल था, जो उसकी ख़ूबसूरती में चार चाँद लगा रहा था। उसने कोई मेकअप नहीं किया हुआ था। उसे मेकअप करने की कोई जरूरत ही नहीं थी, क्यों कि अपने प्राकृतिक सौंदर्य की वजह से वो बिना मेकअप के ही बहुत खूबसूरत लगती थी।

कार में वो अकेली थी, उसके साथ कोई नहीं था और कार की पिछली सीट पर तीन बड़े बड़े कार्ड बोर्ड के बॉक्स, जो टेप लगा कर पैक किये गए थे, रखे थे। कार की डिक्की में भी वैसे ही दो और बॉक्स और एक बड़ा सूट-केस रखा हुआ था।

उन सभी पांच कार्ड बोर्ड के बॉक्स में उसका सामान था और सूट-केस में उसके कपड़े, जो दिल्ली में रहते हुए उसकी मालकियत थी।

जब उसकी कार अमृतसर रोड़ पर दौड़ रही थी, तब वो नजर आ रही खूबसूरत पहाड़ियों और पहाड़ी सड़क का आनंद लेने लगी। वो सोच रही थी कि दिल्ली जैसी

भीड़ भाड़ और रूखे शहर से देहरादून जैसे प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पहाड़ी इलाके में आना उसके लिए बहुत अच्छा रहेगा।

उसने कार में लगा रेडियो चालू किया और उसके साथ साथ गुनगुनाने लगी। कार चलाते हुए, बाहर नजर आ रहे प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के साथ साथ वो संगीत का भी लुत्फ़ उठाने लगी।

हाइवे से देहरादून की तरफ जाती अमृतसर रोड़ पर ड्राइव करती हुई वो बंधन झील पर कंक्रीट से बने चार लेन के पक्के पुल से थोड़ी ही दूर थी, तो उसे सड़क से झील के दोनों तरफ जाती एक एक पतली सड़क दिखाई दी। कंक्रीट का पुल झील के बीचों बीच बना था।

मैन रोड़ के दोनों तरफ जो पतली सड़कें थी, उन पर कुछ छोटे, तो कुछ बड़े कॉटेज बने हुए थे। पुल पर चढ़ने से पहले उसकी नजर पुल के दाहिनी तरफ लगे एक बड़े से बोर्ड पर पड़ी, जिस पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था, "बंधन झील पर आप का स्वागत है।"

उस बोर्ड पुल पर उसने अपनी गाड़ी की रफ़्तार थोड़ी धीमी की ताकि वो बंधन झील को ध्यान से देख सके। नीले पानी से भरी, लम्बाई में फैली बंधन झील बहुत आकर्षक लग रही थी।

बंधन झील पर बना पुल पार कर के वो फिर से सड़क पर आई, तो थोड़ी ही दूर पर उसने अपने दोनों तरफ फिर से वैसी ही पतली सड़कें देखी, जो उसने पुल पर चढ़ने से पहले देखी थी। उसे एक कच्चा रास्ता भी नजर आया जो बंधन झील के किनारे की तरफ जाता था। उसने अंदाजा लगाया कि वो कच्चा रास्ता शायद उन लोगों के लिए था, जो झील में तैरने का आनंद लेना चाहते थे।

उस पहाड़ी इलाके का अब तक का सफर बहुत सुखदाई रहा था और उस इलाके में आ कर उसे बहुत आनंद आया था। उसे पूरी उम्मीद हो गई थी कि यहाँ उसका मन अच्छे से लग जायेगा।

बंधन झील के बाद दस मिनट और ड्राइव करने के बाद वो देहरादून शहर के बहुत नज़दीक पहुँच चुकी थी। उसे शहर नजर आने लगा था।

जिस अमृतसर रोड़ पर आभा ड्राइव कर रही थी, वो सड़क आगे जा कर दाएँ मुड़ती थी और सीधी देहरादून शहर की तरफ जाती थी। सड़क के उस मोड़ से ठीक पहले एक रेस्टोरेंट था, जिस पर बड़ा सा बोर्ड लगा था, 'बंधन रेस्टोरेंट।'

रेस्टोरेंट खुला हुआ था और आभा को वो जगह खाने के लिए वो बहुत अच्छी लगी। उसे भूख भी लग रही थी और उसने सोचा कि क्यों ना वहां रुक कर कुछ खा लिया जाय।

उसने अपनी गाड़ी का रुख रेस्टोरेंट के बड़े से गेट की तरफ किया और वहीं गेट के पास ही, अंदर अपनी गाड़ी पार्क की। वो गाड़ी से बाहर आई और गाड़ी को लॉक किया। कुछ देर वहीँ खड़ी रह कर और थोड़ी सी चहलकदमी कर के उसने पैरों में जान लाने की कोशिश की जो इतनी देर तक बैठे रहने की वजह से कुछ थक से गए थे।

उसने अपने आसपास नजर दौड़ाई। वहां कुछ और गाड़ियाँ और दुपहिए वाहन भी पार्क थे। आभा ने अंदाजा लगाया कि कुछ लोग रेस्टोरेंट में जरूर मौजूद थे, पर ज्यादा अंदर भीड़ नहीं थी। काफी साफ़ सुथरा रेस्टोरेंट था वो।

धीरे धीरे चलते हुए वो रेस्टोरेंट के अंदर पहुंची। सही अंदाजा था उसका। वहां ज्यादा भीड़ नहीं थी। कुल जमा पंद्रह बीस लोग होंगे वहां जो खाने का आनंद लेने के साथ साथ ही बातें भी कर रहे थे। उनमे से अधिकतर जोड़े ही थे।

आभा सीधी वाशरूम की तरफ गई और उसने अपना मुंह धोया और उसके बाद वो एक खाली टेबल पर बैठ गई। उसने मेनू देखा और अपने लिए कुछ हल्का खाने का ऑर्डर दिया। जल्द ही उसका ऑर्डर सर्व हुआ। खाना स्वादिष्ट था।

खाना ख़तम कर के उसने पेमेंट किया और बाहर निकलते समय उसने रिसेप्शन पर रुक कर रहने के लिए किसी अच्छे और सस्ते होटल के बारे में पूछा। उसे पता चला कि एक किलोमीटर आगे, देहरादून शहर में प्रवेश करने से बिलकुल पहले 'हॉलिडे इन' नाम का एक अच्छा होटल था।

आभा ने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और शहर की ओर चल दी। उसे दूर से ही 'हॉलिडे इन' का बोर्ड नजर आ गया था। उसने गाड़ी हॉलिडे इन की पार्किंग में खड़ी की। गाड़ी से सामान निकालने के लिए तुरंत होटल की वर्दी पहने एक आदमी हाज़िर हुआ। आभा ने उसे अपना सूटकेस और सब कार्डबोर्ड बॉक्स निकालने का आदेश दिया।

आभा को लम्बे समय तक सस्ते दाम में रहने वाली होटल की स्कीम के अंतर्गत होटल की सब से ऊपर वाली मंजिल पर रूम मिला। वेटर उसका सूटकेस रूम में पहुंचा गया था।

होटल का कमरा साफ़ सुथरा, अच्छा खासा और काफी बड़ा था। कमरे के बीचों बीच बड़ा सा बेड था। बेड देखते ही आभा को अचानक थकान सी महसूस होने लगी। उसने कार से दिल्ली से देहरादून तक का सफर तय किया था। रास्ते में रात को वो हरिद्वार में ही रुकी थी।

उसने अपने आप को बेड पर गिरा दिया और अपने शरीर को ढीला छोड़ दिया। कुछ ही देर बाद वो गहरी नींद में थी और जब उसकी आँख खुली, तो बुधवार, 5 मई 2010 की सुबह थी। आभा ने घड़ी में समय देखा, सुबह के साढ़े आठ बजे थे।

वो काफी देर तक सोइ थी, मगर जब उठी, तो एकदम तरोताज़ा थी। वो बिस्तर से नीचे उतरी और बाथरूम की तरफ चल दी। आधे घंटे बाद जब वो बाथरूम से निकली तो नहा धो कर निकली थी और तैयार होने लगी। अगले पंद्रह मिनट में वो तैयार हो गई थी।

आभा रूम की खिड़की की तरफ गई और उसने खिड़की का पर्दा उठा कर बाहर झाँका। बाहर देहरादून शहर नजर आ रहा था। क्यों कि वो होटल की सब से ऊपरी मंजिल के कमरे में थी, इसलिए उसे दूर तक उस खूबसूरत शहर के दर्शन हुए।

‘बहुत खूबसूरत जगह है।’ उसने अपने आप से कहा और फिर से खिड़की पर पर्दा लगा दिया। वो पलटी और अपने सूटकेस के पास आई। सूटकेस से उसने एक काले रंग का चमड़ा मढ़ा फोल्डर और अपना पर्स निकाला और सूटकेस वापस बंद कर दिया। उसने टेबल पर से अपनी गाड़ी की चाबी उठाई और कमरे से बाहर आ गई।

पंद्रह मिनट बाद आभा देहरादून की एक पहाड़ी पर स्थित छोटे से, लेकिन एक प्रसिद्ध रेस्टोरेंट में बैठी अपना नाश्ता कर रही थी। ये रेस्टोरेंट एक पहाड़ी पर, बादलों के बहुत करीब नजर आने वाली जगह पर बना था।

खास बात ये थी कि इस रेस्टोरेंट को बनाने में पुराने ट्रेन के डिब्बों का इस्तेमाल किया गया था। बाहर से देखने से ऐसा लगता था मानो कोई ट्रेन खड़ी हो। ट्रेन के डिब्बे की बड़ी खिड़की से आभा को देहरादून की प्रसिद्ध और सब से पुरानी कॉलेज, देहरादून कॉलेज साफ़ दिखाई दे रही थी, जो वहां उसकी मंजिल थी।

उस कॉलेज को देखते हुए आभा को एक अजीब सी अनुभूति हुई जिसे वो समझ नहीं पाई और उसने अपना ध्यान नाश्ते में लगाया। उसे लग रहा था मानो वो उस कॉलेज से परिचित है, मगर उस दिन से पहले उसने उस कॉलेज को पहले कभी नहीं देखा था। वास्तव में वो देहरादून ही पहली बार आई थी।

करीब आधे घंटे बाद आभा उसी कॉलेज के विज्ञान विभाग में डॉक्टर ब्रह्मा के सामने बैठी हुई थी। डॉक्टर प्रताप ब्रह्मा करीब 82 साल के बुजुर्ग थे। उनकी आँखों पर पतली डंडियों वाला मोटे ग्लास का नजर का चश्मा था और दुबले पतले शरीर के मालिक डॉक्टर के बाल बर्फ की तरह सफ़ेद थे। हमेशा की तरह डॉक्टर ब्रह्मा ने भूरे रंग का कोट पहन रखा था, जिस की दोनों कोहनियों पर भूरे रंग के ही चमड़े के पैबंद लगा था।

आभा के सामने, अपनी जानी पहचानी चमड़ा मढ़ी कुर्सी पर बैठे डॉक्टर ब्रह्मा आभा का बायो डाटा ध्यान से पढ़ रहे थे। आभा का बायो डाटा और उसके एक एक प्रमाण-पत्र को डॉक्टर ब्रह्मा ने बड़े ध्यान से देखा और फिर आभा का फोल्डर टेबल पर रखा और आभा की ओर बड़ी खोजी नजरों से देखा।

आभा को डॉक्टर ब्रह्मा की नज़रें अपनी आँखों में गड़ती हुई सी महसूस हुई और वो मन ही मन भगवान से प्रार्थना करने लगी। डॉक्टर की आँखों में इतने सालों का अनुभव और बहुत तेज सा था।

“तुम्हारा बायो डाटा और तुम्हारे सर्टिफिकेट्स ने मुझे काफी प्रभावित किया है। लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है, वो ये कि तुम अपनी दिल्ली की नौकरी छोड़ कर यहाँ, देहरादून क्यों आना चाहती हो? दिल्ली बड़ा और विकसित शहर है और देहरादून तो उसके सामने गांव जैसा है। ठंड तो दिल्ली में भी काफी पड़ती है, मगर यहाँ देहरादून में तो बर्फ भी पड़ती है।” डॉक्टर ब्रह्मा ने सीधा सवाल किया।

डॉक्टर का सवाल जैसे आभा के दिल पर लगा और वो थोड़ी उदास हो गई। आभा ने एक लंबी सांस ली, अपने आप को संतुलित किया और जवाब दिया,

“बात ये है सर कि दिल्ली में पिछले साल मेरे मंगेतर का क़त्ल हो गया था। वो भी मेरे साथ उसी हॉस्पिटल में काम करता था। उसका क़त्ल होने के बाद से ही मेरा दिल दिल्ली से उचट गया था और तभी से मैं दिल्ली से दूर किसी दूसरी नौकरी की तलाश में थी। तभी मैंने यहाँ का विज्ञापन देखा और इस नौकरी के लिए ऑन लाइन अप्लाई कर दिया। पता नहीं क्यों, पर तभी से मैं यहाँ आने के लिए बेचैन थी।”

डॉक्टर ब्रह्मा को लगा जैसे आभा के शब्द उसके दिल निकल रहे थे। वो आभा से बहुत प्रभावित हुए।

“मुझे तुम्हारे तुम्हारे मंगेतर की असामयिक और दुःखद मौत पर अफ़सोस और दुःख है मिस आभा।” डॉक्टर ब्रह्मा ने कहा और फिर से आभा के बायो डाटा पर नजर डाली और उसे ध्यान से पढ़ा।

उन्होंने अपने सीधे हाथ की ऊँगली आभा के बायो डाटा पर एक जगह रखी और आभा की तरफ बहुत ध्यान से देखा।

आभा के दिल में हलचल सी मचने लगी थी, क्यों कि उसे पूरी उम्मीद थी कि उसे यहाँ नौकरी जरूर मिल जाएगी और उसी उम्मीद के भरोसे वो दिल्ली में अपनी अच्छी खासी नौकरी छोड़ कर यहाँ, इतनी दूर देहरादून आई थी।

“क्या तुम कभी देहरादून में पहले रह चुकी हो?”

“नहीं सर, मैं यहाँ पहली बार आई हूँ।”

“कितनी अजीब बात है। मुझे पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा है कि मैं तुम से पहले भी मिल चुका हूँ।” डॉक्टर ने शून्य में देखते हुए कहा।

“नहीं सर, हम पहले कभी नहीं मिले। मैं तो कल रात ही यहाँ पहली बार पहुंची हूँ।” आभा ने अपनी बात दोहराई।

लेकिन डॉक्टर ब्रह्मा की ये बात आभा को कुछ अजीब सी लगी। डॉक्टर ब्रह्मा जैसा विद्वान आदमी कोई बात ऐसे ही नहीं कह देता। आभा थोड़ी नर्वस सी हो गई और उसके ललाट पर हल्का सा पसीना छलक आया था।

डॉक्टर ब्रह्मा ने फिर एक बार उसके बायो डाटा पर नजर फिराई, नजर उठा कर एक बार आभा की तरफ देखा और फिर मुस्कुराते हुए बोले,

“मैं देहरादून कॉलेज में तुम्हारा स्वागत करता हूँ मिस आभा। अगर तुम चाहो तो यहाँ कल से ही काम करना शुरू कर दो तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मुझे भी तुम्हारी जैसी सहायक की यहाँ तुरंत जरूरत है। तुम से पहले जो लड़की मेरे पास काम करती थी, वो कुछ दिनों पहले ही नौकरी छोड़ कर जा चुकी है क्यों कि उसके पति का कहीं और ट्रांसफर हो गया है। इसीलिए हम ने अख़बार में विज्ञापन दिया था।”

“थैंक यू सर। मैं कल से ही काम पर आ जाउंगी।”

“इस पोस्ट के लिए बहुत सारी ऑनलाइन ऍप्लिकेशन्स आई थी। मगर तुम्हारी एप्लीकेशन ने मुझे बहुत प्रभावित किया था, इसलिए सिर्फ तुम्हें ही रूबरू इंटरव्यू के लिए बुलाया गया है।”

आभा एक बार फिर आँखों ही आँखों से एक बार फिर डॉक्टर ब्रह्मा का शुक्रिया अदा किया।

“ठीक है तो फिर। मेरी तरफ से नई नौकरी की बधाई कबूल करो।” कहते हुए डॉक्टर ने बैठे बैठे ही अपना हाथ आभा की तरफ बढ़ाया।

“थैंक यू सर कि आप ने मुझे अपने साथ काम करने का मौका दिया। मैं आप को कभी निराश नहीं करुँगी और कभी भी शिकायत का मौका नहीं दूंगी।” आभा ने खड़े हो कर डॉक्टर ब्रह्मा से हाथ मिलाते हुए कहा।

“आओ, मैं तुम्हें दरवाजे तक छोड़ दूँ।” कहते हुए डॉक्टर खड़े हुए और उन्होंने आभा का फोल्डर उसको सौंपा।

“आप तकलीफ़ मत करिये सर।”

“नहीं, कोई बात नहीं। मुझे अच्छा लगेगा।” डॉक्टर ने कहा और आभा के साथ चलते हुए अपने ऑफ़िस के दरवाजे तक आये।

अपने ऑफ़िस के दरवाजे पर आ कर डॉक्टर ब्रह्मा ठिठके और बोले,

“मेरे ख़याल से अभी तुम यहाँ हो तो तुम्हें हमारे मानव संसाधन डिपार्टमेंट में जा कर कुछ जरूरी फार्म भर कर औपचारिकता पूरी कर लेनी चाहिए ताकि कल तुम्हें वहां ना जाना पड़े और कल तुम सीधी अपनी सीट पर आ जाओ। अरे हाँ, तुम्हारी सीट मेरे ऑफ़िस के ठीक बगल वाले कमरे में है।” डॉक्टर ने अपने ऑफ़िस से बाहर आते हुए कमरे की तरफ इशारा कर के बताया।

आभा ने सहमति में सर हिलाया।

“हमारा कॉलेज काफी बड़ा है और बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ से दायीं तरफ जो तीसरी बिल्डिंग है, उसी में मानव संसाधन डिपार्टमेंट का ऑफ़िस है।” डॉक्टर ने इशारा कर के आभा को बिल्डिंग दिखाई। “मैं वहां फोन कर देता हूँ और मेल भी भेज देता हूँ कि ये नौकरी तुम को दे दी गई है।”

“धन्यवाद सर।”

“मैं यहाँ सुबह साढ़े सात बजे आ कर अपना काम शुरू कर देता हूँ।”

“मैं समय से पहले ही पहुंच जाउंगी सर।”

डॉक्टर ब्रह्मा से आभा ने फिर एक बार हाथ मिलाया और डॉक्टर की बताई हुई बिल्डिंग की तरफ बढ़ गई।

'मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि मैं जरूर इस से मिला हूँ और मैं इसको जानता हूँ?' अपने ऑफ़िस में अपनी कुर्सी की तरफ बढ़ते हुए डॉक्टर ब्रह्मा बड़बड़ाये।

उधर आभा टहलती हुई उस बिल्डिंग में पहुंची, जहां मानव संसाधन डिपार्टमेंट का ऑफ़िस था।

"क्या सहायता कर सकता हूँ मैं आप की? वहां एक डेस्क के पीछे बैठे हुए सफ़ेद बालों वाले, 76 वर्षीय मदन वालिया ने आभा से पूछा।

"मेरा नाम आभा अरोड़ा है। मुझे यहाँ डॉक्टर ब्रह्मा ने भेजा है। उन्होंने मुझे कहा है कि यहाँ मुझे कुछ कागजी कार्यवाही करनी होगी। मुझे उन्होंने नौकरी पर रखा है।" आभा ने संयत स्वर में अपना मकसद बताया।

"हाँ मिस आभा, उन्होंने अभी मुझे फोन किया है और ईमेल भी भेजी है।" मदन वालिया ने कहा और एक खाली टेबल की ओर संकेत करता हुआ बोला, "आप वहां बैठिये प्लीज।"

आभा बताई गई टेबल की तरफ बढ़ी और वहां कुर्सी पर बैठ गई। टेबल पर एक कम्प्यूटर और एक प्रिंटर रखा हुआ था। तभी मदन वालिया उसके पास पहुंचा। उसके हाथ में एक फोल्डर था। उसने आभा को वो फोल्डर देते हुए कहा,

"इस फोल्डर में इस कॉलेज की नियमावली और यहाँ आप को मिलने वाले सभी फ़ायदों की जानकारी है। आप ये कम्प्यूटर ऑन कीजिये। इसमें एक फोल्डर है 'नई नौकरी आवेदन', उस फोल्डर में आप को नौकरी के लिए एक फॉर्म मिलेगा और उसके साथ ही कुछ दूसरे फॉर्म मिलेंगे, जो आप को भरने हैं। सभी फार्म भरने के बाद आप उनका प्रिंट आउट लेकर, उन पर साइन कर के मुझे दे दीजिये।"

"थैंक यू।" आभा ने कंप्यूटर ऑन करते हुए और फिर मदन वालिया की तरफ देखते हुए कहा।

मदन वालिया ने पहली बार आभा के चेहरे की तरफ पहली बार ध्यान से देखा। पहले उसकी आँखें कुछ सिकुड़ी, जैसे वो कुछ याद करने की कोशिश कर रहा था और फिर उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई। आभा का ध्यान कम्प्यूटर पर था, इसलिए वो मदन वालिया के चेहरे पर हो रहे उस परिवर्तन को नहीं देख पाई।

मदन वालिया सोच में डूबा अपनी सीट की तरफ बढ़ गया और आभा ने कम्प्यूटर पर बताया हुआ फोल्डर खोला और उसमे मौजूद सभी फार्म को एक एक कर के पढ़ने लगी।

मदन वालिया अपनी सीट पर बैठा हुआ सोच रहा था कि उसने आज से पहले आभा को कब देखा था? उसे आभा का चेहरा कुछ जाना पहचाना सा लग रहा था। मगर वो कुछ याद नहीं कर पा रहा था।

आभा कम्प्यूटर के सामने बैठी थी और उसकी उँगलियाँ की बोर्ड पर चल रही थी। एक एक कर के वो फार्म भरती चली गई और करीब एक घंटे बाद वो सभी फॉर्मों का प्रिंट आउट ले कर, उन पर साइन कर के फिर से मदन वालिया की टेबल पर पहुंची।

मदन वालिया ने फिर से एक बार आभा का चेहरा ध्यान से देखा और फिर आभा के भरे हुए फार्म देखने लगा। उसके आधे घंटे बाद जब आभा वहां से निकली तो उसके गले में देहरादून कॉलेज की कर्मचारी होने का बैज लटका हुआ था। धीरे धीरे चलती हुई वो वहां पार्क की गई अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ने लगी।

ना जाने क्यों आभा को वो कॉलेज कैम्पस जाना पहचाना सा लग रहा था, जब कि वो वहां पहली बार आई थी। उसे याद आया कि नाश्ता करते हुए जब पहली बार उसने कॉलेज कैम्पस देखा था, तब भी उसे ये जाना पहचाना सा लगा था। फिर उसे याद आया डॉक्टर ब्रह्मा ने जो कहा था, 'क्या तुम कभी देहरादून में पहले रह चुकी हो', 'कितनी अजीब बात है। मुझे पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा है कि मैं तुम से पहले भी मिल चुका हूँ।'

उसे याद आया मदन वालिया का चेहरा। उसे याद आई उसकी आँखें, जो शायद उसे पहचानने की कोशिश कर रही थी, जैसे उसने भी आभा को पहले कहीं देखा था। यही सब सोचती हुई वो अपनी कार तक पहुंची। इतना तो वो समझ चुकी थी की यहाँ उसके साथ कुछ नया होने वाला है, जिसकी उम्मीद शायद किसी को भी नहीं थी।

उसने सभी विचार अपने दिमाग से झटक दिए और अपनी कार में सवार हो कर होटल हॉलिडे इन पहुंची, जहाँ वो ठहरी हुई थी। उसने होटल के रेस्टोरेंट में खाना खाया और फिर अपनी गाड़ी ले कर देहरादून शहर देखने निकल पड़ी।

देहरादून शहर की सड़कों पर घूमते हुए कई जगहों पर उसे लगा कि वो उन जगहों से परिचित है। शाम तक देहरादून की सड़कों पर घूमते हुए उसे शहर की सड़कों और इलाकों की कामचलाऊ जानकारी हो चुकी थी। रात का खाना उसने देहरादून बाजार में एक रेस्टोरेंट में खाया और जब वो वापस होटल लौटी तो रात के नौ बज चुके थे।

होटल के अपने कमरे में पहुँचते ही वो अपना लैप टॉप खोल कर बैठ गई और देहरादून में रहने के लिए घर तलाशने लग गई। घर ढूंढते ढूंढते उसकी नजर एक पुराने से, छोटे से, मगर एक खूबसूरत सफ़ेद कॉटेज पर पड़ी। उसको वो जगह पसंद आई।

उसने घड़ी पर निगाह डाली। रात के दस बज रहे थे। उसे जम्हाई सी आई। उसने अपने फोन में सुबह छह बजे का अलार्म लगाया और बिस्तर पर पड़ गई। कुछ ही देर बाद वो गहरी नींद में थी।

=====

02

सुबह जब अलार्म बजा तो आभा की नींद खुली, मगर उसकी आँखों में अभी भी नींद थी। वो थोड़ी देर और सोना चाहती थी, मगर उसकी मजबूरी थी कि साढ़े सात बजे उसे कॉलेज पहुंचना था और वो उसकी नौकरी का पहला दिन था।

बिस्तर से नीचे उतर कर उसने एक अंगड़ाई ली और बाथरूम की तरफ बढ़ गई। आधे घंटे बाद वो तैयार हो कर अपने रूम से निकली और नीचे नाश्ता करने के लिए आ गई। उसने हल्का नाश्ता किया और अपनी गाड़ी में बैठ कर कॉलेज के लिए रवाना हो गई।

हरे भरे इलाके के बीच बनी सड़क पर गाड़ी चलाते हुए वो कॉलेज पहुंची और उसने अपनी गाड़ी कॉलेज के कर्मचारियों के लिए आरक्षित पार्किंग में पार्क की और गाड़ी से उतर कर अपने ऑफ़िस की तरफ बढ़ी।

पिछले दिन की तरह, आज भी कॉलेज कैम्पस में आ कर उस को कुछ अजीब सा, कुछ अपना सा, कुछ जाना पहचाना सा अहसास हो रहा था। इसका कारण क्या था, वो समझ नहीं पाई। उसने सोचा कि उसे ये एहसास इसलिए हो रहा है कि प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर उस खुश-नुमा जगह पर अपनी मनपसंद नौकरी लग जाने की वजह से ऐसा हो रहा होगा।

अपने सर को झटक कर, मुस्कराते हुए आभा आगे बढ़ने लगी। साइंस डिपार्टमेंट बिल्डिंग के बड़े कांच के दरवाजे को पार कर के वो हॉल में पहुंची। बहुत सारे छात्र छात्राएं अपनी अपनी क्लासों की तरफ जा रहे थे।

उसके कमरे के बाद वाला कमरा डॉक्टर ब्रह्मा का ऑफ़िस था और वो उस कॉरिडोर में आखिरी कमरा था। डॉक्टर ब्रह्मा को अपने ऑफ़िस में जाने के लिए आभा के कमरे के सामने से गुजरना पड़ता। डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस का दरवाज़ा लकड़ी का था, जिसमे आप पार देखने के लिए कांच की एक छोटी सी खिड़की बनी हुई थी। दरवाजे के बाहर एक बहुत पुरानी सी लगने वाली तख्ती लगी थी, जिस पर बड़े बड़े काले अक्षरों में लिखा था, 'डॉक्टर प्रताप ब्रह्मा, डीन, साइंस डिपार्टमेंट।

उसने अपने ऑफ़िस के कमरे का दरवाज़ा खोला और अंदर प्रवेश किया। एक शानदार लकड़ी के टेबल पर खूबसूरत आईमैक कम्प्यूटर रखा हुआ था। 'बहुत सुन्दर' वो बड़बड़ाई और अपनी कुर्सी पर बैठ गई।

तभी दरवाज़ा खुला और अपने हाथ में कॉफी का कप लिए डॉक्टर ब्रह्मा ने अंदर प्रवेश किया।

"गुड मॉर्निंग सर।" अपनी सीट से खड़े हो कर आभा ने डॉक्टर ब्रह्मा का अभिवादन किया।

"गुड मॉर्निंग आभा। बैठो... बैठो। मुझे तुम्हें यहाँ सुबह सुबह देख कर ख़ुशी हो रही है।" डॉक्टर ने कहा और चहल कदमी करते हुए आभा की टेबल के पास पहुंचे।

"ऑफ़िस पसंद आया तुम्हें अपना?" उन्होंने आभा से सवाल किया।

"हाँ सर। बहुत सुन्दर है। और ये आईमैक कम्प्यूटर? मैं तो कब से इस पर काम करना चाहती थी।"

"मैं केवल इसी कम्प्यूटर को इस्तेमाल करना पसंद करता हूँ। अब मैं अपने ऑफ़िस में जा कर अपनी कॉफी का मज़ा लेता हूँ और उसके बाद अपनी ईमेल चेक कर के काम पर लग जाता हूँ।"

"यस सर।"

"मुझे सर मत कहा करो।" वो मुस्करा कर बोले, "मुझे डॉक्टर कहा करो। मुझे लगता है कि मैं अभी सर कहलाने जितना बूढा नहीं हुआ हूँ।"

"ठीक है डॉक्टर।" आभा ने भी मुस्करा कर जवाब दिया।

डॉक्टर ब्रह्मा पलटे और दरवाजे की ओर बढे। आभा कम्प्यूटर को स्टार्ट करने के लिए बिजली के स्विच के लिए इधर उधर देखने लगी मगर कन्सील्ड वायरिंग होने की वजह से उसे अंदाजा नहीं हुआ कि बटन किधर है।

“बटन तुम्हारी कुर्सी के पीछे नीचे की तरफ है।” बाहर से डॉक्टर की आवाज़ आई।

‘जीनियस।’ डॉक्टर ब्रह्मा के लिए उसके दिल से आवाज़ आई। आभा ने बटन ऑन कर के कंप्यूटर चालू किया। सबसे पहले वो अपने नए कम्प्यूटर के साथ परिचित हो जाना चाहती थी।

आभा कम्प्यूटर के फीचर्स, फाइल्स और फ़ोल्डर्स चेक करने लगी। कुछ देर बाद डॉक्टर ने उसे बुलाया, उसे उसका काम समझाया और आभा को कुछ पत्र टाइप करने के लिए दिए। अपने ऑफ़िस में आ कर आभा डॉक्टर का दिया काम करने लगी।

करीब एक घंटे बाद डॉक्टर फिर से उसके ऑफ़िस में आये। उनके हाथों में कुछ किताबें थी।

“मैं क्लास लेने जा रहा हूँ।”

“ठीक है डॉक्टर।”

“अरे हाँ, मैं तो पूछना ही भूल गया था। यहाँ तुम ठहरी कहाँ हो?”

“फिलहाल तो मैं होटल हॉलिडे इन में हूँ। लेकिन मैंने रात को इंटरनेट पर घर के लिए सर्च किया है। मुझे एक घर पसंद भी आया है। जल्दी ही मैं घर फ़ाइनल कर लूंगी।”

“ठीक है। फुर्सत में तुम यहाँ बैठ कर भी अपना ये काम कर सकती हो, और जरूरत पड़ने पर कुछ देर के लिए, घर देखने के लिए मुझे बता कर बाहर भी जा सकती हो।”

“थैंक्स डॉक्टर।”

और डॉक्टर अपने क्लास लेने के लिए निकल गए।

आभा ने अपना काम पूरा किया और पिछली रात को देखे गए घर की डिटेल खोल कर देखी।

उसे वो छोटा सा सफ़ेद घर बहुत पसंद आया था। उसने घर की फोटो को फिर ध्यान से देखा। सफ़ेद घर के बाहर काला दरवाज़ा बहुत सुन्दर लग रहा था। उसने एस्टेट एजेंट की डिटेल देखी और दिए गए नंबर पर फोन लगाया।

“होम रियलिटी। मैं संजय हसीजा।” दूसरी तरफ से जवाब आया। “क्या सेवा कर सकता हूँ मैं आप की?”

“मेरा नाम आभा है। आभा अरोड़ा। मुझे आप के लिस्ट किये हुए देहरादून स्ट्रीट के मकान नंबर 23 / 18 में रूचि है।”

“पुराना है, पर बहुत सुन्दर घर है वो मैडम। आप को जरूर पसंद आएगा। आप जब चाहें उसे देख सकती है।”

“मैं शाम के चार साढ़े चार बजे अपने काम से फ्री हो जाउंगी, उसके बाद?”

“चलेगा मैडम। वैसे कहाँ काम करती हैं आप?”

“मैं देहरादून कॉलेज के साइंस डिपार्टमेंट में हूँ।”

“बहुत अच्छी बात है मैडम। आप अपना काम ख़तम कर के मेरे ऑफ़िस में आ जाइएगा। मेरा ऑफ़िस उस घर के रास्ते में ही पड़ता है। मैं खुद आप को वहां ले चलूँगा।”

“ठीक है। मैं आती हूँ।” कह कर आभा ने लाइन काट दी।

लेकिन आभा को वो घर इतना पसंद आया था कि वो कई देर तक अपने कंप्यूटर पर उस घर को देखती रही।

शाम को पौने पांच बजे आभा होम रियलिटी के ऑफ़िस में पहुंची। संजय हसीजा की मर्सिडीज बेंज की पैसेंजर सीट पर बैठ कर वो उसके साथ देहरादून स्ट्रीट पहुंची। संजय हसीजा ने 23 / 18 के उस छोटे मगर सुन्दर घर के सामने अपनी गाड़ी रोकी। दोनों गाड़ी से उतरे।

“ये यहाँ के सब से पुराने इलाके में से एक है। 1920 में लोगों ने इस इलाके में घर बनाना और रहना शुरू किया था, इसलिए ये एक ऐतिहासिक इलाक़ा है। जैसा कि आप देख रही हैं, बहुत लोगों ने अपने पुराने घर तोड़ कर आधुनिक तरीके से नए घर बना लिए हैं, मगर अभी भी बहुत से घर जैसे के तैसे, पुरानी कारीगरी से बने हुए हैं और ये घर उनमे से एक है।”

उस घर की तरफ देखते हुए आभा को फिर वैसा ही आभास हुआ जैसा कॉलेज देख कर हुआ था। उसको वो घर अपना सा लगा।

“आइये।” अपनी जेब से चाबियाँ निकालता संजय हसीजा बोला।

आभा उसके पीछे पीछे आई। संजय ने काले रंग का बाहरी दरवाज़ा खोला और दोनों घर के छोटे से कम्पाउंड में पहुंचे। कम्पाउंड के पीछे घर का प्रवेश द्वार था। संजय ने ताला खोला और दोनों अंदर आ गए।

हॉल में आते ही आभा को फिर वही एहसास, वही अपनापन सा लगा। पता नहीं क्यों, उसे लग रहा था कि वो घर उसका जाना पहचाना था।

“जैसा कि आप देख रही हैं कि आज कल के घरों के मुकाबले हॉल थोड़ा छोटा है, मगर खूबसूरत है।”

“हाँ।” आभा ने जवाब तो दिया, मगर वो किसी और ही दुनिया में खोई हुई थी।

“आइये, मैं आप को किचन दिखाता हूँ।”

पूरा हॉल पार कर के वे दोनों किचन में आये।

“किचन में कुछ चीजें पुरानी जरूर है, पर सब अच्छी तरह से काम करती है।”

आभा ने इधर उधर देखा। उसकी नजर किचन की एक दीवार पर बने कांच के स्लाइडिंग दरवाजे पर पड़ी, जिसके दूसरी तरफ घर के पीछे की तरफ का लॉन था। उसने दरवाज़ा खोला और बाहर लॉन में कदम रखा। बाहर आकर आभा ने देखा कि लॉन में लंबी लंबी घास उगी हुई थी। स्वाभाविक भी था, बंद घर में घास की कटाई कौन करता?

आभा ने इधर उधर नज़रें फिराई तो उसकी नजर अपने पड़ोस के घर के पीछे के लॉन पर पड़ी। वहां एक गैरेज सा बना हुआ था जिसका दरवाज़ा बंद था। उस गैरेज को देख कर भी आभा को वही अजीब सा अहसास हुआ। तभी संजय उसके पास आता हुआ बोला,

“यहाँ कोई रहता नहीं है ना, इसलिए यहाँ इतने जंगली तरीके से घास उगी हुई है। अगर आप को बाग़वानी का शौक है तो ये आप के लिए बहुत अच्छी जगह साबित होगी।”

आभा बोली तो कुछ नहीं, पर उसने धीरे से अपना सर हिलाया। उसकी आँखें पड़ोस के गैरेज पर ही जमी हुई थी। तभी उस गैरेज का एक दरवाज़ा धीरे से, थोड़ा सा

खुला, इतना ही कि जिसमे से केवल एक ही व्यक्ति गुज़र सके।

गैरेज के अंदर से एक दुबला पतला सा, सफ़ेद और हलके बालों वाला कोई 75 / 76 साल का लगने वाला आदमी बाहर निकला। बाहर निकलते ही, सब से पहले मुड़ कर उसने गैरेज को ताला लगाया। उस बूढ़े आदमी को देख कर आभा का दिल जोर से धड़का।

“वो मिस्टर महेश ओबेरॉय है। इस इलाके के सबसे पुराने रह-वासियों में एक। ये यहाँ अकेले रहते हैं और किसी से ज्यादा बातचीत नहीं करते हैं। पर बहुत अच्छे इंसान है।” संजय हसीजा ने बताया।

महेश ओबेरॉय ओबेरॉय जैसे ही अपने गैरेज पर ताला लगा कर पलटा, उसकी नजर आभा पर पड़ी। आभा ने साफ़ साफ़ उसको हल्का सा लड़खड़ाते हुए सा देखा मानो उसने कोई अनहोनी देख ली हो। महेश बिना पलकें झपकाए आभा की तरफ देखता रहा और आभा ने उन बूढ़ी आँखों में एक अनोखी चमक देखी।

“चलिए मैं आप को बाकी का घर दिखा दूँ।” ख़यालों में खोई आभा का ध्यान संजय की आवाज़ ने भंग किया।

आभा पलटी और वापस संजय के पीछे किचन की तरफ बढ़ी। उसने दो बार पलट कर देखा, महेश ओबेरॉय बुत बना एक टक उसी की ओर देख रहा था। आभा किचन में आ गई। संजय ने किचन की दूसरी ओर बने एक दरवाजे को खोला और बोला,

“ये दरवाज़ा सीधे गैरेज में खुलता है। आप इस दरवाजे से सीधा अपनी गाड़ी तक पहुँच सकती है और गाड़ी से उतर के सीधे घर में।”

आभा ने झांक कर देखा। गैरेज अच्छा खासा और साफ़ सुथरा था। वे लोग वापस हॉल में आ गये। हॉल के एक कोने में एक बाथरूम बना हुआ था। आभा ने दरवाज़ा खोल कर देखा। बाथरूम कोई आधुनिक तो नहीं था, पर बड़ा और साफ़ सुथरा था। वहां एक बाथ टब भी था। आभा का मन किया कि वो तुरंत बाथ टब में लेट कर नहाये।

बाथरूम के बिल्कुल पास एक बेडरूम था।

“ये मास्टर बेडरूम है।” संजय ने बताया।

आभा ने बेडरूम में कदम रखा और तुरंत उसका दिल जोर से धड़का। बेडरूम में सामने की तरफ दो खिड़कियां थी। आभा खिड़की तक गई और उसने बाहर झाँका। खिड़कियां घर के पीछे के लॉन में खुलती थी। आभा ने महेश ओबेरॉय के घर की तरफ देखा। उसे उसका गैरेज तो नजर आया, पर महेश कहीं नजर नहीं आया।

बेडरूम की एक पूरी दीवार पर फर्श से ले कर छत तक लकड़ी की वार्डरोब बनी हुई थी।

"चलिए अब मैं आप को दूसरा बेडरूम भी दिखा दूँ।" संजय बोला।

हॉल के दूसरे सिरे पर एक और बेडरूम था। वो बेडरूम मास्टर बेडरूम की तुलना में कुछ छोटा था, पर मास्टर बेडरूम की तरह उन दोनों में बाहर खुलने वाली खिड़कियां थी और लकड़ी के वार्डरोब बने हुए थे। आभा को उस घर में अपने पन की खुशबू सी आती प्रतीत हुई।

दोनों फिर से हॉल में आ गए।

"कैसा लगा आप को ये घर?" संजय ने सवाल किया।

"घर अच्छा है। पहले आप बताइये कि इस घर का मालिक इस घर को बेचना चाहता है या किराये पर देना चाहता है?"

"उसका पहला विचार तो इस घर को बेचना ही है।"

"इतना अच्छा घर वो बेचना क्यों चाहते हैं?"

"इस घर का मालिक यहाँ पर सब से बड़े प्लांट जनरल मोटर में अच्छे पद पर काम करता था। अब उसका ट्रांसफर अमेरिका में हो गया है।"

"इस घर के वर्तमान मालिक से पहले इस घर का मालिक कौन था? क्या इस घर में किसी की मौत हुई थी?" अचानक आभा ने अजीब सा सवाल किया।

वो खुद नहीं समझ पा रही थी कि उसने वो सवाल क्यों किया?

संजय ने चौंक कर आभा की तरफ देखा। उसे भी आभा से इस प्रकार के किसी सवाल की कोई उम्मीद नहीं थी। जवाब देने से पहले वो थोड़ा हिचकिचाया और खंकार कर उसने अपना गला साफ़ किया।

"मैंने सुना है कि पहले इस घर में रहने वाली एक जवान लड़की की मौत हुई थी। ये शायद 1961 की बात है। मगर उसकी मौत इस घर के अंदर नहीं हुई थी। उसकी

मृत्यु तो एक कार एक्सीडेंट में हुई थी।" संजय ने धीरे से बताया। "मगर आप को ये अंदाजा कैसे हुआ कि यहाँ किसी की मौत हुई थी?"

"मुझे खुद पता नहीं कि ये सवाल मेरे दिमाग में कैसे आया।" आभा ने भी धीरे से जवाब दिया।

संजय ने राहत की एक लंबी सांस ली। आभा को लगा जैसे उसके अंदर से कोई कह रहा हो कि 'ये तुम्हारा ही घर है आभा, ले लो इसे।'

"ओके, मैं खरीद रही हूँ ये घर।" आभा ने अपने दिल की आवाज़ सुनते हुए कहा।"

संजय हसीजा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वो तो ये सोच रहा था कि इस घर की लड़की की मौत के बारे में सुन कर शायद वो इस घर को ना ले।

"बहुत जल्दी फैसला ले लिया आप ने?" वो पूछे बिना नहीं रह सका।

"हाँ, मुझे भी यही लगता है। लेकिन मुझे यहाँ आ कर एक अजीब सा सुकून महसूस हो रहा है और मेरे दिल ने कहा कि मुझे ये घर ले लेना चाहिए।"

"ये तो बहुत अच्छी बात है। आप जैसा क्लाइंट बहुत कम मिलता है। वरना तो घर खरीदने वाले इतने घर देख देख कर परेशान करते हैं कि पूछिए मत।"

आभा मुस्कुरा कर रह गई।

"अगर अभी आप को समय हो तो ऑफ़िस चल कर कुछ कागजी खानापूर्ति कर लें?"

"आप के ऑफ़िस तो जाना ही है, मेरी कार जो वहां खड़ी है। आप कागजी खाना पूर्ति भी कर लें और मैं आप को कुछ एडवांस भी दे देती हूँ।"

"आप घर खरीदने के लिए किसी बैंक में लोन अप्लाई करना चाहें तो उसमें भी मैं आप की सहायता कर सकता हूँ।"

"हाँ, थोड़ा लोन तो लेना पड़ेगा, हालाँकि मैं अपना खुद का घर खरीदने के लिए पिछले पांच सालों से पैसे जमा कर रही हूँ।"

घर से बाहर आते हुए आभा अपने आप को बहुत खुश महसूस कर रही थी।

=====

03

दो सप्ताह बीत गए और वो दिन था गुरुवार, 20 मई 2010 का।

ये वो दिन था, जब आभा के नए घर के लिए उसका लोन पास हो गया था और उसे अपने घर की चाबी मिल गई थी। अपने पहले और नए घर की चाबी ले कर आभा संजय हसीजा के ऑफ़िस से निकली तो वो बहुत खुश थी। जब वो वापस कॉलेज पहुंची, तब तक लंच टाइम हो चुका था। वो सीधे डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में पहुंची।

"हो गया काम? चाबी मिल गई तुम्हें अपने नए घर की?"

"हाँ डॉक्टर। फाइनली अब मेरा अपना घर है।"

"बधाई हो। अपना खुद का घर बहुत बहुत मुबारक।"

"धन्यवाद डॉक्टर।" आभा बहुत खुश थी।

"तुम्हारे घर में दो बेडरूम है ना?"

"हाँ, डॉक्टर।"

"और वहां तुम अकेली रहोगी। तुम एक काम क्यों नहीं करती। एक महिला तलाश कर के उसको दूसरा बेडरूम किराये पर क्यों नहीं दे देती। तुम्हारा मन लगा रहेगा, अकेलापन महसूस नहीं होगा और सब से बड़ी बात कि तुम्हारा लोन री-पेमेंट का भार भी हल्का हो जायेगा।"

"बहुत अच्छी राय दी है डॉक्टर आप ने।"

"तो देर किस बात की है, यहाँ नोटिस बोर्ड पर लगाने लिए 'महिला रूममेट की जरूरत है' की सूचना टाइप कर के लगा दो। ये नोटिस लगाने के लिए मैं तुम्हारे लिए अभी मैनेजमेंट से परमिशन ले लेता हूँ।"

डॉक्टर की राय के अनुसार उसने नोटिस बोर्ड पर वो सूचना लगा दी। अब उसे इंतज़ार था किसी महिला का, जिस को रहने के लिए जगह की आवश्यकता थी।

शाम के समय आभा अपना उस दिन का काम पूरा कर के कॉलेज से होटल हॉलिडे इन के लिए निकली। वो आज ही होटल से अपने नए घर में शिफ्ट हो जाना चाहती थी। उधर, लगभग उसी समय महेश ओबेरॉय अपने घर से निकला और अपनी एम्पाला में बैठ कर बंधन झील पर बने पुल की तरफ रवाना हुआ।

पुल पर पहुँच कर महेश ने एक जगह गाड़ी रोकी और नीचे उतरा। उसके हाथ में कुछ पीले गुलाब थे। वो रेलिंग के पास पहुंचा और उसने नीचे पानी में देखा जैसे वहां कोई हो। उसने पीले गुलाब पानी में फेंके।

“तुम्हारे मनपसंद पीले गुलाब ज्योति। तुम्हारी बहुत याद आती है ज्योति। लेकिन मैं तुम को यकीन दिलाता हूँ कि तुम्हारे साथ रहने का मेरा सपना जल्दी ही पूरा होगा।” ये कहते कहते उसकी आंखों में आंसू छलक आये।

वो काफी देर वहां खड़ा नीचे पानी में देखता रहा मानो उसको पानी के अंदर ज्योति दिख रही हो। फिर वो वापस अपनी गाड़ी में बैठा और घर की तरफ चल दिया।

उधर आभा अपने होटल पहुंची और होटल का हिसाब करने के बाद अपना पूरा सामान अपनी गाड़ी में भर कर अपने नए घर की तरफ रवाना हो गई। जब वो यहाँ देहरादून आई थी, तब उसके पास पांच बॉक्स और एक सूटकेस ही था। मगर नया घर फ़ाइनल करने के बाद उसने और भी बहुत कुछ खरीद कर रख लिया था।

उसकी गाड़ी की पूरी पिछली सीट ऊपर तक और पूरी डिक्की उसके सामान से भरी हुई थी। आभा ने अपने नए घर के सामने अपनी गाड़ी रोकी। गाड़ी से उतर कर उसने कम्पाउंड गेट खोला और गाड़ी कम्पाउंड में ला कर खड़ी की।

गाड़ी बंद कर के वो नीचे उतरी और घर के दरवाजे का ताला खोला। तभी आभा ने देखा कि महेश ओबेरॉय अपनी गाड़ी सहित अपने घर के कम्पाउंड में प्रवेश कर रहा है।

आभा ने एक एक कर के अपना सामान गाड़ी से निकाल कर घर में रखना शुरू किया।

महेश ओबेरॉय अपने गाड़ी से उतरा और उसने देखा कि उसके पड़ोस में वही लड़की रहने आई है, जिसको उसने पंद्रह दिन पहले उस घर में देखा था। अकेली लड़की घर का सामान उठा कर अंदर ले जा रही थी। लड़की की गाड़ी में रखे दो बड़े बड़े कार्ड बोर्ड के बॉक्स को देख कर, लड़की की सहायता करने की नीयत से वो अपने घर के अंदर ना जा कर पड़ोस के घर की तरफ बढ़ा।

उस दिन भी, जब उसने उस लड़की को पहली बार देखा था, तो उसे अजीब सी अनुभूति हुई थी, और आज भी वैसा ही महसूस हो रहा था। जब वो आभा की कार के पास पहुंचा तो आभा एक छोटा बॉक्स उठा कर घर के अंदर गई थी। महेश वहीँ, कार के पास खड़े हो कर आभा के वापस आने का इंतज़ार करने लगा।

आभा जब वो बॉक्स रख कर वापस बाहर आई, तो महेश को अपनी कार के पास खड़े देख कर चौंकी।

“मैं आप का पड़ोसी महेश ओबेरॉय। मैंने आप को गाड़ी से सामान उतारते हुए देखा, तो आप की सहायता के लिए यहाँ चला आया।”

“मेरा नाम आभा अरोड़ा है।” आभा ने आगे बढ़ कर महेश से हाथ मिलाया।

ये वो लम्हा था जब दोनों ही एक साथ अजीब सा अनुभव कर रहे थे।

“क्या हम पहले मिल चुके हैं, आप मुझे जानी पहचानी सी लग रही है।”

“नहीं। मुझे देहरादून आये हुए सिर्फ पंद्रह दिन ही हुए है। मुझे यकीन है कि हम पहले कभी नहीं मिले। लेकिन ना जाने क्यों, मुझे भी आप जाने पहचाने से लग रहे हैं।”

“मैं बड़े वाले बॉक्स उठाने में आप की मदद कर दूँ?”

आभा ने एक बार महेश के दुबले पतले और बूढ़े शरीर की तरफ देखा और फिर बोली,

“ये काफी भारी है।”

“मैं भी भले ही थोड़ा बूढ़ा हो चुका हूँ, मगर यकीन करो, अब भी काफी मजबूत हूँ।”

और इसके साथ ही दोनों एक साथ हंस पड़े। महेश और आभा ने मिल कर दोनों भारी बॉक्स घर के अंदर पहुँचाए। आभा ने पूरा सामन हॉल में ही रखा था।

“आप बहुत अच्छे आदमी है। पहचान करने के लिए मैं आप की पत्नी से भी मिलना पसंद करुँगी।” आभा ने कहा।

“ये संभव नहीं है। मेरी शादी नहीं हुई है। हालाँकि होने वाली थी, मगर नहीं हुई। पर ये बहुत पुरानी बात है।” कहते हुए महेश के चेहरे पर पीड़ा के भाव आये।

“मुझे अफ़सोस है।” आभा ने कहा और महेश का हाथ दबा कर अपना अफ़सोस जाहिर किया।

महेश को अपने हाथ पर आभा का हाथ महसूस कर के बहुत सुकून मिला।

“जिंदगी में हमेशा ही वो नहीं मिलता, जिसकी उम्मीद हम जिंदगी से करते हैं।”

“सही कह रहे हैं आप। खैर, महेश जी, मैं आप को कुछ ठंडा गरम जरूर पूछती, लेकिन आज ऐसा कोई इंतज़ाम मेरे पास है नहीं।”

“तुम मेरे घर क्यों नहीं चलती? लॉन में बैठ कर कुछ देर हम बातें भी कर लेंगे।”

“जरूर, क्यों नहीं।” आभा ने तुरंत जवाब दिया।

उसे एक पल के लिए भी उस अजनबी बूढ़े के साथ बैठ कर बातें करने में डर का कोई अहसास नहीं हुआ।

“ये हुई ना बात।” महेश आभा की बात सुनकर बहुत खुश हुआ। “अब जब हमारी दोस्ती हो ही चुकी है, तो मैं आप को एक राज की बात बताता हूँ।” वो नाटकीय स्वर में बोला।

“वो क्या?”

“वो ये कि तुम्हारे घर से मेरे घर में और मेरे घर से तुम्हारे घर आने जाने के लिए हमें हमारे घर के मुख्य द्वार का उपयोग करने की जरूरत नहीं।”

“ऐसा?”

“हाँ, तुम्हारे और मेरे दोनों घरों के पीछे के लॉन के अंत में एक छोटा सा दरवाज़ा बना हुआ है। दोनों घरों के बीच शुरू से भी बहुत अच्छे संबंध थे।” कहते हुए महेश की आँखें चमकने सी लगी।

“ऐसी बात है फिर चलिए सर, फिर से अच्छे संबंधों की शुरुआत करते हैं।” आभा मुस्करा कर बोली।

“चलो, लेकिन मुझे सर नहीं, महेश कहो। जब कोई मुझे सर कहता है तो मुझे लगता है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ।”

“ठीक है महेश जी।” आभा ने कहा और अपने घर का दरवाज़ा अंदर बंद कर लिया।

दोनों किचन में लगे स्लाइडिंग दरवाजे से बाहर आये और लॉन में चलते हुए सबसे आखिर में पहुंचे। वहां दोनों घरों के बीच की चारदीवारी में एक छोटा सा दरवाज़ा बना हुआ था। उस दरवाजे को पार कर के दोनों महेश के लॉन में पहुंचे और आगे उसकी किचन के सामने बनी पक्की जगह पर।

वहां पहले से ही दो प्लास्टिक की कुर्सियां और एक छोटी सी टेबल रखी थी। आभा एक कुर्सी पर बैठ गई।

“तुम को अगर बीयर पसंद हो तो वो लाता हूँ, वरना कोक भी है।”

“बीयर चलेगी महेश जी। वैसे भी यहाँ आने के बाद कभी बीयर नहीं पी।”

“ग्रेट।” महेश मुस्करा कर बोला और अपनी किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोल कर अंदर चला गया।

जब वो वापस आया तो उसके हाथ में दो ठंडी बीयर की बोतलें थी।

“मैं तो बोतल से ही पीना पसंद करता हूँ। तुम्हें गिलास चाहिए तो लाता हूँ।”

“नहीं, जरूरत नहीं है।” आभा ने कहा और एक बोतल थाम ली। दोनों ने आपस में ‘चीयर्स’ बोला और दोनों धीरे धीरे बीयर पीने लगे।

आभा की नज़रें अनायास ही महेश के गैरेज की तरफ उठ गई।

“क्या आप अपने गैरेज में कुछ काम करते रहते है?” उसने सवाल किया। “जब मैं पहले दिन यहाँ आई थी तो आप को मैंने गैरेज से निकलते हुए देखा था।”

“नहीं कुछ खास नहीं, यूँ ही समय बिताने के लिए कुछ करता रहता हूँ।”

“अगर आपको ऐतराज ना हो तो मैं भी देखना चाहती हूँ कि आप क्या काम करते हैं?”

“अरे, पूरा गैरेज कबाड़ से भरा हुआ है। वहां देखने लायक कुछ भी नहीं है। वो तो मैं समय समय पर उस कबाड़ से कुछ नया हासिल करने की कोशिश करते रहता हूँ, बस।” महेश जल्दी से बोला।

आभा को वो साफ़ साफ़ झूठ बोलता लगा।

“इस से पहले तुम कहाँ रहती थी?” महेश ने बातचीत का विषय बदला।

“दिल्ली में।”

“दिल्ली अच्छी जगह है, विकसित शहर है। फिर यहाँ आने विचार क्यों किया?”

आभा के चेहरे पर दुःख उमड़ आया। उसने जवाब दिया,

“दिल्ली में पिछले साल मेरे मंगेतर की हत्या हो गई थी। हम दोनों एक ही हॉस्पिटल में साथ साथ काम करते थे। उसके जाने के बाद दिल्ली से मेरा मन उचट गया और देहरादून जैसी शांत जगह मुझे यहाँ खींच लाई।”

“अच्छा किया। देहरादून में तुम्हारा स्वागत है।”

“थैंक्स।”

“यहाँ कहाँ काम करती हो?”

“देहरादून कॉलेज में। मैं डॉक्टर ब्रह्मा की असिस्टेंट हूँ।”

आभा को महसूस हुआ जैसे डॉक्टर ब्रह्मा का नाम सुन कर महेश कुछ सोच में पड़ गया था। फिर कुछ देर तक महेश आभा को देहरादून के बारे में बताता रहा। उनकी बीयर ख़तम हो चुकी थी। आभा खड़ी हो गई और बोली,

“अब मुझे चलना चाहिए। थोड़ा सामान भी जमाना है और सुबह जल्दी ही कॉलेज भी जाना है। आप ने मेरी जो सहायता की, उसके लिए धन्यवाद।”

“इसमें धन्यवाद की कोई जरूरत नहीं। मैंने भी कुछ खास नहीं किया। तुम चलो, तुम्हें बहुत काम है, मैं भी थोड़ा आराम करता हूँ।” महेश भी खड़ा हो गया।

आभा पीछे के लॉन की तरफ चल दी और महेश अपनी किचन के दरवाजे की ओर। अचानक आभा के कान में महेश की आवाज़ पड़ी। उसने आभा को पुकारा था।

“आभा?”

“जी महेश जी?” आभा पलटते हुए बोली। उसने महेश को अपनी किचन के दरवाजे पर खड़ा देखा।

“तुम को पक्का यकीन है कि हम पहले कभी नहीं मिले?” महेश ने सवाल किया।

“नहीं महेश जी, आज मैं आप को दूसरी बार देख रही हूँ, पहली बार मैंने आपको तब देखा था, जब मैं ये घर देखने आई थी। मगर आप की तरह ही ना जाने मुझे भी क्यों ऐसा लग रहा है कि हम पहले भी मिल चुके हैं।”

“शायद पिछले जन्म में।” महेश हँसता हुआ बोला और आभा पलट कर अपने घर की तरफ चल दी।

अभी रात होने में समय था, इसलिए आभा अपनी कार ले कर नज़दीकी बाजार की तरफ निकल गई और उसने घर में अपनी जरूरत के अनुसार खाना बनाने के लिए कुछ जरूरी चीजें खरीदी और उसके बाद वहां एक होटल में रात का खाना खा कर घर लौटी।

घर लौट कर उसने सब से पहले तो अपना सूटकेस खोल कर अपने कपड़े मास्टर बेडरूम की आलमारी में जमाये और फिर किचन में थोड़ा सामान जमाया। तब तक रात के दस बज चुके थे। अपने खुद के घर में आ कर आभा बहुत खुश थी। ख़ुशी के मारे उसे नींद नहीं आ रही थी।

किचन के रास्ते कुर्सी ले कर वो बाहर आई और घर के पिछवाड़े में खुले आसमान के नीचे बैठ गई। अचानक आभा को लगा कि शायद बिजली सी चमकी थी। उसने नजर उठा कर आसमान की तरफ देखा। आसमान तो बिलकुल साफ़ था और तारे चमक रहे थे।

तभी रौशनी फिर से चमकी। आभा समझ नहीं पाई कि रौशनी कहाँ चमक रही है। उसने अपने लॉन में उगी हुई लंबी लंबी घास पर निगाह डाली और सोचा कि शायद घास पर जुगनू मंडरा रहे होंगे। तभी ड्रिल मशीन चलने जैसी आवाज़ आई। उसकी नज़रें महेश के गैरेज की तरफ उठी।

गैरेज का दरवाज़ा बंद था, मगर उसके अंदर रौशनी थी। बंद दरवाजे की झिरी पर रोशनी की हलकी सी लकीर दिख रही थी। महेश शायद अपने गैरेज में कुछ काम कर रहा था। महेश के साथ की गई बातों और रात को उसकी अपने गैरेज में मौजूदगी महेश के व्यक्तित्व को रहस्यमय बना रहे थे।

'जरूर अपने गैरेज में वो कोई ऐसा काम कर रहा था, जिसे सब से छिपाना चाहता है।' आभा ने सोचा।

उत्सुकता वश आभा कुर्सी से उठी और धीरे धीरे चलती हुई पिछवाड़े के छोटे दरवाजे की तरफ बढ़ी। वो गैरेज में झाँक कर देखना चाहती थी कि आखिर महेश वहां कर क्या रहा था?

वो उसके गैरेज के पास पहुंची। गैरेज की दायीं तरफ एक छोटी सी खिड़की थी, जो खुली हुई थी। उसने अपनी एड़ियां ऊँची कर के खिड़की तक अपनी पहुँच बनाई और गैरेज के अंदर झाँका।

उसने देखा कि महेश के गैरेज के बीचों बीच कोई अजीब सी दिखने वाली चीज पड़ी थी। उसमे कई जगह बिजली के तार लगे हुए थे। उस चीज का ढाँचा किसी चमकीली धातु का बना हुआ था। उस ढांचे की ऊंचाई करीब पांच फुट होगी। उसके अंदर कई लीवर और अलग अलग तरह के बटन भी लगे हुए थे।

महेश अपना सर झुकाये, तन्मयता से उस पर काम कर रहा था। तभी शायद महेश को गैरेज की खिड़की पर किसी के होने का अहसास हुआ। वो ठिठका और उसकी नज़रें खिड़की की तरफ उठी। आभा ने बिलकुल समय पर अपना चेहरा खिड़की से हटा लिया था।

आभा जल्दी से खिड़की से हटी और उसने अपने घर की तरफ दौड़ लगा दी। आभा को ये पता नहीं चला कि अपने गैरेज के दरवाजे को थोड़ा सा खोल कर, वो आभा को अपने घर की तरफ भागते हुए देख रहा था। महेश के चेहरे पर मुस्कराहट थी।

जैसे ही आभा अपने किचन के दरवाजे तक पहुंची, महेश ने फिर से अपने गैरेज का दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। आभा अपने किचन में पहुंची और उसने नजर उठा कर महेश के गैरेज की तरफ देखा।

'अजीब आदमी है ये महेश ओबेरॉय।' वो बड़बड़ाई और किचन का दरवाज़ा बंद कर के हॉल में आ गई। उसके घर में कोई फर्नीचर नहीं था और उसे ज़मीन पर ही सोना था। उसने एक बॉक्स खोल कर उसमे से एक मोटी सी दरी और चादर निकाली।

मास्टर बेडरूम में आ कर उसने दरी बिछाई और चद्दर ओढ़ कर सोने की कोशिश करने लगी। दस पंद्रह मिनट बाद वो गहरी नींद में थी। उसे पता नहीं लगा था की महेश ओबेरॉय अपने गैरेज से बाहर खड़ा हुआ कुछ मिनटों तक आभा के बेडरूम की तरफ देखता रहा था। उसके होठों पर एक भेद भरी मुस्कान थी। उसके बाद वो फिर अपने गैरेज में गया और अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया।

=====

04

आधी रात के बाद का वक्त था। दरी पर सोइ हुई आभा गहरी नींद में थी। अचानक नींद में ही वो बेचैन नजर आने लगी और करवटें बदलने लगी। वास्तव में वो एक सपना देख रही थी।

अपने सपने में उसने देखा कि वो एक संकरी सी कच्ची सड़क पर पर कार चला रही थी। उसकी कार बंधन झील पर बने लकड़ी के पुल पर पहुंची। अचानक एक गोली चलने जी आवाज़ आती है और आभा के हाथ स्टीयिरंग व्हील पर कांप जाते हैं।

तभी अचानक उसकी कार को पीछे से किसी वाहन ने टक्कर मारी और आभा की कार बेकाबू हो कर झील पर बने लकड़ी के पुल की लकड़ी की रेलिंग से जोर से टकराई। टक्कर इतनी ज़ोरदार थी कि रेलिंग टूट गई और आभा की कार नीचे झील में गिर गई।

झील में गिरते ही कार में पानी भरना शुरू हो गया और कार झील में डूबने लगी। आभा घबरा गई और उसने कार का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की। मगर काफी

कोशिशों के बाद भी वो कार का दरवाज़ा नहीं खोल पाई। उसने खिड़की का बंद शीशा नीचे करने की कोशिश की, मगर उसमे भी वो ना-कामयाब रही।

कार के अंदर तेजी से पानी भरता जा रहा था और कार झील की गहराइयों में डूब रही थी। आभा की कार से बाहर निकलने की सभी कोशिशें नाकाम रही और जल्दी ही उसका मृत शरीर खुली आँखों के साथ कार के अंदर पड़ा था।

घबरा कर एक झटके के साथ आभा उठ कर बैठ गई और लंबी लंबी सांसें लेने लगी जैसे डूबने से बचने के लिए पानी की सतह से ऊपर आ कर सांसें ले रही हो। उसका बदन पसीने से भीग गया था।

उसे जल्दी ही समझ में आ गया था कि वो सपना देख रही थी। उसने नज़रें घुमा कर अपने बेडरूम में चारों तरफ देखा और चैन की सांस ली। उसका गला सूख रहा था।

'कितना डरावना सपना था।' वो अपने आप से बोली। उसने उठ कर कमरे में रौशनी की पहले बाथरूम में गई और फिर फ्रिज से पानी की बोतल निकाल कर कुछ घूँट पानी के पिये। तभी उसकी नजर बाहर पड़ी।

बाहर लाल नीली रोशनियां नाच रही थी।

'अब ये क्या बला है?" आभा बड़बड़ाई और उसने बाहर झांक कर देखा। रौशनी महेश ओबेरॉय के घर की तरफ से आ रही थी।

उसे समझ में नहीं आया कि हो क्या रहा है। वो जल्दी से हॉल में वापस आई और घर का दरवाज़ा खोल कर बाहर कम्पाउंड में आई। उसने महेश के घर की तरफ देखा। महेश के घर के सामने एक पुलिस की गाड़ी और एक एम्बुलेंस खड़ी थी।

मैन डोर खोल कर वो बाहर सड़क पर आई। सड़क पर एक जगह एक आदमी और औरत खड़े थे। आभा ने देखा कि पड़ोसी अपनी अपनी खिड़कियों से झाँक कर महेश के घर की तरफ देख रहे थे। आभा चलती हुई महेश के घर के पास पहुंची।

उसने देखा कि किसी हॉस्पिटल की ड्रेस पहने दो तीन आदमी एक स्ट्रेचर उठा कर महेश के घर से बाहर आ रहे हैं। स्ट्रेचर पर महेश लेटा हुआ था और उसकी आँखें बंद थी। उसके मुंह और नाक पर ऑक्सीजन का मास्क लगा हुआ था।

उन्होंने स्ट्रेचर जल्दी जल्दी एम्बुलेंस में रखा और फिर एम्बुलेंस में बैठ कर जल्दी से वहां से निकल गए। वहां मौजूद एक पुलिस अफ़सर भी अपनी गाड़ी में बैठा और

उसने अपनी गाड़ी एम्बुलेंस के पीछे पीछे दौड़ा दी। आभा वहां बाहर खड़े आदमी और औरत की तरफ बढ़ी।

“क्या हुआ?” आभा ने सवाल किया।

“रात को मेरे पालतू कुत्ते के भौंकने की वजह से मेरी आँख खुली। मेरा कुत्ता रात को कम्पाउंड में खुला ही रहता है। मैंने बाहर आ कर देखा तो मैंने महेश जी को उनके कम्पाउंड में नीचे पड़े देखा तो मैंने पुलिस को फोन कर दिया।” आदमी ने जवाब दिया।

“ये महेश जी भी अजीब सनकी आदमी है। दिन रात अपने गैरेज में घुसे हुए पता नहीं क्या ठोक पीट करते रहते हैं।” औरत बोली।

“वैसे मेरा नाम रोहित है और ये मेरी पत्नी सरिता है। हमारा घर ये है, बिलकुल महेश जी के पास वाला।” रोहित ने अपने घर की तरफ इशारा कर के बताया।

“मेरा नाम आभा अरोड़ा है।”

“अच्छा तो आप हैं, जो महेश जी के उस तरफ वाले घर में रहने आई है।” सरिता ने कहा।

रोहित और सरिता ने आभा से हाथ मिलाया।

“महेश जी को कहाँ ले जाया गया है?”

“हार्ट केयर हॉस्पिटल। ये देहरादून की उत्तरी दिशा में बहुत अच्छा हॉस्पिटल है।” रोहित ने बताया।

“आप लोगों से मिल कर अच्छा लगा।”

आभा ने फिर एक बार उन दोनों से हाथ मिलाया और वापस अपने घर में आ गई। रोहित और सरिता भी अपने घर के अंदर चले गए।

अपने घर आ कर वो फिर से किचन में आई और फ्रिज से बोतल निकाल कर पानी पिया। तभी उसकी आँखों को कुछ चुभा। किचन के कांच के स्लाइडिंग दरवाजे के बाहर कुछ पड़ा था। उसने ध्यान से देखा तो उसे लगा कि वो कोई पुराना फोटो एलबम था।

आभा ने बोतल बंद कर के वापस फ्रिज में रखी और स्लाइडिंग दरवाजे की तरफ बढ़ी। उसने दरवाज़ा खोल कर उसे उठाया और उलट पलट कर देखा। वो सचमुच

एक बहुत पुराना फोटो एलबम ही था। उसने दरवाज़ा वापस बंद किया और एलबम ले कर अपने बेडरूम में आ गई। बेडरूम की लाइट ऑन ही थी।

वो अपनी दरी पर बैठी और उसने एलबम अपनी गोद में रखा। एलबम के ऊपर एक स्टीकर चिपका हुआ था, जिस पर लिखा था, 'ज्योति की यादें।'

उसने एलबम खोला। एलबम के पहले पेज पर स्कूल की ड्रेस में महेश की कुछ तस्वीरें थी, जब वो सात आठ साल का रहा होगा। आभा ने महेश को उसकी बचपन की फोटो में साफ़ पहचाना था। कुछ तस्वीरें महेश की ही हम उम्र एक लड़की की भी थी। आभा खुद बचपन में वैसी ही दिखती थी। इसका मतलब साफ़ था। महेश ही वो एलबम आभा के किचन के दरवाजे के बाहर रख कर गया था।

आभा ने सभी तस्वीरों को ध्यान से देखा। उसे ना जाने ऐसा क्यों लग रहा था कि वे तस्वीरें उसकी जानी पहचानी है। उसे वह अजीब सा एहसास फिर से हुआ।

उसने एलबम का दूसरा पन्ना खोला। वहां महेश की तस्वीरें उसकी स्कूल की ड्रेस में थी, पर उस समय उसकी उम्र शायद तेरह चौदह साल की रही होगी। एक फोटो उसी उम्र की एक लड़की की थी। वो भी स्कूल की ड्रेस में थी। लड़की बहुत खूबसूरत थी। आभा को लगा कि शायद वो उस लड़की को जानती है क्यों कि वो तस्वीर भी उसको अपनी तस्वीर ही लगी थी। उस लड़की की फोटो के नीचे एक स्टीकर पर लिखा था, 'मेरी ज्योति।'

एक फोटो ज्योति की तब की थी, जब शायद वो हाई स्कूल में रही होगी। उस फोटो में वो चश्मा लगाए हुए थी। एक फोटो लगभग उसी उम्र के महेश की भी थी, जो घुटनों घुटनों बंधन झील के पानी में खड़ा था। फोटो में लग रहा था, जिसे उसे बहुत ठंड लग रही हो।

एक फोटो शायद ज्योति के जन्मदिन की पार्टी की थी। एक फोटो में महेश कुछ अजीब अजीब से खिलौनों के बीच बैठा था। आभा को वो तस्वीर बहुत अच्छी लगी। आभा को महसूस हो रहा था, जैसे वो ज्योति को जानती है, मगर कैसे? इस सवाल का जवाब उसके पास नहीं था।

उसकी सूरत ज्योति से क्यों इतनी मिलती है? इसका उत्तर भी उसके पास नहीं था।

उसने एलबम का अगला पेज पलटा। उस तस्वीर में महेश हाई स्कूल के कई लड़कों के साथ फुटबाल यूनिफार्म में नजर आ रहा था। वो देखने में सोलह सत्रह साल का लग रहा था। उस तस्वीर में एक लड़का और भी था जो सब से कम सुन्दर था, उसके

पूरे चेहरे पर मुहांसे थे। एक फोटो में उन लड़कों के साथ चश्मा पहने ज्योति भी नजर आ रही थी।

आभा को अब और अधिक लगने लगा था कि वो ज्योति को तो अच्छी तरह से जानती ही है, महेश को भी अच्छी तरह जानती है।

अगली तस्वीर में ज्योति और महेश काफी वयस्क लग रहे थे और और दोनों एक नई लग रही गाड़ी के पास खड़े थे। एक अलग तस्वीर, जो शायद उनके कॉलेज के जमाने की थी, जिसमे महेश एक काला सूट, सफ़ेद शर्ट और काले रंग की टाई पहने था। ज्योति ने एक बहुत सुन्दर ड्रेस पहन रखी थी, और वो फोटो शायद महेश के घर के अंदर ली गई थी।

सभी तस्वीरों में महेश के साथ ज्योति बहुत खुश नजर आ रही थी। आभा ने उस तस्वीर ध्यान से ज्योति का चेहरा देखा तो ये पक्का हो गया कि उसका चेहरा ज्योति के चेहरे से काफी मिलता था। फर्क था तो सिर्फ इतना कि ज्योति चश्मा लगाती थी और उसके बाल भूरापन लिए हुए काले थे। आभा के खुद के ऊपरी होंठ पर एक तिल था, जो ज्योति के होंठ पर नहीं था।

आभा ने अगला पेज पलटा। उस तस्वीर में महेश और ज्योति पूरे जवान लग रहे थे। वे दोनों हाथों में हाथ थामे फोटो के लिए पोज दे रहे थे।

एक तस्वीर में ज्योति और महेश बंधन झील के किनारे प्रेमी प्रेमिका की तरह बैठे थे। अनजाने में ही आभा के होंठ थरथराये और उसने तस्वीर में महेश के चेहरे को चूम लिया। आभा को अहसास हुआ मानो महेश ने उसे चुंबन का जवाब दिया हो।

एक तस्वीर में वही मुहांसों वाला लड़का महेश और ज्योति के साथ नजर आ रहा था। पता नहीं क्यों, आभा को उस तस्वीर में उस लड़के की मौजूदगी पसंद नहीं आई।

उसने एलबम का एक और पेज पलटा। उस पेज पर कोई फोटो तो नहीं थी, मगर शादी की निमंत्रण पत्रिका चिपकी हुई थी। उस निमंत्रण पत्रिका में महेश ओबेरॉय और ज्योति सरीन की शनिवार, 20 मई 1961 को होने वाली शादी का न्यौता था।

आभा ने उस निमंत्रण पत्रिका को ध्यान से देखा और बड़े प्यार से उस पर हाथ फिराया। उसे लग रहा था कि वो उसकी और महेश की शादी की निमंत्रण पत्रिका थी। अनजाने में ही उसकी आँखों में पानी भर आया।

उस के बाद उस एलबम में कुछ नहीं था। आभा को पता नहीं क्यों उस एलबम में अपनी खुद की उपस्थिति का अहसास हो रहा था। ज्योति का चेहरा उसके चेहरे से

कितना मिलता जुलता था। वो महज एक संयोग था या उसके पीछे कोई विशेष कारण था? ये वो निश्चित नहीं कर पा रही थी।

आभा को अपने दिवंगत मंगेतर की याद सताने लगी। वो खड़ी हुई और उसने आलमारी से एक छोटी सी बैग निकाली। वो एक आधुनिक बैक बैग थी जो कन्धों पर फीतों के सहारे पीठ पर लटकाई जाती थी। उस बैग के अंदर से कुछ तस्वीरें निकाली। कुछ तस्वीरों में उसका मंगेतर रोशन उसके साथ था और कुछ उसके अकेले की तस्वीरें थी। आभा ने उन तस्वीरों को अपने सीने से लगा लिया।

आभा काफी देर तक उन तस्वीरों को अपने सीने लगाए बैठी रही और कुछ देर बाद उसने अपने आंसू पोंछे और तस्वीरों को फिर से बैग में रखकर, बैग अलमारी में रख दिया।

उसने बत्ती बंद की और अपनी दरी पर लेट कर कमरे की छत की तरफ ताकती रही। वो महसूस कर रही थी कि जो कुछ उसके साथ हो रहा है, वो कोई साधारण बात नहीं है। इतना ही नहीं, उसको तो लग रहा था कि बात काफी आगे तक जाने वाली है।

मगर वो इन बातों से डर नहीं रही थी। उसे तो अजीब सा सुखद अहसास हो रहा था। काफी देर बाद, उसको कब नींद आ गई, उसको पता ही नहीं चला।

=====

05

घटनाएँ घटती रहती है और समय अपनी गति से चलता रहता है। आभा को रात में सोने में काफी देर हो गई थी, मगर सुबह का अलार्म तो अपने समय पर ही बजा। सुबह के सवा छह बजे थे।

अलार्म सुन कर आभा की नींद खुली और वो तुरंत उठ कर खड़ी हो गई। आलस्य मिटाने के लिए उसने एक अंगड़ाई ली। रात की घटनाएँ उसकी आँखों के सामने घूमने लगी। उसने तुरंत निर्णय लिया और बाथरूम में घुस गई।

आधे घंटे बाद वो तैयार हो कर सुबह की कॉफी के साथ अपना नाश्ता कर रही थी। नाश्ता करने के बाद उसने अपने मोबाइल से डॉक्टर ब्रह्मा को फोन लगाया।

“हेल्लो।” दूसरी तरफ से तुरंत जवाब मिला।

“हेल्लो डॉक्टर, मैं आभा बोल रही हूँ।”

“हाँ, आभा बोलो। मैं बस कॉलेज के लिए निकलने ही वाला था।”

“इस वक्त फोन करने के लिए माफ़ी चाहती हूँ डॉक्टर, मगर मैंने आप की इजाज़त लेने के लिए फोन किया है।”

“हाँ, बोलो ना आभा।”

“बात ये है डॉक्टर कि मेरे बुजुर्ग पड़ोसी की तबियत रात को काफी बिगड़ गई थी और उन्हें हार्ट केयर हॉस्पिटल ले जाया गया है। उनके आगे पीछे और कोई नहीं है और मैं उनका हाल जानने के लिए हॉस्पिटल जाना चाहती हूँ।”

“तुम्हें जरूर जाना चाहिए आभा।”

“हॉस्पिटल जा कर मुझे कॉलेज आने में थोड़ी देर हो जाएगी डॉक्टर।”

“कोई बात नहीं। तुमको हॉस्पिटल जरूर जाना चाहिए। कॉलेज में तुम्हारे लिए सुबह सुबह कुछ खास काम भी नहीं है। अगर कुछ होगा भी, तो मैं मैनेज कर लूँगा। तुम चिंता मत करो और हॉस्पिटल के लिए निकलो।”

“धन्यवाद डॉक्टर।” आभा बोली और उसने फोन काट दिया।

उसने अपना पर्स उठाया और बाहर आ कर अपनी कार ले कर हार्ट केयर हॉस्पिटल की तरफ चल पड़ी। हॉस्पिटल उसके घर से कॉलेज जाने वाली दिशा में ना हो कर दूसरी तरफ था। पंद्रह बीस मिनट बाद वो हॉस्पिटल में थी।

हॉस्पिटल की लंबी गैलरी में राधा रूम नंबर 480 की तरफ बढ़ रही थी, जहाँ महेश ओबेरॉय भर्ती था। जब वो रूम नंबर 480 के दरवाजे पर पहुंची, तो थोड़ा ठिठक गई। उसने एक पल के लिए कुछ सोचा और एक लंबी सांस ले कर उसने दरवाज़ा खोला।

अंदर आ कर उसने दरवाज़ा फिर से बंद किया और पलटी। सामने ही बिस्तर पर लेटा दुबला पतला महेश ओबेरॉय और भी ज्यादा कमजोर लग रहा था। उसकी नाक में ओक्सिजन की नली लगी हुई थी और उसके शरीर पर कई जगह तार वगैरह लगे हुए थे जो कि वहां लगे अलग अलग मॉनिटर्स से जुड़े हुए थे। अपने हॉस्पिटल के अनुभव से आभा ने अनुमान लगाया कि मॉनिटर्स महेश की हालत ठीक बता रहे थे।

आभा उसके नज़दीक जा कर खड़ी हुई। महेश जाग रहा था। उसने नज़रें उठा कर आभा की तरफ देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

“पहचाना मुझे? मैं आप की नई पड़ोसन, आभा।”

“तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ। शाम को तो हम एक साथ बैठ कर बीयर पी रहे थे।” महेश ने मुस्कराते हुए धीरे से कहा।

“यहाँ मुझे नर्स ने बताया की आप को दिल का दौरा पड़ा है। अब आप की तबियत किसी है?”

“मैं ठीक अनुभव कर रहा हूँ।”

“ये तो बहुत अच्छी बात है। अब जल्दी से पूरी तरह ठीक हो कर घर वापस आ जाइये।” आभा ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख कर मुस्कुराते हुए कहा।

महेश उसकी बात सुन कर कुछ बोला तो नहीं, पर वो भी मुस्कराया। कुछ देर बाद आभा ने थोड़ा झिझकते हुए सवाल किया,

“कल रात को मेरी किचन के दरवाजे पर वो एलबम आप छोड़ कर गए थे?”

“हाँ।”

“क्यों?”

“मैं तुम से बहुत प्यार करता हूँ ज्योति।” कहते हुए उसके चेहरे पर दर्द उभरा।

“लेकिन मैं ज्योति नहीं, आभा हूँ। आभा अरोड़ा।” आभा बोली और उसकी नजर मॉनिटर पर पड़ी।

मॉनिटर पर दिख रही रेखाओं में अजीब तरह की हरकत होने लगी और महेश जैसे दर्द के मारे तड़पने लगा। आभा ने वहां लगा डॉक्टर या नर्स को बुलाने वाला आपातकालीन बटन दबाया। तभी मॉनिटर से बीप बीप की आवाजें आने लगी। आभा ने महेश का हाथ थामा और बोली,

“आप चिंता मत कीजिये, अभी डॉक्टर आ जायेगा।”

महेश ने इशारे के आभा को उसका कान अपने नज़दीक करने को कहा। आभा अपना कान उसके मुंह के नज़दीक ले गई। दर्द से तड़फते हुए महेश ने कहा,

“इतने वर्षों से मैं वापस पीछे जा कर तुम्हें बचाने की कोशिश कर रहा था। अब जब मैं इसे कर सकता हूँ तो ये कम्बख्त दिल धोखा दे रहा है।”

आभा समझ नहीं पाई कि महेश क्या कह रहा है।

“आप प्लीज कुछ बोलो नहीं और शांत रहिये।” कहते हुए राधा ने फिर से इमरजेंसी बटन दबाया।

“मैं तुम से बहुत प्यार करता हूँ ज्योति, पर मैं तुम्हें बचा नहीं पाया।” महेश बहुत मुश्किल से बोल पाया और फिर उसका बदन शिथिल पड़ने लगा। “वादा करो कि तुम वापस जा कर अपने आप को मरने से बचा लोगी।”

“मैं वादा करती हूँ महेश जी।” ना जाने किन भावनाओं के अधीन आभा के मुंह से निकला।

फिर शायद अधिक दर्द सहन न कर सकने की वजह से वो बेहोश हो गया था। तभी दरवाज़ा खुला और एक डॉक्टर एक नर्स के साथ दौड़ता हुआ सा कमरे में दाखिल हुआ।

“डॉक्टर साहब, देखिए ना इन्हें क्या हो गया है। अभी तो अच्छे भले बात कर रहे थे।” आभा ने जल्दी से कहा।

“आप बाहर जाइये और हमें अपना काम करने दीजिये।” आभा उठ कर दरवाजे की तरफ बढ़ी और डॉक्टर जल्दी जल्दी नर्स को कुछ आदेश देने लगा।

दरवाजे के पास जा कर आभा ने मुड़ कर बार महेश की तरफ देखा और फिर उसकी नजर मॉनिटर पर धीरे धीरे सीधी होती हुई लाइन पर पड़ी, जिसने आभा के दिल में घबराहट पैदा कर दी। नर्स ने जल्दी से एक इंजेक्शन बनाया और डॉक्टर महेश को इंजेक्शन देने लगा।

चिंतित आभा दरवाज़ा ठेल कर बाहर आ गई और गैलरी में रखी एक कुर्सी पर बैठ गई। उसने और एक डॉक्टर और दो नर्सों को महेश के कमरे में जाते हुए देखा। करीब आधे घंटे बाद एक नर्स कमरे से बाहर निकली तो आभा जल्दी से उसके पास गई और पूछा,

“अब कैसे हैं मिस्टर महेश?”

“उन्हें फिर से दिल का दौरा पड़ा है और अभी मैं कुछ नहीं कह सकती, सिवाय इसके कि उनकी हालत बहुत नाज़ुक है।” नर्स ने जवाब दिया और जल्दी से एक तरफ चली गई।

आभा बेचैनी से गैलरी में चहल कदमी करने लगी। और दस मिनट बीते और एक डॉक्टर बाहर आया। आभा उसकी तरफ बढ़ी।

“मुझे ये कहते हुए दुख हो रहा है कि हम मिस्टर महेश को बचा नहीं पाए।” डॉक्टर धीरे से बोला।

डॉक्टर के शब्द आभा के कानों में गरम और पिघले हुए शीशे की तरह पड़े। उसे चक्कर सा आ गया और उसका दिल बैठने लगा। वो खड़ी नहीं रह पाई और धम्म से वहां पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। उसकी आँखें छलछला आई।

दस मिनट बाद आभा सामान्य हुई तो वो उठी और गैलरी में लगी पानी की मशीन की तरफ बढ़ी। उसने एक गिलास पानी पिया तो अपने आप को थोड़ा संभला हुआ महसूस किया। धीरे धीरे चलती हुई वो हॉस्पिटल के बाहर आई और दरवाज़ा खोल कर अपनी कार में बैठ गई। वो पांच मिनट ऐसे ही बैठी रही और फिर एक लंबी सांस ले कर उसने अपनी कार स्टार्ट की।

इसके करीब चालीस मिनट के बाद आभा कॉलेज में अपनी सीट पर बैठी थी। महेश का चेहरा अभी भी उसकी आँखों के सामने घूम रहा था। जिस आदमी से पहली बार वो कल शाम ही मिली थी, आज हॉस्पिटल में उसने उसकी आँखों के सामने दम तोड़ दिया था।

महेश के कहे हुए शब्द उसके कानों में अभी तक गूँज रहे थे और वो उन शब्दों का मतलब समझने की कोशिश कर रही थी। तभी अपनी क्लास ले कर वापस आते हुए डॉक्टर ब्रह्मा ने उसके ऑफ़िस में कदम रखा।

“अब तुम्हारा पड़ोसी कैसा है आभा?” दरवाजे से आभा की सीट की तरफ आते हुए उन्होंने सवाल किया।

आभा अपनी कुर्सी से खड़ी हुई और बोली,

“उसने हॉस्पिटल में मेरी आँखों के सामने दम तोड़ दिया डॉक्टर।” कहते हुए आभा की आँखों में आंसू आ गए।

“ओह, ये जान कर दुःख हुआ। तुम खड़ी क्यों हो? बैठो।” कहते हुए डॉक्टर ब्रह्मा भी आभा के सामने की कुर्सी पर बैठ गए।

“सब से अजीब बात तो ये है डॉक्टर कि कल रात ही उनको दिल का दौरा पड़ा और उनको हॉस्पिटल ले जाया गया, मगर उसके पहले उन्होंने मेरे घर के दरवाजे पर मेरे लिए एक फोटो एलबम रखा था।”

“फोटो एलबम? कैसा फोटो एलबम?”

“एक ऐसा पुराना फोटो एलबम, जिसमे उनकी बचपन और जवानी की कुछ तस्वीरें थी। उसमे ज्योति नाम की किसी लड़की की भी बचपन और जवानी की कुछ तस्वीरें

थी। और खास बात ये है डॉक्टर कि वे तस्वीरें देख कर मुझे अजीब सा अहसास हुआ था। मुझे लगा जैसे मैं दोनों को जानती हूँ।"

"और तुम ने अभी बताया कि तुम उस आदमी से पहली बार कल शाम को ही मिली थी।" डॉक्टर ब्रह्मा आश्चर्य बोले।

"हाँ डॉक्टर, कल जब मैं उन से पहली बार मिली थी, तब भी मुझे ऐसा ही लगा था। शायद उनको भी ऐसा ही लगा था। उन्होंने भी दो बार मुझ से पूछा था कि क्या हम पहले भी मिल चुके हैं?"

"तुम को शायद याद होगा कि जब तुम पहली बार मुझ से मिली थी, तो मैंने भी तुमसे ऐसा ही सवाल किया था।"

"हाँ डॉक्टर, याद आया। आप को भी ऐसा ही लगा था और आप ने मुझ से पूछा था कि क्या मैं आप से पहले भी मिल चुकी हूँ?"

"हाँ, मुझे तो अब भी ऐसा ही लग रहा है कि हम पहले मिल चुके हैं। वैसे नाम क्या है तुम्हारे पड़ोसी का?"

"महेश ओबेरॉय।"

"क्या नाम लिया तुम ने? महेश ओबेरॉय?"

"हाँ, आप जानते हैं उन्हें?"

"तुम ने देहरादून स्ट्रीट में मकान ख़रीदा है?" डॉक्टर ब्रह्मा का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था।

"हाँ, सर, आप को कैसे पता चला। मैंने तो आप को अब तक ये नहीं बताया कि मैंने कौन से इलाके में मकान ख़रीदा है?" आश्चर्यचकित तो आभा भी थी।

"और मिस्टर महेश ओबेरॉय तुम्हारे पड़ोसी थे?"

"हाँ।"

"तुम ने बिलकुल मिस्टर महेश ओबेरॉय के पास वाला सफ़ेद घर ख़रीदा है?"

"हाँ डॉक्टर। क्या आप महेश ओबेरॉय को जानते हैं?"

"अच्छी तरह से। महेश ओबेरॉय इसी कॉलेज में मेरे साथ प्रोफ़ेसर था। फ़िज़िक्स का प्रोफ़ेसर।"

"कब से कब तक?"

डॉक्टर ने कुछ सोचा और फिर जवाब दिया।

“सब से पहले मैं उस से 1957 - 58 में मिला था। आज से करीब दस साल पहले उसने रिटायरमेंट ले लिया था। हमारे कॉलेज में प्रोफ़ेसर और कॉलेज स्टाफ के लिए रिटायरमेंट कोई उम्र निर्धारित नहीं है। तभी तो मैं भी इस उम्र में भी यहाँ पढ़ाता हूँ। रिटायरमेंट लेने के समय उसकी उम्र कोई 65 / 66 साल की रही होगी। वो बहुत अच्छा इंसान और बहुत काबिल प्रोफ़ेसर था। कोई नहीं चाहता था कि वो रिटायरमेंट ले। पर उसने किसी की नहीं सुनी।”

डॉक्टर बता रहा था और आभा मंत्र-मुग्ध सी हो कर सुन रही थी।

“बहुत अच्छा और बहुत मिलनसार आदमी था महेश ओबेरॉय। लोगों से मिलना उसे अच्छा लगता था। पर, 1961 की गर्मियों के बाद वो बहुत उदास और अकेला रहने लग गया था।”

“लेकिन क्यों?”

“1961 की गर्मियों में उसकी शादी होने वाली थी। लेकिन शादी वाले दिन ही सुबह सुबह उसकी होने वाली पत्नी ज्योति की मौत हो गई थी। शायद इसीलिए वो उदास और और अकेला रहने लग गया था।”

“मौत कैसे हुई उसकी मंगेतर की?”

“बंधन झील में डूब कर। आज तक पता नहीं चला कि वो एक साधारण दुर्घटना थी या उसका क़त्ल किया गया था। झील के पानी में डूबी हुई उसकी गाड़ी में उसका शव मिला था। शायद उसको गोली भी लगी थी।”

आभा को डॉक्टर की बात सुन कर पिछली रात को देखा गया उसका सपना याद आ गया। अपने सपने में उसने देखा था कि वो अपनी गाड़ी सहित झील में डूब रही थी।

“झील में डूब गई थी?” आभा बड़बड़ाई। वो किसी और दुनिया में ही खोई हुई थी।

“हाँ, शायद तभी से उसको टाइम मशीन बनाने की सनक सवार हुई थी। ऐसी अफ़वाह थी कि वो टाइम मशीन बना रहा था और वर्तमान समय से पीछे जा कर, अपनी मंगेतर को मौत से बचाना चाहता था।”

“महेश ओबेरॉय टाइम मशीन बना रहा था? क्या ये खबर सच है?”

“पता नहीं। उसने मुझे उसके बारे में कुछ नहीं बताया, मगर ख़बरें तो ऐसी ही उड़ रही थी कि वो टाइम मशीन बना रहा था। यहाँ कॉलेज में प्रोफ़ेसर और लड़के

लड़कियां भी ऐसी ही बातें किया करते थे।"

आभा मंत्र-मुग्ध सी डॉक्टर की बात सुन रही थी।

"मुझे भी मेरे पुराने मित्र की मौत का बहुत दुख पहुंचा है।" डॉक्टर ने कहा और कुछ देर तक आभा के चेहरे की तरफ ताकता रहा।

आभा के चेहरे पर प्रश्नवाचक भाव आये। डॉक्टर ने आगे कहा,

"मुझे नहीं पता कि ये एक संयोग मात्र है या इसके पीछे और कुछ है। मगर ये जान कर तुम शायद चौंक जाओगी कि महेश ओबेरॉय की मंगेतर उसी घर में रहती थी, जो घर तुम ने अभी ख़रीदा है।"

ये सुन कर आभा ना सिर्फ बहुत जोर से चौंक गई थी, बल्कि उसे बहुत जोर का झटका सा भी लगा। डॉक्टर ब्रह्मा आभा को सकते में बैठी छोड़ कर वहां से निकल गए। आभा काफी देर तक सुन्न हुई बैठी रही। थोड़ी देर बाद जैसे उसकी चेतना लौटी।

आभा ने अपने कम्प्यूटर पर 'टाइम मशीन' टाइप किया और उसके रिजल्ट सर्च करने लगी। उसने टाइम मशीन के बारे में थोड़ी जानकारी हासिल की।

शाम को काम के बाद घर जाते हुए उसने रास्ते से सैंडविच और कुछ हल्का फुल्का अपने रात के खाने के लिए ख़रीदा। उस दिन उसका खाना बनाने का मूड नहीं था।

रात का अंधेरा घिर आया था और आभा अपनी किचन के बाहर, पिछले लॉन में एक कुर्सी पर बैठी बीयर के घूँट लगा रही थी। वो बीयर पीने की शुरू से ही शौकीन थी। बीयर पीते हुए बार बार वो नज़रें उठा कर महेश के गैरेज की तरफ देख रही थी।

उसके दिमाग में डॉक्टर की बताई बात घूम रही थी कि महेश ओबेरॉय शायद टाइम मशीन बना रहा था। 'अगर महेश टाइम मशीन बना रहा था, जो जरूर वो उसे अपने गैरेज में ही बना रहा था। पड़ोसियों का भी यही कहना था कि रात दिन महेश अपने गैरेज में घुसा हुआ कुछ करता रहता था।'

आभा को महेश द्वारा हॉस्पिटल में उसको कहे अंतिम शब्द भी याद आये।

आभा ने खुद महेश को वहां एक अजीब सी दिखने वाली चीज पर काम करते देखा था। हो ना हो, वह अजीब सी चीज टाइम मशीन हो, जो महेश ने सफलतापूर्वक बना ली हो। हॉस्पिटल में महेश द्वारा कहे गए अंतिम शब्द भी इसी ओर इशारा कर रहे थे।

आभा ने बीयर की बोतल से अंतिम घूँट लिया और खाली बोतल ज़मीन पर रख कर उठ खड़ी हुई। उसने इधर उधर नज़रें दौड़ाई। एक तो उस इलाके में काफी कम बस्ती थी और जो लोग वहां रहते थे, सभी अपने अपने घरों में थे। सड़क सुनसान थी और उस पर आवाजाही ना के बराबर थी। कभी कभार कोई गाड़ी वहां से गुज़र जाती थी।

महेश के गैरेज में एक नजर डालने के लिए वो अपने लॉन के पिछवाड़े में उस 'गुप्त' दरवाजे की तरफ बढ़ने लगी। दरवाज़ा खोल कर उसने अपने लॉन से महेश ले लॉन में कदम रखा। वो सीधी गैरेज की उस खिड़की की तरफ आई जहाँ से पिछली रात को उसने गैरेज में झाँका था।

उसने खिड़की से गैरेज के अंदर झाँका। अंदर अंधेरा था, मगर आभा को वो अजीब सी चीज वहां पड़ी होने का अहसास हुआ, जो उसने पिछली रात को देखी थी। इस से अधिक वो उस अँधेरे में कुछ नहीं जान पाई। फिर वो गैरेज के दरवाजे की तरफ आई।

उसने गैरेज का एक दरवाज़ा पकड़ कर खींचा तो वो खुल गया। उसे दरवाज़ा खुला देख कर आश्चर्य हुआ। महेश हमेशा दरवाजे पर ताला लगा कर रखता था।

'कल शायद वो ताला लगाना भूल गया होगा।' आभा ने सोचा।

खुले दरवाजे से अंदर आ कर उसने बिजली का स्विच तलाश किया तो दरवाजे के पास ही उसे स्विच बोर्ड नजर आया। उसने लाइट ऑन की और दरवाज़ा बंद कर लिया। वो अजीब सी चीज अब बिलकुल उसकी आँखों के सामने थी।

अंडा-कार आकार की वो चीज एक चमकीली धातु की बनी हुई थी। उसने अपनी उँगलियों से उसकी दीवार को ठोका। वो स्टील की मजबूत सीट की दीवार थी। उसके सामने की तरफ एक कांच लगी खिड़की थी जैसे कार की विंडशील्ड होती है।

उस अंडा-कार चीज के नीचे चार स्टैंड लगे हुए थे, जिन पर वो खड़ी थी। उसने सामने लगे कांच से उसके अंदर झाँक कर देखा तो अंदर उसकी छत पर बिजली के तारों का एक जाल सा बिछा हुआ था, जिन्हें उसकी छत पर लगे बंद हुकों ने पकड़ रखा था।

एक तरफ एक छोटी सी खिड़की के साथ एक छोटा सा दरवाज़ा था। उसने उसके पीछे देखा तो पाया कि वहां बने छोटे छोटे छेदों से विभिन्न तरह के तार निकल कर,

एक छोटे से पाइप के माध्यम से उसके अंदर जा रहे थे। शायद नीचे की तरफ, पीछे उस मशीन की मोटर लगी हुई थी।

उसने नजर उठा कर उस खिड़की की तरफ देखा, जहाँ से पिछली रात उसने ताक झांक की थी। उस खिड़की के बायीं तरफ एक बुक सेल्फ था, जिसमे कई किताबें रखी हुई थी। नीचे पड़ी एक छोटी सी टेबल पर एक डायरी रखी हुई थी और एक नक्शा रोल कर के रखा हुआ था।

गैरेज के एक कोने में नया पुराना इलेक्ट्रॉनिक सामान पड़ा हुआ था और दूसरे कोने में कुछ हथियार, जैसे वेल्डिंग गन, ड्रिल मशीन, कटर, और इसी तरह के अन्य हथियार। उसने बुकसेल्फ़ में पड़ी किताबों के शीर्षक पर नजर डाली। सभी टाइम ट्रैवल और टाइम मशीन से संबंधित पुस्तकें थी।

टेबल पर पड़ी डायरी उठा कर उसने देखा कि डायरी में कई जगह टेढ़ी मेढ़ी रेखाएं बनी हुई थी और उन पर कई जगह कुछ नंबर लिखे हुए थे, जो आभा की समझ में नहीं आये। डायरी के अंत में लिखा था,

'मैं आज कामयाब हो गया हूँ। मैं आ रहा हूँ ज्योति, अब मैं आ कर तुम्हें बचा लूँगा। हे भगवान, कहीं इस ख़ुशी से मैं मर ना जाऊं।'

आभा समझ चुकी थी कि उसके सामने जो अंडा कार चीज पड़ी है, वो टाइम मशीन है जैसी बनाने में आखिर महेश ओबेरॉय कामयाब हो चुका था। शायद वो अपार ख़ुशी ही थी जिसे उसका बूढ़ा दिल सहन नहीं कर पाया और उसे दिल का दौरा पड़ गया था।

आभा ने एक आश्चर्य भरी नजर उस अंडा कार चीज पर डाली, जो कि अब वो समझ चुकी थी कि वो टाइम मशीन थी। उसने उसके दरवाजे पर लगे छोटे से हैंडल को पकड़ कर खोला। दरवाज़ा हलकी सी आवाज़ के साथ ऊपर की तरफ खुल गया।

टाइम मशीन के प्रति आभा की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी और साथ ही साथ उसके बारे में और जानने का लोभ भी। अंदर एक छोटी सी सीट बनी हुई थी, जिस पर काला चमकीला चमड़ा चढ़ा हुआ था। टाइम मशीन के अंदर आ कर वो उस सीट पर बैठ गई।

उसने अपने सामने डेश बोर्ड की तरफ देखा। वहां बहुत से बटन, स्क्रीन्स और घड़ियाँ लगी हुई थी। नीचे की तरफ तीन चार लीवर भी थे। एक तरफ एक बड़ा, लाल रंग का लीवर जैसा बटन था, जिसके ऊपर लिखा था 'पावर।' बटन के ऊपर

की तरफ लिखा हुआ था 'पावर ऑन' और नीचे की तरफ लिखा हुआ था 'पावर ऑफ़।'

पावर बटन के ऊपर एक हरे रंग की एक गोल स्क्रीन लगी हुई थी। पावर बटन की साइड में एक गोल बटन था, जिस पर लिखा था 'इंजन।' उसके पास ही तीन छोटे छोटे इंडिकेटर बल्ब थे जिन के नीचे लिखा था, 'इंजन वार्मिंग अप', 'इंजन रेडी' और 'इंजन इन डेंजर।'

आभा समझ गई कि मशीन शुरू करने के लिए पहले पॉवर बटन को दबा कर ऊपर की तरफ 'पॉवर ऑन' करना पड़ता है और फिर 'इंजन' लिखा हुआ बटन दबाना पड़ता है। पास में लगे इंडिकेटर बल्ब इंजन की स्थिति बताते हैं।

'पावर' बटन के दूसरी तरफ एक लीवर लगा हुआ था जो नीचे की तरफ था और उसको ऊपर किया जा सकता था, जहाँ लिखा था 'गो।' 'इंजन रेडी' होने के बाद लीवर को ऊपर करने की जरूरत थी।

डैशबोर्ड के बीच में चार डायल बने हुए थे, जो महीना, तारीख, वर्ष और समय के लिए थे, जो कि उस वक्त वर्तमान महीना, तारीख, साल और समय दिखा रहे थे। वे डायल इस बात को दर्शाने लिए थे कि कब आप ने टाइम ट्रैवल शुरू किया था।

'गो' बटन के ऊपर एक हरे रंग की गोल स्क्रीन थी जिसके नीचे 'डेस्टिनेशन' लिखा था।

उसी स्क्रीन के नीचे और चार डायल थे जो गंतव्य स्थान पर महीना, तारीख, साल और समय सेट करने के लिए थे। आभा समझ गई कि ये डायल इस बात के लिए थे कि आप को कौन से साल में, किस महीने में, किस दिन और किस समय पहुंचना है।

डेशबोर्ड में नीचे की तरफ बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था, 'पिक-अप।' और उसके नीचे भी महीने, तारीख, साल और समय के लिए चार डायल बने हुए थे।

उस स्क्रीन और सभी डायल को देख कर आभा की समझ में आया कि टाइम ट्रैवल करने वाले के पास अगर उस टाइम मशीन को जब तक वो वहां है, तब तक छिपा कर रखने का कोई ज़रिया नहीं है तो वो आदमी मशीन को छिपाने के लिए उस सुविधा का उपयोग कर सकता है। ऐसा करने पर टाइम मशीन वहां से गायब हो जाएगी और सेट किये गए समय पर वापसी के लिए उस व्यक्ति को लेने के लिए अपने आप ही प्रकट हो जाएगी।

इतना निश्चित था कि अगर टाइम ट्रैवल की अवधि के दौरान वो मशीन किसी दूसरे के हाथ लग जाती है और वो दूसरा व्यक्ति टाइम ट्रैवल करता है, तो पहला व्यक्ति हमेशा के लिए उसी टाइम ज़ोन में रह जाने वाला था। वो वापस उस जगह और उस ज़माने में नहीं आ सकता था, जहाँ से वो टाइम ट्रैवल करने के लिए गया था।

दरवाजे के अंदर की तरफ भी दो बटन लगे हुए थे, एक था 'डोर लॉक' और दूसरा 'डोर ओपन।'

टाइम मशीन के अंदर लगे सभी के सभी बटन नीचे की तरफ थे और ये साफ़ था कि उनको ऑन करने के लिए उन्हें ऊपर करने की जरूरत थी। आभा के तेज दिमाग ने जल्दी ही टाइम मशीन का मैकनिज्म समझ लिया था। वो समझ गई थी कि कैसे उसको टाइम ट्रैवल करना है और कैसे वापस आना है।

लेकिन आभा के सामने सबसे बड़ा सवाल ये था कि क्या सचमुच महेश ने जो मशीन बनाई थी, वो टाइम मशीन थी? क्या टाइम मशीन उतनी ही आसानी से काम करेगी जितना आसान वो उसे समझ रही थी?

हालाँकि महेश के उसकी डायरी में लिखे अंतिम शब्दों से तो यही जाहिर होता था कि वो टाइम मशीन का निर्माण सफलतापूर्वक कर चुका था और अब वो मशीन टाइम ट्रैवल के लिए तैयार थी। हॉस्पिटल में भी उसने जो कहा था, उसका मतलब भी यही निकलता था। बस उसको एक ही बात का विचार हो रहा था कि क्या इस मशीन का ट्रायल हो सकता था कि वो बराबर काम कर रही है या नहीं? अगर मशीन ने बराबर काम नहीं किया तो इसमें सफर करने की कोशिश करने वालों का अंजाम क्या होगा?

तभी आभा की नजर दरवाजे के सामने वाली दीवार पर बने एक खाने पर पड़ी। उसके अंदर कुछ था। उसने हाथ डाल कर उसे निकाला तो वो बहुत पुराना समाचार पत्र 'देहरादून टाइम्स' था। उसकी तारीख थी 22 मई, 1961.

उसके मुख पृष्ठ पर ही एक समाचार छपा था, जिसका शीर्षक था

" एक स्थानीय लड़की की अपनी गाड़ी सहित बंधन झील में गिरने से मौत।"

नीचे उस लड़की की एक तस्वीर भी छपी थी। आभा को तुरंत डॉक्टर ब्रह्मा की बात याद आई कि महेश ओबेरॉय की मंगेतर ज्योति की मौत बंधन झील में डूब कर हुई थी।

एक अनजानी भावना के वशीभूत हो कर आभा ने वो अख़बार उठाया और टाइम मशीन से बाहर निकल आई। बाहर आ कर उसने टाइम मशीन का दरवाज़ा फिर से बंद कर दिया। उसने वहां टेबल पर पड़ी महेश की डायरी और रोल किया हुआ नक्शा उठाया और लाइट बंद कर के गैरेज बाहर आ गई।

गैरेज के ताले के लिए उसने इधर उधर नज़रें दौड़ाई, तो उसे पास ही घास पर ताला पड़ा नजर आया, जिसमे चाबी लगी हुई। थी आभा ने अंदाजा लगाया कि शायद गैरेज बंद करते वक्त ही महेश को दिल का दौरा पड़ा था और ताला उसके हाथ से छूट कर नीचे घास में गिर पड़ा था।

आभा वो ताला उठा कर गैरेज के दरवाजे पर लगाया और चाबी अपने साथ ले कर जिस तरह वहां गई थी, उसी तरह वापस अपने घर पर आ गई। महेश के गैरेज पर ताला लगा कर वो थोड़ी निश्चिंत हो गई थी कि वो टाइम मशीन, जो महेश के गैरेज में थी, किसी दूसरे के हाथ नहीं लगने वाली थी।

उसने किचन प्लेटफॉर्म के नीचे बने एक ड्रावर में गैरेज की चाबी संभाल कर रख दी। अपने साथ पैक कराया हुआ खाना उसने एक प्लेट में डाला और किचन से बाहर आ गई।

खाना खाते हुए उसे करीब करीब यकीन हो गया था कि पिछले जन्म में वो ही ज्योति सरीन थी और महेश की प्रेमिका और मंगेतर थी, जिसकी मौत बंधन झील में डूबने से हो गई थी। उसके साथ घटित होने वाली सारी घटनाएँ और खास कर के महेश की बातें और वो पुराना फोटो एलबम साफ़ साफ़ इस बात की तरफ इशारा कर रहे थे।

खाना खाने के बाद उसने एक सरसरी निगाह महेश की डायरी पर डाली और वो नक्शा खोल कर देखा, जो वो गैरेज से अपने साथ लाई थी। वो टाइम मशीन का ही नक्शा था जिसमें उसके विभिन्न कल-पुर्जों की जानकारी थी।

फिर उसने अख़बार में छपी ज्योति सरीन की मौत की खबर पढ़ी। पढ़ते पढ़ते उसकी आँखों में पानी आ गया था। उसने वो खबर कई बार पढ़ी और फिर उस अख़बार को अपने सीने से लगा कर सो गई।

=====

06

वो शनिवार का दिन था और तारीख थी 22 मई 2010. कॉलेज की छुट्टी थी, इसलिए सुबह जब आभा उठी तो साढ़े आठ बज रहे थे। उसे याद आया कि उस दिन सुबह दस बजे के करीब महेश ओबेरॉय की अंतेष्टि होनी थी।

अंतेष्टि की जगह उसके घर से थोड़ी दूरी पर, उस हॉस्पिटल के नजदीक थी, जहाँ महेश की मौत हुई थी। क्यों कि महेश के परिवार से उसका अपना कोई नहीं था, इसलिए उसका अंतिम संस्कार सरकार की तरफ से हो रहा था।

महेश के मोबाईल फोन में जो नंबर पाये गए थे, उन सभी को महेश की मौत और उसके अंतिम संस्कार की सूचना दे दी गई थी। उसकी पड़ोसी होने के नाते उसे भी ये सूचना मिली थी। आभा ने महेश के अंतिम संस्कार में शामिल होने का फैसला किया।

सुबह की चाय पी कर उसने सफ़ेद ड्रेस पहनी और अपनी गाड़ी ले कर श्मशान की तरफ रवाना हो गई। बीस मिनट की ड्राइव के बाद वो वहां पहुंची। वो समय से थोड़ा पहले ही पहुँच गई थी। अपनी गाड़ी पार्क करते वक्त उसने देखा कि वहां एक एम्बुलेंस पहले से खड़ी थी।

आभा कार से उतरी और वहां बने ऑफ़िस में पहुंची।

“आइये, आप शायद मिस्टर महेश ओबेरॉय के अंतिम संस्कार में आयी हैं।” वहां बैठे एक बुजुर्ग ने मीठे स्वर में पूछा।

“जी।” आभा ने छोटा सा जवाब दिया।

“वहां सामने के हॉल में उनका पार्थिव शरीर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है। आप वहां उनका दर्शन कर सकती है।”

“धन्यवाद।” आभा ने कहा और पलटी।

“और हाँ, एक बात और।” उसने पीछे से कहा। “आप जब तक चाहें यहाँ रुक सकती हैं, मगर मैं आपको बता दूँ कि अंदर अंतिम संस्कार सिर्फ सरकारी आदमी की निगरानी में ही होगा।”

“जी ठीक है।” आभा ने कहा और वो उस हॉल की तरफ बढ़ गई जहाँ महेश का पार्थिव शरीर रखा गया था।

उस बड़े से हॉल में एक तरफ कांच का ताबूत जैसा एक बॉक्स रखा हुआ था जिसके अंदर महेश का निर्जीव शरीर लेटा हुआ था। वहां अभी तक उसके सिवाय अन्य

कोई और नहीं पहुंचा था।

'मिस्टर महेश ने सोचा भी नहीं होगा कि उनकी मौत इतनी एकाकी होगी होगी और उसकी मौत पर कोई अफ़सोस या प्रार्थना करने के लिए भी नहीं आएगा।' आभा के मन में विचार आया।

वो धीरे धीरे चलती हुई ताबूत के पास आई। उसने ताबूत में पड़े महेश के निर्जीव शरीर को देखा और उसकी आँखें भीग गई। उसने हाथ जोड़ कर महेश की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। प्रार्थना कर के जैसे ही वो मुड़ी, वो चौंक गई। उस से तीन कदम की दूरी पर करण मल्होत्रा खड़ा था।

आभा ने अंदाजा लगाया कि वो आदमी शायद महेश ओबेरॉय के एलबम वाला, मुंहासों से भरे चेहरे वाला बदसूरत सा लड़का था, जो अब बूढा हो चुका था।

आभा का अंदाजा सही था। वो करण मल्होत्रा ही था जो उम्र में करीब करीब महेश ओबेरॉय जितना ही था। उसने एक सफ़ेद कुरता पहन रखा था, जो कम से कम बीस साल पुराना लग रहा था। वो शायद गंजा हो चुका था, इसीलिए उसने एक सस्ती सी विग लगा रखी थी। उसके चेहरे पर जवानी के दिनों के, सूख चुके मुहांसों के निशान अभी तक थे।

"क्या आप महेश को जानती हैं?" उसने आभा से सवाल किया।

पता नहीं क्यों, आभा को वो आदमी बिलकुल पसंद नहीं आया था। वो उस से बात भी नहीं करना चाहती थी, मगर उस माहौल में ऐसा करना उसे ठीक नहीं लगा था, इसलिए उसने जवाब दिया,

"कुछ अधिक नहीं, बस सिर्फ नाम। बहुत कम समय के लिए ये मेरे पड़ोसी थे।"

"बहुत कम समय के लिए? मतलब?" करण ने अपनी आँखें सिकोड़ कर पूछा।

"मेरा मतलब है मैं इनके पड़ोस में उसी दिन शाम को रहने आई थी, जिस रात इन्हें दिल का दौरा पड़ा था।" आभा ने दूसरी तरफ देखते हुए जवाब दिया। आभा को तो उस आदमी का चेहरा देखना भी गवारा नहीं था।

"इसका मतलब ये है कि आप और महेश के बीच में थोड़ी बहुत बातचीत तो अवश्य हुई होगी, जिसकी वजह से आप यहाँ मौजूद है।" करण के ऐसे पूछा मानो वो किसी केस की तहकीकात कर रहा हो।

आभा को भी महसूस हुआ जैसे वो उस से बात नहीं कर रहा है, बल्कि पूछताछ कर रहा है। आभा को उसका ऐसा व्यवहार पसंद नहीं आया। उसने अप्रसन्नता से उसकी ओर देखा।

“क्या हम पहले भी मिल चुके हैं?” अचानक करण ने सवाल किया।

ये पूछते हुए उसने आभा के कंधे पर हाथ रखा। आभा को उसका अपने कंधे पर हाथ रखना अच्छा नहीं लगा। उसके हाथ के स्पर्श से वो सहज महसूस नहीं कर रही थी, इसलिए उसने अपना कन्धा नीचे कर के उसके हाथ को अपने कंधे से हटाया।

“नहीं, हम पहले कभी नहीं मिले। लेकिन मिस्टर महेश और कुछ और लोगों का भी ख़याल था कि मैं उन से पहले मिल चुकी हूँ। मैं तो दो तीन हफ़्तों पहले, पहली बार दिल्ली से यहाँ आई हूँ।” आभा ने जवाब दिया।

करण ने आभा की असहजता और उसकी आवाज़ में रुखापन साफ़ महसूस किया।

“माफ़ कीजिये, मेरा इरादा आप को परेशान करने का नहीं है। वैसे मेरा नाम करण मल्होत्रा है। मैं और महेश बचपन से ही अच्छे दोस्त रहे हैं। महेश की मंगेतर ज्योति भी बचपन से हमारी दोस्त थी। बड़े हो कर महेश एक प्रोफ़ेसर बन गया और मैं एक पुलिस ऑफिसर। आप से इतने सवाल पूछने का कारण शायद मेरी नौकरी के दौरान सवाल पूछने की पड़ गई मेरी आदत है। मैं जानता हूँ कि ये पुरानी और गंदी आदत है। मैं अब रिटायर हो गया हूँ, लेकिन मेरी सवाल करने की आदत ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा है।” आभा को सहज महसूस कराने के लिए वो मुस्कराता हुआ बोला।

आभा थोड़ी सहज हुई। करण ने उस से मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। आभा ने शिष्टाचार के नाते उस से हाथ मिलाया और मुस्कराते हुए बोली,

“मैं आभा हूँ,आभा अरोड़ा।”

“है तो बड़ी अजीब सी बात, पर तुम्हारी शक्ल उस लड़की से काफी मिलती है, जिसे मैं जानता था, मगर बहुत साल पहले।” वो गौर से आभा के चेहरे की तरफ देखते हुए बोला।

“मुझे पता है। मेरी सूरत महेश की मंगेतर ज्योति से मिलती है ना?” आभा ने धीरे से कहा।

अब चौंकने की बारी करण जैसे रिटायर्ड पुलिस अफसर की थी।

“तुम उसके बारे में कैसे जानती हो? ये तो बहुत पुरानी बात है।”

“इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। जिस दिन मैं मिस्टर महेश से पहली बार मिली थी, उन्होंने दिल का दौरा पड़ने से पहले मेरे लिए मेरे घर के बाहर एक फोटो एलबम रख छोड़ा था और मैंने उसमे ज्योति की कुछ तस्वीरें देखी है।”

“क्या तुम वक्त महेश के पास थी, जिस वक्त उसको दिल का दौरा पड़ा था?”

आभा को फिर उसकी बातचीत करने का तरीका एक पुलिस वाले द्वारा पूछताछ करने जैसा लगा।

“नहीं, मैं उस वक्त अपने घर में सो रही थी। महेश जी के दूसरी तरफ के पड़ोसी मिस्टर रोहित ने महेश जी को लॉन में पड़े हुए देखा था और उन्होंने ही पुलिस और एम्बुलेंस को फोन किया था।”

करण कुछ पल सोचता रहा और अचानक चौंक कर बोला,

“तो क्या तुम महेश के दूसरी तरफ के सफ़ेद घर में रहने आई हो?”

आभा मुंह से तो कुछ नहीं बोली, मगर उसने अपनी गर्दन स्वीकृति में हिलाई।

“मतलब तुम ने ज्योति का ही पुराना घर ख़रीदा है?” कहते हुए उसकी आँखें आश्चर्य के मारे फट पड़ी थी।

आभा मुस्कुरा कर रह गई।

“मगर मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कि महेश ने वो एलबम तुम को क्यों दिया? मुझे इसके पीछे का कारण समझ में नहीं आता।”

“अभी आप ने खुद ही तो बताया था कि मेरा चेहरा उनकी मंगेतर से मिलता है, जिसकी उसी दिन मौत हो गई थी, जिस दिन उनकी शादी होने वाली थी।”

“मैंने ऐसा कब बताया?” करण पुलिसिये स्वर में बोला। “मैंने तो तुम को सिर्फ इतना बताया कि तुम्हारी सूरत ज्योति से मिलती है। ज्योति की मौत का तो मैंने जिक्र ही नहीं किया था। फिर ज्योति की मौत के बारे में तुम्हें कैसे पता चला?”

“मिस्टर करण मल्होत्रा, रिटायर्ड पुलिस अफसर, आप क्या समझते हैं कि केवल आप ही ये जानते हैं कि मेरी सूरत ज्योति से मिलती है? आप के बिना ही बताये मुझे भी ये बात पता है। आप की तरह बहुत लोगों को पता है। जिन को ज्योति का चेहरा

याद है, उनको ये भी याद है कि ज्योति की मौत कब, कहाँ और कैसे हुई थी। बस, मुझे भी पता चल गया। इसमें भेद की क्या बात है?" आभा थोड़े सख्त स्वर में बोली।

"हाँ, मुझे इस बात का अंदाजा पहले ही हो जाना था। लगता है मैं अब सचमुच बूढ़ा हो चला हूँ।" उसने मुस्कराते हुए कहा। "मुझे याद है, वो दिन महेश की जिंदगी का सब से अच्छा दिन होने वाला था, मगर वही दिन उसकी जिंदगी का सब से बुरा दिन था।"

पता नहीं क्यों, आभा को लग रहा था कि करण अपने आप को महेश का मित्र कहता था, पर उस के चेहरे से बिलकुल नहीं झलक रहा था कि उसे महेश की मौत का दुःख है। वो तो उल्टे आभा से पूछताछ करने में जुटा हुआ था।

"अगर तुम को बुरा ना लगे, तो क्या वो एलबम तुम मुझे दे सकती हो?"

"आप उसका क्या करेंगे?"

"अगर तुम नहीं देना चाहती तो कोई बात नहीं। मैं तो उसको महेश की यादगार के तौर पर रखना चाहता हूँ।"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं। आप को मेरे घर का पता अब मालूम हो गया है, आप जब चाहें, वो एलबम मुझ से ले सकते हैं।"

"धन्यवाद।"

"मुझे कुछ काम है, इसलिए मैं अब चलूंगी।"

"हाँ... हाँ..... जरूर। तुम से मिल कर अच्छा लगा आभा।"

और इस से पहले कि वो आभा से मिलाने के लिए अपना हाथ आगे करता, आभा मुड़ी और बाहर की तरफ चल दी। उसे करण का चेहरा और उसका स्पर्श पसंद नहीं आया था। पीछे से करण मल्होत्रा आभा को शक भरी निगाहों से देखता रहा।

आभा जब दरवाजे के पास पहुंची तो सामने से तेजी से आ रहे जय चौहान से टकराते टकराते बची। जय चौहान भी महेश ओबेरॉय और करण मल्होत्रा की ही उम्र के आस पास का ही था और महेश के मित्रों में से एक था। बारह साल पहले वो जनरल मोटर्स से रिटायर हुआ था।

"करण!" जय ने पुकारा और उसके पास आ कर उसके गले लग गया।

“जय, मेरे यार।” करण उसके गले लगते हुए बोला, मगर उसकी आँखें बाहर जा रही आभा पर ही जमी हुई थी।

फिर करण जय से अलग होता हुआ बोला,

“महेश वहां है।” और उसने ताबूत की तरफ इशारा किया। “तुम उसके पास चलो, मैं अभी आया।”

इतना कह कर वो बिना जय की प्रतिक्रिया देखे बाहर की ओर लपका। जय अपनी जगह खड़ा हुआ आश्चर्य से करण को तेजी से बाहर जाते हुए देखता रहा। उसे करण का वो व्यवहार कुछ अजीब सा लगा, मगर उसको पता था कि करण बचपन से ही ऐसा है। जय अपना सर झुकाये महेश के पार्थिव शरीर के पास आया।

उधर बाहर करण लगभग दौड़ता हुआ पार्किंग एरिया के पास पहुंचा तो उसने आभा को अपनी गाड़ी में बैठते हुए देखा। गाड़ी पर दिल्ली की नंबर प्लेट लगी हुई थी। करण ने अपनी जेब से एक छोटी सी डायरी और पेन निकाला, और आभा की गाड़ी का नंबर नोट किया। आभा ने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और वहां से निकल गई।

करण ने डायरी और पेन वापस अपनी जेब में डाला और पलटा। तभी पीछे से आवाज़ आई,

“अरे.... करण!”

करण ने पलट कर देखा। आवाज़ लगाने वाला जगदीश पुरोहित था, उसके बचपन का मित्र। जगदीश भी उसी की उम्र का बूढा हो चुका आदमी था। उसके सर पर घने सफ़ेद बाल थे वो भी जनरल मोटर्स से दस साल पहले रिटायर हो चुका था।

“हेल्लो जगदीश।” करण बोला, पर उसकी निगाहें बाहर सीधी सड़क पर जाती आभा पर थी।

“इस तरह बाहर क्या देख रहे हो? सब ठीक तो है ना?” जगदीश पास आता हुआ बोला।

“अरे, कुछ खास नहीं जगदीश। कैसे हो तुम?”

“ठीक हूँ यार, पर अब दोस्तों के अंतिम संस्कार में जा जा कर थक गया हूँ। एक के बाद एक जा रहा है।”

“मैं तुम्हारा दुःख समझ सकता हूँ यार। आओ अंदर महेश के पास चलें।” करण ने जगदीश का हाथ पकड़ा और वे दोनों हॉल में आ गए, जहाँ जय महेश के पार्थिव

शरीर के पास खड़ा था।

थोड़ी देर बाद वहां डॉक्टर ब्रह्मा भी पहुंचे। तय समय पर महेश का पार्थिव शरीर सरकारी कर्मचारियों द्वारा अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया और फिर डॉक्टर ब्रह्मा, करण, जय और जगदीश, सभी अपनी अपनी गाड़ियों में बैठ कर वहां से रवाना हो गए।

आधे घंटे बाद करण पुलिस हेड क़्वार्टर पहुंचा। रिटायर होने के बाद भी उसका वहां आना जाना लगा रहता था, इसलिए वहां के लोग उसे भूले नहीं थे। लोगों के अभिवादन का जवाब देते हुए वो इंस्पेक्टर सूरज वालिया की टेबल पर पहुंचा।

"आइये करण सर। बहुत दिनों बाद दर्शन दिए? कैसी चल रही है रिटायर्ड लाइफ?"

"मजे में गुज़र रही है।"

"कहिये कैसे आना हुआ?"

"मुझे दिल्ली की नंबर प्लेट वाली एक कार की मालकिन के बारे में जानकारी चाहिए। उसका नाम आभा अरोड़ा है।"

"क्या प्राइवेट जासूसी का धंधा शुरू कर दिया है सर?"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मुझे उस लड़की पर थोड़ा शक है। रिटायर हो गया तो क्या, आखिर हूँ तो पुलिस वाला ही ना?"

"मुझे याद है, आप हमेशा कहा करते थे कि कोई एक बार अगर पुलिस वाला बन गया तो वो हमेशा पुलिस वाला ही रहता है। उसकी शक करने की आदत कभी नहीं छूटती।"

करण मुस्कुराया।

"मैं चाहता हूँ कि तुम इस दिल्ली की आभा अरोड़ा और उसकी गाड़ी के बारे में सर्च करो। देखो कि क्या इस लड़की का कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड है, और क्या इसकी गाड़ी कभी किसी अपराध के सिलसिले में पकड़ी गई थी? ये रहा उसकी गाड़ी का नंबर।" करण ने अपनी डायरी का वो पेज खोल कर उसे दी, जिस पर आभा की गाड़ी का नंबर लिखा हुआ था।

"आप चाय पीजिये, तब तक मैं सर्च करता हूँ।" इतना कह कर सूरज ने इंटरकॉम पर करण के लिए चाय का आदेश दिया।

दो मिनट में ही करण के लिए चाय हाज़िर हो गई। उधर सूरज ने एक प्रोग्राम में गाड़ी का नंबर फीड किया और सर्च बटन दबाया। सर्च शुरू हो गई। तीन चार मिनट बाद ही सूरज बोला,

“गाड़ी आभा अरोड़ा के नाम ही रजिस्टर है कभी इस गाड़ी का चालान तक नहीं हुआ है। अब देखते हैं इस आभा अरोड़ा को।” इतना कह कर उसने एक नए प्रोग्राम में आभा अरोड़ा का नाम सर्च में डाला।

“ये भी बिलकुल क्लीन है सर। इसका कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं है।” थोड़ी देर बाद सूरज बोला।

“ओके सूरज, थैंक्स फॉर योर हेल्प।” कहते हुए करण उठ खड़ा हुआ और अपनी डायरी उठा कर उसने फिर से अपनी जेब में रख ली।

उधर आभा अपने घर पहुंची और नहा धो कर उसने नाश्ता किया। नाश्ता करने के बाद वो मार्केट गई और लगभग पूरा दिन मार्केट में ख़रीददारी करती रही। घर के लिए उसने थोड़ा जरूरी फर्नीचर खरीदा। वो एक पलंग भी खरीदना चाहती थी, मगर वो उसे जरा मंहगा लगा।

आभा क्रेडिट कार्ड की बजाय डेबिट कार्ड पर ही खर्च करना पसंद करती थी। कर्ज़ा ले कर खर्च करना उसे पसंद नहीं था। अभी जितने पैसे उसके बैंक अकाउंट में थे, उसने उसी हिसाब से ख़रीददारी की। बाकी की बड़ी ख़रीददारी उसने अपना वेतन मिलने के बाद करने की ठानी।

उसने 32” का एक टीवी और एक डीवीडी प्लेयर खरीदा। देखने के लिए उसने कुछ डीवीडी भी खरीदी। अभी उसे केबल कनेक्शन भी लेना था। घर आ कर उसने अपने बेडरूम में एक टेबल पर टीवी और डीवीडी प्लेयर रखा और उसको टीवी से कनेक्ट किया।

रात को खाना खाने के बाद, सोने से पहले उसने एक डीवीडी चला कर एक फिल्म भी देखी और फिर नीचे बिछाई अपनी दरी पर सो गई।

अगला दिन, रविवार, 23 मई भी आभा के लिए काफी व्यस्त दिन था। सबसे पहले तो सुबह उठ कर अपने घर की अच्छी तरह सफाई की और फिर दोपहर बाद बाजार जा कर जरूरी खाने पीने चीजें और किचन का कुछ सामान खरीदा।

रात का खाना आभा ने अपनी किचन में बनाया। किचन में अब उसके पास खाने पीने का पूरा सामान और जरूरत के सभी बर्तन थे। खाना खा कर उसने कपड़े

बदले। उसने बिना बाहों वाला एक टी-शर्ट और एक बरमूड़ा पहना और महेश का फोटो एलबम ले कर अपनी दरी पर दीवार का सहारा ले कर बैठ गई।

वो उसमे लगी तस्वीरें फिर से देख ही रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने एलबम नीचे रखा और दरवाजे की तरफ बढ़ी। उसने दरवाजे पर लगी 'आइ होल' पर आँख लगा कर बाहर देखा तो उसका मूड ख़राब हो गया।

'ये कमीना यहाँ क्या कर रहा है?' वो बड़बड़ाई और फिर उसने दरवाज़ा खोला। बाहर अपने होठों पर एक गंदी सी मुस्कान लिए करण मल्होत्रा खड़ा था। करण ने आभा को उन कपड़ों में देखा तो उस उम्र में भी उसकी लार सी टपक गई। उसकी आँखों में अश्लील भाव पैदा हुए, जिन्हें आभा ने साफ़ साफ़ देखा।

"कहिये।" आभा ने दरवाजे पर खड़े खड़े ही उस से पूछा।

मतलब साफ़ था, वो नहीं चाहती थी कि करण उसके घर के अंदर आये।

"माफ़ कीजिये कि रात के इस वक्त मैंने आप को परेशान किया।" वो बोल रहा था, मगर उसकी नजर आभा के सीने पर जमी हुई थी। "इस से पहले कि मैं इस बात को भूल जाता, मैं महेश का फोटो एलबम लेने आया हूँ।"

"आप यहीं रुकिए, मैं लाती हूँ।" आभा ने रूखे स्वर में कहा और दरवाज़ा बंद कर लिया।

उसके उस रूखेपन के पीछे बड़ा कारण ये था कि वो नहीं चाहती थी कि करण फिर किसी दूसरे बहाने से उसके घर आये। वो उसकी शक्ल भी नहीं देखना चाहती थी। उसे यकीन था कि उसके ऐसा करने से करण भी इस बात को अच्छी तरह समझ जायेगा।

आभा फिर से बेडरूम में आई और उसने एलबम उठाया। फिर ना जाने क्या सोच कर उसने एलबम खोला और महेश के साथ ज्योति की झील के किनारे वाली तस्वीर उस एलबम से निकाल ली। उसने गाड़ी के पास खड़े महेश और ज्योति की तस्वीर भी निकाल ली। उसने वे दोनों तस्वीरें अपनी दरी पर रखी और एलबम ले कर दरवाजे पर वापस आई।

दरवाज़ा फिर से खोल कर उसने वो एलबम करण की तरफ बढ़ाया और बोली,

"ये लीजिये।"

करण ने आभा से एलबम लेते हुए अपना हाथ जानबूझ कर आभा के हाथ से टकराया जिसे आभा ने साफ़ साफ़ महसूस किया। करण ने एलबम अपने हाथ में थामा।

“गुड नाइट।” आभा बोली।

“गुड नाइट और धन्यवाद।” करण ने उसी गंदी सी मुस्कान से जवाब दिया।

आभा ने दरवाज़ा वापस बंद कर लिया। उसने बेडरूम की खिड़की से देखा कि करण एलबम ले कर बाहर की तरफ जा रहा था, मगर बीच बीच में दो तीन बार उसने मुड़ मुड़ कर आभा के घर की तरफ देखा था।

‘उम्मीद है कि ये आदमी अब फिर से यहाँ नहीं आएगा।’ आभा ने अपने आप से कहा।

वो वापस अपनी दरी के पास आई और दोनों तस्वीरें उठा कर उसने आलमारी खोली। सामने ही वो पुराना अख़बार पड़ा था जिसने ज्योति की मौत की खबर छपी थी। उसकी आँखें गीली हो गई।

‘मुझे क्यों इस लड़की की मौत पर इतना दुःख हो रहा है जिसे मैं जानती तक नहीं और जो 1961 में मर चुकी है? कहीं मेरा शक सही तो नहीं है कि वो लड़की मैं खुद ही थी?” वो मन ही मन बोली। उसने दोनों तस्वीरें उस अखबार के ऊपर रख कर आलमारी के पल्ले बंद कर दिए।

हॉल में आ कर वो किचन में आई। उसने ड्रावर खोल कर महेश के गैरेज की चाबी निकाली और स्लाइडिंग डोर खोल कर बाहर लॉन में आ गई। अपने लॉन में चलते हुए पीछे की तरफ गई और वो छोटा सा दरवाज़ा खोल कर महेश के लॉन में आ गई।

जल्दी जल्दी चलती हुई वो महेश के गैरेज की तरफ बढ़ी। ताला खोल कर वो गैरेज के अंदर आई और दरवाज़ा फिर से बंद कर के उसने बत्ती जलाई। धीरे धीरे चलती हुई वो टाइम मशीन के पास पहुंची। टाइम मशीन के दरवाजे का हैंडल पकड़ कर उसने उसका दरवाज़ा खोला, तो हलकी सी आवाज़ के साथ दरवाज़ा ऊपर की तरफ खुल गया।

टाइम मशीन के अंदर जा कर वो सीट पर बैठ गई। उसने वहां लगे सभी बटन और इंडिकेटर को फिर से देखा।

‘इसको ऑपरेट करना मुश्किल काम नहीं है। सब साफ़ साफ़ समझ में आ रहा है।’ उसने विचार किया। करीब दस मिनट तक उस मशीन में बैठी उसका अध्ययन करती रही और बाद में दरवाज़ा खोल कर वो वापस टाइम मशीन से बाहर आ गई और उसका दरवाज़ा बंद किया।

बत्ती बंद कर के वो गैरेज से बाहर आई और जिस तरह वो वहां गई थी, उसी तरह, उसी रास्ते से, घास पर चलती हुई वो वापस अपने घर आ गई। उसने गैरेज की चाबी फिर से अपनी किचन के ड्रावर में रखी और अपने बेडरूम में आ गई।

उधर अपने घर में करण मल्होत्रा अपने घर में एक कुर्सी पर बैठा शराब पी रहा था। उसके सामने टेबल पर शराब की बोतल, शराब से भरा गिलास और पानी की एक बोतल रखी थी। अब तक वो पांच पेग पी चुका था और छठा पैग उसके हाथ में था।

उसे नशा हो रहा था, और इसका मुख्य कारण था कि वो शराब में बहुत ही कम पानी मिला रहा था। महेश का फोटो एलबम उसकी गोद में रखा हुआ था और वो उसमे लगी तस्वीरों को बार बार देख रहा था। उसका ध्यान सिर्फ ज्योति की तस्वीरों पर ही था।

उसने बड़े प्यार से ज्योति की एक तस्वीर पर हाथ फिराया तो उसकी आँखों में वासना के डोरे तैरने लगे। उम्र की वजह से उसके अंगों में पूरा तनाव नहीं आ रहा था, मगर वो अपनी आँखें बंद कर के ज्योति के साथ सहवास की कल्पना करने लगा। उसने ज्योति की तस्वीर को एलबम सहित पहले अपने सीने से लगाया और फिर एलबम उल्टा कर के अपनी गोद में दबाया।

उसने ज्योति की तस्वीर को चूमा और फिर से उसे अपनी गोद में दबाया तो उसे महसूस हुआ कि उसके कपड़े ख़राब हो चुके हैं। अपने पाजामे में उसको गीला गीला महसूस हुआ।

उसे अपने आप पर गुस्सा सा आया और एलबम नीचे रख कर वो बाथरूम में आया और खुद को साफ़ करने लगा।

=====

07

वो सुबह थी सोमवार, 24 मई 2010 की। आभा अपने ऑफ़िस में बैठी कुछ जरूरी कागज़ात टाइप के रही थी। अपना काम पूरा कर के, कागज़ात ले कर वो डॉक्टर

ब्रह्मा के ऑफ़िस में पहुंची। डॉक्टर कुछ पढ़ने में व्यस्त थे। आभा ने कागज़ात टेबल पर रखे और उनके सामने कुर्सी पर बैठ गई।

कुछ देर बाद डॉक्टर ने नज़रें उठा कर आभा की तरफ मुस्कुराते हुए देखा।

“डॉक्टर, मुझे आप से कुछ बात करनी है, हो सकता है आप को मेरी बात अजीब लगे, पर इस से मेरी जिज्ञासा शांत हो जाएगी।”

“बोलो आभा, निडर हो कर बोलो।”

बोलने से पहले आभा थोड़ी हिचकिचाई जैसे विचार कर रही हो कि बात कैसे शुरू की जाय। डॉक्टर धैर्य के साथ उसके बोलने का इंतजार कर रहे थे।

“डॉक्टर, क्या आप को यकीन है कि टाइम ट्रैवल संभव है?” आखिर आभा ने अपने मन की बात पूछ ही ली।

“बहुत बड़ा सवाल है।” डॉक्टर ने जवाब दिया और फिर कुछ सोच कर बोले, “लेकिन मुझे लगता है कि ये संभव है। लेकिन अभी तक इस बात का कोई सबूत नहीं है और मैंने सुना नहीं है कि किसी ने अब तक टाइम ट्रैवल किया है। लेकिन तुम ये क्यों पूछ रही हो?”

“मैं खुद नहीं जानती डॉक्टर कि मैंने आप से ये सवाल क्यों किया है। दरअसल जब से आप ने मुझे बताया कि महेश ओबेरॉय शायद टाइम मशीन बना रहा था, तब से मन में इसके लिए जिज्ञासा सी है। आखिर महेश ओबेरॉय ये टाइम मशीन क्यों बना रहा था?”

“मैंने तुम्हें बताया था कि पूरी तरह ये कोई भी नहीं जान पाया कि वास्तव में महेश टाइम मशीन बना रहा था। यहाँ कैम्पस में इस तरह की बातें या अफ़वाह थी। लोगों का कहना था कि वो समय से पीछे जा कर अपनी मंगेतर को बचाना चाहता था। लेकिन मेरा अनुमान है कि अगर महेश टाइम ट्रैवल करता भी, तो ये करना शायद संभव नहीं था, क्यों की आज की तारीख में वो जिन्दा नहीं है।”

“शायद आप सही कह रहे हैं डॉक्टर।” आभा बोली। “मैंने तो बस अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए आप को परेशान किया है।”

“कोई बात नहीं आभा। मुझे वे लोग पसंद है जो कुछ नया जानना या सीखना चाहते हैं।” डॉक्टर मुस्कराते हुए बोला।

आभा कुर्सी से उठते उठते फिर से बैठ गई और उसने डॉक्टर से एक और सवाल किया,

“डॉक्टर, जैसा कि आप ने बताया कि आप का मानना है कि टाइम ट्रैवल संभव है। मान लीजिये कि अगर महेश ओबेरॉय ने सचमुच ही टाइम मशीन बनाई है, तो क्या आप उस में सफर कर के वापस अपने पुराने दिनों में जाना पसंद करते?”

“तुम ने यही पूछा ना कि क्या मैं अपनी पुरानी जिंदगी फिर से जीना चाहता हूँ? तो मेरा जवाब है कि नहीं। मैं अपनी पुरानी जिंदगी में वापस नहीं लौटना चाहता। मेरे लिए वो कोई बहुत अच्छी जिंदगी नहीं थी। आज जो मैं हूँ, मैं उस से खुश हूँ।” डॉक्टर ने बिना कुछ विचार किए जवाब दिया।

“थैंक्स डॉक्टर, वैसे एक छोटा सा काम और था। क्या मुझे तीन चार दिन की छुट्टी मिल सकती है?”

डॉक्टर ने कुछ पल सोचा और फिर बोला,

“छुट्टी मिलने में दिक्कत नहीं है, पर मैं इसका कारण जानना चाहूँगा। कहीं तुम टाइम ट्रैवल तो नहीं करना चाहती?” डॉक्टर ने कहा और जोर से हंसा।

आभा सकते में आ गई। उसको कोई जवाब देते नहीं बना।

“अरे, तुम तो सीरियस हो गई। मैं तो मज़ाक कर रहा था। छुट्टी मिल जाएगी तुम्हें। एक एप्लीकेशन दे दो और अपनी छुट्टी एंजॉय करो। ऑल द बेस्ट।”

आभा का मन ये सुन कर कुछ शांत हुआ और वो अपने ऑफ़िस में आ गई। दरअसल जो बात डॉक्टर ने मज़ाक में कही थी, वो सच था। पिछले सप्ताह उसके साथ बीती घटनाएँ इस बात की तरफ पक्का इशारा कर रही थी कि उसका महेश की मंगेतर ज्योति से जरूर कोई ना कोई सम्बन्ध अवश्य था।

इस बात की भी प्रबल संभावना थी कि शायद वो खुद ही ज्योति थी। मरने से पहले महेश ने जो कुछ कहा था और उसके बाद महेश के गैरेज में टाइम मशीन देख कर आभा को करीब करीब यकीन हो गया था कि महेश सचमुच इतने सालों की मेहनत के बाद टाइम मशीन बना ली थी।

आभा को अब ज्योति की मौत का दिन मालूम था। वो कैसे मरी थी, ये भी पता था। आभा ने सोचा कि दो दिन की ही तो बात है, अगर महेश ने सचमुच टाइम मशीन

बना ली है तो वो टाइम ट्रैवल कर के, ज्योति की जान बचा कर, दो दिन में वापस आ सकती थी। इसमें बुरा क्या है?

ज्योति की तस्वीर देख कर उसे उसके साथ लगाव सा हो गया था। उसने वो अभूतपूर्व अनुभव करने की ठान ली थी। और सब से बड़ी बात तो ये थी कि उसने महेश से ज्योति की जान बचाने का वायदा भी किया था।

और अगर महेश ओबेरॉय टाइम मशीन सफलतापूर्वक नहीं बना पाया था, तो भी वो वर्तमान में तो थी ही, दो दिन घर पर आराम कर के, देहरादून घूम कर, वो वापस काम पर लौट आएगी। उसने निश्चय कर लिया था।

लंच के बाद वो कल्चर डिपार्टमेंट पहुंची। वहां की इंचार्ज मनीषा से उसकी जान पहचान हो चुकी थी।

"अरे आभा? आओ, कैसे आना हुआ?" मनीषा उसे देखते ही बोली।

"दरअसल मुझे यहाँ से एक ड्रेस चाहिए। क्या तुम मुझे दो दिन के लिए दे सकती हो?"

"क्यों नहीं? बताओ कैसी ड्रेस चाहिए तुम्हें?"

"मुझे कोई ऐसी ड्रेस चाहिए जो लड़कियां 1960 के आसपास पहनती थी।"

"क्या तुम किसी रेट्रो पार्टी में जा रही हो?"

"हाँ, एक बहुत पुरानी सहेली के जन्मदिन की पार्टी है। सभी लोग 1960 की फैशन के कपड़े पहन कर आने वाले हैं।"

"क्या वो इसी कॉलेज की है?"

"नहीं, मेरे पड़ोस में रहती है।"

मनीषा उसको ले कर एक जगह ले आयी जहाँ पुराने फैशन की कई ड्रेसें लटकी हुई थी।

"ये रही 60 के ज़माने की कुछ ड्रेसें। जो भी पसंद आये, ले लो।" मनीषा ने कहा।

मैंने एक नीले रंग ड्रेस पसंद की जिस पर फूलों की कढ़ाई थी।

"ये कैसी रहेगी?" मैंने मनीषा से पूछा।

"बहुत अच्छी है और लगता है कि तुम को फिट भी आएगी।"

“तो फिर मैं यही ले लेती हूँ।”

“मेरे पास उस ज़माने का एक पर्स भी है, वो भी ले जाओ।” ये कह कर मनीषा ने एक आलमारी से आभा को एक सफ़ेद रंग का एक छोटा पर्स दिया। दोनों चीजें ले कर आभा अपने ऑफ़िस में आ गई।

शाम को ऑफ़िस से निकल कर आभा सीधी बाजार गई। वहां उसने ‘सूजी हेयर स्टाइल’ तलाश किया और अंदर पहुंची।

“मेरा नाम आभा है। मेरा अभी का अपॉइंटमेंट है।” उसने रिसेप्शन पर कहा।

वहां बैठी लड़की ने एक डायरी खोल कर देखा और बोली,

“हाँ, आप का अपॉइंटमेंट सूजी मेम के साथ है।” उसने कहा और वो आभा को ले कर एक केबिन में पहुंची।

वहां 22 - 24 साल की एक सुन्दर लड़की बैठी हुई थी।

“ये मिस आभा है। इनका आप के साथ अपॉइंटमेंट है।” रिसेप्शनिस्ट ने उस से कहा और पलट कर वापस चली गई।

“हाँ तो मिस आभा, कैसी हेयर स्टाइल चाहिए आप को?” सूजी ने व्यापारिक मुस्कान के साथ पूछा।

“मुझे 1960 की फैशन का हेयर स्टाइल चाहिए, कुछ ऐसा।” इतना कह कर आभा ने उसे ज्योति का फोटो दिखाया।

सूजी ने फोटो को ध्यान से देखा और बोली,

“ये तो काफी पुराना और मुश्किल हेयर स्टाइल है। मैं शायद ये ना कर पाऊँ। शायद मेरी मम्मी ये कर पाये। आप अगर थोड़ी देर रुकें, तो मैं अपनी मम्मी को बुला लाती हूँ। यहीं ऊपर ही हमारा घर है।” सूजी बोली।

“मैं रूकती हूँ। पर मुझे यही स्टाइल चाहिए।” आभा ने कहा।

सूजी आभा को वहां बैठा छोड़ कर बाहर निकल गई। करीब दस मिनट के बाद वो लौटी तो उसके साथ कोई 65 साल की बुजुर्ग महिला थी।

“मम्मी, ये मिस आभा है, इनको आप के ज़माने का हेयर स्टाइल चाहिए।”

“बिलकुल ऐसा।” आभा ने उसको ज्योति का फोटो दिखाया।

“हो जायेगा बेटी।” उस बुजुर्ग महिला ने कहा और वो काम पर लग गई।

चालीस मिनट बाद जब आभा वहां से निकली तो वो बिलकुल अलग और अजीब दिख रही थी। अलग इसलिए कि उसकी हेयरस्टाइल 1960 के ज़माने की थी और अजीब इसलिए कि उसने टाइट जीन्स, टी-शर्ट और हील वाली सैंडल पहनी थी।

वहां से निकल कर आभा जूतों की दुकान में गई और जब वहां से निकली तो उसके हाथ में एक शॉपिंग बैग थी। एक जगह रुक कर आभा ने अपने पास पांच सौ और एक हजार के नोटों के दस दस रुपयों में छुट्टे कराए।

घर पहुंच कर उसने खाना बनाया और खाना खा कर बेडरूम में आ गई। आज रात ही उसको टाइम ट्रैवल करना था। मानसिक तौर पर वो इसके लिए बिल्कुल तैयार थी। दो दिन में वो किसी की जिंदगी बचा कर वापस आ जाने वाली थी।

अपने बेडरूम में सोच में डूबी हुई आभा बेचैनी से टहल रही थी। वो थोड़ी उत्साहित भी थी और थोड़ी नर्वस भी। वो अपने आप को मानसिक तौर पर टाइम ट्रैवल के लिए तैयार कर रही थी। उसके एक हाथ में वो तस्वीर थी, जिसमे वो अपने मंगेतर के साथ नजर आ रही थी और दूसरे हाथ में ज्योति और महेश की तस्वीर थी। वो बारी बारी से दोनों तस्वीरें देख रही थी।

'मुझे क्यों ऐसा लग रहा है कि मैं ज्योति को जानती हूँ। क्या मैं खुद ही ज्योति थी?' उसके दिमाग में वही पुराने सवाल घूमने लगे।

फिर उसने अपने सर को झटक कर उन विचारों को ये सोच कर झटका कि जो होगा होगा सामने आ ही जायेगा। उसने एक लंबी सांस ली और अपने आप को मजबूत किया। दृढ़ इरादे के साथ वो एक अनोखे सफर के लिए तैयार होने लग गई।

अलमारी से उसने अपना बैक बैग निकाला। उसने बैग में अपनी ऊँची एड़ियों वाली सैंडल और अपने मंगेतर के साथ की अपनी तस्वीर डाली। फिर उसने वो ब्लू ड्रेस निकाली, जो वो कॉलेज से लाई थी। उसने उसे अच्छी तरह समेटा और ठीक से बैग में रखा।

उसने कॉलेज से ही लाया गया छोटा पर्स निकाला और बाजार से छुट्टे कराये गए रुपये उसमे डाल कर उसको बंद कर दिया। हालांकि सभी नोट नए ज़माने के थे, पर उसको यकीन था कि कोई भी उन नोटों पर छपी तारीख पर ध्यान नहीं देने वाला था। उसने वो पर्स भी अपनी बैग में डाल लिया। अपने घर की चाबियाँ भी उसने बैग में डाल ली।

उसने शॉपिंग बैग से उसी दिन खरीदे गए सैंडल निकाल कर पहन लिए। आलमारी से उसने वो पुराना अख़बार निकाला और साथ ही निकाली ज्योति की महेश के साथ वो तस्वीरें जो उसने एलबम से निकाली थी। उसने दोनों तस्वीरें अपनी बैग में डाली और बैग की ज़िप बंद कर दी।

पुराना अख़बार उसने अपनी दरी पर डाल दिया, उसे अपने साथ ले जाने की उसने जरूरत महसूस नहीं की। उसके बाद वो किचन में आई और महेश के गैरेज की चाबी निकाल कर अपनी जीन्स की जेब में रखी। फिर वो वापस अपने बेडरूम में आई और अपने कंधे पर बैग लटकाया।

एक मिनट तक वो सोचती रही कि उसने सभी जरूरी सामान, जो उसे अपने साथ ले जाना था, ले लिया है कि नहीं? कहीं वो कुछ भूल तो नहीं रही है? सब कुछ ठीक जान कर उसने एक लंबी सांस ली। अब वो एक अभूतपूर्व टाइम ट्रैवल के लिए तैयार थी।

उसने बेडरूम की बत्ती बंद की और नाइट बल्ब जला दिया। नाइट बल्ब की रौशनी भी काफी थी और उस रौशनी में कमरे में सब कुछ साफ़ साफ़ देखा जा सकता था। बेडरूम का दरवाज़ा बंद कर के, वो किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोल कर बाहर आ गई दरवाज़ा फिर से बंद कर दिया।

अपने लॉन में खड़े हो कर उसने एक नजर महेश के लॉन और उसके गैरेज पर डाली। फिर कंधे पर अपनी बैग लटकाये हुए वो लॉन के पिछवाड़े की तरफ चल दी।

उधर अपने घर में अकेला बैठा करण शराब पीये जा रहा था। उसके हाथ में महेश का पुराना अलबम था। वो बार बार एलबम के पन्ने पलटता हुआ ज्योति की तस्वीरें देख रहा था। ज्योति की तस्वीरें देखते हुए उसकी आँखों में वही, पिछले दिन की तरह वासना के डोरे तैरने लगे।

अचानक, एलबम के पन्ने पलटते हुए उसकी पुलिसिया आँखों से ये बात छिपी नहीं रही कि उस एलबम से दो तस्वीरें निकाली गई है। उन तस्वीरों के निशान तो एलबम में थे, पर तस्वीरें गायब थी।

‘जरूर ये तस्वीरें आभा ने ही निकाली है। किस की तस्वीर निकाली उसने? कौन है वो? आखिर महेश ने उसे वो एलबम क्यों दिया था? क्यों उसकी सूरत ज्योति से मिलती है? क्या चाहती है वो? वो यहाँ क्यों आई है? क्या पता है उसको ज्योति के बारे में? महेश ने उसको क्या क्या बताया है?”

उसके दिमाग में ये सब सवाल घूमने लगे और उसे लगा कि सब सवालों का जवाब मिलना बहुत जरूरी है। शराब के साथ साथ उसके दिमाग पर सवालों का भी कब्ज़ा हो चुका था।

'अभी जा कर मिलता हूँ उस आभा की बच्ची से। मैं रिटायर हो गया हूँ तो क्या हुआ? हूँ तो पुलिस वाला ही। आभा को मेरे सारे सवालों के जवाब देने ही होंगे।' उसने मन ही मन कहा और अपनी गाड़ी में बैठ कर देहरादून स्ट्रीट की तरफ, आभा से मिलने चल दिया।

उधर धीरे धीरे, पर दृढ़ क़दमों से चलते हुए आभा ने अपना लॉन पार कर के, छोटा सा दरवाज़ा खोल कर महेश के लॉन में कदम रखा। उसने सावधानीपूर्वक चारों ओर देखा। रास्ता साफ़ था और किसी की भी नज़रें उस पर नहीं थी। सधे क़दमों के साथ वो गैरेज के दरवाजे तक पहुंची।

अपनी जेब से चाबी निकाल कर उसने गैरेज का ताला खोला और दरवाज़ा खोल कर अंदर आ गई। उसने लाइट ऑन की और दरवाज़ा भिड़ा दिया। दरवाज़ा अंदर से बंद करने का उसने कोई उपक्रम नहीं किया। चाबी के साथ ताले को उसने दरवाजे के पास ज़मीन पर रख दिया।

धीरे धीरे चलते हुए वो टाइम मशीन के पास आई और उसने मशीन का दरवाज़ा खोला। हलकी सी आवाज़ के साथ दरवाज़ा खुल गया। वो अंदर सीट पर बैठ गई और उसने दरवाज़ा बंद किया। दरवाज़ा बंद करने के बाद उसने 'डोर लॉक' का बटन दबाया तो एक हलकी सी 'क्लिक' की आवाज़ आई।

पहले वो थोड़ी सी हिचकिचाई, मगर तुरंत ही उसके चेहरे पर दृढ़ निश्चय के भाव आये। इस बार उसने देखा कि सीट पर पीछे की तरफ एक सीट बेल्ट भी लटक रहा है। उसने सीट बेल्ट लगाया और अपना बैग अपनी गोद में रख लिया।

उधर अपनी गाड़ी दौड़ता हुआ करण आभा के घर की तरफ आ रहा था। शराब के नशे में होने के साथ साथ वो गुस्से में भी नजर आ रहा था। उसकी नज़रें रास्ते पर जमी हुई थी। नशे में होने के बावजूद, गाड़ी पर उसका पूरा नियंत्रण था।

उधर टाइम मशीन में बैठी आभा फिर से थोड़ी नर्वस हो गई थी।

'अगर मशीन ने काम नहीं किया तो?' उसके दिमाग में सवाल आया।

'तो क्या, वापस अपने घर जा कर आराम से सो जाउंगी। कम से कम टाइम मशीन का सस्पेंस तो ख़त्म होगा।' उसके दिमाग ने जवाब दिया।

‘अगर टाइम मशीन ने काम नहीं किया और कोई दूसरी गड़बड़ हो गई तो? जैसे किसी ने मुझे यहाँ देख लिया तो?’ उसके दिमाग ने फिर सवाल किया।

‘तो क्या? मेरा ऐसा करना, यहाँ आ कर इस मशीन में बैठना कोई जुर्म थोड़े ही है? कुछ नहीं होगा।’ उसके दिमाग ने उत्तर दिया।

‘अगर स्टार्ट करते ही मशीन ब्लास्ट हो गई तो?’

‘ऐसा तो शायद ही हो। महेश ने इतने वर्षों की मेहनत से ये मशीन बनाई है। उस जैसे जीनियस आदमी ने इतनी साधारण बात का तो ख़याल जरूर रखा होगा कि मशीन चाहे काम करे या ना करे, मगर इसमें ब्लास्ट जैसी कोई दुर्घटना ना हो।’ उसके दिमाग ने फिर सकारात्मक उत्तर दिया।

‘जो भी होगा, देखा जायेगा।’ आभा दृढ़ स्वर में बड़बड़ाई। ‘बिना थोड़ी बहुत रिस्क लिए कभी सफलता नहीं मिलती है।’

उधर गाड़ी चलता हुआ करण निरंतर आभा के घर की तरफ बढ़ रहा था और नजदीक आते जा रहा था। रास्ते में उसे एक रेड लाइट पर रुकना पड़ा तो वो बेचैनी से अपनी उँगलियाँ स्टेयरिंग व्हील पर तब तक थपथपाता रहा जब तक कि बत्ती हरी नहीं हो गई। कुछ देर बाद वो अपनी गाड़ी आभा के घर के बाहर पार्क कर रहा था।

करण ने गाड़ी से उतर कर आभा के घर की घंटी बजाई। कुछ देर तक तो वो दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार करता रहा और जब दरवाज़ा नहीं खुला, तो उसने फिर से लगातार दो तीन बार घंटी बजाई। एक खिड़की से उसने घर के अंदर झांकने की कोशिश की तो उसने देखा कि घर के अंदर अंधेरा था।

उधर महेश के गैरेज में सीट बेल्ट लगाए आभा अपनी बैग गोद में रखे हुए अपने आत्मविश्वास को समेटने की कोशिश में लंबी लंबी सांसें ले रही थी। उसकी नज़रें सामने डैशबोर्ड पर घूम रही थी और वो ये सुनिश्चित नहीं कर पा रही थी कि कहाँ से शुरू करें।

‘पहले क्या करना चाहिए, कौन सा बटन ऑन करना चाहिए।’ उसने विचार किया।

तभी उसकी नजर मशीन की सामने की विंड शील्ड के ऊपर बने एक छोटे से खाने पर पड़ी। उसने उसे खोला तो उसके अंदर एक कागज़ पड़ा था। उसने वो कागज़ बाहर निकाल कर देखा। उस काग़ज़ में मशीन शुरू करने के दिशा निर्देश थे। वो खुश हो गई।

उसने ध्यान से काग़ज़ में लिखे निर्देशों को पढ़ा।

निर्देश के अनुसार सबसे पहले उसने 'पावर' लीवर को ऊपर किया जहाँ 'पावर ऑन' लिखा हुआ था। ऐसा करते ही मशीन के पीछे से एक हलकी सी आवाज़ आई जैसे कोई इंजन स्टार्ट हुआ हो। पावर बटन के सामने लगे डायल में लगी सुई ऊपर हुई और थिरकने लगी।

उसने देखा कि मशीन में लगी सभी हरी स्क्रीन रोशन हो गई थी। उसने कुछ पल इंतज़ार किया। मशीन के इंजन की आवाज़ थोड़ी तेज हो गई थी और 'इंजन वार्मिंग अप' का इंडिकेटर जल गया था।

सबसे पहले, उस कागज़ पर लिखे निर्देशों के अनुसार उसने वर्तमान दिन और समय फीड करने की कोशिश की तो पाया कि वो तो पहले से ही मई - 24 - 2010 - 2200 Hrs. दिखा रहा था।

आभा की समझ में आ गया कि वो स्वचालित घड़ी और कलेण्डर था। उसने स्क्रीन पर सलेक्ट बटन दबाया।

फिर 'डेस्टिनेशन' सेक्शन में उसने फीड किया,

मई - 19 - 1961 - 2200 Hrs. और स्क्रीन पर सलेक्ट बटन दबाया। फिर उसने 'पिक अप' सेक्शन में फीड किया,

मई - 20 - 1961 - 2200 Hrs और स्क्रीन पर सलेक्ट बटन दबाया।

तभी आभा ने महसूस किया कि इंजन की आवाज़ थोड़ी और तेज हो गई थी और साथ ही मशीन थोड़ा वाइब्रेट भी करने लगी थी। मगर 'इंजन रेडी' का इंडिकेटर अभी ऑन होना बाकी था।

उधर आभा के घर का दरवाज़ा ना खुलने की वजह से करण और भी बेचैन हो गया था। आभा की गाड़ी वहां खड़ी थी और उसका मतलब था कि वो घर पर ही थी।

'साली घर पर ही है, पर जानबूझ कर दरवाज़ा नहीं खोल रही है।' उसने सोचा। वो घर का चक्कर लगाते हुए खिड़कियों से अंदर झांकने लगा। आभा की किचन में भी अंधेरा था और स्लाइडिंग डोर बंद था।

इसी तरह जब वो आभा के बेडरूम की खिड़की के पास पहुंचा तो उसे अंदर थोड़ी रौशनी नजर आई। उसने खिड़की के अंदर झाँका। अंदर नाइट बल्ब जल रहा था

और एक दीवार के पास एक दरी बिछी हुई थी। दरी पर एक अख़बार पड़ा था, कोई पुराना अख़बार।

उसने ध्यान से देखा तो उस सीमित रौशनी में भी उसने साफ़ देखा था कि वो 1961 का वही पुराना अख़बार था, जिसमे ज्योति की मौत की खबर छपी थी। तभी उसकी नजर महेश के गैरेज पर पड़ी। गैरेज का दरवाज़ा बंद था, मगर दो पल्लों के बीच से रौशनी आ रही थी।

'वहां उस गैरेज के अंदर कोई है। शायद आभा वहीं होगी।' उसने विचार किया।

उम्र अधिक हो गई थी तो क्या? आखिर था तो करण पुलिस वाला ही, रिटायर्ड ही सही। उसने दोनों लॉन के बीच की दीवार आसानी से फांदी और दबे पांव महेश के गैरेज की तरफ बढ़ा। करण को तब तक गैरेज के अंदर से आती आवाज़ भी सुनाई देने लगी थी। उसे ऐसा लगा मानो गैरेज में किसी मशीन की मोटर चल रही हो।

उधर गैरेज के अंदर टाइम मशीन में बैठी आभा को अपनी गलती का अहसास हुआ। ज्योति की मौत 19 और 20 मई के बीच की रात को हुई थी और उसने गलती से 19 मई की तारीख फीड कर दी थी। उसे तो 19 मई से पहले 1961 में पहुंचना था। तभी 'गो' बटन का इंडिकेटर रोशन हुआ, मतलब मशीन टाइम ट्रैवल करने के लिए तैयार थी।

तभी भड़ाक से गैरेज का दरवाज़ा खुला और आभा को गैरेज के खुले दरवाजे के बीच करण खड़ा नजर आया। आभा ने गंतव्य की तारीख बदलने के लिए जल्दी से अपनी उंगलियाँ डायल पर रखी।

"बाहर निकलो वहां से।" करण दरवाजे पर से ही चिल्लाया।

घबराहट में आभा ने 'डेस्टिनेशन' तारीख का डायल घुमाया और डर के मारे जल्दी से 'गो' बटन दबा दिया। मशीन के इंजन का शोर बढ़ गया और साथ ही उसका वाइब्रेशन भी। करण दौड़ता हुआ मशीन की तरफ बढ़ा। तब तक मशीन से लाल नीली रोशनियां निकलनी शुरू हो गई।

करण ने मशीन के दरवाजे के हैंडल को पकड़ कर मशीन का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाजे के हैंडल को छूते ही उसे बिजली का बहुत ज़ोरदार झटका लगा और वो उछल कर दूर गिर पड़ा। डर की वजह से उसके हाथ पांव कांपने लगे।

मशीन का कांपना लगातार बढ़ता जा रहा था और उसके साथ ही साथ मशीन के अंदर बैठी आभा का पूरा शरीर भी खतरनाक ढंग से हिलता जा रहा था। ना सिर्फ बाहर गिरा हुआ करण डर गया था, बल्कि अंदर बैठी आभा की भी डर के मारे जैसे जान निकल रही थी।

मशीन का झटका लगने के बाद करण बहुत जो से गिरा था और उसे इतनी जोर से चोट लगी थी कि वो उठ नहीं पा रहा था। ज़मीन पर पड़ा वो फटी फटी आँखों से मशीन और उसके अंदर बैठी आभा की ओर देख रहा था।

मशीन अचानक अपनी जगह से थोड़ा, करीब एक फुट हवा में उठी और हवा में ही गोल गोल घूमने लगी। ना तो करण को समझ में आ रहा था और ना ही मशीन के अंदर बैठी आभा को ही समझ में आ रहा था कि क्या हो रहा है।

मशीन के जोर जोर से कांपने और घूमने की वजह से आभा के शरीर में दर्द की लहर सी उठी और वो दर्द के मारे चीख उठी। दर्द सहन न पाने की वजह से वो रोने लगी और मशीन के घूमने से उसे चक्कर आने लगे।

दर्द और चक्कर आने की वजह से दो ही मिनट में मशीन के अंदर बैठी आभा बेहोश हो चुकी थी। बाहर ज़मीन पर पड़ा करण तो अपनी आँखों के सामने वो अभूतपूर्व और अविश्वनीय नज़ारा देख कर हैरान था।

अचानक एक रौशनी का बड़ा झमाका हुआ और मशीन वहां से गायब हो गई। मशीन कुछ इस तरह गायब हो गई थी, जैसे कभी वहां थी ही नहीं। वहां एक सन्नाटा पसर गया। मशीन से इतनी तेज रौशनी निकली थी कि करण को ना सिर्फ अपनी आँखें बंद करनी पड़ी, बल्कि उसे अपनी आँखों पर हाथ भी रखने पड़े।

मशीन वहां नहीं थी, आभा भी वहां नहीं थी। वहां था तो सिर्फ खाली गैरेज और उसके कोनों में पड़ी विभिन्न चीजें।

करण बड़ी मुश्किल से खड़ा हुआ और लंगड़ाता हुआ अपनी पूरी ताकत लगा कर वहां से अपनी कार की तरफ भाग गया।

=====

08

आभा अभी भी बेहोश थी, जब कि मशीन, जिस में वो बैठी हुई थी, धीरे धीरे स्थिर हो रही थी। उसकी आवाज़ भी धीरे धीरे कम हो रही थी और उसका वाइब्रेशन भी कम

हो रहा था। मशीन अब ज़मीन पर खड़ी थी। मशीन के अंदर लगी स्क्रीन की रौशनी भी अब काफी कम हो चुकी थी।

धीरे धीरे, करीब पांच मिनट में मशीन पूरी तरह शांत हो चुकी थी। मशीन के पूरी तरह शांत होने के करीब दो मिनट बाद आभा के शरीर में थोड़ी हलचल हुई। वो धीरे धीरे होश में आ रही थी।

सीट बेल्ट बंधा होने के बावजूद उसका बेहोश बदन कुर्सी पर आगे की ओर खिसक गया था और उसके घुटने आगे डेशबोर्ड के निचले भाग से सटे हुए थे। इस तरह उसके शरीर का पूरा वजन उसके मुड़े हुए घुटनों पर था।

आभा ने अपनी पलकें झपकाई और अपनी आँखें खोली। उसने महसूस किया कि मशीन एक बंद और अँधेरी जगह पर खड़ी थी। तभी बाहर बादलों की ज़ोरदार गड़गड़ाहट सुनाई दी और बिजली चमकी। बिजली के चमकने से वहां थोड़ी देर के लिए खिड़की से रौशनी आई तो आभा ने अंदाजा लगाया कि वो किसी के गैरेज जैसी जगह में है।

दोबारा बिजली चमकने से जो रोशनी हुई, तो आभा को लगा कि वो अभी भी महेश के ही गैरेज में है, पर वो गैरेज शायद 1961 का गैरेज है। सामने दरवाज़ा था और पीछे की तरफ उसी जगह और वैसी ही एक खिड़की थी। वो गैरेज कदरन साफ़ सुथरा था और 2010 के कबाड़ के मुकाबले वहां कुछ कार्टून रखे हुए थे। आभा को यकीन हो चुका था कि उसने टाइम ट्रैवल कर लिया था और वो 1961 में पहुँच चुकी है।

ऐसा लग रहा था कि बाहर का मौसम बहुत ख़राब था। तेज हवाएँ चल रही थी और रह रह कर बादल गरज रहे थे। साथ ही बार बार बिजली भी चमक रही थी। बिजली के चमकने से गैरेज के ऊपरी भाग में बनी खिड़की से गैरेज के अंदर रौशनी हो रही थी।

आभा जल्दी से अपनी कुर्सी पर सीधी हुई और उसने सीट बेल्ट खोला। उसका बैग उसकी गोद में, उसके दोनों पैरों के बीच फंसा हुआ था। उत्साहित आभा ने मशीन के दरवाजे पर लगा 'अनलॉक' का बटन दबाया और हैंडल पकड़ कर दरवाज़ा खोला।

उस अति उत्साह में आभा की नजर 'डेस्टिनेशन' दिन और समय पर नहीं पड़ी जो उसने अपनी यात्रा शुरू होने के कुछ ही क्षण पहले जल्दबाजी में डायल घुमा कर

सेट किया था। उस जल्दबाजी में डायल कुछ ज्यादा घूम गया था। 'डेस्टिनेशन' डायल जो दिन और समय दिखा रहा था, वो था रविवार, 14 मई 1961, और समय था 22 hrs. , मतलब रात के दस बजे।

जल्दबाजी में डेस्टिनेशन तारीख को उसने पीछे किया था, और उस समय वो तारीख़ थी 14 मई, 1961. हालांकि 'पिक अप' सेक्शन पर उसकी नजर जरूर पड़ी और वो वही तारीख दिखा रहा था, जो उसने फीड की थी, यानि शनिवार 20 मई 1961 और समय था 2200 Hrs.

आभा ने अपने दिमाग में ये अच्छी तरह बिठा लिया था कि वापसी का सफर उसे कब करना है।

हल्की सी आवाज़ के साथ टाइम मशीन का दरवाज़ा खुला और आभा मशीन से बाहर निकली। जैसे ही वो बाहर निकल कर खड़ी हुई, वो लड़खड़ाई। उसने अपने आप को नीचे गिरने से बचाने के लिए जल्दी से मशीन का सहारा लिया।

आभा को ऐसा महसूस हुआ मानो उसके पैरों में कोई जान ही नहीं थी और उसके पैर उसके शरीर का वजन संभालने में असमर्थ थे। किसी तरह अपने आप को संभाल कर वो अपने पैरों पर खड़ी हुई। वो बहुत कमज़ोरी महसूस कर रही थी और उसका सर चकरा रहा था। आभा को लग रहा था जैसे वो बहुत लम्बा और थका देने वाला सफर कर के आई है।

बाहर चमक रही बिजली की रौशनी में, जो खिड़की के द्वारा गैरेज को समय समय पर थोड़ा रोशन कर रही थी, आभा गैरेज के दरवाजे की ओर लड़खड़ाते क़दमों के साथ बढ़ी। उसके घुटनें जैसे उसका साथ छोड़ रहे थे।

जब वो गैरेज के दरवाजे से कुछ ही कदम दूर थी, अचानक उसे बहुत जोर से चक्कर सा आया और वो नीचे बैठ गई। उसके पेट और गले में एक हलचल सी हुई और उसने वहीँ उल्टी कर दी। उल्टी करने के बाद उसे कुछ ठीक महसूस हुआ और वो फिर से खड़ी हो कर गैरेज के दरवाजे की तरफ बढ़ी।

उसने धक्का दे कर गैरेज का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, पर वो नहीं खुला। शायद दरवाज़ा बाहर से बंद था। आभा ने फिर से दो तीन बार दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, पर कोई नतीजा नहीं निकला।

वो स्तब्ध सी खड़ी गैरेज के दरवाजे को घूरती रही। वो गैरेज के अंदर कैद हो गई थी। उसने विचार किया कि जब तक बाहर से कोई गैरेज का दरवाज़ा नहीं खोलेगा,

वो बाहर नहीं निकल सकेगी। लेकिन इसमें बहुत रिस्क था। पहला तो रिस्क यही था कि पता नहीं उसका सामना किस से हो और दूसरा सब से बड़ा रिस्क ये था कि वो गैरेज के अंदर अपनी मौजूदगी का कारण क्या बताती।

अचानक उसे कुछ याद आया और उसकी आँखें आशा से चमक उठी। आभा की नज़रें गैरेज के ऊपरी भाग पर बनी खिड़की पर टिक गई। खिड़की के ठीक नीचे वही टेबल पड़ी थी जो 2010 में पड़ी थी। 1961 के वक्त में वो टेबल काफी नई लग रही थी।

आभा के चेहरे पर एक मुस्कुराहट आई। आभा टेबल पर चढ़ी तो वो आराम से खिड़की तक पहुँच गई। उसने खिड़की का पल्ला खोला, तो वो बाहर ऊपर की तरफ खुल गया।

अपना बैग हाथ में लिए आभा ने खिड़की के बाहर अपना सर निकाला। अचानक फिर जोर से बिजली कड़की और आभा को पल भर के लिए बाहर का नजारा दिखा। मौसम तूफ़ानी था। जोर जोर से हवाएँ चल रही थी और बादल गरज रहे थे, मगर बरसात नहीं हो रही थी।

आभा को महसूस हुआ कि किसी भी पल बरसात शुरू हो सकती है। लॉन में उस वक्त कोई नहीं था, रास्ता साफ़ था। उसने खिड़की पर लटके लटके ही अपने हाथ बाहर निकाले। उसके हाथों में उसका बैग था।

खिड़की की ऊंचाई इतनी नहीं थी कि वो खिड़की पर बैठ कर बाहर कूद सके। लटके लटके ही उसने अपना बदन खिड़की के बाहर की और खिसकाया और फिर वो खिड़की से बाहर ज़मीन पर अपनी पीठ के बल गिर पड़ी। उसकी पीठ में दर्द की एक बहुत तेज लहर उठी।

कुछ देर तक तो वो वैसे ही, अपनी पीठ के बल लॉन में पड़ी रही और फिर दर्द थोड़ा कम हो जाने के बाद उसने अपना बैग उठाया और धीरे धीरे खड़ी हो गई। वो बाहर लॉन में कच्ची जगह पर घास के ऊपर गिरी थी, इसलिए उसने अंदाजा लगाया कि उसकी पीठ पर कोई गंभीर चोट नहीं आई है।

हवा में ठंडक बढ़ गई थी और बरसात भी शुरू हो गई थी। आभा ने एक नजर उस घर पर डाली। आभा को अब यकीन हो गया कि 1961 में वो उसी जगह पहुंची थी, जहाँ से वो 2010 में रवाना हुई थी। महेश के घर के किचन और हॉल की लाइटें जल रही थी। फिर उसने नज़रें उठा कर ज्योति के घर की तरफ देखा, जो उसने 2010 में

खरीदा था। उसने देखा कि वो मास्टर बेडरूम, जहाँ वो 2010 में दरी पर सोती थी, उसकी लाइट जल रही थी।

इतना अंदाजा तो आभा को हो ही चुका था कि टाइम मशीन अपने गंतव्य में उसी स्थान पर पहुँचती है, जहां से वो रवाना होती है।

आभा ने तब तक ये नहीं सोचा था कि 1961 में पहुँच कर, टाइम मशीन से बाहर आने के बाद वो कहाँ जाएगी। मगर अब ये जरूरी था कि वो ये सुनिश्चित करें कि उसे कहाँ जाना है। उसने तुरंत निश्चय किया कि उसे आस पास ही किसी होटल में रुकना चाहिए।

अँधेरे में छिपती छिपाती वो महेश के घर के दरवाजे तक पहुंची और दरवाज़ा खोल कर बाहर सड़क पर आ गई। सड़क पर पहुँचने के बाद उसे ऐसा आभास हुआ, मानो पीछे महेश के गैरेज में रौशनी का एक झमाका सा हुआ था और उसके बाद सब कुछ शांत हो गया था।

बरसात काफी तेज हो चुकी थी और उसकी वजह से ठंड भी बढ़ती जा रही थी। उसका बदन कांपने लगा था और कमज़ोरी फिर से हावी होने लगी थी। वो जल्दी से जल्दी पास के ही किसी होटल में पहुँच जाना चाहती थी।

उसने याद किया कि 2010 में उसके घर के आसपास रुकने लायक होटल कहाँ थे। उसे ध्यान आया कि सड़क पर देहरादून कॉलेज की तरफ थोड़ा आगे जाने पर एक दायीं तरफ एक पतली सड़क जाती थी, जहाँ तीन ठीक ठाक होटल थे, जहाँ ठहरा जा सकता था।

आभा इस उम्मीद में आगे बढ़ी कि शायद उन में से कोई होटल 1961 में भी मौजूद रहा हो।

उसने अपनी गति बढ़ाई और सड़क के दोनों तरफ बने मकानों पर नजर फिराती हुई तेजी से आगे बढ़ने लगी। सभी मकान पुरानी फैशन के थे और कुछ मकानों के बाहर 1950 और 1960 के मॉडल की कारें खड़ी थी।

आभा ने फिर से एक लंबी सांस ली और ये सोच कर रोमांचित हो रही थी कि वो सचमुच 1961 के समय में आ चुकी थी। बरसात की गति और भी बढ़ चुकी थी और पूरी तरह, ऊपर ने नीचे तक भीगी हुई आभा लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ रही थी।
तभी आभा ने देखा की एक कार उसके सामने की तरफ से आ रही थी।

आभा नहीं जान पाई कि वो कार महेश ओबेरॉय चला रहा था और अपने घर की तरफ जा रहा था, जहाँ से निकल कर आभा सड़क पर आई थी। महेश ओबेरॉय, जो 26 वर्षीय खूबसूरत युवक था, उसने शर्ट और पैंट पहन रखी थी। कार की हेड लाइट में महेश ने आभा को सड़क पर भीगते हुए और लड़खड़ाते हुए सामने से आते हुए देखा।

महेश की कार सड़क के एक किनारे चल रही थी और सड़क के दूसरे किनारे आभा चली आ रही थी। महेश की कार की गति बरसात की वजह से पहले ही कम थी और सामने से, सड़क के दूसरे किनारे एक भीगती और लड़खड़ाती सी चली आ रही एक लड़की को देख कर उसने अपनी कार रोक ली थी।

जैसे ही आभा थोड़ी और उसकी कार के पास पहुंची और कार की हेड लाइट आभा के चेहरे पर पड़ी, महेश की आँखें आश्चर्य से फट पड़ी। उसने लड़की को पहचाना।

'ये इस वक्त, इस मौसम में यहाँ इस सड़क पर क्या कर रही है?' वो बड़बड़ाया।

महेश ने खिड़की शीशा नीचे किया और जोर से बोला, ताकि उसकी आवाज़ बरसात के शोर में आभा तक पहुँच सके।

"ज्योति, तुम इस मौसम में यहाँ क्या कर रही हो? इस तरह भीगती हुई कहां जा रही हो? और तुम्हारा चश्मा कहाँ है?" लेकिन उसकी आवाज़ आभा तक नहीं पहुंची।

'और ज्योति ने ये कैसे कपड़े पहन रखे है?' उसने जैसे अपने आप से ही पूछा।

महेश भी समझ गया था कि ज्योति तक उसकी आवाज़ नहीं पहुंची थी। इस बार वो और जोर से बोला,

"रुको ज्योति, कहां जा रही हो?"

"क्या?" आभा महेश की तरफ देखती हुई बोली, क्यों कि उसे लगा कि कार में बैठा शख्स उसको कुछ कहना चाहता है।

साथ ही आभा ने हाथ से भी इशारा किया कि वो कुछ सुन नहीं पा रही है। कार की हेड लाइट ऑन होने की वजह से वो कार में बैठे आदमी का चेहरा नहीं देख पा रही थी।

महेश अच्छी तरह समझ गया कि उसकी आवाज़ ज्योति तक नहीं पहुंच पा रही थी। इसलिए उसने कार का दरवाज़ा खोला और पूरी ताकत से चिल्लाया,

"रुको, मैं आ रहा हूँ।"

और जैसे ही महेश ने कार के नीचे गीली सड़क पर पैर रखा, बहुत जोर से बिजली कड़की और आभा से कुछ दूरी पर एक पेड़ पर बिजली गिरी। महेश बिजली गिरने की उस उस तेज आवाज़ और उस से उत्पन्न हुई तेज रौशनी की वजह से महेश लड़खड़ाया।

उधर सड़क पर आभा भी बिजली गिरने से उत्पन्न हुई तेज रौशनी और तेज आवाज़ की वजह से बहुत घबरा गई थी और लड़-खड़ा कर ज़मीन पर अपनी पीठ के बल गिर पड़ी। पीठ में तो उसको पहले ही चोट लगी हुई थी और उसके सर का पिछला हिस्सा जोर से सड़क से टकराया।

आभा की पीठ में दर्द की फिर से एक तेज लहर उठी और सर के ज़मीन से टकराने की वजह से उसकी आँखों के आगे लाल पीले तारे नाच उठे और वो बेहोश हो गई। और उसका बैग उसके हाथ से छूट कर सड़क पर गिर पड़ा।

उधर महेश ने अपनी आँखें खोली और उसने आभा को ज़मीन पर बेहोश पड़े देखा।

“ज्योति।” वो जोर से चिल्लाया और बेहोश पड़ी आभा की तरफ दौड़ा।

चिंतित महेश दौड़ता हुआ जब आभा के नजदीक पहुंचा और उसने स्ट्रीट लाइट की ना-काफी सी नीचे पहुँच रही रौशनी में आभा का चेहरा ध्यान से देखा तो चौंक गया। तुरंत उसकी समझ में आया कि ज्योति जैसी दिखने वाली वो लड़की वास्तव में ज्योति ना हो कर कोई और थी।

‘कौन है ये? ये ज्योति तो नहीं है पर ज्योति से कितनी मिलती जुलती है। और ये यहाँ क्या कर रही है? कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?’ उसने अपने आप से कहा।

भले ही वो ज्योति नहीं, कोई और थी, पर महेश इस तरह तो किसी लड़की को सड़क पर बेहोश पड़ी हुई नहीं छोड़ सकता था। उसने बेहोश पड़ी आभा और उसके पहने हुए कपड़ों पर नजर डाली। आभा के कपड़े देख कर महेश ने सोचा की ‘इस लड़की ने कैसे अजीब कपड़े पहन रखे हैं।

महेश समझ गया था कि उस लड़की को तुरंत किसी डॉक्टरी मदद की जरूरत है।

उसने बेहोश पड़ी आभा को ज़मीन से अपने हाथों में उठाया और अपनी कार की तरफ लपका। उसने आभा को अपने हाथों में उठाये उठाये बड़ी मुश्किल से अपनी कार का पिछला दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खोलने की कोशिश में एक बार तो आभा उसके हाथों से नीचे गिरती गिरती बची।

उसने आभा को अपनी कार की पिछली सीट पर लिटाया और दरवाज़ा बंद कर दिया। जब वो कार का ड्राइविंग साइड का दरवाज़ा खोल रहा था तो उसकी नजर सड़क पर पर ला-वारिस से पड़े आभा के बैग पर पड़ी। दरवाज़ा छोड़ कर वो दौड़ा और वो बैग उठा लाया।

महेश को वो बैग भी आभा के पहने हुए कपड़ों की तरह ही कुछ अजीब सा लगा। बैग ले कर वो वापस कार के पास आया और ड्राइविंग सीट का दरवाज़ा खोल कर अंदर बैठ गया। आभा का बैग उसने अपने पास की पैसेंजर सीट पर रख दिया।

महेश ने कार स्टार्ट की। सड़क पर आवा-जाही बिलकुल भी नहीं थी। जब से महेश ने आभा को देख कर अपनी गाड़ी रोकी थी, तब से कोई भी गाड़ी उस सड़क से नहीं गुज़री थी। उसने यू टर्न लिया और कार को हार्ट केयर हॉस्पिटल की तरफ दौड़ाई।

सड़कें सुनसान होने की वजह से वो जल्दी ही हॉस्पिटल पहुंचा और अपनी गाड़ी उसने 'इमरजेंसी सर्विस' के गेट के सामने पार्क की। कार से उतर कर वो अंदर दौड़ा और जल्दी ही हॉस्पिटल के दो कर्मचारी साथ में स्ट्रेचर लिए महेश के साथ उसकी कार तक आये।

महेश ने कार का पिछला दरवाज़ा खोला और हॉस्पिटल के कर्मचारियों ने आभा के बेहोश शरीर को स्ट्रेचर पर रखा और स्ट्रेचर ले कर जल्दी जल्दी हॉस्पिटल के अंदर चले गए। महेश भी उनके पीछे पीछे गया।

अंदर आभा का इलाज हो रहा था और महेश ने हॉस्पिटल स्टाफ को जानकारी दी कि कैसे, कहाँ और किन हालातों में उसे वो लड़की मिली थी। आभा के बारे में महेश और कुछ नहीं बता सका क्यों कि वो कुछ जानता भी नहीं था। महेश को तो आभा का नाम तक पता नहीं था। अंत में उसने अपना नाम और पता नोट करवाया।

हॉस्पिटल की कागजी खाना पूरी करने के बाद वो अपनी कार के पास आया। उसकी कार का इंजन तब भी चालू था। आभा को हॉस्पिटल में भर्ती करवाने की जल्दी में वो इंजन बंद करना ही भूल गया था। वो अपने आप पर ही मुस्कुराया और कार में बैठा।

कार चला कर अपने घर की तरफ जाते हुए वो आभा के बारे में ही सोच रहा था। वो आभा को अपने दिमाग से नहीं निकाल पा रहा था। महेश को लग रहा था कि उस लड़की में, जो कि ज्योति की तरह दिखती थी, जरूर ऐसी कोई खास बात थी, कि वो उसकी तरफ आकर्षित हुआ जा रहा था।

हॉस्पिटल से निकल कर वो ज्यादा दूर नहीं पहुंचा था और तभी उसकी नजर पास की पैसंजर सीट पर पड़ी। वहां आभा का बैग पड़ा था।

'शायद इसमें ऐसा कुछ हो जिसकी उस लड़की को जरूरत पड़े।' उसने सोचा।

उसने यू टर्न लिया और वापस हॉस्पिटल की तरफ अपनी कार दौड़ा दी।

हॉस्पिटल पहुँच कर उसको पता चला कि आभा तब भी बेहोश थी और उसका इलाज चल रहा था। नर्स ने उसको जानकारी दी कि सड़क से सर के टकरा जाने और अधिक ठंड होने की वजह से वो बेहोश हो गई थी। नर्स ने उसको बताया कि चिंता की कोई बात नहीं थी और उसकी हालत में तेजी से सुधार हो रहा था और सुबह तक शायद वो पूरी तरह ठीक भी हो जाएगी।

महेश ने चैन की एक लंबी सांस ली। उसने वहां ड्यूटी पर मौजूद नर्स को आभा का बैग सौंपा।

"ये उस लड़की का बैग है। उसके बेड के पास रख दीजियेगा। शायद उसको इसकी जरूरत हो।"

नर्स ने मुस्कराते हुए बैग थाम लिया और महेश से बोली,

"वो रूम नंबर 480 में है।"

"धन्यवाद सिस्टर।" महेश बोला और हॉस्पिटल से बाहर निकल आया।

=====

09

देहरादून में वो सोमवार की सुबह थी। रात भर बरसात होती रही थी, जो सुबह छह बजे के करीब बंद हुई थी। सूर्योदय के साथ ही वो एक चमकीली और सुहानी सुबह थी।

हार्ट केयर हॉस्पिटल में बिस्तर पर लेटी आभा ने अपनी आँखें खोली। उसने अपनी आँखें मिचमिचा कर इधर उधर देखा तो अपने आप को एक अनजान जगह पर पाया। कुछ देर तक तो उसका दिमाग सुन्न सा रहा, मगर जल्दी ही वो सोचने समझने के काबिल हो गया।

उसके सर के पिछले हिस्से में दर्द हो रहा था। तभी उसे याद आया कि पिछली रात उसके साथ क्या बीती थी। उसे ये भी याद आया कि वो साल 2010 में नहीं बल्कि

साल 1961 में है। टाइम मशीन में सफलतापूर्वक टाइम ट्रैवल कर के वो 1961 में पहुँच चुकी थी।

रात को महेश के घर से बाहर सड़क पर आने के बाद अपने आसपास उसने जो पुराने ढंग के मकान देखे थे और कारों के पुराने मॉडल देखे थे, उसे उसी वक्त अंदाजा हो गया था कि महेश ओबेरॉय द्वारा निर्मित टाइम मशीन ने सफलता से काम किया था।

अपने अंदाजे को वो किसी दूसरे के मुंह से सुन कर आभा ये सुनिश्चित कर लेना चाहती थी कि वो वास्तव में साल 1961 में ही है।

तभी कमरे का दरवाज़ा खुला और करीब पैंतीस साल की एक महिला ने कमरे में कदम रखा। उस महिला के बदन पर नर्स द्वारा पहने जाने वाली सफ़ेद बे-दाग वर्दी थी। उसके सीने पर उसके नाम की एक प्लेट लगी थी, जिस पर उसका नाम लिखा था, 'मैरी।' साथ ही उसने नर्सों द्वारा पहने जाने वाली विशेष प्रकार की सफ़ेद टोपी भी पहन रखी थी।

मैरी धीरे धीरे चलती हुई बिस्तर पर लेती आभा के पास आई। उसके चेहरे पर प्यारी सी मुस्कुराहट थी।

"मैं कहाँ हूँ?" आभा ने प्रश्न किया।

मैरी ने जवाब देने से पहले आभा की नब्ज़ चेक की और उसके ललाट पर अपनी हथेली रख कर उसका तापमान चेक किया और संतुष्टि-पूर्ण ढंग से अपनी गर्दन हिलाई। फिर वो मुस्कुराती हुई आभा से बोली,

"आप यहाँ देहरादून के हार्ट केयर हॉस्पिटल में है।" वो ध्यान से आभा की तरफ देखते हुए बोली। "अभी तक हमें आप का नाम पता नहीं चल पाया है। कृपया हॉस्पिटल रिकॉर्ड के लिए अपना नाम बताइये।" इसके साथ ही उसने एक फाइल उठाई और अपना पेन खोला।

"मेरा नाम आभा है। आभा अरोड़ा।" आभा ने बताया और नर्स ने फाइल पर उसका नाम लिखा।

"और आज कौन सा दिन और तारीख है?" आभा ने इस तरह से पूछा मानो वो कुछ असमंजस में हो।

“आज सोमवार, 15 मई है।” मैरी ने जवाब दिया लेकिन उसके मन में आभा की याददाश्त को ले कर शंका उभरी।

“15 मई, कौन से साल की?”

“1961 की। क्या आप को याद करने में कुछ तकलीफ़ हो रही है?” नर्स मैरी ने चिंताजनक स्वर में पूछा।

“अरे नहीं।” आभा ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। “मेरे सर में चोट लगी है ना, इसलिए मैं खुद की ही परीक्षा ले रही थी कि मुझे सब याद है कि नहीं। आप चिंता मत कीजिये सिस्टर। मेरी याददाश्त बिल्कुल ठीक है।”

“आप को याद है कि आप के साथ क्या हुआ था?”

“हाँ, याद है।”

“क्या आप को याद है कि कल रात की तूफ़ानी बरसात में आप सड़क पर गिर पड़ी थी और आप का सर सड़क पर टकराया था?”

“हाँ, याद है मुझे। बरसात बहुत तेज हो रही थी और किसी ने मुझे सड़क पर देख कर अपनी गाड़ी भी रोकी थी। उसने अपनी कार के अंदर से ही चिल्ला कर कुछ कहा था, जिसे मैं बरसात के शोर में सुन नहीं पाई थी कि उसने क्या कहा था। तभी मुझ से कुछ ही दूरी पर बिजली गिरी और मैं घबराहट और डर के मारे, शायद फिसल कर नीचे ज़मीन पर गिर पड़ी थी। शायद तभी मेरा सर जोर से सड़क से टकराया था और उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं। शायद मैं तब बेहोश हो गई थी।”

“थैंक गॉड आप को सब याद है। एक बार तो मैं आप की याददाश्त को ले कर चिंतित हो गई थी। आप को सड़क पर देख कर अपनी कार रोकने वाले मिस्टर महेश ओबेरॉय थे। वे ही आप को यहाँ हॉस्पिटल लाये थे।”

“क्या नाम लिया अभी आप ने सिस्टर? महेश ओबेरॉय?”

“हाँ, महेश ओबेरॉय। आप जानती हैं उन्हें? लेकिन उन्होंने तो कहा था कि वो आप से परिचित नहीं है।”

“सही कहा उन्होंने। वो मुझ से परिचित नहीं है। जानती तो मैं भी नहीं हूँ उनको, बस नाम से वाक़िफ़ हूँ।”

“हूँ।” मैरी ने हुंकार सी भरी। “वैसे आप अब कैसा महसूस कर रही हैं?”

“वैसे तो सब ठीक लग रहा है, मगर सर के पिछले हिस्से में दर्द है।”

“ये दर्द वहां लगी चोट की वजह से है। मैं कुछ दवा ले कर आती हूँ आप के लिए। दवा लेने के बाद दर्द काफी कम हो जायेगा और आप को आराम मिल जायेगा।” इतना कह कर मैरी दरवाजे की तरफ बढ़ी।

दरवाजे के पास पहुँच कर वो थोड़ा ठिठकी और फिर से आभा की तरफ मुड़ कर देखा। उसकी आँखों में उत्कंठा का भाव था। वहीं खड़े खड़े उसने आभा से सवाल किया,

“क्या आप देहरादून की ही रहने वाली हैं?”

“नहीं, मैं दिल्ली की रहने वाली हूँ। क्यों?”

“क्यों कि कल जब आप को यहाँ लाया गया था, तो आप ने बहुत सुन्दर और नई फैशन के सैंडल पहन रखे थे। वैसे सैंडल देहरादून में नहीं मिलते और आप जो नई फैशन के कपड़े पहने हुए थी, वे भी देहरादून में नहीं मिलते।”

आभा ने कोई जवाब नहीं दिया। बस मुस्करा कर रह गई।

“देहरादून पुराना शहर है और दिल्ली तो भारत की राजधानी होने के नाते प्रगतिशील शहर है। नई फैशन सब से पहले दिल्ली और बॉम्बे में ही आती है। और हाँ, मिस्टर महेश ने आप का बैग दिया था, जो सामने के कैबिनेट में रखा है। आप को उसमे से किसी चीज को निकालने की जरूरत हो तो बता दीजियेगा। ” इतना बोल कर मैरी दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल गई।

‘अब कोई शक नहीं है कि मैं 1961 में पहुँच चुकी हूँ। बहुत अच्छा लग रहा है।’ आभा अपने आप से बोली। ‘और 1961 में पहुंचते ही सबसे पहले मुझे मिला कौन? महेश।’

तभी थोड़ा सा दरवाज़ा खुला और महेश ओबेरॉय ने खुले हुए दरवाजे से भीतर झाँका। आभा की नजर दरवाजे से झांकते हुए उसके जाने पहचाने, महेश के चेहरे पर पड़ी। आभा ने तुरंत महेश को पहचाना। आश्चर्य और ख़ुशी के मारे उसकी आँखें चौड़ी हो गई।

“क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?” उसने बहुत मीठी आवाज़ में पूछा।

“अरे आप? आइये न?” आभा खुशनुमा स्वर में बोली।

महेश के व्यक्तित्व में जरूर कुछ ऐसा था जो आभा को उसकी तरफ खींच रहा था। आभा उसकी तरफ आकर्षित होती चली गई। महेश चलता हुआ उसके बिस्तर तक आया और पास ही रखी एक स्टूल पर बैठ गया। आभा ने महसूस किया कि महेश जितना सुन्दर अपनी तस्वीर में दिखता था, वास्तव में उस से कहीं अधिक सुन्दर था। उसका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक था।

"मेरा नाम महेश ओबेरॉय है।"

"मैं जानती हूँ। नर्स ने बताया मुझे मुझे आप का नाम। मेरी जान बचाने का शुक्रिया।" आभा शरमाते हुए बोली जैसे कोई जवान लड़की पहली बार उस से बात करती है, जिसे वो प्यार करती है। उसके चेहरे पर लाली फ़ैल गई।

"मगर आप का नाम यहाँ कोई नहीं जानता।"

"अब जानते हैं। मैंने नर्स को अभी अपना नाम बताया है। मेरा नाम आभा अरोड़ा है।"

"अब आप कैसा महसूस कर रही हैं?" महेश ने बिस्तर पर जरा झुकते हुए पूछा जैसे उसे आभा की बहुत चिंता हो रही हो।

आभा को ना जाने क्यों, ये बहुत अच्छा लगा कि महेश उसकी इतनी चिंता करता है।

"वैसे तो ठीक हूँ, पर सर के पिछले भाग में दर्द है। नर्स उसके लिए कोई दवाई लाने गई है।" आभा ने बताया।

आभा एक टक महेश की तरफ देखे जा रही थी। उसे ऐसे लग रहा था जैसे वो महेश को बरसों से जानती हो।

अचानक उसे याद आया कि महेश तो ज्योति का है, वो तो ज्योति से प्यार करता है। उसने अपनी नज़रें महेश पर से हटा ली। उसे महसूस हुआ कि भले ही उसको महेश बहुत अच्छा लग रहा था, मगर महेश के मन में उसके लिए कुछ नहीं था। महेश ने तो सिर्फ एक नरम दिल और भला इंसान होने के नाते उसकी सहायता की थी और इसी वजह से वो अब उसका हाल चाल जानने यहाँ आया था।

"आप सड़क पर बहुत जोर से गिरी थी। मैंने देखा था।" महेश की आवाज़ ने उसका ध्यान भंग किया।

आभा बहुत अपनेपन से मुस्कुराई और तभी कमरे का दरवाज़ा खुला। नर्स मैरी ने कमरे में प्रवेश किया। उसके एक हाथ में पानी का गिलास था और दूसरे हाथ में दो

गोलियां। वो धीरे धीरे चलते हुए आभा के पास आई।

“ये गोलियां ले लीजिये, इन से आप का दर्द काफी कम हो जायेगा।” नर्स ने गोलियां आभा की हथेली पर रखते हुए कहा।

आभा ने दोनों गोलियां अपने मुंह में रखी तो नर्स ने उसे पानी का गिलास थमाया। आभा ने पानी की मदद से दोनों गोलियां निगल ली और गिलास वापस नर्स को थमाया।

“सिस्टर, आप कब डिस्चार्ज करेंगी आभा जी को?” महेश ने नर्स मैरी से पूछा।

“वैसे तो ये पूरी तरह ठीक है और खतरे की कोई बात नहीं है। मगर आज रात ये हॉस्पिटल में ही आराम करें तो बेहतर होगा।” नर्स ने मुस्कराते हुए जवाब दिया और बाहर चली गई।

“यहाँ के लोग बहुत अच्छे हैं।” आभा ने कहा। “आप ने भी तो बिना किसी जान पहचान के मुझे सड़क से उठा कर यहाँ ला कर एडमिट कराया।”

महेश ने एक बार आभा को कुछ ऐसी नजरों से देखा कि आभा सकुचा गई। उसके गालों की लाली बढ़ गई।

“वैसे तो हर इंसान को ऐसे हालात में दूसरों की मदद करनी चाहिए। मगर आप नहीं जानती कि आप को देख कर मैंने कार क्यों रोकी।”

“क्यों रोकी?” आभा ने नज़रें ऊपर करते हुए पूछा।

“क्यों कि आप को देखते ही पहले मुझे लगा था कि आप वो हैं जिसे मैं जानता हूँ। मगर आप ने नज़दीक पहुँच कर मुझे पता चला कि आप वो नहीं है।”

“और कौन?” आभा ने ये सवाल जरूर किया, मगर वो जानती थी कि महेश का जवाब क्या होगा?

“मेरी मंगेतर ज्योति। दूर से आप बिलकुल ज्योति की तरह दिखती हैं। आप में और ज्योति में बहुत कम अंतर है, जैसे आप के बालों का रंग ज्योति के बालों से थोड़ा अलग है। आप की नाक थोड़ी छोटी है और आप चश्मा नहीं लगाती, पर ज्योति चश्मा लगाती है।”

“क्यों कि मैं आभा अरोड़ा हूँ, इसलिए चश्मा नहीं लगाती।” आभा ने धीरे से हँसते हुए कहा।

आभा को महेश से बात करते रहना बहुत अच्छा लग रहा था।

“खैर, आप मुझे ये बताइये कि इतनी तेज बरसात में आप कहाँ चली जा रही थी? क्या आप यहीं कहीं आसपास में रहती हैं?”

अचानक महेश ने ऐसा सवाल कर दिया जिसकी आभा को उम्मीद नहीं थी। उस सवाल का उत्तर उसके पास तैयार नहीं था। मगर वो घबराई नहीं। उसने ठंडे दिमाग से सटीक जवाब दिया।

“मैं देहरादून की रहने वाली नहीं हूँ। मैं कल ही दिल्ली से देहरादून पहली बार आई हूँ। मैं बस से उतर कर रुकने के लिए किसी होटल की तलाश में थी और तभी बरसात शुरू हो गई। शायद मैं बताया गया रास्ता भूल गई थी।”

“या तो आप रास्ता भूल गई थी और गलत दिशा में आ गई थी। क्यों कि जिस तरफ आप जा रही थी, उस तरफ दूर दूर तक कोई होटल नहीं है। और या किसी ने आप को गलत रास्ता बताया था। दिल्ली से आने वाली बसें हाइवे पर रूकती है जो वहां से काफी दूर है जहाँ आप मुझे मिली थी। और आप होटल की तरफ जाने वाली सड़क छोड़ कर आगे निकल आई। अगर आप पहली सड़क पर मुड़ती तो आप को वहां दो तीन होटल आराम से नजर आ जाते। खैर।”

“नयी जगह है ना, और मौसम भी कितना ख़राब था, शायद इसीलिए मुझ से गलती हो गई। शायद मेरी किस्मत में आप से मुलाकात होनी लिखी थी।”

“खैर, कोई बात नहीं। क्या मैं आप के यहाँ आने का कारण जान सकता हूँ? अगर आप को नहीं बताना हो तो मत बताइये। मैंने तो इसलिए पूछा है कि आप को शायद फिर से रास्ता भटकने की रिस्क से बचा सकूँ।” महेश ने मुस्कुराते हुए कहा।

आभा तो पहले ही महेश से प्रभावित थी, उसे महेश के बात करने का अंदाज़ भी बहुत पसंद आया।

“नहीं, ये कोई ऐसा सीक्रेट नहीं है कि मैं ना बताना चाहूं। दरअसल मैं यहाँ एक नई शुरुआत करने आई हूँ। मैं यहाँ किसी को नहीं जानती। पिछले साल दिल्ली में मेरे मंगेतर की हत्या हो गई थी, इसलिए मेरा मन दिल्ली से उचट गया है। यहाँ अपनी जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए मैं किसी काम की तलाश में आई हूँ।’

“आप के मंगेतर की मौत के बारे में जानकर दुख हुआ। आप का नई शुरुआत करने का नज़रिया मुझे पसंद आया। हो सकता है मैं इसमें भी आप की कोई मदद कर सकूँ। वैसे दिल्ली में आप क्या काम करती थी?”

“अभी भी करती हूँ। मैंने वो नौकरी अभी छोड़ी नहीं है। जब यहाँ कोई अच्छी नौकरी मिल जाएगी तो मैं दिल्ली वाली नौकरी छोड़ दूंगी। वैसे मैं दिल्ली के एक बड़े हॉस्पिटल में डॉक्टर की सेक्रेटरी की नौकरी करती हूँ और पार्ट टाइम नौसिखियों को स्विमिंग भी सिखाती हूँ, जिस से थोड़ी एक्स्ट्रा कमाई हो जाती है।”

“मैं यहाँ देहरादून कॉलेज में फ़िज़िक्स का प्रोफ़ेसर हूँ। हमारे कॉलेज के साइंस डीन को शायद एक सेक्रेटरी की जरूरत है। मैं कोशिश कर सकता हूँ कि वो नौकरी आप को मिल जाये। क्या आप अपनी सर्टिफिकेट्स अपने साथ लाई हैं?”

एक मिनट को तो आभा को लगा कि वो अपने ही जाल में खुद फंसने वाली है। मगर तुरंत उसने अपने आप को संभाला और संयमित हो कर उत्तर दिया।

“ओह, मुझे यहाँ आने की इतनी जल्दी थी कि सिर्फ एक ड्रेस के अलावा मैं कोई चीज अपने साथ नहीं लाई। मगर मुझे नौकरी मिलते ही एक सप्ताह के अंदर अंदर दिल्ली जा कर अपने पूरे सामान के साथ यहाँ आ जाउंगी और सर्टिफिकेट्स भी जमा करवा दूंगी।”

“कोई बात नहीं। मुझे यकीन है कि साइंस डीन आप को नौकरी दे ही देंगे और इतनी छूट तो मैं आप को दिला ही सकता हूँ।” महेश बड़े विश्वास से बोला।

“धन्यवाद महेश जी, ऐसा हो जाये तो बहुत अच्छा रहेगा।”

“ठीक है आभा जी। अभी मैं चलता हूँ, मुझे कॉलेज जाना है। मैं आप से फिर मिलता हूँ।”

“ओके महेश जी। बाय।” आभा बोली और महेश वहां से उठ कर चल दिया।

आभा प्यार भरी नजरों से महेश को जाते देखती रही। आभा अच्छी तरह जानती थी कि महेश उसका नहीं, सिर्फ और सिर्फ ज्योति का ही था, जिसे बचाने वो 2010 से टाइम ट्रैवल कर के 1961 में आई थी। मगर उसके दिल पर उसका जोर नहीं चल रहा था।

दरवाजे के पास पहुँच कर महेश रुका, जैसे उसे कुछ याद आया हो। वो पलटा और बोला,

“अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया था। आप के किसी रिश्तेदार या मित्र को आप के बारे में सूचना देनी है?”

“नहीं, यहाँ मेरा ऐसा कोई मित्र या रिश्तेदार नहीं है।”

आभा का उत्तर सुन कर महेश मुस्कराते हुए दरवाज़ा खोल कर बाहर निकल गया।

‘1961 में कुछ दिन काम करना एक अच्छा अनुभव होगा।’ आभा ने सोचा।

कुछ देर बाद आभा की पलकें भारी होने लगी। शायद वो उसे दी गई दवा का असर था कि उसे नींद आने लगी थी। आभा ने भी जागते रहने की कोई कोशिश नहीं की और कुछ ही देर में वो गहरी नींद में थी।

उधर हॉस्पिटल से बाहर आ कर महेश ओबेरॉय अपनी कार में बैठा और देहरादून कॉलेज की तरफ रवाना हो गया। आभा की तरह महेश भी आभा से कुछ अजीब सा लगाव महसूस कर रहा था, जिसका कारण उसे पता नहीं था। उसे लग रहा था जैसे वो आभा को काफी समय से जानता था।

कॉलेज पहुँच कर उसने अपने जरूरी काम निपटाने शुरू किये। उनमे से सब से जरूरी काम था अपने छात्रों के टेस्ट के प्रश्न पत्र की उत्तर पुस्तिकाओं के चेक करना। दो घंटों में उसने अपना काम निपटाया और फिर फोन को अपनी तरफ खिसका कर उस पर एक इंटरकॉम नंबर डायल किया। दूसरी तरफ से फोन उठाये जाने पर वो बोला,

“मैं महेश ओबेरॉय बोल रहा हूँ। मुझे पता चला है कि आप को अपने लिए एक सेक्रेटरी की तलाश है?”

फिर उसने वो सुना, जो दूसरी तरफ से कहा गया।

“मुझे लगता है कि मैं के लिए एक अच्छी सेक्रेटरी का इंतज़ाम कर सकता हूँ। मेरी नजर में एक लड़की है, जिसको इस काम का अनुभव भी है।” जवाब में महेश ने कहा।

दूसरी तरफ से फिर कुछ कहा गया।

“ठीक है, लेकिन वो शायद कल नहीं आ पाएगी। मैं परसों बुधवार की सुबह साढ़े सात बजे आप के ऑफ़िस में ले कर आता हूँ।”

दूसरी तरफ से फिर कुछ कहा गया।

“बिलकुल ठीक। तो फिर परसों सुबह मिलते हैं।” महेश ने कहा और फोन रख दिया।

पता नहीं क्यों, पर वो अपने अंदर कुछ ख़ुशी महसूस कर रहा था। शाम को घर जाने से पहले महेश फिर से हॉस्पिटल गया और वहां उसे पता चला कि अगले दिन, यानि

मंगलवार को आभा को हॉस्पिटल से छुट्टी मिल जाएगी।

जब महेश आभा के कमरे में गया तो आभा को नींद में देख कर उसने उसे जगाना उचित नहीं समझा।

रात को जब महेश ने अपने घर के बाहर कदम रखा तो ज्योति अपने घर के बाहर उसके इंतज़ार में खड़ी थी। महेश उसके पास पहुंचा और उसका हाथ अपने हाथ में थाम कर सड़क पर टहलने चल दिया।

उधर, हॉस्पिटल में, रूम नंबर 480 में, अपने बिस्तर पर लेटी हुई आभा को अपने हाथ पर कुछ गर्माहट सी महसूस हुई। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। उसे लग रहा था मानो उसके मंगेतर ने उसका हाथ थाम रखा है। उसने अपनी आँखें बंद की। उसको दिल को सुकून देने वाला अहसास हो रहा था। इसका कारण उसको पता नहीं था, मगर वो चाहती थी कि वो पल कभी खत्म ना हो।

दूसरी तरफ देहरादून स्ट्रीट में महेश और ज्योति आपस में एक दूसरे का हाथ पकडे सड़क पर आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में उनको वहां आसपास रहने वाले कई लोग मिले और वे सब जानते थे कि उन दोनों की शादी होने वाली है।

चलते चलते दोनों पास के ही एक छोटे, मगर एक खूबसूरत हरियाली और महकते फूलों से भरपूर बगीचे में पहुंचे और वहां एक बेंच पर पास पास बैठ गए।

“मैंने तुम्हें अभी तक नहीं बताया कि कल रात को क्या हुआ था? एक बहुत अजीब घटना हुई थी कल रात।”

“क्या हुआ था कल रात?” ज्योति ने पूछा। उसकी आँखों में उत्कंठा के भाव थे।

“कल हालाँकि रविवार था, पर मुझे एग्जाम पेपर सेट करने थे, इसलिए मैं दोपहर बाद कॉलेज गया था। वहां से मुझे घर के लिए निकलने में थोड़ी देर हो गई थी। कल रात जोर की बरसात हो रही थी और बिजलियाँ भी कड़क रही थी।”

“तुम तो मौसम का हाल बताने लगे। ये तो मुझे भी पता है। तुम कल कॉलेज गए थे, ये भी मुझे पता है, तुम मुझे बता कर ही गए थे। मैं तो घर पर ही थी। तुम तो बताओ जो बताना चाहते हो।” महेश की बात बीच में ही काटते हुए और मुस्कुराते हुए ज्योति ने कहा।

“अरे, सुनो तो। रात के करीब दस सवा दस बजे होंगे और जैसे ही मैं देहरादून स्ट्रीट पर, घर की तरफ कुछ आगे आया, मैंने तुम्हें सड़क पर भीगते हुए पैदल चलते हुए

देखा।"

"क्या बात कर रहे हो?" ज्योति चौंक कर बोली। "मैं तो घर पर ही थी। बाहर निकली ही नहीं थी। और एक बात बताओ, ऐसे मौसम में मैं भीगने के लिए सड़क पर क्यों जाउंगी?"

"यही तो वो खास बात है जो मैं तुम्हें बताना चाहता था। जिस लड़की को मैंने देखा था, वो बिलकुल तुम्हारे जैसी दिखती थी। मुझे तो लगा था जैसे वो तुम ही हो। मगर जब मैंने पास जा कर देखा तो पता चला कि वो तुम्हारे जैसी दिख रही थी, मगर तुम नहीं थी। उसके बालों का रंग तुम्हारे बालों से कुछ अलग था और उसने चश्मा भी नहीं लगा रखा था।"

"मतलब तुम ने उस लड़की को, भरी बरसात में, तूफ़ानी मौसम में भी इतने करीब से देखा था कि तुम्हें बालों के रंग का फर्क भी पता चल गया था।' ज्योति बनावटी नाराज़गी के साथ बोली।

"अरे नहीं मेरी जान। तुम जितना समझ रही हो, उतना करीब भी नहीं गया था मैं उसके। मैं तो कार में बैठा समझा था कि वो तुम ही हो, मगर तभी पास ही एक पेड़ पर बिजली गिरी थी और वो लड़की डर के मारे सड़क पर गिर कर बेहोश हो गई थी। मैं जब उसकी मदद करने उसके पास पहुंचा तो मुझे पता चला कि वो तुम नहीं, तुम्हारी तरह दिखने वाली कोई दूसरी लड़की है। फिर मैंने उसे अपनी गाड़ी में डाला और हॉस्पिटल ले गया।"

"ठीक है। वो लड़की मेरे जैसी दिखती है, तुमने उसे बहुत नजदीक से भी देखा है। इसका मतलब है वो तुम्हारे मन को भा गई है। अब मैं अपना पत्ता कट समझूँ?" ज्योति ने बनावटी चिंताजनक स्वर में कहा।

"अरे नहीं जानू।" महेश जल्दी से बोला। शायद वो ये नहीं समझ पाया कि ज्योति मज़ाक कर रही है। "मेरा एक ही प्यार है, और वो हो तुम। तुम्हारे सिवाय मुझे किसी की जरूरत नहीं।"

"अरे, तुम तो सीरियस हो गए। ये भी नहीं समझे कि मैं मज़ाक कर रही थी।" ज्योति ने कहा और उसने महेश के होठों को चूम लिया।

उधर हॉस्पिटल में अपने बिस्तर पर लेटी आभा को अपने होठों पर चुंबन की गर्मी का अहसास हुआ। उसकी आँखें आनंद से बंद हो गई। वो नहीं जानती थी कि ऐसा क्यों हो रहा था, पर जो भी हो रहा था, उसको अच्छा लग रहा था।

थोड़ी देर बाद महेश और ज्योति बगीचे की बेंच से उठे और वापस घर की तरफ चल पड़े।

“उस लड़की में जरूर ऐसा कुछ है जो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं उसे जानता हूँ। पर मुझे पता है कि ऐसा है नहीं। वो कल ही, अपनी जिंदगी में पहली बार देहरादून आई है। मैं पहले उस से कभी नहीं मिला, ये पक्का है।”

“करती क्या है वो दिल्ली में? और यहाँ क्यों आई है?”

“वो दिल्ली के किसी हॉस्पिटल में एक डॉक्टर की असिस्टेंट है और पार्ट टाइम स्विमिंग सिखाती है।”

“अब तो मुझे लगता है कि मुझे उस लड़की से मिलना ही पड़ेगा।”

“तुम कल ही उस से मिल सकती हो।”

“कल? कैसे? हॉस्पिटल जा कर?”

“नहीं। मेरे घर पर।”

“तुम्हारे घर पर? तुम उसको अपने घर ला रहे हो?”

“हाँ, माँ के कहने पर। मैंने माँ को आभा के बारे में बताया था।”

“अच्छा, तो उसका नाम आभा है।”

“हाँ। माँ ने कहा है कि वो अभी अभी इस शहर में आई है और उसका यहाँ कोई नहीं है। आते ही बेचारी हॉस्पिटल पहुँच गई। माँ ने कहा है कि जब तक वो अपना रहने का बंदोबस्त नहीं कर लेती, तब तक हमारे घर रह सकती है।”

“अच्छा, तो सड़क से हॉस्पिटल और हॉस्पिटल से सीधे घर? मामला जरा टेढ़ा लग रहा है मुझे।”

“क्या टेढ़ा लग रहा है?”

“जब वो तुम्हारे घर पर रहने आ जाएगी तो आग और घी इतने पास पास? तुम को तो मौके का फायदा उठाने का भरपूर अवसर है।” ज्योति ने कहा और अर्थ-पूर्ण भाव से मुस्कराई।

“क्या बेहूदा बातें कर रही हो।” महेश थोड़ा झुंझलाया। “तुम क्या मुझे जानती नहीं? क्या मैं ऐसी हरकत कर सकता हूँ?”

“अरे बाबा, तुम हर बात को इतनी सीरियस क्यों लेते हो? मैं तो तुम्हें छेड़ रही थी।”

महेश ज्योति की बात सुन कर सामान्य हुआ। फिर वो भी मज़ाक के मूड में आ गया।

“एक बात तुम भूल रही हो कि मेरी माँ के कान कितने तेज है? अगर मैंने कुछ भी ऐसा वैसा करने की कोशिश भी की तो माँ को तुरंत पता चल जायेगा। भूल गई तुम? जब मैंने एक बार तुम्हें अपने कमरे में चूमा था तो कैसे मेरी माँ ने हमें रंगे हाथों पकड़ लिया था और हमारी पोल खुल गई थी।”

“हाँ, ये तो तुम सच कह रहे हो। अगर तुम्हें उसके साथ कुछ ऐसा वैसा करना है तो कहीं और जाना पड़ेगा, घर में मुमकिन नहीं है।” ज्योति हँसते हुए बोली।

महेश ने भी हंसी में उसका पूरा साथ दिया।

ज्योति ने अपना सर महेश के कंधे पर टिकाया और वो दोनों धीरे धीरे चलते हुए घर की तरफ आने लगे।

“मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ महेश। इसीलिए मैं तुम से इतना प्यार करती हूँ।” ज्योति भावुक हो कर बोली। “मुझे पता है कि तुम सिर्फ मेरे हो। तुम्हारा दिल बहुत साफ़ और नरम है। तुम किसी की भी मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहते हो। मुझे गर्व है तुम पर।”

महेश ने प्यार से ज्योति के गाल पर हाथ फेरा।

उधर हॉस्पिटल में आभा ने भी अपने गाल पर स्पर्श की गर्मी को महसूस किया।

“एक बात बताओ? आभा का यहाँ कोई नहीं है, फिर भी वो यहाँ आई है। क्यों?”

“मुझे उसने बताया कि पिछले साल दिल्ली में उसके मंगेतर की हत्या हो गई थी और तभी से वो दिल्ली छोड़ने का मन बनाये बैठी थी। यहाँ वो काम की तलाश में आई है।”

“यहाँ मिल जाएगा उसको काम?”

“उम्मीद तो है। डॉक्टर ब्रह्मा को एक सेक्रेटरी की जरूरत है और मैंने उनसे बात भी कर ली है। शायद उसको ये नौकरी मिल जाये।”

“जैसा कि मैंने कहा था, तुम हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते हो। अपनी ये आदत बनाये रखना महेश।”

“जरूर, आदतें भी भला कभी छूटती है?”

“महेश, जब हम दोनों बूढ़े हो जायेंगे, क्या तब भी तुम इसी तरह मुझे साथ में ले कर, मेरा हाथ अपने हाथ में ले कर मुझे इसी तरह अपने साथ घुमाने ले चलोगे?”

“तुम्हें मुझ पर यकीन करना चाहिए ज्योति।”

उधर हॉस्पिटल में अपने होठों पर प्यारी सी मुस्कान लिए आभा नींद के आगोश में पहुँच चुकी थी।

=====

10

मंगलवार की सुबह के सात बजे थे। पिछले दिन की तरह ही वो एक सुहानी सुबह थी।

महेश ओबेरॉय हार्ट केयर हॉस्पिटल पहुंचा और चौथी मंजिल पर सीधे नर्स रूम में जा कर सिस्टर मैरी से मिला। मैरी एक टेबल के पीछे कुर्सी पर बैठी हुई कुछ कागज़ात देख रही थी। महेश धीरे धीरे चल कर उसके पास पहुंचा तो मैरी को वहां किसी की मौजूदगी का अहसास हुआ। मैरी ने नज़रें उठा कर देखा और मुस्कराते हुए बोली,

“आइये मिस्टर महेश। बहुत जल्दी आ गए आप? लगता है कि आप को उस लड़की की बहुत चिंता है। मगर मैं आप को बता दूँ कि वो बिलकुल ठीक है। आप चाहें तो मिल लीजिये उस से।”

“वास्तव में मुझे साढ़े सात बजे कॉलेज पहुंचना होता है, इसलिए जल्दी आ गया। लेकिन आज यहाँ आने का कारण सिर्फ उस से मिलना ही नहीं है। असली बात तो ये है कि मैं आप को थोड़ी तकलीफ़ देने आया हूँ।”

“बताइये क्या कर सकती हूँ मैं आप के लिए?” मैरी अपने हाथ के कागज़ एक तरफ रखते हुए पूरा ध्यान महेश पर देती हुई बोली।

“दरअसल दो काम है मुझे आप से। पहला तो ये कि जब भी आभा को आप डिस्चार्ज करें, आप मुझे फोन जरूर कर दीजिएगा, मैं उसे लेने आ जाऊंगा। कॉलेज का मेरा फोन नंबर आप के रिकॉर्ड में है।”

“मैं जरूर आप को फोन कर दूंगी मिस्टर महेश। और दूसरा काम आप ने नहीं बताया?”

“दूसरा काम ये है कि वो लड़की, आभा इस शहर में नई है और दिल्ली से यहाँ नौकरी की तलाश में आई है। मेरे ख्याल से उसके पास हॉस्पिटल का बिल चुकाने के पैसे नहीं होंगे। इसलिए मैं ये चाहता हूँ कि आप हॉस्पिटल का बिल उस को ना दें। मैं बिल का पैमेंट कर दूँगा। अब मुझे आप बताएं कि मुझे पैमेंट कब करना है? आप कहें तो मैं अभी कर सकता हूँ।”

“मिस्टर महेश, आप का दिल बहुत बड़ा है और साथ ही बहुत कोमल भी। आप को अभी पैमेंट करने की जरूरत नहीं है। मैं बिल आप के कॉलेज भिजवा दूंगी, आप अपनी सुविधा के अनुसार पैमेंट कर दीजियेगा।” मैरी मुस्कराते हुए बोली।

“थैंक्स सिस्टर।”

“डॉक्टर आने के बाद वो मिस आभा का चेक अप करेंगे और डिस्चार्ज कार्ड पर साइन करेंगे। तब मैं आप को फोन कर दूंगी। अभी चाहें तो आप रूम में जा कर आभा से मिल सकते हैं।”

“थैंक्स अगेन सिस्टर।” महेश ने कहा और नर्स रूम से बाहर निकल गया।

बाहर आ कर वो रूम नंबर 480 की तरफ बढ़ा जहाँ आभा भर्ती थी। उसने धीरे से रूम का दरवाज़ा खोल कर अंदर झाँका। उसने देखा कि आभा सो रही थी, इसलिए महेश ने उसको डिस्टर्ब करने की कोशिश नहीं की। उसने धीरे से रूम का दरवाज़ा वापस बंद कर दिया और वहां से रवाना हो गया।

दस बजे के करीब डॉक्टर हरीश ने आभा का चेक अप किया।

“अब आप बिल्कुल ठीक हैं। मैं आप के डिस्चार्ज कार्ड पर साइन कर देता हूँ। आप जब चाहें घर जा सकती है।’ डॉक्टर हरीश ने मुस्कराते हुए आभा से कहा।

डॉक्टर हरीश के पास खड़ी सिस्टर मैरी ने डॉक्टर को आभा का डिस्चार्ज दिया तो डॉक्टर ने उस पर हस्ताक्षर कर दिए हुए फिर वो रूम से बाहर निकल गया।

“मिस आभा, आप चाहें तो नहा कर अपने खुद के कपड़े पहन लीजिये। आप का बैग उस कैबिनेट में है। हॉस्पिटल में एडमिशन से पहले आप ने जो कपड़े पहनने हुए थे, वो भी मैंने धुलवा कर, प्रेस करवा कर आप की बैग के ऊपर रख दिए हैं। कपड़े तैयार हो कर आप नर्स रूम में आ जाना, वहां आप को कुछ पेपर्स पर साइन करना है।”

“ठीक है सिस्टर, थैंक यू।”

“और हाँ, सुबह आप मिस्टर महेश से मिली थी?”

“नहीं तो? क्या मिस्टर महेश सुबह यहाँ आये थे?”

“हाँ, आप शायद तब सो रही थी। इसलिए उन्होंने आप को डिस्टर्ब नहीं किया होगा। खैर, उनके निर्देशों के अनुसार मैं उनको फोन कर देती हूँ। वो आप को लेने यहाँ आ रहे हैं।” इतना कह कर मैरी ने दरवाज़ा खोला और कमरे से बाहर निकल गई।

आभा चलती हुई कैबिनेट के पास गई और उसने कैबिनेट का दरवाज़ा खोला। उसका बैग सामने ही पड़ा था और बैग के ऊपर साफ़ और प्रेस किये हुए उसके वो कपड़े पड़े थे जो उसने टाइम मशीन में बैठते हुए पहने थे।

उसने वो कपड़े और बैग उठाया और फिर से पलंग के पास आ गई। कपड़े पलंग पर रख कर उसने बैग खोला। बैग में से उसने नीले रंग की वो ड्रेस निकाली जो उसने खास तौर से अपनी कॉलेज से हासिल की थी। अपनी जीन्स और टॉप उसने बैग में रखे और बैग बंद कर दिया।

अपने हाथ में वो नीली ड्रेस ले कर आभा ने बाथरूम में कदम रखा।

सिस्टर मैरी डॉक्टर हरीश के केबिन में पहुंची। डॉक्टर हरीश ने नज़रें उठा कर मैरी की तरफ देखा।

“सर, वो लड़की आभा, जिसका डिस्चार्ज कार्ड आप ने अभी साइन किया है, उसके बिल का पैमेंट देहरादून कॉलेज में फ़िज़िक्स के प्रोफ़ेसर मिस्टर महेश ओबेरॉय करेंगे। मैं उसका बिल बनवा कर आप के पास ले आऊं?”

“हाँ, ले आओ। मैं साइन कर दूँगा। इसमें क्या परेशानी है।”

“थैंक यू सर।” मैरी ने कहा और डॉक्टर हरीश के केबिन बाहर निकल गई।

महेश ओबेरॉय कॉलेज के अपने रूम में बैठा हुआ छात्रों के लिए कुछ नोट्स तैयार कर रहा था, तभी उसके फोन की घंटी बजी।

“हैल्लो, प्रोफ़ेसर महेश ओबेरॉय हियर।” वो फोन उठा कर बोला।

“मैं मैरी बोल रही हूँ सर हार्ट केयर हॉस्पिटल से। मिस आभा को डिस्चार्ज मिल गया है। आप उन्हें लेने आ सकते हैं।”

“थैंक यू सिस्टर, मैं अभी निकल कर आता हूँ। और उसका बिल सिस्टर?”

“वो आप को एक दो दिन में आपको कॉलेज में मिल जायेगा।”

“थैंक्स सिस्टर, मैं आ रहा हूँ।” महेश बोला और साथ ही उसने फोन रख दिया।

उसने अपनी टेबल पर बिखरे कागज़ों को समेटा और करीने से रख कर उस पर पेपर वेट रखा। खुली हुई कुछ किताबों को बंद कर के टेबल पर एक तरफ रखा और उठ खड़ा हुआ। अपनी गाड़ी की चाबी अपने हाथ में नचाते हुए महेश पार्किंग की तरफ बढ़ रहा था।

उधर हार्ट केयर हॉस्पिटल में अपना बैग अपने हाथ में लिए आभा कमरे से बाहर आई। उसने जो नीले रंग की ड्रेस पहन रखी थी, वो उसको बिलकुल फिट आई थी और वो उस ड्रेस में बहुत सुन्दर लग रही थी।

आभा ने पीछे मुड़ कर दरवाजे पर लगा हॉस्पिटल के रूम का नंबर देखा तो आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकी। वो रूम नंबर 480 था। अपने दिमाग में ढेर सारे सवाल लिए वो नर्स रूम की तरफ चलने लगी।

‘रूम नंबर 480, ये वही रूम है जहाँ मैं कुछ दिन पहले आ चुकी हूँ।’ आभा सोच रही थी। ‘लेकिन वो 2010 का साल था और मौजूदा साल, जिसमे मैं अभी हूँ, वो 1961 का साल है। ये वही रूम है जिसमे महेश ओबेरॉय ने मेरी आँखों के सामने 2010 में दम तोड़ा था।’

‘ये महज एक संयोग है या इसके पीछे और कोई कारण है?’ उसने अपने आप से कहा, मगर बहुत सोचने पर भी उसे इसके पीछे कोई खास कारण नजर नहीं आया।

वो नर्स रूम में पहुंची। मैरी ने इशारे से आभा को अपने पास बुलाया। आभा वहां पहुँच कर उसके सामने कुर्सी पर बैठ गई। अचानक आभा को कुछ याद आया और उसके ललाट पर पसीने की बूँदें चमकने लगी।

‘हे भगवान, पता नहीं हॉस्पिटल का बिल कितना होगा और ये भी पता नहीं कि वो भरने लायक पैसे मेरे पास कहां से आएँगे?’ उसके दिमाग में ख़याल आया।

उसने जल्दी से रुमाल निकाल कर पसीना पोंछा और अपने आप को सामान्य दिखाने की कोशिश करने लगी।

“ये कुछ पेपर हैं, इन पर साइन कर दीजिये।” मैरी ने उसे तीन कागज़ दिए। आभा ने उन पर साइन कर दिया।

“इस फार्म पर अपना पता भर दीजिये।” मैरी ने एक फार्म उसकी तरफ बढ़ाते हुए कहा।

आभा ने उस पर अपना मई 2010 से पहले वाला अपना दिल्ली का पता लिख दिया।

“यहाँ का बिल कितना हुआ सिस्टर?” आभा ने धीरे से, डरते डरते पूछा।

“कितना भी हुआ हो, आप को उसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है।” मैरी ने मुस्कराते हुए कहा। “अभी मिस्टर महेश यहाँ पहुँचते ही होंगे आप को ले जाने के लिए। आप यहीं उनका इंतज़ार कीजिये।”

पांच मिनट बाद ही महेश ने नर्स रूम में कदम रखा।

“छुट्टी मिल गई इनको?” महेश ने आते ही मैरी से पूछा।

“हाँ, ये आप के साथ जाने के लिए बिल्कुल तैयार है।”

“थैंक यू सिस्टर।” महेश ने कहा।

“थैंक यू सिस्टर।” आभा ने भी कहा और वो खड़ी हो गई।

आभा महेश के साथ हो ली और पीछे बैठी नर्स मैरी उनको जाते हुए देखती रही। आभा के हाथ में उसका बैग था। दोनों चलते हुए लिफ्ट के पास आये। महेश ने लिफ्ट का बटन दबाया। लिफ्ट उसी मंजिल पर थी। दरवाज़ा खोल कर दोनों लिफ्ट में सवार हो गए।

“तुम्हारे बैग का डिजाइन कुछ अजीब सा है। मैंने इस तरह का बैग पहले कभी नहीं देखा।”

“ये लेटेस्ट डिजाइन का बैग है। दिल्ली में तो मिलता है।” आभा को इसके अलावा कोई जवाब नहीं सुझा।

“हाँ, दिल्ली तो फैशन की नगरी है। जब मैंने तुमको सड़क पर पहली बार देखा था, तब तुम ने ऐसे कपड़े पहन रखे थे, जो लड़कियों द्वारा यहाँ नहीं पहने जाते।” महेश ने कहा।

महेश को कुछ जवाब देने की बजाय आभा सिर्फ मुस्करा कर रह गई। वो ये अच्छी तरह जानती थी कि जितना अधिक वो बोलेगी, उसकी पोल खुलने के आसार उतने ही बढ़ जायेंगे।

लिफ्ट जब नीचे पहुँच कर रुकी, तो दोनों लिफ्ट से बाहर निकल आये। आभा ने एक नजर घुमा कर 1961 के हॉस्पिटल को देखा। उसने देखा कि 2010 तक हॉस्पिटल में काफी बदलाव आ चुके थे, पर बिल्डिंग वही पुरानी थी।

साथ साथ चलते हुए वे दोनों पार्किंग तक आये। पार्किंग में महेश की 1955 के मॉडल की कार खड़ी थी। आभा ने ध्यान से कार को देखा। ये वही कार थी, जो उसने तस्वीर में देखी थी। उसे वो कार सचमुच की अपने सामने देख कर बहुत प्यारी लगी। महेश ने आगे बढ़ कर पैसंजर सीट का दरवाज़ा आभा ने खोला।

आभा को ये बहुत पसंद आया। उसने सोचा कि काश 2010 में भी नौजवान लड़कियों के लिए नौजवान लड़के ऐसे ही कार का दरवाज़ा खोलते तो कितना अच्छा रहता। आभा कार की सीट पर बैठ गई तो महेश ने धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया।

महेश कार का चक्कर लगा कर ड्राइविंग सीट के दरवाजे की तरफ आया। इसी बीच आभा ने अपनी आदत के अनुसार सीट बेल्ट के लिए बिना देखे अपनी साइड में ऊपर की ओर हाथ कर के टटोला। उसके हाथ में कुछ नहीं आया।

उसने आश्चर्य गर्दन घुमा कर देखा। वहां कोई सीट बेल्ट नहीं था। तभी उसे याद आया कि वो तो 1961 में थी, तब शायद कार में सीट बेल्ट नहीं हुआ करते थे। उसने देखा की ड्राइवर सीट पर भी सीट बेल्ट नहीं था। उसे अपने आप पर हलकी सी हंसी आई।

महेश कार का दरवाज़ा खोल कर अंदर बैठा और उसने गाड़ी स्टार्ट की। जल्दी ही गाड़ी हॉस्पिटल कम्पाउंड से निकल कर बाहर सड़क पर दौड़ने लगी।

“मुझे उम्मीद है कि आप जिस तरह से मेरा ध्यान रख रहे हैं, कदम कदम पर मेरी सहायता कर रहे हैं, इससे आप की मंगेतर को कोई परेशानी नहीं है।”

“अरे, बिलकुल नहीं। ज्योति बहुत अच्छी लड़की है। उसका दिल बहुत बड़ा और नरम है। तुम्हारी सोच के विपरीत उसे मेरा किसी की सहायता करना बहुत पसंद है। वो तो तुम से मिलना भी चाहती है।”

“मिलना तो मैं भी चाहती हूँ ऐसी खुश-किस्मत लड़की से।”

थोड़ा आगे आने के बाद महेश सामने के एक कच्चे रास्ते की तरफ संकेत करता हुआ बोला,

“ये कच्चा रास्ता सीधे देहरादून स्ट्रीट जाता है। पता नहीं यहाँ पक्की सड़क कब बनेगी। मुझे कच्चे रास्ते पर गाड़ी चलाना पसंद नहीं है, इसलिए हमें घूम कर, आधे देहरादून का चक्कर लगा कर, मेरी कॉलेज सामने से जाना पड़ेगा।”

“कोई बात नहीं, मुझे किस बात की जल्दी है?” आभा बोली।

उसने देखा कि 1961 का देहरादून शहर 2010 तक कितना बदल गया था। जिस देहरादून स्ट्रीट से महेश को देखने के लिए वो 2010 में हार्ट केयर हॉस्पिटल गई थी, वो 1961 की वही कच्ची सड़क थी, जो पक्की बन चुकी थी।

“अगर तुम देहरादून का नक्शा देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि देहरादून स्ट्रीट इस शहर के बीच में है। उसके एक तरफ ये हॉस्पिटल है और दूसरी तरफ देहरादून कॉलेज है।” महेश ने बताया।

आभा केवल सर हिला कर रह गई थी। महेश बेचारा क्या जानता था कि आभा को सब पता है। तभी गाड़ी उस सड़क पर पहुंची, जिस पर देहरादून कॉलेज था।

“वो देखो, सामने ही भारत के सब से पुराने कॉलेजों में से एक, देहरादून कॉलेज है, जहाँ मैं पढ़ाता हूँ।” महेश ने इशारे से बताया।

आभा ने देखा कि गेट पर एक बहुत बड़ा और सुन्दर लकड़ी का दरवाज़ा था, जिसके ऊपर लकड़ी का ही बोर्ड लगा था, जिस पर लिखा था, ‘देहरादून कॉलेज।’ 2010 में इस लकड़ी के दरवाजे की जगह लोहे के दरवाजे ने ले की थी और लकड़ी के बोर्ड की जगह कंक्रीट और मार्बल से बने बोर्ड ने।

कॉलेज की सुन्दर इमारतें जैसी 1961 में लग रही थी, वैसी ही 2010 में लग रही थी।

“अरे हाँ, मैं तो तुम्हें बताना ही भूल गया कि कल सुबह तुम्हारा इसी कॉलेज में सेक्रेटरी की पोस्ट के लिए इंटरव्यू है। मैंने तुम्हारे लिए यहाँ बात कर ली है। मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम्हें ये नौकरी मिल जाएगी।”

“ये तो बहुत अच्छी बात है। आप मेरे लिए बहुत तकलीफ़ उठा रहे हैं। धन्यवाद।” आभा ने कहा, मगर वो उस नए अनुभव को लेने के लिए रोमांचित थी।

“और एक बात बतानी है तुम्हें। क्यों कि तुम्हारे पास अभी यहाँ कहीं रहने का इंतज़ाम नहीं है, इसलिए मेरी माँ का कहना है कि तुम हमारे घर पर रुक जाओ। जब तुम्हारी नौकरी लग जाये और रहने का कोई और इंतज़ाम हो जाये, तो वहां चली जाना।”

“मैं पहले ही आप को बहुत परेशान कर चुकी हूँ। आप मेरे लिए और तकलीफ़ ना लें। मेरा कुछ ना कुछ तो इंतज़ाम हो ही जायेगा।”

“इसमें परेशानी और तकलीफ़ की कोई बात नहीं है। मेरी माँ ऐसा चाहती है, और तुम्हारे वहां हमारे घर में रहने से किसी को कोई तकलीफ़ या परेशानी नहीं है।

इसलिए अभी हम मेरे घर चल रहे हैं।"

"आप ने मेरा हॉस्पिटल का बिल भी चुकाया है।"

"तो क्या हुआ? वो मेरा उधार है तुम पर। जब तुम्हारी नौकरी लग जाये तो वापस कर देना।"

आभा ने कुछ कहा नहीं, मगर उसकी आँखों में महेश के लिए इज़्ज़त के भाव पैदा हुए। आभा खिड़की के बाहर 1961 का देहरादून बहुत दिलचस्पी के साथ देख रही थी।

"आप यहाँ कब से पढ़ा रहे हैं?" अचानक आभा ने सवाल किया।

हालाँकि आभा इसका उत्तर जानती थी, मगर फिर भी बातचीत का सिलसिला बनाये रखने के लिए उसने ये सवाल कर दिया।

"तीन साल हो गए। मैं यहाँ 1958 से पढ़ा रहा हूँ।"

"घर के रास्ते में कोई बाजार पड़ेगा क्या? मुझे कुछ चीजें खरीदनी है।"

"कैसी चीजें?"

"टूथब्रश और ऐसी ही कुछ चीजें।"

"घर के रास्ते में एक अच्छी दुकान है। वहां तुम्हें ऐसी चीजें मिल जाएगी।"

"अच्छा।"

कुछ दूर चल कर, देहरादून स्ट्रीट के किनारे पर, एक दुकान के आगे महेश ने कार रोकी। महेश ने नीचे उतरने का उपक्रम किया तो आभा बोली,

"आप बैठे रहिये। मैं अभी आई।" कह कर आभा दरवाज़ा खोल कर नीचे उतरी और उस दुकान में गई।

दुकान में उस समय कोई और ग्राहक नहीं था। आभा ने वहां से एक टूथ पेस्ट, एक टूथ ब्रश, शैम्पू और कंघी खरीदी। अपने सफ़ेद पर्स से निकाल कर आभा ने पैसे दिए तो दुकानदार ने देखे बिना ही वो नोट अपने गल्ले में डाल लिए।

कुछ देर बाद ही महेश ने अपने घर के सामने गाड़ी रोकी। महेश अपनी तरफ से उतरा और आभा भी अपना बैग अपने हाथ में लिए दूसरी तरफ से गाड़ी से उतरी।

आभा ने एक नजर ज्योति के घर पर डाली, जो 2010 में उसने खरीदा था। आभा को वो घर देख कर अजीब सा सुखद आभास हुआ। घर जैसा 1961 में दिखता था, वैसा

ही 2010 में दिखता था। महेश ने अपने घर का दरवाज़ा खोला और अंदर आया, तो आभा भी उसके पीछे पीछे घर में दाखिल हो गई।

महेश का घर 1940 के सुन्दर फर्नीचर से सजा था। उस घर के अंदर आ कर आभा को वही अजीब सी, सुखद अनुभूति हुई जो वो कई बार अनुभव कर चुकी थी, 2010 में और 1961 में भी।

"माँ।" अंदर हॉल में पहुँच कर महेश ने आवाज़ लगाई।

"आई बेटा।" एक मीठी आवाज़ आई।

आभा ने देखा कि महेश ने घर के कम्पाउंड का दरवाज़ा फिर से बंद नहीं किया था। तभी आभा को याद आया कि उसकी दादी माँ कहा करती थी कि उनके ज़माने में लोग घर का दरवाज़ा खुला ही रखते थे, क्यों कि उस ज़माने में चोरी चकारी का कोई डर नहीं था।

लेकिन उस समय, 1961 में आभा जानती थी कि धीरे धीरे समय बदल जाने वाला था। लेकिन आभा को वो 1961 का जमाना पसंद था, जहां लोगों के बीच इतना प्रेम, इतना विश्वास, प्यार और सहायता करने की भावना थी।

तभी महेश की माँ ने हॉल में कदम रखा। उनको उम्र करीब 50 साल की रही होगी। उन्होंने गुलाबी रंग की बहुत सुन्दर साड़ी पहन रखी थी।

"हाँ बेटा, क्या बात है? आज इस वक्त घर पर?" वो अंदर आते ही बोली।

महेश ने आभा की तरफ इशारा किया। आभा को देख कर वो थोड़ा चौंकी।

"ये क्या ज्योति, तुमने अपने बाल रंगे है? और चश्मा कहाँ है तुम्हारा?"

महेश जोर से हंसा और फिर बोला,

"गौर से देखो माँ, ये ज्योति नहीं है। ये आभा है, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था।"

"हे भगवान। सच कह रहा था तू। देखो, इसका चेहरा ज्योति से कितना मिलता है।" महेश की माँ हैरानी से बोली।

आभा को महेश की माँ बहुत अच्छी, बहुत प्यारी और जानी पहचानी सी लगी। उसने माँ को हाथ जोड़ कर नमस्ते किया।

"अब तुम्हारी तबियत कैसी है बेटी? बहुत जोर से लगी थी सर में?"

"अब मैं बिलकुल ठीक हूँ माँ जी।" आभा बोली।

“माँ, मुझे कॉलेज वापस जाना है। मैं चलता हूँ। तुम दोनों बैठ कर बातें करो। मैं तुम लोगों से शाम को मिलता हूँ।” महेश ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा।

“ठीक है बेटा, तुम जाओ।”

“और हाँ।” महेश ने आभा को संबोधित किया। “तुम्हें टाइपिंग तो जरूर आती होगी?”

“हाँ, आती है। क्यों?”

“कल तुम्हारा इंटरव्यू है ना। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपना बायो-डाटा बना लो।”

“ठीक है।”

“माँ, आभा को मेरा टाइपराइटर बता देना। पेपर भी वहीं पास में रखे हैं। मैं चलता हूँ।” इतना कह कर महेश बाहर निकल गया।

आभा घबरा गई। उसको टाइपिंग आती थी, मगर कम्प्यूटर की बोर्ड पर। उसने टाइपराइटर देखा हुआ जरूर था, पर कभी उस पर टाइप नहीं किया था। वो सोचने लगी कि पता नहीं वो टाइपराइटर का सही तरीके से इस्तेमाल कर भी पाएगी या नहीं।

महेश की मां उसे महेश के कमरे में ले आई। आभा को वो कमरा जाना पहचाना सा लगा। माँ ने एक टेबल की तरफ इशारा किया जहाँ एक टाइपराइटर रखा था। पास ही एक ट्रे में सादे कागज़ रखे हुए थे। आभा टाइपराइटर के सामने कुर्सी पर बैठी और उसने अपना बैग नीचे रखा।

उसने कभी खुद टाइपराइटर इस्तेमाल नहीं किया था मगर उसने कुछ पुरानी फिल्मों में टाइपराइटर का इस्तेमाल होता हुआ देखा था, इसलिए उसे उसका बेसिक पता था।

“तुम यहाँ बैठो, मैं अभी तुम्हारे लिए नाश्ता ले कर आती हूँ।” माँ ने कहा और वो कमरे से बाहर निकल गई।

आभा को पता नहीं चला, मगर महेश की माँ कमरे से बाहर आ कर, दरवाजे की आड़ ले कर, छिप कर आभा को देखने लगी। उनकी आँखों में आभा के लिए बहुत सारा प्यार था। उनकी आँखें भीग गई और फिर वो अपनी आँखें पोंछती हुई वहां से पलट कर चली गई।

आभा ने टाइपराइटर पर एक पेपर लोड करने की कोशिश की। दो तीन कोशिशों के बाद वो इसमें कामयाब हो गई। फिर उसने टाइपिंग शुरू की। टाइपराइटर के की बोर्ड पर उसकी उँगलियाँ कई बार बीच की जगह में फिसली।

कुछ मिनटों बाद टेबल के नीचे रखी टोकरी में चार गलत टाइप किये हुए, मुड़े तुड़े पेपर पड़े थे, मगर आभा ने हिम्मत नहीं हारी। जितना उसने सोचा था, टाइपराइटर का सही तरीके से इस्तेमाल करना उस से कहीं अधिक मुश्किल काम था।

तभी माँ ने कमरे में प्रवेश किया। उसके एक हाथ में एक प्लेट थी और दूसरे हाथ में एक गिलास। उसने दोनों चीजें टेबल पर रखी। प्लेट में गरमा गरम आलू का पराठा था, जिस में से भीनी भीनी सुगंध उठ रही थी और गिलास में दूध था।

“छोड़ो उसको। पहले नाश्ता कर लो।” माँ ने बहुत प्यार से कहा।

आभा ने प्यार और आभार से माँ की तरफ देखा। माँ ने प्यार से आभा के सर पर हाथ फेरा। आभा चुपचाप पराठा खाने लगी और बीच बीच में दूध के घूँट भी लेने लगी।

“बहुत स्वादिष्ट बना है। आप के हाथ में जादू है।” आभा ने पराठे की तारीफ की।

“कोई जादू नहीं है बेटी। असल बात तो ये है कि बच्चों को माँ के हाथ की बनी हर चीज पसंद आती है।’ माँ ने आभा की ओर प्यार से देखते हुए कहा।

फिर माँ की नजर नीचे टोकरी में मुड़े तुड़े कागज़ों पर पड़ी।

“मुझे भी लगता है कि टाइपिंग करना आसान नहीं है। मगर महेश बहुत आसानी और बहुत तेजी से टाइप कर लेता है। वो जब भी टाइपिंग करने बैठता है, इस कमरे से बिना रुके टका टक, टका टक की आवाजें आती रहती है। तुम से नहीं हो रहा है तो छोड़ दो। शाम को जब महेश आएगा तो मैं उसे कह कर टाइप करवा दूंगी।”

“कोशिश करती हूँ। दूसरा काम ही क्या है मेरे पास अभी।”

=====

11

एक घंटे से अधिक समय की कड़ी मेहनत के बाद आखिर आभा अपना बायो डाटा टाइप करने में कामयाब हो ही गई। लेकिन तब तक नीचे टोकरी में काफी कागज़ जमा हो चुके थे। लेकिन आभा खुश थी कि आखिर उसे कामयाबी मिल ही गई थी।

उसने बार बार अपने टाइप किये हुए बायो डाटा को देखा और फिर उसे टेबल पर रख दिया। तब तक दोपहर के खाने का समय भी हो चुका था। महेश की माँ और आभा ने साथ साथ दोपहर का खाना खाया और फिर माँ ने आभा को महेश के कमरे में ही आराम करने के लिए कहा और खुद आराम करने दूसरे कमरे में चली गई।

खाना बहुत अच्छा बना था। आभा ने एक लम्बे अरसे बाद इतना अच्छा खाना खाया था। उसे अपनी माँ और दादी की याद आ गई जो बहुत अच्छा खाना बनाती थी। घर के माहौल में आभा को बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई थी।

जब आभा की आँख खुली तो शाम हो चुकी थी। अपना मुंह धोने वो जब हॉल में, बाथरूम में आई तो उसे किचन से कुछ आवाजें आई। वो समझ गई कि महेश की माँ रात के खाने की तैयारी कर रही थी। अपना मुंह धो कर वो किचन में पहुंची तो उसने देखा कि उसने सही सोचा था। माँ खाने की ही तैयारी कर रही थी।

"उठ गई बेटी।" आभा को देखते ही वो प्यार से बोली। "मैंने तुम्हें जानबूझकर नहीं उठाया, सोचा तुम्हें आराम की जरूरत है।"

"हालांकि मुझे किचन के काम के बारे में ज्यादा पता नहीं है, फिर भी मेरा मन कर रहा है कि मैं आप की सहायता करूँ।"

"क्यों नहीं। लड़कियों को खाना बनाने का ज्ञान तो होना ही चाहिए। मुझे पता है कि तुम दिल्ली में भी अकेली ही रहती थी और जैसा भी कच्चा पक्का बना, शायद वही खा कर सो जाती होगी।"

"आप ठीक कह रही हैं माँ जी। ऐसी ही बात है।"

"तुम्हारी ड्रेस बहुत अच्छी है। किचन के काम में शायद ये खराब हो जाएगी। तुम पहले कपड़े बदल लो।"

आभा ने सर हिलाया और वो किचन से वापस महेश के रूम में आ गई। उसके पास कुल दो ही तो ड्रेस थी। एक तो वो, जो वो उस वक्त पहने थी, जो उसने कॉलेज से ली थी। और दूसरा जोड़ा जो था, वो थी उसकी जीन्स और टॉप। उसने अपनी बैग खोल कर जीन्स और टॉप पहन लिया।

वो फिर से किचन में पहुंची। महेश की माँ ने उसको ऊपर से नीचे तक देखा।

"इन कपड़ों में तुम बिलकुल लड़का लग रही हो बेटी। दिल्ली की फैशन के कपड़े है। वैसे मैंने तुम्हारी सैंडल भी देखी थी। बहुत सुन्दर है। यहाँ देहरादून में ऐसे कपड़े

और सैंडल नहीं मिलते।"

आभा मुस्करा कर रह गई। उस वक्त माँ प्याज़ काट रही थी। आभा ने पूछा,

"मैं क्या करूँ माँ जी?"

"तुम ऐसा करो, वहां जो गाजर रखी है, उनको बारीक़ गोल गोल काट लो। चाकू वो सामने स्टैंड पर रखा हुआ है।"

"हाँ, ये काम तो मैं अच्छी तरह कर सकती हूँ।" आभा ने चाकू उठाते हुए कहा।

"ज्योति को अब तो समय कम मिलता है, पर पहले वो किचन में मेरी बहुत हेल्प करती थी। तुम ने मुझे उसकी याद दिला दी। अभी भी, जब भी उसको समय मिलता है, वो मेरा हाथ बंटाने आ जाती है।"

माँ ने ये बात इतनी भावुकता से कही कि आभा ने बड़े प्यार से उनकी तरफ देखा।

"मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरे कुछ दिन यहाँ रहने से आप लोगों को कोई परेशानी नहीं होगी।"

"अरे कैसी बात कर रही हो तुम? तुम मेरे लिए बेटी की तरह हो। तुम से मिलने के बाद वास्तव में मैं तो यही चाहती हूँ कि दूसरी जगह तुम्हारा रहने का बंदोबस्त जल्दी से ना हो।"

आभा ने उनकी तरफ देखा, तो उनकी आँखों में आंसू थे।

"अरे, किसी भ्रम में ना रहना। ये तो प्याज़ की वजह से आंसू निकल आये हैं।" माँ मुस्कुराते हुए बोली।

आभा मन ही मन बहुत प्रसन्न थी। पहली बात तो ये थी कि उसे कुछ दिन साल 1961 में गुज़ारने का मौका मिला था। और दूसरी अच्छी बात ये थी कि वे कुछ दिन उसे एक अच्छे और प्यारे परिवार में गुज़ारने का मौका मिला था। आखिर उसे 19 मई की रात को ज्योति की जान बचाने के बाद, शनिवार, 20 मई की रात को फिर से 2010 में लौट जाना था।

लेकिन अभी इसका प्लान बनाना बाकी था कि आखिर किस तरह उसे ज्योति की जान बचानी है। खैर, उसके पास अभी प्लान बनाने के लिए काफी वक्त था, इसलिए वो आश्वस्त थी।

एक घंटे के बाद सूर्यास्त हो गया था और तब तक खाना भी बन चुका था। आभा को अंदाजा था कि 1961 में लोग जल्दी खाना खा लेते थे। तभी आभा को बाहर एक कार रुकने की आवाज़ आई। उसने बाहर झांक कर देखा, तो वो महेश की कार थी।

महेश अपनी कार से उतरा और उसने एक नजर ज्योति के घर पर डाली। ज्योति की कार वहां नहीं थी। 'इसका मतलब ज्योति अभी तक नहीं लौटी है। शायद काम ज्यादा होगा या कहीं गई होगी।' उसने सोचा। वो दरवाज़ा खोल कर अपने घर के अंदर आ गया।

घर के अंदर घुसते ही उसको बोलने और हँसने की आवाजें सुनाई दी। वो समझ गया की माँ और आभा आपस में बहुत घुल मिल गए हैं और घर में ऐसा माहौल उसको बहुत अच्छा लगा।

आवाजें माँ के कमरे से आ रही थी। महेश सीधा वहीँ पहुंचा। आभा वहां कुर्सी पर बैठी सलाद काट रही थी और माँ बिस्तर पर बैठी किसी बात पर जोर जोर से हंस रही थी।

"लगता है माँ बेटी में बहुत प्यार हो रहा है।"

"हाँ बेटा, आभा बहुत प्यारी लड़की है। काश ये सचमुच मेरी बेटी होती और मेरे पास ही बड़ी होती। ये बिलकुल ज्योति की तरह है।" माँ ने कहा।

"अरे क्या हो रहा है अंदर?" बाहर से एक आवाज़ आई। "मुझे भी तो पता चले। शायद घर में कोई मेहमान आया है।"

"ये मेरे पिता जी है।"

हरीश ओबेरॉय, उम्र करीब 52 / 55 के आसपास। अच्छी तंदुरुस्ती और सर पर खिचड़ी बाल। वो कमरे की तरफ बढे। कमरे के बाहर एक स्टैंड पर उन्होंने टिफिन बॉक्स रखा। उनके बदन पर वर्क शॉप वाली वर्दी थी और हाथ में टिफिन बॉक्स। वे थोड़ा थके हुए लग रहे थे।

"अरे हमें भी तो मिलाओ मेहमान से।" वो हँसते हुए बोले।

"आभा, ये मेरे पिताजी है। ये जनरल मोटर्स में सुपरवाइजर है। और ये आभा है पिता जी।" महेश जल्दी से बोला।

आभा ने उनको हाथ जोड़ कर नमस्ते किया। हरीश ने आश्चर्य से आभा की तरफ देखा।

“एक बार तो मुझे लगा कि .....” इससे पहले कि वो आगे बोलते, महेश ने उनकी बात काट कर कहा,

“आप को लगा कि ये ज्योति है। मुझे और माँ को भी यही लगा था, जब हम ने पहली बार इसको देखा था।” महेश हँसता हुआ बोला।

“कमाल है।” हरीश ओबेरॉय के मुंह से निकला।

उनका मुंह अभी भी आश्चर्य से खुला हुआ था। आभा के हाथ अभी भी उनके सम्मान में जुड़े हुए थे।

“जीती रहो बेटी। सदा सुखी रहो।” उन्होंने आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठा कर कहा। “तुम्हारे सर पर अपना हाथ बाद में रखूँगा। अभी ये गंदे हैं। पहले हाथ धो लूँ।”

“आप से मिल कर बहुत अच्छा लगा पिता जी। वास्तव में आप सब से मिल कर मैं बहुत खुश हूँ।”

“मुझे भी तुम में अपनी बेटी नजर आ रही है बेटी।” हरीश थोड़ा भावुक हो कर बोले।

आभा सोच रही थी की 1961 में लोग कितने अच्छे और मिलनसार हुआ करते थे।

“चलिए, आप दोनों अब हाथ धो लीजिये, खाना तैयार है।” माँ ने जल्दी से बाप बेटे से कहा।

दोनों ने बारी बारी से बाथरूम के बाहर लगे वाश बेसिन पर जा कर हाथ धोये और कपड़े बदलने के लिए अपने अपने रूम में चले गए। हरीश जब कपड़े बदल कर आये, तो उन्होंने प्यार से आभा के सर पर हाथ फेरा। आभा को अपने सर पर उनका स्पर्श बहुत अच्छा लगा।

सब ने साथ मिल कर खाना खाया। तीनों ने आभा से उसकी दिल्ली की जिंदगी के बारे में अलग अलग सवाल किये। आभा ने सावधानी पूर्वक सभी सवालों के जवाब दिए। उसने ऐसी कोई बात नहीं कही जिस से उन तीनों को कोई शक हो।

खाना खाने के बाद आभा और माँ सब बर्तन ले कर किचन में आ गए। माँ बर्तन साफ़ करती जा रही थी और आभा उनको अच्छी तरह पोंछ पोंछ कर अपनी जगह रखती जा रही थी।

तभी हरीश ओबेरॉय ने किचन में कदम रखा।

“हो गया टाइम?” माँ ने व्यंग से पूछा।

आभा समझ नहीं पाई कि किस विषय में बात हो रही है। आभा ने प्रश्नवाचक निगाहों से माँ की तरफ देखा।

“अंग्रेजों की फ़ैक्टरी में काम करते हैं ना, इसलिए आदत भी अंग्रेजों वाली है। खाना खाने के बाद रोज रात को इनको बीयर चाहिए।”

हरीश ने कोई जवाब नहीं दिया और धीरे से मुस्करा कर फ्रिज खोला। तुरंत ही उन्होंने फ्रिज बंद भी कर दिया।

“यहाँ ख़तम हो गई है। मैं गैरेज से ले कर आता हूँ।” उन्होंने कहा।

आभा ये सुन कर घबरा गई। उसे डर लगा कि गैरेज में तो टाइम मशीन खड़ी है। पता नहीं उसे वहां देख कर इन लोगों की क्या प्रतिक्रिया हो। उसने अपने हाथ का बर्तन रखा और जल्दी से बोली,

“आप बैठिये पापा, मैं ले आती हूँ।”

“अरे नहीं, मैं ले आता हूँ ना।”

“नहीं पापा, जब तक मैं यहाँ हूँ, मैं चाहती हूँ कि मैं आप की अधिक से अधिक सेवा करूँ। यहाँ काम करने में मुझे मज़ा आता है। लगता है मैं अपने ही घर में हूँ।” आभा ने कहा और जल्दी से किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोल कर लॉन ने कदम रखा और फिर गैरेज की ओर बढ़ गई।

“पगली।” हरीश के मुंह से निकला।

आभा बाहर लॉन में तो आ गई, मगर उसका ध्यान स्लाइडिंग दरवाजे के पास ही एक हुक पर लटकी गैरेज की चाबी की तरफ नहीं गया। वो बिना चाबी के ही गैरेज की तरफ बढ़ रही थी।

उधर पीछे किचन में माँ और हरीश बातें कर रहे थे।

“मुझे तो ये लड़की बहुत पसंद है। कितनी प्यारी है और हर काम करने के लिए तत्पर रहती है।” माँ बोली।

“हाँ, मुझे तो लगता है कि मैं इसे बहुत पहले से जानता हूँ।”

“मुझे भी ऐसा ही लगता है।” माँ ने जवाब दिया।

तभी हरीश की नजर स्लाइडिंग दरवाजे के पास हुक पर लटकती गैरेज की चाबी पर पड़ी।

“ये लो, जल्दबाजी में वो गैरेज की चाबी तो यहीं भूल गई। ताला कैसे खोलेगी वो गैरेज का।” कहने के साथ ही हरीश ने चाबी ली और लॉन में आ कर आभा के पीछे, गैरेज की तरफ चल दिया।

तभी महेश भी वहां किचन में पहुंचा। वो तुरंत ही सारी बात समझ गया। वो भी जल्दी जल्दी हरीश के पीछे भागा।

“अरे आभा बेटी।” हरीश ने आवाज़ लगाई। “गैरेज की चाबी तो लेती जाओ।”

आभा ने पीछे मुड़ कर देखा। हरीश और महेश को अपने पीछे पीछे आते देख कर वो थोड़ी सी घबरा सी गई थी। आभा तब तक गैरेज के पास पहुँच चुकी थी। हरीश जल्दी जल्दी कदम रखता हुआ आया और उसने गैरेज का ताला खोला।

तब तक महेश भी वहां पहुँच गया था।

“मैंने सोचा कि मैं भी आप लोगों की मदद कर दूँ।” महेश मुस्कराते हुए बोला।

तब तक हरीश ने गैरेज का एक दरवाज़ा खींच कर खोल दिया था। आभा ने देखा कि तब तक खुले दरवाजे से हो कर हरीश गैरेज के अंदर पहुँच चुका था। आभा तो ये सोच सोच कर घबरा रही थी कि जब हरीश गैरेज में टाइम मशीन खड़ी देखेगा तो क्या होगा?

हरीश ने गैरेज के अंदर पहुँच कर लाइट जलाई। बाहर खड़ी आभा हरीश की कोई प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रही थी।

“अरे ये क्या है?” अंदर से हरीश की आवाज़ आई।

“बंटा-धार।” आभा ने सोचा। “अब क्या होगा।”

लेकिन जब उसने देखा कि अपने पिता की आवाज़ सुन कर महेश गैरेज के अंदर जा रहा था, तो वो भी डरती डरती उसके पीछे हो ली। अंदर आते ही आभा के आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसने देखा कि टाइम मशीन वहां नहीं थी। गैरेज तो खाली था। वहां कुछ कार्टून ही पड़े थे।

“अब मैं वापस 2010 में कैसे जाउंगी? टाइम मशीन तो गायब है।” आभा के दिल में ख़याल आया।

तभी उसे मशीन की सेटिंग याद आई और उसने एक लंबी सांस ली। मशीन उसे लेने के लिए शनिवार रात को तय समय पर वापस आने वाली थी। उसे तो बस अपना काम पूरा हो जाने के बाद किसी ना किसी बहाने से शनिवार की रात को दस बजे

गैरेज में आना था और टाइम मशीन में बैठ कर वापस अपनी 2010 की दुनिया में चले जाना था।

हरीश अंदर खड़ा गैरेज के फर्श पर सूख चुकी उल्टी की तरफ इशारा कर रहा था। आभा को याद आया कि चक्कर आने की वजह से उसने ही वहां उल्टी की थी।

“जरूर कोई चोरी के इरादे से इस गैरेज में आया था।” हरीश बोला। “लेकिन दरवाजे पर तो ताला लगा हुआ था?”

“जो भी आया होगा, उस खिड़की से आया होगा और उसी रास्ते से वापस गया होगा।” महेश ने खुली खिड़की की तरफ इशारा करते हुए कहा।

“लगता है यहाँ से खाली हाथ ही गया होगा। चोरी करने के लिए यहाँ है क्या? सिर्फ मेरी बीयर की बोतलों का बॉक्स है, और वो तो लगता है कि सब सही सलामत है।” हरीश बोला।

महेश वहां पड़ी हुई टेबल पर चढ़ा और खिड़की को बंद कर दिया। फिर महेश ने एक औजार से सूखी हुई उल्टी को खुरचा और उसे उठा कर बाहर पड़ी डस्ट बिन में डाल आया।

हरीश ने बॉक्स खोल कर पांच बीयर की बोतलें निकाली।

“मुझे जो चाहिए था, मुझे मिल गया है। मैं जाता हूँ, तुम लोग गैरेज बंद कर के आ जाना।”

महेश और आभा दोनों बाहर आये और महेश ने गैरेज पर ताला लगा दिया। दोनों साथ साथ, धीरे धीरे चल रहे थे।

“सुनो, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ नज़दीकी बाज़ार चलो। मेरे ख्याल से तुम्हारे पास सिर्फ दो जोड़ी ही कपड़े है। कल के इंटरव्यू के लिए भी तुम्हें एक ड्रेस चाहिए होगी। चलो मैं तुम्हें कुछ कपड़े दिला दूँ।’ महेश बोला।

“आप को मेरे लिए इतना कुछ करने की क्या जरूरत है?” आभा धीरे से बोली और उसने नजर उठा कर ज्योति के घर की तरफ देखा।

“ये सोचना मेरा काम है कि मुझे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। मैं तो सोच रहा हूँ कि ज्योति को भी साथ में ले लेते हैं। वो भी तुम से मिलना चाहती थी। मैंने तुम्हें बताया था न कि ज्योति मेरी मंगेतर है और वो उस घर में रहती है।” महेश ने ज्योति

के घर की तरफ इशारा करते हुए कहा। “इस शनिवार की सुबह मेरी और ज्योति की शादी होने वाली है।”

महेश की बातों से आभा ने अंदाजा लगाया कि वो ज्योति को अपनी पत्नी बनाने के लिए कितना उत्साहित है।

“मुझे ज्योति से मिल कर ख़ुशी होगी।” आभा धीरे से बोली।

“ठीक है। तुम घर चलो और तैयार हो जाओ। मैं ज्योति को बता कर आता हूँ। हम पंद्रह मिनट में चलेंगे।” महेश ने कहा और लॉन के पिछवाड़े की तरफ बढ़ जाया जहाँ दोनों के घर की बीच की दीवार में एक छोटा सा दरवाज़ा बना था। आभा किचन के रास्ते घर आई और महेश के कमरे में कपड़े बदलने के लिए चली गई।

=====

12

रात के पौने नौ बजे थे।

हरीश हॉल में अपनी मनपसंद कुर्सी पर बैठा रेडियो पर अपना मनपसंद प्रोग्राम सुन रहा था। बीच बीच में वो बीयर का घूंट भी भर लेता था।

महेश की माँ हॉल के दूसरे कोने में बैठी हुई, नजर का चश्मा लगा कर कोई धार्मिक किताब पढ़ रही थी। तभी आभा कपड़े बदल कर महेश के कमरे से बाहर आई। उसने अपनी वही एक मात्र नीली ड्रेस पहन रखी थी। तभी महेश ने बाहर से हॉल में प्रवेश किया।

माँ ने नज़रें उठा कर बारी बारी से दोनों को देखा। वो समझ तो गई थी कि दोनों बाहर जा रहे हैं, पर उसने महेश के बोलने का इंतज़ार किया।

“हम दोनों ज्योति को साथ ले कर जरा बाज़ार जा रहे हैं। आभा के पास कपड़े नहीं है इसलिए उसे कुछ कपड़े खरीदने हैं।” महेश ने अपने माता पिता को संबोधित कर के कहा।

“ध्यान से जाना और टाइम पर वापस आ जाना। अधिक देर मत करना।” माँ ने कहा और वापस अपनी नज़रें अपनी किताब में गड़ा दी।

“मजा करो बच्चों।” हरीश ने बिना उनकी ओर देखे ही कहा। उनका पूरा ध्यान रेडियो पर आ रहे प्रोग्राम और अपनी बीयर पर था। महेश आभा को साथ ले कर

बाहर निकल गया और अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। बाहर निकल कर दोनों ज्योति घर की तरफ बढे।

ज्योति की कार उसके घर के बाहर खड़ी थी। आभा बाहर ही ज्योति की कार के पास खड़ी हो गई और महेश ने आगे बढ़ कर दरवाज़ा खटखटाया।

जल्दी ही दरवाज़ा खुला और ज्योति ने दरवाजे से बाहर कदम रखा। ज्योति ने सफ़ेद शर्ट और काले रंग का लम्बा स्कर्ट पहन रखा था और उसकी आँखों पर चश्मा लगा था। उसने पलट कर दरवाजे पर ताला लगाया।

“ज्योति, इनसे मिलो। ये है आभा अरोड़ा, जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। और आभा, ये है मेरी मंगेतर ज्योति, जिस से शनिवार को मेरी शादी होने वाली है।”

ज्योति ने एक बार नहीं, कई बार आभा को ऊपर से नीचे तक देखा। उसको अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था कि वो बिल्कुल खुद से इतनी मिलती जुलती लड़की को देख रही है। उन दोनों में आपस में इतनी समानता थी कि कोई भी उनको जुड़वाँ बहने समझने की भूल कर सकता था।

ज्योति ने जैसे ही आभा को देखा, उसे अजीब से अपनेपन का अहसास हुआ। ज्योति के देख कर वैसा ही अहसास आभा को भी हुआ। भावनाओं के वशीभूत हो कर ज्योति ने आगे बढ़ कर आभा को गले लगा लिया।

दोनों को एक दूसरे का स्पर्श बहुत अच्छा लगा और दोनों को ही ऐसा लगा कि वे एक दूसरी को बहुत अच्छी तरह जानती हैं और उस वक्त बहुत समय बाद मिल रही हैं।

“महेश ने मुझे तुम्हारे बारे में सब बताया है।” ज्योति आभा से अलग होते हुए बोली। “उसने बताया कि तुम दिल्ली की रहने वाली हो।”

“हाँ, मैं रविवार रात को ही दिल्ली से यहाँ पहुंची हूँ।” आभा ने जवाब दिया।

आभा ने ध्यान से ज्योति को देखा। वो अपनी तस्वीर से भी अधिक खूबसूरत थी। आभा की तरह ही ज्योति ने भी अपने चेहरे पर कोई मेकअप नहीं कर रखा था। वास्तव में दोनों इतनी सुन्दर थी कि उनको मेकअप करने की जरूरत ही नहीं थी।

महेश ने दोनों लड़कियों को पास पास खड़े हुए देखा तो उसने भी यही सोचा कि दोनों जुड़वाँ बहने लग रही है। दोनों में बहुत कम फर्क था। कद के मामले में भी

आभा और ज्योति से करीब करीब बराबर की लंबी थी। ज्योति के बाल भूरापन लिए हुए काले थे और आभा के बाल घने काले थे। ज्योति चश्मा लगाती थी।

तीनों धीरे धीरे चलते हुए महेश के घर के बाहर खड़ी उस की कार की तरफ बढ़ने लगे।

"महेश ने मुझे बताया कि कल कॉलेज में तुम्हारा नौकरी के लिए इंटरव्यू है?'

"हाँ।"

आभा को थोड़ा अजीब सा लगा, जब उसने सोचा कि वो उस ज्योति से बातें कर रही है जिसके मरने की खबर उसने एक पुराने अख़बार में पढ़ी थी।

"मैं भी देहरादून कॉलेज में इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के हेड की सेक्रेटरी के तौर पर काम करती हूँ। महेश ने मुझे ये भी बताया कि तुम तैरना भी सिखाती हो?"

"सही बताया है। अतिरिक्त आय के लिए मैं दिल्ली में पार्ट टाइम तैरना सिखाती थी।"

"मुझे तो पानी में जाने से ही डर लगता है।" कहते हुए ज्योति ने एक झुरझुरी सी ली। "इसलिए मैंने तैरना सीखने की कोशिश भी नहीं की।"

महेश की कार के पास ही उसके पिता हरीश की मोटरसाइकल खड़ी थी।

महेश ने बहुत सावधानी से कार का पिछले दरवाज़ा खोला और दोनों लड़कियां पीछे की सीट पर बैठ गई। महेश ने ड्राइविंग सीट का दरवाज़ा खोला और कार के अंदर बैठा। उसके पिता जी की मोटरसाइकल उसकी कार के बहुत नजदीक, करीब करीब सट कर खड़ी थी।

महेश ने कार स्टार्ट की और उसे सावधानी के साथ आगे बढ़ाया ताकि उसकी कार उसके पिताजी की मोटरसाइकल से रगड़ ना खाये। कार सड़क पर आ कर बाजार की तरफ दौड़ पड़ी।

आभा ने बातचीत का टूट चुका सिलसिला फिर से शुरू किया।

"तो ज्योति, तुम महेश के पड़ोस में कब से रह रही हो?"

"मैं तो बचपन से यहीं रहती हूँ। मैं जब बहुत छोटी थी और स्कूल जाना शुरू किया था, उस से कुछ दिन पहले ही मेरे पिताजी ने ये घर खरीदा था।" ज्योति हंसती हुई बोली।

“मैं दिल्ली में पैदा हुई थी।” आभा ने बताया। “मेरे जन्म के एक साल बाद ही मेरे पिताजी एक लंबी बीमारी के बाद गुज़र गए थे। मुझे माँ और मेरे दादा दादी ने पाल पोस कर बड़ा किया। तीन साल पहले मेरे दादा दादी चल बसे और दो साल पहले मेरी माँ का देहांत हो गया।” बताते हुए आभा दुखी हो गई।

“ओह, बहुत दुःख की बात है। तो इसलिए तुम यहाँ आ गई?” ज्योति ने आभा का हाथ अपने हाथों में लेते हुए पूछा।

“नहीं, यहाँ आने का ये कारण नहीं है। माँ की मौत के बाद दिल्ली में मेरा एकमात्र सहारा था मेरा मंगेतर। पिछले साल किसी ने उसकी हत्या कर दी और पुलिस अब तक हत्यारे का पता नहीं लगा पाई। इस घटना के बाद मेरा दिल्ली से मन उचट गया और मैं अपनी जिंदगी की नई शुरुआत करने यहाँ आ गई।” कहते कहते आभा की आँखें गीली हो गई।

“हम दोनों सिर्फ एक जैसी दिखती ही नहीं है, हमारी कहानी भी एक जैसी है।” ज्योति बोली। “मैं जब चार साल की थी, मेरी माँ चल बसी। महेश की माँ से मुझे माँ का प्यार मिला। फिर तीन साल पहले मेरे पिता जी की मौत दिल का दौरा पड़ने की वजह से हो गई। मैं अपने माँ बाप की इकलौती संतान हूँ और मेरा कोई भाई या बहन भी नहीं है। अब मेरा जो कुछ है, वो महेश और इसके माता पिता ही हैं।”

आभा को याद आया कि महेश की मौत भी 2010 में दिल का दौरा पड़ने से हो गई थी।

“मैं भी अकेली हूँ, मेरा भी कोई भाई या बहन नहीं है।” आभा बोली।

“अब तक हमारा कोई भाई या बहन नहीं था। लेकिन अब है। आज से तुम मेरी बहन हो। हम दिखती भी बहनों जैसी ही है।” ज्योति ने कहा और फिर उसने आभा को गले लगा लिया।

आभा सोच रही थी कि उसकी और ज्योति की कहानी कितनी मिलती जुलती है। आभा को ज्योति से एक अजीब सा लगाव हो गया था। मगर ये रिश्ता कुछ दिनों का ही था। शनिवार को तो उसे वापस अपनी दुनिया में, 2010 में लौट जाना था।

आभा सोच रही थी कि जब अचानक वो यहाँ से गायब हो जाएगी तो इन लोगों के दिल पर क्या बीतेगी। इतने कम समय में उसका महेश, उसके माता पिता और अब ज्योति से भी अपनापन इतना बढ़ गया था कि वो इन्हें कभी भी भुला नहीं पायेगी।

तभी महेश ने बाजार की पार्किंग में अपनी कार रोकी और पीछे मुड़ कर दोनों की तरफ देखता हुआ बोला,

“अगर दोनों बहनों की बातें ख़तम हो गई हो तो दुकान में चलें?” तीनों मुस्कराते हुए कार से उतर गए और कपड़ों की एक बड़ी दुकान, ‘दीपा स्टोर’ की तरफ बढे।

कपड़ों की उस दुकान को ज्योति फ़ौरन पहचान गई। 2010 में वो दुकान बहुत बड़ी और आधुनिक हो गई थी। बाजार में वो उस दुकान के बाहर से कई बार गुज़र चुकी थी। तीनों दुकान के अंदर पहुंचे। महेश ने कहा,

“तुम दोनों अंदर जाकर कपड़े देखो, मैं यहीं बैठा हूँ।” ये कह कर वो दरवाजे के पास ही रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

ज्योति और आभा दुकान के अंदर चली गई। दुकान में महिलाओं के कपड़ों के लिए एक अलग और बड़ा सेक्शन था। हर तरफ रैक लगे हुए थे। वहां कुछ कपड़े तह कर के रखे हुए थे और कुछ हेंगर पर लटके हुए थे।

“मुझे अपने लिए कुछ कपड़े और अंडर गारमेंट्स खरीदने है। तुम्हें भी कुछ लेना है?” आभा ने ज्योति से पूछा।

“शादी के लिए मेरी शॉपिंग हो गई है। मुझे कुछ नहीं लेना। अब मेरे लिए जो खरीदना होगा, वो महेश खरीदेगा।” ज्योति ने मुस्करा कर जवाब दिया।

पहले तो ज्योति और आभा ने पूरी दुकान में घूम घूम कर जायजा लिया कि कहाँ क्या उपलब्ध है, और फिर फिर जब आधे घंटे बाद आभा और ज्योति काउंटर पर पेमेंट करने आये तो उन्होंने देखा कि महेश दुकान में, उनका इंतज़ार करता हुआ दरवाजे के पास चक्कर लगा रहा था।

महेश ने उन्हें देख कर अपनी जेब में हाथ डाला, तो आभा जल्दी से बोली।

“आप रहने दीजिये। इतने पैसे तो है मेरे पास। जब जरूरत होगी तो आप से ले लूंगी।”

महेश ने अपना हाथ जेब से बाहर निकाल लिया।

आभा ने अधिक कपड़े नहीं खरीदे थे। उसने तीन ड्रेसें खरीदी थी, रात को पहनने के लिए एक पजामा सूट, और दो जोड़ी अंडर गारमेंट्स खरीदे थे।

कपड़े पसंद करते समय आभा ने महसूस किया कि कपड़ों के मामले में उसकी और ज्योति की पसंद भी कितनी मिलती जुलती थी। दुकान में मौजूद ग्राहक और दुकान

का स्टाफ आभा और ज्योति को जुड़वाँ बहने ही समझ रहा था।

ज्योति ने अपने साथ लाये कपड़े काउंटर पर रखे और वहां बैठी लड़की उनको देख कर बिल बनाने लगी। जब बिल बन गया तो उसने बिल ज्योति के हाथ में चेक करने के लिए थमाया और कपड़ों को तह कर के एक थैली में डाला।

ज्योति ने पेमेंट किया और कपड़ों की थैली ले ली। काउंटर पर बैठी लड़की ने बाकी के पैसे आभा को लौटाए, जो आभा ने अपने सफ़ेद पर्स में डाल लिए। तीनों दुकान से बाहर आ गए।

“हालाँकि काफी देर हो चुकी है, मगर इस रेस्टोरेंट में कॉफी बहुत अच्छी मिलती है। एक एक कप हो जाये?” महेश अपनी घड़ी देखते हुए बोला।

रात के दस बजने को थे और तीनों ने रेस्टोरेंट में प्रवेश किया। 1961 के हिसाब से रेस्टोरेंट काफी आधुनिक था। हर टेबल की दोनों साइड में दो बेंचे रखी हुई थी जिन पर दो दो लोग बैठ सकते थे। महेश और ज्योति एक बेंच पर बैठे और ज्योति उनके सामने की बेंच पर बैठ गई।

वे कुछ इस तरह बैठे थे कि आभा का मुंह रेस्टोरेंट के दरवाजे की तरफ था और वो वहां हर आने जाने वाले को देख सकती थी। महेश और ज्योति की पीठ दरवाजे की तरफ थी।

महेश ने तीन कॉफी का ऑर्डर दिया। जब तक उनको कॉफी सर्व होती, आभा ने वो सवाल किया जो काफी देर से उसके दिमाग में घूम रहा था।

“आज मंगलवार है और तीन दिन बाद शनिवार को तुम दोनों की शादी होने वाली है। मगर मुझे तुम लोगों के घर पर शादी वाली चहल पहल नजर नहीं आ रही। क्यों?”

उसकी बात सुन कर महेश और ज्योति दोनों मुस्कराये। जवाब महेश ने दिया।

“बात ये है कि हम दोनों ने बहुत सादगी के साथ, गिने चुने रिश्तेदारों और दोस्तों की मौजूदगी में मंदिर में शादी करने का फैसला किया है। हम दोनों को ही अधिक दिखावा पसंद नहीं है।”

“मुझे तुम लोगों का फैसला अच्छा लगा। मैं भी जब कभी शादी करुँगी, इसी तरह सादगी के साथ करुँगी।”

“बस मेरी शादी हो जाने दो, फिर मैं तुम्हारे लिए अच्छा सा लड़का ढूंढने का काम शुरू कर दूंगी।”

ज्योति ने चहकते हुए कहा। ज्योति की बात सुन कर आभा के गाल शर्म से लाल हो गए और उस ने तिरछी आँखों से महेश की तरफ देखा। मगर महेश का ध्यान तो ज्योति की तरफ था। दोनों प्यार से एक दूसरे को देख रहे थे।

तभी वेटर उनके ऑर्डर की कॉफी ले कर आ गया और वे तीनों धीरे धीरे कॉफी पीने लगे। कोई कुछ बोल नहीं रहा था, इसलिए आभा ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया।

"मैं तुम दोनों को और महेश के माता पिता को कभी भुला नहीं पाऊँगी। आप लोगों से मुझे जो प्यार और अपनापन मिला है, वो मैं बयान नहीं कर सकती। महेश के पिताजी ने मेरे आशीर्वाद स्वरुप मेरे सर पर हाथ रखा था, तब से ले कर अब तक मुझे अपने सर पर उनके स्पर्श का आभास हो रहा है।"

"पिताजी को बेटियों से बहुत प्यार है। वे हमेशा से चाहते थे कि उनके एक बेटी हो। यही वजह है की बचपन में उन्होंने शायद मुझ से ज्यादा ज्योति को अपनी गोद में खिलाया है। मेरे पिता जी बहुत अच्छे इंसान है।' महेश ने कहा।

"हाँ, मैं हमेशा उनके काफी नजदीक रही हूँ। दरअसल मेरे पिताजी और महेश के पिता जी भी अच्छे दोस्त रहे है। जिस दिन से जनरल मोटर्स का कारखाना शुरू हुआ है, महेश के पिता जी उसी दिन से वहां नौकरी कर रहे हैं। बाद में उन्होंने मेरे पिता जी को भी वहां नौकरी दिलवा दी। दोनों साथ साथ ही फ़ैक्टरी आया जाया करते थे।" ज्योति ने थोड़ी भावुकता से कहा।

आभा, जो दरवाजे की तरफ मुंह कर के बैठी थी, उसने रेस्टोरेंट में जवान, 26/ 27 वर्षीय करण मल्होत्रा को दाखिल होते हुए देखा। उसने उसकी देखी हुई तस्वीर के आधार पर उसको साफ़ साफ़ पहचाना। साथ ही वो बूढ़े करण से भी मिल चुकी थी।

तब तक महेश, ज्योति और आभा अपनी अपनी कॉफी समाप्त कर चुके थे। वे तीनों अपनी अपनी जगह से उठने ही वाले थे कि लगातार आभा की ओर आश्चर्य से देखते हुए करण उनके नजदीक पहुंचा।

करण की ओर महेश और ज्योति की पीठ होने की वजह से ना तो वे दोनों ही करण को देख पाए और ना ही करण की नजर उन दोनों पर पड़ी।

"हेल्लो, ज्योति, शादी के पहले अपने बाल रंगे है क्या? और तुम्हारा चश्मा कहाँ है? थोड़ी बदली बदली सी लग रही हो।"

आभा ने नजर उठा कर करण की ओर देखा। हालांकि वो उसे पहचान चुकी थी, मगर उसने यही जाहिर किया कि उसने करण को पहली बार देखा है। करण की आवाज़ सुन कर महेश पीछे मुड़ा और बोला,

“हाय करण, कैसे हो?”

करण ने पहले महेश की तरफ देखा और फिर उसकी नजर ज्योति पर पड़ी, तो वो बहुत जोर से चौंका। मुंह फाड़े उसने बारी बारी से आभा और ज्योति की तरफ देखा। फिर वो आभा से बोला,

“गलती हुई मुझ से। तुम ज्योति नहीं हो।”

“नहीं, ये ज्योति नहीं है। इनका नाम आभा अरोड़ा है।” महेश हँसते हुए बोला।

ज्योति के चेहरे पर भी मुस्कुराहट थी। मगर आभा के चेहरे पर कोई भाव नहीं था। करण तब भी अविश्वसनीय नजरों से आभा की तरफ देखे जा रहा था।

“हम बस उठ कर जाने ही वाले थे कि तुम आ गए। क्या लोगे तुम?” महेश ने करण से पूछा।

“मैं तो खाना खाऊंगा और मुझे यहाँ समय लगेगा। थोड़ी देर तो बैठो जब तक मेरा खाना सर्व नहीं हो जाता।” करण ने कहा और उसने आभा का कन्धा थपथपा कर खिसकने का इशारा किया, ताकि वो उसके पास बैठ सके।

आभा ने दीवार की तरफ खिसक कर करण के बैठने के लिए जगह बनाई, मगर उसे करण का इस तरह छूना बिलकुल पसंद नहीं आया।

“कसम से, मैंने इनको देखते ही ये समझा था कि ये ज्योति है।” करण बैठते ही बोला।

“जिस जिस ने भी इसको पहली बार देखा, सभी ने इसे ज्योति ही समझा था।” महेश बोला।

“कमाल है।” कहते हुए करण ने आभा की तरफ एकटक देखा।

उसके इस तरह देखने से आभा थोड़ी असहज हो रही थी। साथ ही करण कुछ इस तरह उसके पास बैठा था कि दोनों के शरीर बार बार स्पर्श हो रहे थे। आभा को ये जरा भी अच्छा नहीं लगा। मगर आगे दीवार होने की वजह से उसका करण से और दूर खिसकना संभव नहीं था।

तभी वहां वेटर आया। महेश ने तीन कॉफी का बिल अदा किया और करण ने अपने खाने का आर्डर दिया। वेटर वापस चला गया।

“महेश, मैंने तुम्हारी शादी से एक दिन पहले, शुक्रवार रात को सभी दोस्तों के लिए ‘बैचलर पार्टी’ रखी है। याद रखना।”

महेश को हालाँकि इस तरह की पार्टियाँ बिलकुल भी पसंद नहीं थी, मगर करण उसका दोस्त था और दोस्त की ख़ुशी के लिए उसने ‘हाँ’ कह दी थी।

“पार्टी रात को नौ बजे शुरू होगी। तैयार रहना। पार्टी तुम्हारे बंधन झील वाले केबिन में ही है।”

“ठीक है।” महेश अन-मना सा बोला।

“और मैडम, आप का नाम तो पता चल गया मुझे। अपने बारे में और भी तो कुछ बताइये।” उसने आभा से पूछा।

“ये रविवार रात ही दिल्ली से यहाँ आई है।” जवाब महेश ने दिया।

“महेश से तुम्हारी मुलाकात कैसे हुई?” उसने फिर आभा से ही सवाल किया।

“माफ़ करना आभा, ये पुलिस वाला है ना। हर किसी से सवाल करना इसकी आदत बन गई है।” महेश बोला।

मगर आभा ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। दरअसल उसे वहां करण के पास बैठे रहना भी अच्छा नहीं लग रहा था। इस बार भी जवाब महेश ने ही दिया।

“रविवार रात को मौसम बहुत खराब था और मेरे घर से कुछ दूरी पर बिजली गिरने की वजह से ये सड़क पर गिर पड़ी थी। इनका सर सड़क से टकराने से ये बेहोश हो गई थी और फिर मैंने ही इनको हॉस्पिटल पहुँचाया था। अभी ये मेरे घर पर ही तब तक रहेंगी, जब तक कि इनके रहने का दूसरा इंतज़ाम नहीं हो जाता।”

“सड़क पर गिर पड़ी थी? उस मौसम में तुम पैदल, सड़क पर क्या कर रही थी? उस मौसम में तो कोई आदमी बाहर निकलने की सोच भी नहीं सकता, और वो भी पैदल?”

“मैं रविवार रात को ही दिल्ली से यहाँ बस से पहुंची थी। बस से उतर कर मैं रहने के लिए कोई होटल तलाश करने की कोशिश में रास्ता भटक गई थी।” इस बार आभा बोली।

“बस से उतर कर, रास्ता भटक कर देहरादून स्ट्रीट तक पहुंच गई?”

“हाँ।”

“मगर बस स्टॉप तो देहरादून स्ट्रीट से काफी दूर है?”

“तो क्या हुआ? कोई रास्ता भटक कर दूर नहीं पहुंच सकता क्या? तुम्हारी ये पुलिस वाली पूछताछ बंद करो यार।” महेश थोड़ा झल्ला कर बोला।

महेश का करण पर झल्लाना आभा को अच्छा लगा। महेश ने भी ये महसूस किया था कि करण के सवाल आभा को असहज बना रहे थे। इसलिए उसने बातचीत का विषय बदली किया।

“तुम्हारा खाना सर्व हो जाये तो हम निकलते है, क्यों कि कल सुबह आभा का नौकरी के लिए मेरी कॉलेज में में इंटरव्यू है।”

“तुम ने बताया कि ये तुम्हारे घर पर ठहरी है?”

“हाँ।”

“लेकिन तुम्हारे घर पर तो दो ही बेडरूम है। एक तुम्हारे मम्मी पापा का और दूसरा तुम्हारा। ये क्या तुम्हारे बेडरूम में तुम्हारे साथ सोयेगी?” करण ने जैसे मज़ाक किया।

लेकिन उसका भद्दा मज़ाक ना तो आभा को पसंद आया और ना ही महेश को। ज्योति की आंखों में भी अप्रसन्नता के भाव उभरे।

“ये मेरे बेडरूम में सोयेंगी और मैं हॉल में।” महेश थोड़ा जोर से बोला।

ज्योति जो काफी देर से चुपचाप बैठी थी, उसने भी आभा की असहजता को अनुभव किया।

“बंद करो यार ये फ़ालतू बातें। करण, तुम्हारा खाना आ गया है।” ज्योति ने आते हुए वेटर को देखते हुए कहा। “काफी देर हो चुकी है, अब हम चलते हैं।”

इसके साथ ही महेश और ज्योति खड़े हो गए और बेंच से बाहर निकल गए। आभा ने भी खड़े हो कर बाहर निकलने का उपक्रम किया, मगर करण अपनी जगह से नहीं हिला। ज्योति ने आँखें तरेर कर करण की ओर देखा तो करण खड़ा हो कर बेंच से बाहर आया ताकि आभा को बाहर आने का रास्ता मिल सके।

तब तक वेटर भी करण के खाने का ऑर्डर ले कर टेबल पर पहुँच चुका था। करण ने आभा की तरफ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया और बोला,

“देहरादून में तुम्हारा स्वागत है आभा। तुम मिल कर बहुत अच्छा लगा।”

आभा का मन करण से हाथ मिलाने का नहीं रहा था, मगर शिष्टाचार के नाते उसने करण से हाथ मिलाया तो करण ने उसका हाथ पकड़ कर जोर से दबाया। आभा ने जोर लगा कर अपना हाथ खींचा। महेश और आभा ने करण की उस हरकत को साफ़ साफ़ देखा।

“ठीक है करण, हम चलते हैं। तुम आराम से बैठ कर खाना खाओ।” महेश ने कहा और वे तीनों मुड़ कर रेस्टोरेंट के दरवाजे की तरफ चल पड़े।

पीछे बैठा करण उनको जाते हुए देखता रहा, खास कर के ज्योति और आभा को। ज्योति और आभा की चाल उसके दिल पर छुरियां सी चला रही थी। तीनों रेस्टोरेंट से बाहर निकल गए और करण अपना खाना खाने लगा, मगर उसके दिमाग पर आभा और ज्योति ही छाई हुई थी।

तीनों पार्किंग में आ कर कार में बैठे तो महेश बोला,

“आभा, करण शायद तुम्हें पसंद करने लगा है।”

“ऐसी कौन सी लड़की है जिसे करण पसंद नहीं करता। वो हमारा बचपन का दोस्त है, मगर उसकी ये आदत मुझे बिलकुल पसंद नहीं है।” ज्योति थोड़ी नाराज़गी से बोली।

आभा को ज्योति की बात से इत्तेफ़ाक़ था। उसे भी करण की नज़रें अच्छी नहीं लगी थी। खैर, चार दिनों की ही तो बात थी। उसके बाद तो वो जवान करण को वहीं 1961 में छोड़ कर 2010 में पहुँच जाने वाली थी और वहां अगर बूढ़े करण ने कोई बत्तमीजी करने की कोशिश की तो वो उसे सबक सिखाने में सक्षम थी।

दस मिनट बाद ही तीनों घर पहुँच गए थे। तीनों कार से उतर आये। आभा के हाथ में खरीदे हुए कपड़ों की थैली थी। ज्योति ने प्यार भरी मुस्कराहट से आभा की ओर देखा।

“तुम से मिल कर सचमुच मुझे बहुत अच्छा लगा आभा।”

“मुझे भी।” आभा ने भी उसी प्यार से जवाब दिया।

ज्योति ने फिर एक बार आभा को गले लगाया तो आभा को फिर से उसका स्पर्श पसंद आया।

“गुड नाइट।” आभा ने उन दोनों को एकांत देने की नियत से कहा और जल्दी से मुड़ कर घर की तरफ चल दी। पीछे खड़े महेश और ज्योति आभा को घर के अंदर जाते देखते रहे।

आभा ने हॉल में कदम रखा तो वहां एक फोल्डिंग पलंग पर बिस्तर बिछाया हुआ था। आभा समझ गई कि वो बिस्तर महेश के लिए था। उसके बिस्तर पर ही उसके रात को पहनने वाले कपड़े रखे हुए थे। महेश के मम्मी पापा के कमरे का दरवाज़ा बंद था। शायद वे लोग सोने चले गए थे।

आभा ने महेश के कमरे में प्रवेश किया मगर दरवाज़ा खुला ही रहने दिया। हालाँकि महेश को कमरे के अंदर से कुछ लेने की जरूरत शायद ही पड़ने वाली थी, मगर दरवाज़ा बंद करने से पहले उसने महेश से पूछना उचित समझा।

आखिर वो उस घर की मेहमान थी और महेश ने सोने के लिए उसे अपना कमरा दे कर खुद हॉल में सोने जा रहा था। शिष्टाचार के नाते से इतना तो करना ही था कि वो महेश से पूछती कि कमरे के अंदर से उसे कुछ चाहिए तो नहीं था?

पांच मिनट बाद महेश ने हॉल में कदम रखा। आभा को अपने कमरे में पलंग पर बैठे देख कर महेश चौंका और उसकी तरफ बढ़ा। दरवाजे पर खड़े हो कर महेश बोला,

“अरे, इस तरह बैठी क्यों हो? दरवाज़ा अंदर से बंद करो और सो जाओ।” उसने कहा।

“मैं आपका ही इंतज़ार कर रही थी। दरवाज़ा बंद करने से पहले मैं आप से पूछना चाहती थी कि आप को कमरे से कुछ लेने की जरूरत तो नहीं है?”

“अरे नहीं। मेरे रात को पहनने वाले कपड़े पलंग पर पड़े हैं और मुझे दूसरी किसी चीज की जरूरत नहीं है। तुम दरवाज़ा बंद कर के सो जाओ। सुबह जल्दी उठ कर मेरे साथ इंटरव्यू के लिए चलना है। गुड नाइट।” महेश ने कहा।

“गुड नाइट।” आभा ने मुस्कुराते हुए कहा और उठ कर दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया।

आभा ने बाजार से खरीदे कपड़ों की थैली को आलमारी में रखने की नीयत से आलमारी खोली तो देखा कि आलमारी में एक खाना बिलकुल खाली था और वहां

कुछ खाली हेंगर लटक रहे थे। तुरंत आभा की समझ में आ गया कि महेश की माँ ने आभा के कपड़ों के लिए वो जगह खाली की थी।

उसे माँ पर बहुत प्यार आया और वो एक एक कर के अपने नए खरीदे हुए कपड़े वहां लटकाने लगी। अपनी बाहर पड़ी जीन्स और टॉप भी उसने आलमारी में लटका दिए। फिर उसने अपनी पहनी हुई ड्रेस भी खोल कर आलमारी में लटका दी और रात को पहनने के लिए खरीदा गया नया पजामा सूट पहन लिया।

तभी उसकी नजर आलमारी के सब से नीचे के खाने में रखे हुए कुछ खिलौनों पर पड़ी। उन्हें देखते ही वो समझ गई थी थी कि वो महेश के बचपन के खिलौने थे, जो उसने अब तक संभाल कर रखे थे।

आभा का मन हुआ कि वो और बीस बाईस साल पीछे चले जाये और महेश के साथ उन खिलौनों से खेले। काफी सारे खिलौने वहां रखे हुए थे, सस्ते से सस्ते और महंगे से महंगे भी। आभा ने एक एक खिलौने को अपने हाथ में ले कर महेश के बचपन को अनुभव किया।

फिर उसने लाइट बंद की और बिस्तर पर लेट गई। बिस्तर पर लेटते ही उसे बिस्तर से महेश के बदन की खुशबू और उसके बदन की गर्मी का अहसास हुआ। उसके दिमाग में अचानक एक अजीब सा ख़याल आया।

'अगर शनिवार रात को दस बजे टाइम मशीन उसे लेने के लिए वापस नहीं आयी तो?'

एक बार तो वो अपने इस ख़याल से घबरा गई। मगर तुरंत ही उसके दिमाग ने उत्तर दिया।

'तो क्या? 1961 में रहना भी कुछ बुरा नहीं है।' फिर न जाने उसे कब नींद आ गई, उसे पता ही नहीं चला।

=====

13

अभी सूर्योदय नहीं हुआ था, मगर रात का अंधेरा छट कर दिन की रौशनी फैलनी शुरू हो गई थी। देहरादून की वो बुधवार की सुबह थी।

हमेशा की तरह महेश की माँ सुबह जल्दी उठ कर घर के रोज़ के काम काज में लग गई थी, जिन में प्रमुख था महेश और उसके पिताजी के लिए सुबह का चाय नाश्ता

तैयार करना और दोपहर के खाने के लिए टिफिन तैयार करना।

रोज की तरह उसने महेश और उसके पिताजी को समय पर उठाया और फिर महेश के बेडरूम का दरवाज़ा खटखटाया। अंदर आभा महेश के बिस्तर पर गहरी नींद में सोई हुई थी। महेश की माँ के दरवाज़ा खटखटाने से उसकी आँख खुली।

नींद खुलने के बाद आभा की ये ये समझने में कुछ सेकंड का वक्त लग गया था कि वो 1961 में महेश के घर में थी और उस दिन महेश के कॉलेज में उसका नौकरी के लिए इंटरव्यू था। वो तुरंत बिस्तर से उतरी और उसने दरवाज़ा खोला।

सामने अपना गाउन पहने महेश को माँ खड़ी थी और हमेशा की तरह उनके चेहरे पर मुस्कराहट थी। आभा ने उनको प्रणाम किया।

"रात को नींद तो अच्छी तरह से आई ना बेटी?"

"हाँ माँ जी।" आभा प्रफुल्लित स्वर में बोली। "बहुत अच्छी नींद आई। रात को जो सोई, तो अभी आप के दरवाज़ा खटखटाने पर ही आँख खुली है।"

"ये तो बहुत अच्छी बात है। कुछ लोगों को नई जगह पर अच्छी तरह से नींद नहीं आती है। खैर, आज तुम्हारा इंटरव्यू है ना? तुम जल्दी से तैयार हो जाओ, तब तक मैं नाश्ता तैयार कर देती हूँ। बाथरूम में तुम्हारे लिए एक नया तौलिया रख दिया है मैंने।"

"ठीक है माँ जी। महेश तैयार हो गए?"

"उसके पिता जी दूसरे बाथरूम से अभी अभी नहा कर निकले हैं और वहां अब महेश नहा रहा है। तुम इस बाथरूम में नहा लो, तब तक महेश नहा कर आने के बाद अपने कमरे में आ कर कपड़े बदली कर लेगा।"

"ठीक है माँ जी, मैं बस अभी नहा कर आई।" आभा ने कहा और वो फुदकती सी महेश के कमरे से लगे बाथरूम में घुस गई।

उसे इस तरह फुदकता सा देख कर माँ के चेहरे की मुस्कान और गहरी हो गई। उनके दिल में आभा के लिए बहुत सारा प्यार उमड़ा।

'कितनी प्यारी बच्ची है। काश ये मेरी अपनी बेटी होती। इसके यहाँ आने से इस घर में चहल पहल कितनी बढ़ गई है।' माँ ने मन ही मन सोचा।

उधर बाथरूम में नहाती हुई आभा सोच रही थी कि वो 1961 के कितने अच्छे परिवार में थी। काश, उसका एक ऐसा परिवार 2010 में भी होता। आज उसका

इंटरव्यू था। हालांकि उसको ये नौकरी करने की कोई जरूरत नहीं थी, मगर नौकरी की तलाश में दिल्ली से देहरादून आने की कहानी जो उसने महेश को सुनाई थी, उसके अनुसार उसका वहां नौकरी करना जरूरी था।

उस दिन बुधवार था और अगर उस की नौकरी लग जाती है तथा उस दिन से ही काम शुरू करना पड़ा, तो भी उसे सिर्फ तीन दिन ही काम पर जाना होगा। शुक्रवार की रात को वो ज्योति की जान बचा लेगी और शनिवार की सुबह महेश और ज्योति की शादी हो जाने वाली थी।

शनिवार की रात को दस बजे महेश के घर के गैरेज में टाइम मशीन उसे फिर से लेने के लिए आने वाली थी और उसको 2010 की अपनी दुनिया में फिर से लौट जाना था। अपनी दुनिया में, फिर से 2010 में लौट जाने का विचार आते ही वो थोड़ी सी उदास हो गई। मगर जाना तो उसे पड़ेगा ही।

इसी तरह विचार करते करते वो नहा कर बाथरूम से बाहर आ गई। उसने देखा कि महेश तैयार हो कर अपने कमरे से बाहर निकल रहा था। वो महेश को देख कर मुस्कुराई तो महेश ने भी मुस्कराहट का जवाब मुस्कुराहट से दिया। कमरे के अंदर आकर उसने जल्दी जल्दी कपड़े बदली किये और अपने बाल सँवार कर बाहर आ गई।

मेकअप ना तो वो कभी करती थी और ना ही उसे मेकअप की जरूरत थी। नाश्ते की टेबल पर उसने महेश और उसके पापा के साथ नाश्ता किया। नाश्ते के बाद तीनों, महेश, उसके पिता और आभा, साथ साथ घर से बाहर निकले। महेश के पिता अपनी मोटरसाइकिल स्टार्ट कर के रवाना हो गए।

महेश अपनी कार का शीशा साफ़ कर रहा था, तभी ज्योति ने अपने घर के बाहर कदम रखा। महेश और आभा को बाहर कार के पास देख कर वो धीरे धीरे चलते हुए उनके पास आई।

“अरे, आज जल्दी जा रही हो?” महेश ने पूछा।

“हाँ, थोड़ा काम था, तो सोचा थोड़ा जल्दी जा कर निपटा लूँ।”

“तो फिर हमारे साथ ही चलो ना?”

“ठीक है चलो, साथ में ही चलते हैं।” ज्योति ने जवाब दिया और कार का पिछले दरवाज़ा खोल कर पीछे की सीट पर बैठ गई।

“इसका ऑफ़िस मेरे ऑफ़िस से आधे घंटे बाद शुरू होता है, इसलिए अक्सर हम अलग अलग ही जाते हैं। कभी इसको जल्दी जाना होता है, या मुझे देर हो जाती है, तो फिर हम साथ साथ ही जाते हैं।” महेश ने आभा को बताया।

आभा सिर्फ मुस्करा कर रह गई और वो भी खुले दरवाजे से कार की पिछली सीट पर ज्योति के पास बैठ गई।

“कैसी हो आभा? रात को ठीक से नींद आई?”

“मैं ठीक हूँ। रात को नींद भी अच्छी आई। तुम कैसी हो?”

“मैं भी अच्छी हूँ। आज तुम्हारा इंटरव्यू है ना?”

“हाँ।”

“जरा भी घबराना मत। तुम्हें ये नौकरी जरूर मिल जाएगी। दो कारण है इसके। पहला महेश की सिफारिश और दूसरा ये कि साइंस डिपार्टमेंट के डीन को सेक्रेटरी की बहुत जरूरत है।”

कॉलेज कैम्पस में पहुँच कर पार्किंग में महेश ने कार रोकी और तीनों बाहर निकल आये। आभा ने पिछली रात को ही खरीदी हुई नई ड्रेस पहन रखी थी जो उसके खूबसूरत बदन पर बहुत अच्छी लग रही थी। उसके हाथ में वही सफ़ेद पर्स था और साथ ही उसका खुद का, टाइपराइटर पर टाइप किया हुआ बायो डाटा।

महेश और ज्योति आगे आगे चल रहे थे और आभा उनके पीछे पीछे आ रही थी। चलते चलते जब महेश ने एक बार ज्योति का हाथ थामा तो आभा ने अपने मन में पहली बार ज्योति के लिए थोड़ी जलन का आभास हुआ।

आभा ने कैम्पस में इधर उधर नज़रें घुमाई तो उसे 2010 के मुकाबले में कोई बड़ा बदलाव नजर नहीं आया, सिवाय इसके कि 1961 में जो छोटे छोटे पौधे दिख रहे थे, 2010 में वो सभी फल फूल कर बड़े बड़े छायादार पेड़ बन चुके थे।

क्लासेस शुरू होने वाली थी और विद्यार्थी अपनी अपनी क्लास की ओर तेजी से जा रहे थे। बहुत से बच्चों ने महेश को नमस्ते किया और महेश ने मुस्करा कर उनके नमस्ते का जवाब दिया।

आभा जानती थी कि 2010 में साइंस डिपार्टमेंट का ऑफ़िस सामने वाली बिल्डिंग में ही था। उसके साथ वाली बिल्डिंग में फ़िज़िक्स डिपार्टमेंट था और इंजीनिरिंग डिपार्टमेंट थोड़ा आगे जा कर था। शायद 1961 में भी वही व्यवस्था थी।

साइंस डिपार्टमेंट की बिल्डिंग के सामने पहुँच कर तीनों ठिठके।

“मेरा ऑफ़िस आगे है। मैं जाती हूँ। और हाँ, इंटरव्यू के लिए मेरी शुभकामनाएं।” ज्योति ने आभा से कहा।

“थैंक्स ज्योति।” आभा बोली।

“ठीक है। शाम को मेरी कार के पास मिलते हैं।” महेश ने कहा और ज्योति आगे, अपने ऑफ़िस की तरफ बढ़ गई।

आभा महेश के साथ साइंस सेक्शन की तरफ बढ़ गई। साइंस डिपार्टमेंट का नजारा करीब करीब 2910 जैसा ही था। फर्क था तो सिर्फ इतना कि वो 2010 जैसा आधुनिक नहीं लग रहा था और विद्यार्थी पुरानी फैशन के कपड़े पहने हुए थे। फर्नीचर भी पुरानी फैशन का था।

वहां भी अपनी अपनी क्लासों में जाते हुए विद्यार्थियों ने महेश को नमस्ते कहा। गैलरी में चलते हुए वे आगे बढ़ने लगे। 2010 में भी डॉक्टर ब्रह्मा का ऑफ़िस इसी तरफ था और आभा का कमरा डॉक्टर ब्रह्मा के कमरे से पहले वाला था।

वहां आगे, ऑफ़िस के पहले ही गैलरी में एक कांच का दरवाज़ा था, जो 2010 में नहीं था। कांच के दरवाजे पर बड़े बड़े अक्षरों में लिखा था, ‘साइंस डिपार्टमेंट’ उसके नीचे लिखा था, ‘डॉक्टर ब्रह्मा, डीन’ एक पेंटर अभी अभी दरवाजे पर नाम लिख कर हटा था और वो अपना सामान समेट रहा था।

गीले पेंट का ध्यान रखते हुए महेश ने वो कांच का दरवाज़ा खोला और उसे तब तक पकड़े रखा, जब तक आभा ने वो दरवाज़ा पार नहीं कर लिया। आभा को साथ ले कर महेश उस दरवाजे की तरफ बढ़ा जहाँ 2010 में आभा का ऑफ़िस था।

2010 में उसके बाद वाला कमरा डॉक्टर ब्रह्मा का था। मगर आभा ने देखा कि 1961 में वहां कोई दरवाज़ा नहीं था, सिर्फ दीवार थी। कमरे के अंदर आ कर आभा ने देखा कि जिस जगह वो 2010 में बैठा करती थी, वहां एक टेबल थी, जिस पर एक टाइपराइटर रखा हुआ था और पास में ही रखा हुआ था डायल वाला एक काला फोन।

टेबल और कुर्सी दोनों लकड़ी की थी। बिलकुल उस टेबल के सामने की दीवार पर एक दरवाज़ा था, जिस पर लकड़ी की एक नेम प्लेट लगी थी, जिस पर लिखा था, ‘डॉक्टर प्रताप ब्रह्मा‘ आभा की समझ में आ गया कि जहाँ 2010 में वो डॉक्टर ब्रह्मा

और उसके कमरे की बीच की दीवार थी, पर उसी दीवार पर 1961 में डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में जाने का दरवाज़ा था।

मतलब ये कि डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में जाने से पहले सब को उस कमरे से, उसकी सेक्रेटरी के सामने से गुजरना पड़ता था। बाद में समय के साथ कभी ये बदलाव कर दिया गया था कि जहाँ दरवाज़ा था, वो हटा कर दीवार बना दी गई थी और बाहर गैलरी में जो दीवार थी, वहां डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में जाने के लिए दरवाज़ा बना दिया गया था।

2010 में डॉक्टर के कमरे में बाहर गैलरी से ही सीधा प्रवेश था, मगर 1961 में हर आने जाने वाले को उसकी सेक्रेटरी के कमरे से हो कर ही जाना पड़ता था।

महेश ने आभा को वहां रुकने को कहा और डॉक्टर ब्रह्मा का दरवाज़ा खटखटाया।

“दरवाज़ा खुला है, अंदर आ जाओ।” अंदर से एक रौबीली आवाज़ आई।

आभा ने तुरंत पहचाना, वो जवान डॉक्टर ब्रह्मा की आवाज़ थी, मगर उस आवाज़ की खनक में 2010 में भी कोई बदलाव नहीं हुआ था। वही रौबीली और प्रभावशाली आवाज़।

अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर के महेश डॉक्टर ब्रह्मा की टेबल की तरफ बढ़ा।

“गुड मॉर्निंग डॉक्टर।”

“गुड मॉर्निंग प्रोफ़ेसर महेश। आओ बैठो।”

“बैठूंगा नहीं डॉक्टर, मेरी क्लास है। मैं तो बस इसलिए आया था कि जैसी कि आप से बात हुई थी, मेरे साथ आभा अरोड़ा आई है, आपकी सेक्रेटरी की पोस्ट के लिए इंटरव्यू देने के लिए।”

“अरे हाँ, कहाँ है? बुलाओ उसे।”

महेश ने दरवाजे तक आ कर दरवाज़ा खोला और आभा को अंदर आने का इशारा किया। आभा ने डॉक्टर ब्रह्मा के 1961 के ऑफ़िस में कदम रखा।

“डॉक्टर, ये आभा अरोड़ा है। और आभा, ये डॉक्टर प्रताप ब्रह्मा है। मैंने आप लोगों का परिचय करवा दिया है और अब मैं चलता हूँ। मुझे लेक्चर के लिए देर हो रही है।” महेश बोला और फिर वो जल्दबाजी में वहां से निकल गया।

“बैठिये मिस आभा।” डॉक्टर ब्रह्मा ने कहा।

आभा उनके सामने की कुर्सी पर बैठ गई और उसने एक लंबी सांस ली। वो दूसरी बार उस कुर्सी पर इंटरव्यू के लिए बैठी थी। इस बार उसका इंटरव्यू लेने के लिए 32 वर्षीय जवान डॉक्टर ब्रह्मा बैठे थे।

डॉक्टर ने उन्होंने वैसा ही कोट पहन रखा था जैसा वे 2010 में पहनते थे। 2010 में उनकी आँखों पर नजर का चश्मा था, लेकिन 1961 में उनको चश्मे की जरूरत नहीं थी। उनके बाल पूरी तरह काले थे और वो बहुत खूबसूरत दिख रहे थे।

आभा के बैठने के बाद डॉक्टर ने आभा के चेहरे को ध्यान से देखा और फिर वे कुछ असमंजस में नजर आये।

"क्या मैं आप से पहले भी मिल चुका हूँ मिस आभा? क्या हम दोनों एक दूसरे को जानते हैं?"

"नहीं सर। हम पहले कभी नहीं मिले। आज मैं आप से पहली बार मिल रही हूँ। मैं तो पिछले रविवार को ही दिल्ली से यहाँ आई हूँ।" आभा ने कहा और फिर मुस्कराई। "मगर मैं जानती हूँ कि आप को ऐसा क्यों लग रहा है?"

डॉक्टर ब्रह्मा ने प्रश्नवाचक निगाहों से आभा की तरफ देखा।

"आप को मैं जानी पहचानी इसलिए लग रही हूँ कि मेरा चेहरा प्रोफ़ेसर महेश की मंगेतर ज्योति से काफी मिलता जुलता है।" आभा ने उसी मुस्कराहट के साथ जवाब दिया।

"हाँ, ठीक कहा तुम ने। ज्योति और तुम में काफी समानताएं है। ये तो कमाल की बात है। खैर, ये बताओ कि अपना बायो-डाटा लाई हो?"

"हाँ सर, ये लीजिये।" आभा ने कहा और अपने हाथ में थमा बायो-डाटा डॉक्टर ब्रह्मा को दिया।

"प्रोफ़ेसर महेश ने मुझे बताया है कि तुम्हारी सर्टिफिकेट्स अभी तुम्हारे पास नहीं है। पर तुम उन्हें एक सप्ताह के अंदर जमा करवा सकती हो।"

"हाँ, सर, मुझे सिर्फ एक दिन के लिए दिल्ली जाना होगा और फिर मैं सभी सर्टिफिकेट्स जमा करवा दूंगी।"

"तुम्हारा सस्पेंस ख़तम करने के लिए पहले ही बता देता हूँ कि ये नौकरी तुम्हें मिल गई है। तीन कारण है इसके। पहला, तुम्हारे बायो-डाटा के हिसाब से तुम इस नौकरी

के लिए योग्य हो। दूसरा, प्रोफ़ेसर महेश ने तुम्हारी सिफारिश की है, और तीसरा सब से महत्वपूर्ण कारण ये है कि मुझे तुरंत ही सेक्रेटरी की जरूरत है।"

"थैंक्स सर।" आभा ने आभार व्यक्त करते हुए कहा।

"मिस आभा, मैंने अभी अभी, कुछ दिनों पहले ही इस डिपार्टमेंट के डीन का प्रभार संभाला है। पुराने डीन के रिटायर होने के साथ ही उनकी सेक्रेटरी ने भी रिटायरमेंट ले लिया है। इसलिए मुझे तुरंत अपने लिए सेक्रेटरी चाहिए। मैं तुम्हें अपनी सेक्रेटरी नियुक्त करता हूँ। पहले छह महीने तक, जब तक तुम परमानेंट नहीं हो जाती, सैलरी थोड़ी कम होगी, पर बाद में अच्छी खासी हो जाएगी।"

"मुझे मंजूर है सर।" आभा बोली।

मन ही मन वो सोच रही थी कि छह महीने तो बहुत दूर की बात है, वो तो शनिवार रात को ही कुछ इस तरह वहां से गायब हो जाने वाली थी जैसे वो कभी वहां थी ही नहीं। किसी को कुछ समझ में नहीं आने वाला था कि आखिर वो गई कहाँ। ये सोच कर आभा मन ही मन मुस्कराई।

"गुड। तुम आज से ही, बल्कि अभी से ही मेरी सेक्रेटरी नियुक्त की जाती हो। पहले तुम्हें मानव संसाधन डिपार्टमेंट में जा कर कुछ फार्म भरने की औपचारिकता पूरी करनी होगी। इस बिल्डिंग के बाहर निकल कर, दायीं तरफ जो तीसरी बिल्डिंग है, उसमें मानव संसाधन डिपार्टमेंट का ऑफ़िस है।"

डॉक्टर ने आभा को मानव संसाधन डिपार्टमेंट का रास्ता समझाया, जो आभा को पहले ही पता था। आभा को याद आया कि 2010 में भी डॉक्टर के यही शब्द थे।

"वहां तुम्हें मिस्टर मदन वालिया से मिलना है। वहां का काम पूरा हो जाने के बाद लौट कर मेरे पास आना। आज मेरा कोई लेक्चर नहीं है, इसलिए मैं आराम से तुम्हें तुम्हारा काम समझा सकता हूँ।"

"थैंक यू सर, मैं आती हूँ।" आभा ने कहा और उठ खड़ी हुई तो डॉक्टर ब्रह्मा फोन उठा कर किसी का नंबर डायल करने लगे।

आभा उनके कमरे से बाहर निकल गई। रास्ता आभा का जाना पहचाना हुआ था और आभा सीधे कॉलेज के मानव संसाधन डिपार्टमेंट में पहुंची। 2010 में वहां नजारा कुछ अलग था। 2010 में हर टेबल पर एक कम्प्यूटर था और वहां काम करने वाले भी ज्यादा थे।

लेकिन 1961 के ज़माने में वहां काम करने वाले कम लोग थे और हर टेबल पर बड़े बड़े रजिस्टर पड़े थे। एक तरफ लाइन से तीन टेबल पर तीन टाइपराइटर थे जिन पर तीन लोग बैठे हुए टाइप कर रहे थे। टाइप करने की आवाज़े हॉल में गूँज रही थी। सभी टेबल कुर्सियां लकड़ी की और पुराने फैशन की थी।

सामने ही एक बड़ी टेबल थी, जिस पर फाइलों और रजिस्टरों का ढेर लगा था। टेबल पर एक तख्ती रखी हुई थी, जिस पर लिखा था 'मदन वालिया, मानव संसाधन कार्यालय'

आभा ने जवान मदन वालिया को तुरंत पहचाना। 2010 में जिसके बाल पूरे सफ़ेद थे, आभा उसको जवान और काले बालों के साथ देख रही थी। मदन वालिया एक रजिस्टर अपनी टेबल पर खोले उसमे कुछ चेक कर रहा था।

उसे अपने सामने, टेबल के उस पार किसी के मौजूद होने का अहसास हुआ, तो उसने नज़रें उठा कर देखा।

"मेरा नाम आभा अरोड़ा है। मुझे डॉक्टर ब्रह्मा ने भेजा है।" आभा ने कहा।

"हाँ, उन्होंने अभी फोन किया था।" कह कर मदन वालिया ने अपनी टेबल की दराज से फॉर्म निकाले और टेबल पर से एक पेन उठा कर आभा को देते हुए आगे बोला, "आप उस टेबल पर जाकर ये फॉर्म भर दीजिये और साइन कर के मेरे पास जमा करा दें।"

आभा ने मदन वालिया से वो फार्म और पेन लिया तथा उसके द्वारा इशारे से बताई गई टेबल के पास पहुँच कर लकड़ी की कुर्सी पर बैठी और फार्म भरना शुरू किया।

=====

14

एक घंटे बाद आभा की नियुक्ति आधिकारिक तौर पर देहरादून कॉलेज में डॉक्टर ब्रह्मा की असिस्टेंट के तौर पर हो चुकी थी। अपने जीवन में दूसरी बार उसकी नियुक्ति उसी कॉलेज में और उसी पोस्ट पर हुई थी।

मजे की बात तो ये थी कि उसकी पहली नियुक्ति 2010 में हुई थी और दूसरी 1961 में। उसे ये बात सच्चाई ना लग कर किसी किस्से कहानी की बात लग रही थी।

जरूरी फार्म भर कर जब आभा वापस डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में आई, तो डॉक्टर ने उसे बहुत अच्छी तरह उसका काम समझाया। डॉक्टर ब्रह्मा 2010 की तरह ही

1961 में भी मृदुभाषी और सरल स्वाभाव व्यक्ति थे।

फिर डॉक्टर ब्रह्मा ने उसे उसका पहला काम दिया। उन्होंने आभा को एक पत्र टाइप करने का काम दिया। अपने कमरे में, अपनी कुर्सी पर, टाइपराइटर के सामने बैठी आभा टाइपराइटर से जूझ रही थी।

टाइपराइटर दो कार्बन के साथ पेपर की तीन शीट चढ़ी हुई थी। किसी भी गलती से बचने के लिए आभा बहुत ध्यान से, धीरे धीरे टाइप कर रही थी, मगर फिर भी उसकी उँगलियाँ कई बार टाइपराइटर की से फिसल गई थी।

हालाँकि उस वक्त उसे टाइप करना उतना कठिन नहीं लग रहा था, जितना पिछले दिन महेश के घर में अपना बायो-डाटा टाइप करते हुए लगा था। एक तरह से पिछले दिन उनकी प्रैक्टिस हो चुकी थी। कुछ ही देर में उसने बिना किसी गलती के पत्र टाइप किया और उसे डॉक्टर को दे आई।

जब डॉक्टर के कमरे से वो वापस आई, तो उसके हाथ में कुछ रजिस्टर थे। डॉक्टर ने उन रजिस्टरों से कुछ चुनिंदा डिटेल ले कर आभा को एक स्टेटमेंट बनाने को कहा था। आभा ने एक लम्बा चौड़ा पेपर टाइपराइटर पर चढ़ाया और बारी बारी से रजिस्टरों के पन्ने पलटते हुए, उनमे देख कर टाइप करने लगी।

तभी दरवाजे पर जैसे जादू के जोर से इंस्पेक्टर करण प्रकट हुआ। आभा ने नज़रें उठा कर उसकी ओर देखा, तो वो बेशर्मी से मुस्कराया। आभा को उसकी उपस्थिति कॉलेज में समझ में नहीं आई।

हालांकि करण ने पिछली रात को हुई पहली मुलाकात की तरह अपनी वर्दी नहीं पहन रखी थी, पर उस वक्त वो काफी अच्छे कपड़े पहने हुए था। कपड़े इतने अच्छे थे कि वो किसी पर भी जंच सकते थे, मगर आभा को वे अच्छे कपड़े भी करण के बदन पर जंचते महसूस नहीं हुए।

धीरे धीरे चलता हुआ करण आभा की टेबल के पास आया। वो तब भी बेशर्मी से मुस्कुरा रहा था।

“हेल्लो आभा, पहचाना मुझे? मैं इंस्पेक्टर करण। कल बाजार के रेस्टोरेंट में हमारी मुलाकात हुई थी।”

“हाँ, पहचाना। मगर आप यहाँ क्या कर रहे हैं।”

“मैं यहाँ एक ऑफिसियल काम से आया था। जब मैं यहाँ पहुंचा तो तुम्हें इस बिल्डिंग में घुसते हुए देखा था। मैंने अंदाजा लगाया कि तुम्हें शायद साइंस डिपार्टमेंट में नौकरी मिल गई है। और देखो, मेरा अंदाजा कितना सही निकला।”

आभा ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे करण का वहां आ कर उससे बात करना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा था। कारण वो नहीं जानती थी, पर वास्तव में उसे करण से मिलना और बात करना बिल्कुल भी पसंद नहीं था।

“तो तुम को यहाँ टाइपिस्ट की नौकरी मिल गई है। मुबारक हो। वास्तव में मुझे तो टाइप करना बिलकुल भी पसंद नहीं है। अपने डिपार्टमेंट के लिए अपनी रिपोर्ट भी मैं जैसे जबरदस्ती टाइप कर के सबमिट करता हूँ।”

‘इस गधे को ये भी पता नहीं है कि टाइपिस्ट और सेक्रेटरी में क्या फर्क होता है?’ आभा ने मन ही मन सोचा।

“अब आप यहाँ आने का कारण बताएं? मुझे बहुत काम है।” आभा थोड़ी सख्ती से बोली।

“अरे नहीं, काम कुछ नहीं है तुम से। ना ही ऑफिसियल और ना ही व्यक्तिगत। मैं तो बस ये जानना चाहता था कि क्या तुम मेरे साथ लंच लेना पसंद करोगी?”

आभा ने सख्त निगाहों से करण की तरफ देखा।

“मिस्टर करण, आप देख ही रहे हैं कि मैं कितनी व्यस्त हूँ। आज यहाँ मेरी नौकरी का पहला दिन है और मैं अपनी मेहनत, अपने काम के द्वारा अपने बॉस पर अच्छा प्रभाव बनाना चाहती हूँ। आप के साथ लंच फिर किसी दिन सही। वैसे भी अभी हम अभी इतने अच्छे दोस्त नहीं बने हैं कि मैं आप के साथ लंच के लिए चलूँ।”

करण को आभा का जवाब सुन कर गुस्सा आया, मगर उसने अपने गुस्से को बाहर झलकने नहीं दिया। अपने गुस्से को पीता हुआ वो मुस्कुराता रहा और बोला,

“कोई बात नहीं आभा। फिर किसी दिन सही। लेकिन मैं एक बात कहना चाहता हूँ। मगर हम मिलेंगे नहीं, तो फिर अच्छे दोस्त कैसे बन पाएंगे? अच्छी दोस्ती के लिए मिलते रहना जरूरी है।”

आभा ने जवाब नहीं दिया, पर वो उसकी बात सुन कर मुस्कराई। करण कुछ देर यूं ही वहां खड़ा आभा को घूरता रहा और फिर धीरे धीरे चलता हुआ आभा के कमरे से बाहर चला गया। बाहर हॉल में पहुँच कर उसकी आँखों में गुस्सा उभरा।

‘साली समझती क्या है अपने आप को?’ वो गुस्से में बड़बड़ाया।

उधर पीछे, अपने कमरे में टाइप करती आभा का ध्यान उसकी टेबल पर रखे फोन की बजती हुई घंटी ने भंग किया। उसने फोन उठाया और बोली,

“हेल्लो, ये डॉक्टर ब्रह्मा का ऑफ़िस है। मैं क्या कर सकती हूँ आप के लिए।”

दूसरी तरफ से पहले धीरे से हँसने की आयाज़ आई।

“हेल्लो आभा, ये मैं हूँ। डॉक्टर ब्रह्मा।”

“हाँ सर, कहिये।”

“पहली बात तो ये है कि मुझे सर मत कहो। सर शब्द सुन कर बूढ़ा होने का अहसास होता है। तुम मुझे डॉक्टर कहा करो।”

आभा को याद आया कि 2010 में भी डॉक्टर ब्रह्मा ने उससे यही वाक्य कहा था।

“ओके डॉक्टर।” वो मुस्कुराते हुई बोली।

“हाँ, अब ठीक है। मैं ये कहना चाहता था कि मैं कॉलेज के कैंटीन से अपने लिए लंच ऑर्डर करने जा रहा हूँ। क्या अपनी नौकरी के पहले दिन तुम मेरे साथ लंच करना पसंद करोगी? अगर तुम्हारी हां है तो मैं दो लंच ऑर्डर कर देता हूँ।”

“आप के साथ लंच करना मेरे लिए ख़ुशी और सम्मान की बात है डॉक्टर।”

“ओके, तो फिर जैसे ही लंच सर्व हो, अंदर मेरे कमरे में आ जाना।”

“जरूर डॉक्टर।” आभा ने कहा तो दूसरी तरफ से फोन रख दिया गया।

आभा ने फिर से टाइप करना शुरू ही किया था कि फोन की घंटी फिर से बज उठी। आभा ने फोन उठा कर कान से लगाया ही था कि दूसरी तरफ से आवाज़ आई,

“मुझे एक उड़ती हुई चिड़िया ने बताया कि तुम्हें डॉक्टर ब्रह्मा ने नौकरी दे दी है।”

आभा ने साफ़ पहचाना कि वो महेश की आवाज़ थी। आभा के होठों पर प्यारी से मुस्कान आ गई।

“ठीक बताया है आप की उड़ती हुई चिड़िया ने। जब आप की इतनी भारी सिफारिश थी तो मुझे नौकरी क्यों नहीं मिलती भला?”

“बधाई कबूल करो।”

“धन्यवाद महेश। आप ने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। वास्तव में धन्यवाद भी बहुत छोटा शब्द है उसके लिए।”

“छोड़ो वो सब। मैंने तुम्हें फोन इसलिए किया है कि मैं तुम्हें बताना भूल गया कि कॉलेज में मैं और ज्योति हमेशा यहाँ की कैंटीन में ही लंच करते हैं। तुम भी केंटीन आ जाओ लंच के लिए।”

“माफ़ करना महेश। आज का मेरा लंच एक बहुत बड़े आदमी के साथ पहले से ही निश्चित है।” आभा विनोद-पूर्ण स्वर में बोली।

“बड़ा आदमी? कौन बड़ा आदमी? मेरे ख़याल से तो तुम मेरे सिवाय यहाँ किसी और आदमी को नहीं जानती?” महेश ने पूछा।

“अब जानती हूँ ना? बात ये है कि डॉक्टर ब्रह्मा ने मुझे अपने साथ लंच करने को कहा है।”

“ओह। ये तो बहुत अच्छी बात है। कैरी ऑन।” महेश ने कहा।

“धन्यवाद फिर से।”

“और हाँ, शाम को छुट्टी हो जाने बाद पार्किंग में मेरी कार के पास आ जाना।”

“ठीक है।” आभा ने कहा और लाइन काट दी। उसके बाद, जब तक लंच सर्व नहीं हो गया, आभा टाइपिंग में उलझी रही।

पहले दिन के काम की वजह से दिन कब बीत गया, पता ही नहीं चला।

करीब साढ़े चार बजे डॉक्टर ब्रह्मा ने अपने कमरे से निकल कर आभा के कमरे में कदम रखा।

“तुम्हारा काम करने का समय सुबह साढ़े सात से शाम साढ़े चार बजे तक का है। मैं यहाँ थोड़ा और रुकूंगा, तुम जा सकती हो। रोज़ शाम को साढ़े चार बजे चली जाया करना। कभी अगर तुम्हें रोकने की जरूरत हुई तो मैं पहले ही बता दूँगा।” उन्होंने कहा और उलटे पांव वापस अपने कमरे में चले गए।

आभा ने टेबल पर से फाइल, रजिस्टर और कागज़ समेट कर उन्हें व्यवस्थित तरीके से रखा और अपना पर्स उठा कर बाहर की ओर चल दी। पार्किंग में आभा महेश की कार के पास पहुंची। महेश और ज्योति, दोनों में से कोई भी तब तक वहां नहीं पहुंचा था।

आभा वहीँ पर चहल कदमी करते हुए उनका इंतज़ार करने लगी और कुछ ही मिनटों में उसने महेश को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा।

“कैसा रहा नौकरी का पहला दिन?” महेश ने आभा के नजदीक आते ही पूछा।

“बहुत अच्छा रहा। डॉक्टर ब्रह्मा बहुत अच्छे आदमी है। उनके साथ काम कर के बहुत सीखने को मिलेगा।”

“हाँ, डॉक्टर ब्रह्मा एक जीनियस है, इसलिए इतनी कम उम्र में ही डीन बन गए है।” महेश बोला और अचानक आभा के चेहरे की ओर देखते हुए चौंका, “ये क्या लगा है तुम्हारे चेहरे पर?”

आभा ने अपना हाथ अपने चेहरे पर घुमाया, मगर उसकी हथेली पर कुछ नहीं आया।

“ये शायद कार्बन का निशान है। कार्बन हैंडल करते हुए उसका कालापन तुम्हारे हाथ पर लग गया होगा और फिर तुम ने अपने चेहरे पर हाथ फिराया होगा। रुको, मैं साफ़ कर देता हूँ।”

फिर महेश ने एक हाथ से आभा के सर को सहारा दिया और दूसरे हाथ से आभा के गाल पर लगा कार्बन का दाग अपने अँगूठे की मदद से साफ़ करने की कोशिश करने लगा।

“ये क्या हो रहा है खुले आम?” अचानक महेश के पीछे से आवाज़ आई।

वो ज्योति थी, जो ना जाने कब वहां पहुंच गई थी, जिसका पता महेश और आभा, दोनों में से किसी को नहीं लगा।

“वो मैं..... मैं.... आभा के चेहरे से कार्बन का मार्क साफ़ कर रहा था।” महेश जल्दी से हड़बड़ा कर बोला।

महेश की हड़बड़ाहट देख कर ज्योति को हंसी आ गई।

“तुम तो ऐसे घबरा रहे थे जैसे कोई गलत काम रहे थे।” ज्योति हँसते हुए बोली। “वैसे हर काम का तरीका होता है।”

इतना कह कर ज्योति ने अपने पर्स में से एक रुमाल निकाला और आभा के गाल पर लगा कार्बन का दाग साफ़ किया।

“नई नौकरी की बधाई आभा।” रुमाल अपने पर्स में रखते हुए ज्योति ने कहा।

“थैंक्स ज्योति। ये महेश की सिफारिश से संभव हुआ है।”

“मैं तुम्हें बता दूँ कि महेश ने मेरी सिफारिश नहीं की थी, लेकिन तुम्हारी की। कुछ तो खास है तुम में।” ज्योति शरारत से बोली।

“तुम भी ना ज्योति..... “ महेश हड़बड़ा कर बोला, “चलो बैठो, घर नहीं जाना है क्या?” ये कहते हुए महेश ने कार का पिछले दरवाज़ा खोला।

दोनों लड़कियां पिछली सीट पर बैठ गई। महेश ने दरवाज़ा बंद किया और घूम कर कार की ड्राइविंग सीट पर पहुंचा। महेश ने गाड़ी स्टार्ट कर के घर की तरफ दौड़ा दी।

“ज्योति।” महेश अचानक बोला। “मैं तो भूल ही गया था। अच्छा हुआ अभी याद आ गया। माँ ने तुम को आज का डिनर हमारे साथ करने के लिए कहा है। डिनर के बाद हम सब को मंदिर में पंडित जी के पास जाना है।”

“ठीक है। मैं आ जाउंगी। आभा, तुम भी चलोगी ना?”

“अरे मैंने पहले ही कहा है कि हम सब जायेंगे।” महेश जल्दी से बोला।

“नहीं महेश। दरअसल मुझे मंदिर जाना पसंद नहीं है। आप सब लोग हो आना। मैं घर पर ही रहूँगी।”

“ये सब मुझे नहीं, माँ को समझाना। मैंने वही कहा है जैसा माँ ने मुझे कहने के लिए बोला।

बातचीत का विषय बदलते हुए आभा ने कहा,

“ऑफ़िस में आज आप लोगों का दोस्त करण मल्होत्रा आया था।”

“करण? वो क्यों आया था?” महेश ने चौंकते हुए पूछा।

“मुझे लंच पर ले जाने के लिए।”

“अभी कल ही तो तुम से उसकी पहली मुलाकात हुई है और आज लंच के लिए इनवाइट करने भी पहुंच गया?” ज्योति बोली।

“आभा, शायद करण तुम्हें पसंद करने लगा है।”

“बकवास। वो हर लड़की को पसंद करता है।” ज्योति थोड़ा गुस्से में बोली। “आँखें देखी है उसकी? किसी भी लड़की को देख कर चमक उठती है और लगता है कि लड़की को आँखों से ही खा जायेगा।”

“अब क्या कहूं, लड़कियों के मामले में वो शुरू से ऐसा ही है।” महेश ने कहा।

“आभा, अगर तुम्हें उसका साथ पसंद नहीं है तो उसको ज्यादा भाव देने की जरूरत नहीं है, भले ही वो हमारा दोस्त है।” ज्योति ने जैसे वो कहा जो आभा सुनना चाहती थी।

थोड़ी देर बाद महेश ने कार अपने घर के सामने रोकी और जल्दी से उतर कर आभा और ज्योति के लिए कार का पिछले दरवाज़ा खोला।

“क्या महेश हमेशा ही इसी तरह तुम्हारे लिए कार का दरवाज़ा खोलता है?” आभा ने कार से उतरते हुए ज्योति से पूछा।

“हाँ, जब से उसने ये अपनी पहली कार खरीदी है। मेरे ख़याल से इसके पिता जी ने इसे कार चलाने के साथ साथ ये सभ्यता भी सिखाई है। लेकिन इसमें अजीब क्या है? यहाँ करीब करीब हर लड़का लड़की के लिए कार का दरवाज़ा खोलता और बंद करता है।”

“मुझे इस तरह का व्यवहार बहुत पसंद आया। काश दिल्ली में भी ऐसा होता।”

“ये तो बुरी बात है। आधुनिक होने का ये मतलब तो नहीं कि हम अपनी सभ्यता ही भूल जाएँ?”

“हाँ, पर बदकिस्मती से दिल्ली में ऐसा ही है।”

“मैं फ्रेश हो कर थोड़ी देर बाद आती हूँ।” ज्योति ने महेश से कहा और अपने घर की ओर चल दी।

आभा महेश के साथ उसके घर में दाखिल हुई। महेश कपड़े बदलने के लिए सीधा अपने कमरे में चला गया और आभा किचन में आ गई जहाँ माँ रात के खाने की तैयारी कर रही थी।

“अरे, आ गई बेटी? शाम को वापस आई है, लगता है नौकरी मिल गई।”

“कैसे नहीं मिलती माँ जी, आखिर मेरे साथ महेश की सिफारिश जो थी।” आभा ने मुस्कराते हुए कहा।

“अच्छा ठीक है, तुम जा कर कपड़े बदल लो। तब तक मैं तुम लोगों के लिए चाय बनाती हूँ। महेश के पापा भी आते ही होंगे। बाद में जल्दी खाना खा कर हमें मंदिर जा कर पुजारी जी से मिलना है। महेश ने बताया ना।”

“हाँ माँ जी, बताया। पर मैं वहां जाकर क्या करुँगी? आप लोग हो आओ ना?”

“अरे, ऐसा कैसे होगा। शनिवार को महेश शादी है मंदिर में। मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी। इसलिए तुम्हें चलना ही पड़ेगा और पंडित जी की बातें समझनी पड़ेगी, ताकि सब इंतज़ाम आराम से हो जाये।” माँ ने जोर दे कर कहा।

“ठीक है माँ जी, चलूंगी।”

“ये हुई ना अच्छी लड़की जैसी बात। जा कर कपड़े बदल लो, चाय तैयार हो रही है।”

आभा किचन से बाहर निकली तो उसने महेश को अपने रूम से कपड़े बदली कर के बाहर आते देखा। महेश हॉल कुर्सी पर बैठ गया और आभा रूम के अंदर कपड़े बदलने के लिए चली गई।

वैसे भी 1961 में लोग रात का खाना जल्दी खाया करते थे, पर उस दिन उन सब ने, ज्योति सहित साथ मिल कर और थोड़ा जल्दी डिनर किया। डिनर के बाद ज्योति मंदिर जाने के लिए कपड़े बदलने अपने घर चली गई और महेश के माता पिता भी कपड़े बदलने के लिए अपने कमरे में चले गए।

“मैं अपने पहनने के लिए रूम से कुरता पायजामा निकाल लेता हूँ, फिर तुम दरवाज़ा बंद कर के अपने कपड़े बदल लेना।” महेश ने कहा और ज्योति ने ‘हाँ’ में सर हिलाया।

आभा कपड़े बदल कर बाहर आई तो उसमे महेश को लाल रंग का कुरता और सफ़ेद पायजामा पहने हुए देखा। उन कपड़ों में महेश बहुत सुन्दर लग रहा था। उसको देख कर आभा का दिल जोर से धड़का, मगर उसने जल्दी से अपनी भावनाओं पर काबू पाया।

‘महेश सिर्फ और सिर्फ ज्योति का है। तुम्हारे मन में महेश के लिए ऐसी भावना ठीक नहीं। तुम यहाँ दो दिन की मेहमान हो और तुम्हें ज्योति की जान बचा कर वापस अपनी दुनिया में लौट जाना है।’ आभा के दिमाग ने आभा से कहा।

महेश के मम्मी पापा भी तैयार हो गए थे और ज्योति भी कपड़े बदल कर आ गई थी। पांचों लोग महेश की गाड़ी में बैठे और महेश ने गाड़ी मंदिर की ओर दौड़ा दी। मंदिर उनके घर से अधिक दूर नहीं था।

वहां पंडित जी ने शादी के लिए जरूरी चीजों की सूची लिखवाई और कुछ जरूरी बातें बताई। आधे घंटे बाद सब घर पर वापस आ चुके थे। ज्योति सीधे अपने घर चली

गई थी और बाकी सब हॉल में बैठ कर बातें करने लगे।

रात के साढ़े नौ बजने को थे। महेश के माता पिता सोने के लिए अपने कमरे में चले गए थे और महेश ज्योति से मिलने उसके घर चला गया था। आभा ने रूम में जा कर अपना पायजामा सूट पहना बाहर लॉन में आ गई।

लॉन में पड़ी कुर्सी पर बैठ कर आभा अपने विचारों में खो गई। उसने नज़रें उठा कर ज्योति के घर की तरफ देखा। ज्योति के घर में हॉल की लाइट जल रही थी। शायद महेश और ज्योति वहां बैठ कर बातें कर रहे होंगे।

ऐसे ही सोचते सोचते वो उठ कर लॉन में चहल कदमी करने लगी। आभा को चहल कदमी करते हुए ये आभास तक नहीं हुआ कि बाहर सड़क पर, एक अँधेरे कोने में अपनी कार में बैठा करण उसको ही देख रहा है।

लॉन में टहलती टहलती आभा जब लॉन के पिछवाड़े में, गैरेज के पास पहुंची, तो वो करण को कार में बैठे बैठे नजर आनी बंद हो गई। वैसे भी लॉन के पिछले हिस्से में इतना अंधेरा था कि वहां दूर से देखना संभव ही नहीं था।

उस अँधेरे में जब तक कोई एकदम नजदीक नहीं आ जाता, उसकी उपस्थिति का आभास वहां मौजूद दूसरे को नहीं हो सकता था। करण अपनी कार से बाहर निकला और अपनी पुलिसिया ट्रेनिंग की दक्षता का फायदा उठा कर महेश के घर की चारदीवारी फलांगी और अंदर की तरफ दीवार के नीचे बैठ कर आभा को देखने लगा, जो तब तक गैरेज के पास पहुँच कर खड़ी थी।

गैरेज के पास पहुँच कर आभा थोड़ी ठिठकी और गैरेज के बंद दरवाजे की तरफ देखने लगी और सोचने लगी। यही वो जगह थी जहाँ से वो 2010 में रवाना हुई थी और उसी 1961 में पहुंची थी। उसी जगह से उसे वापस 2010 में अपनी दुनिया में वापस लौटना था।

शनिवार रात को टाइम मशीन उसे लेने के लिए उसी गैरेज में आने वाली थी। आभा के मन में सवाल उठा कि अगर टाइम मशीन वहां गैरेज में वक्त के पहले आ गई और किसी ने उसे वहां देख लिया तो क्या होगा। उसके मन में ये विचार भी आया कि अगर वो सब की नजरों से छिप कर तय समय पर गैरेज नहीं पहुंच सकी तो क्या होगा।

दोनों ही सूरतों में नतीजा ये निकल सकता था कि उसे हमेशा के लिए उसी ज़माने में रहना पड़े। 'अगर ऐसा होता भी है तो इस ज़माने में रहना कुछ बुरा नहीं है।' आभा

ने अपने मन में कहा और अनायास ही मुस्कुरा उठी।

करण की वहां मौजूदगी का कारण ये था कि वो अक्सर रात को वहां का चक्कर लगाया करता था, क्यों कि वो ज्योति को किसी भी तरह पाना चाहता था। अब तक वो अपने इरादे में तो कामयाब नहीं हो पाया था, मगर अक्सर रात को ज्योति के कमरे में ताकझांक किया करता था और ज्योति का अधनंगा जिस्म देख कर उत्तेजित हो जाया करता था।

एक पुलिस वाला होने के बावजूद भी उसमे कभी इतनी हिम्मत नहीं हुई थी कि वो ज्योति के सामने अपने प्यार का इज़हार कर सकता।

वो जानता था ज्योति बचपन से ही महेश से प्यार करती है और अब तो उन दोनों की शादी होने वाली थी। मगर ज्योति के देखते ही उसके शरीर में वासना जाग उठती थी, इसीलिए वो रातों को अक्सर छिप कर वहां आता था और ज्योति को उसके बेडरूम में, खिड़की से झांक कर सोते हुए देखता था।

रोज रोज वहां चक्कर लगाने की वजह से उसको ये भी पता था कि ज्योति रोज़ रात को सोने से पहले नहाती थी और बाथरूम से सिर्फ एक टॉवल लपेट कर बाहर आती थी। बाहर आ कर वो सिर्फ एक झीना सा गाउन पहनती थी और अपने बिस्तर में सो जाती थी।

जब वो टॉवल अपने जिस्म से अलग करती थी तो करण को कुछ पल के लिए ज्योति का पूरी तरह नंगा जिस्म नजर आता था। गाउन पहनने के बाद भी उस झीने गाउन में उसका अंग प्रत्यंग उसे नजर आता था। वो दृश्य देख कर करण काफी उत्तेजित हो जाता था और उसके बाद स्वयं ही अपनी वासना शांत करता था, कभी ज्योति के घर के लॉन में तो कभी वापस अपनी कार में बैठ कर।

उस दिन भी करण हमेशा की तरह ज्योति के बेडरूम में झाँकने के लिए आया था, मगर अपनी कार एक अँधेरी जगह पर खड़ी करते वक्त उसने महेश को ज्योति के घर में जाते हुए देख लिया था। अपनी कार में बैठे बैठे ही करण महेश का ज्योति के घर से निकल कर वापस अपने घर में आने का इंतज़ार कर रहा था कि उसने आभा को महेश के घर के लॉन में देखा।

आभा को पहली बार देखते ही करण उसकी तरफ आकर्षित हो गया था और अब वो ज्योति के साथ साथ आभा को भी किसी भी तरह अपना बनाना चाहता था क्यों कि दोनों में जुड़वाँ बहनों जैसी समानताएं थी।

उसकी वहां मौजूदगी का नया कारण ये था कि किसी तरह उसको आभा की कोई कमज़ोरी का पता लगाना था, जिसके सहारे वो उसे ब्लैकमेल करके अपना बना सके। साथ ही उसे शक था कि महेश के आभा के साथ भी किसी तरह के सम्बन्ध थे।

उधर आभा को याद आया कि 2010 में उसे महेश ने बताया था कि लॉन के पिछले हिस्से में उसके और ज्योति के घर के बीच की दीवार में एक छोटा सा दरवाज़ा बना हुआ था, जिसकी बाहरी लोगों को कोई भनक नहीं थी। 2010 में आभा ने वो दरवाज़ा देखा था और उसका इस्तेमाल भी किया था।

यही सोचते सोचते उसके कदम पीछे की तरफ बने हुए दरवाजे की तरफ बढ़ने लगे। दीवार नीचे अँधेरे का फायदा उठा कर करण भी बैठा बैठा सा लॉन के पिछले हिस्से की तरफ बढ़ने लगा।

तभी अचानक वो दरवाज़ा निशब्द खुला और आभा का सामना ज्योति के घर की तरफ से आते हुए एक साये से हुआ। अचानक वहां उस साये के नमूदार होने की वजह से आभा थोड़ा घबरा सी गई।

“कौन है?” उसने घबराहट से पूछा।

“अरे आभा? ये मैं हूँ महेश। तुम इतनी रात को यहाँ क्या कर रही हो?” महेश जल्दी से बोला।

वो जब थोड़ा नजदीक आया तो आभा ने उस अँधेरे में भी महेश को पहचाना। उसकी सांस में सांस आई।

“तुम इतनी रात गए यहाँ क्या रही हो?” महेश ने फिर पूछा।

“मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए लॉन में टहलती हुई यहाँ पहुँच गई।” आभा ने जवाब दिया और फिर विषय बदलते हुए उसने वो सवाल किया जिसका उत्तर उसे पहले से ही पता था।

“लेकिन आप यहाँ अचानक से कैसे पहुंच गए? आप तो ज्योति के घर गए थे ना?”

“हाँ, मैं वहीँ से आ रहा हूँ। यहाँ एक दरवाज़ा है जिस का इस्तेमाल कर के दोनों घरों के लोग एक दूसरे के यहाँ आ जा सकते हैं। इसकी वजह से हमें मैन डोर का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता।”

बातें करते करते महेश ने आभा का हाथ थामा और दोनों महेश के घर की तरफ धीरे धीरे चलने लगे।

“तुम चुप क्यों हो गई?” चलते चलते महेश ने आभा को कुछ ना बोलते पा कर पूछा।

करण दीवार के अँधेरे साये में बैठा बैठा महेश और आभा की तरफ ही देख रहा था। हवा का रुख दूसरी तरफ होने और कुछ दूरी होने की वजह से करण उनकी बातें तो नहीं सुन पा रहा था, अलबत्ता वो उन दोनों को पहले की अपेक्षा काफी साफ़ देख पा रहा था। इसका कारण ये था कि दोनों महेश के घर के पास पहुँच गए थे और सड़क पर खम्भे पर रोशन एक बल्ब की हलकी रौशनी वहां तक पहुँच रही थी।

“कोई खास बात नहीं।” आभा ने चुप्पी तोड़ी। “मेरे लिए चीजें कितनी बदल गई है। मैं दिल्ली में अपने मंगेतर के साथ कितनी खुश थी। पर उसकी मौत ने सब कुछ बदल दिया। मेरा सब कुछ ख़त्म हो चुका था। फिर मैं यहाँ आ गई। यहाँ आप के मम्मी पापा ने मुझे इस तरह अपनाया जैसे मैं इस परिवार का हिस्सा हूँ। जितना मैंने खोया था, उस से अधिक मैंने आप के घर में पा लिया। अब तो दो दिनों में ही आप का घर मुझे अपने घर जैसा लगने लगा है। मैं बहुत खुश हूँ।”

महेश ने आभा के कंधे पकड़ कर आभा का मुंह अपनी तरफ किया। पर्याप्त रौशनी ना होने के बावजूद महेश ने आभा की आँखों में आंसुओं की मौजूदगी का आभास हुआ। आभा ने महेश की आँखों में देखा तो भावनाओं में बह कर महेश आभा को चूमने लगा।

आभा को महेश का स्पर्श और अपने होठों पर महेश के होठों की मौजूदगी बहुत पसंद आई। दीवार के पास नीचे बैठे करण ने वो नजारा देखा तो उसे अपनी आँखों पर जैसे यकीन ही नहीं हुआ। अचानक महेश घबरा कर आभा से अलग हुआ।

“माफ़ करना आभा, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। मुझ से गलती हो गई। ये मैंने क्या किया? मेरी तो शादी होने वाली है ज्योति से। उसे कितना दुख होगा मेरी इस हरकत से।”

“इसमें आप की अकेले की गलती नहीं है महेश। मैं भी तो भावनाओं में बह गई थी। जो हुआ, उसे भूल जाओ। ये एक निर्दोष चुंबन था। मैं किसी को नहीं बताउंगी। मैं जानती हूँ कि आप ज्योति से कितना प्यार करते हैं।”

“जब तुम मेरी बाहों में थी तो एक सेकेंड के लिए तो मुझे लगा था कि तुम ज्योति हो। इसलिए मुझ से ये भूल हो गई।” महेश के स्वर में पछतावा था।

“अब छोड़ो भी ये सब। कुछ नहीं हुआ है। आप ने ज्योति को कोई धोखा नहीं दिया है। जो कुछ हुआ, अनजाने में हुआ और कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई है।”

महेश ने कोई उत्तर नहीं दिया मगर आभा ने महसूस किया कि उसका अपराध बोध थोड़ा कम हो गया है। दोनों धीरे धीरे लॉन की नरम घास पर चलते हुए किचन के स्लाइडिंग दरवाजे तक पहुँच गए। महेश ने दरवाज़ा खोला और दोनों घर के अंदर आ गए।

वहां दीवार के साये में बैठे करण ने अपनी पैंट की जेब से एक चपटा सा फ़्लास्क निकाला जो शराब से भरा था। उसे खोल कर उसने दो तीन घूँट भरे। महेश के घर के किचन की बत्ती बंद हो चुकी थी। बाकी के घर में तो पहले से ही अंधेरा था।

करण ने फ़्लास्क से दो घूँट और लिए और उसे वापस अपनी पैंट की जेब में डाल लिया। फिर वो अपनी जगह से खड़ा हुआ और उसने गर्दन घुमा कर ज्योति के घर की तरफ देखा।

‘मेरा शक सही निकला। ये साला तो दो दो नावों में सवारी कर रहा है और मैं यहाँ सूखा सूखा ही घूम रहा हूँ। कुछ करना पड़ेगा।’ करण मन ही मन बोला।

उसने गर्दन उठा कर ज्योति के घर की तरफ देखा। उसके घर में बाथरूम और बेडरूम की लाइट जल रही थी।

‘लगता है साली नहा रही है। मुझे जल्दी करनी चाहिए।’ वो अपने आप से बोला।

उसने आस पास गर्दन घुमा कर देखा। कहीं कोई हलचल नहीं थी। रास्ता साफ़ था। उसने चारदीवारी फलांगी और ज्योति के लॉन में आ गया।

=====

15

कुछ देर बाद ही करण लॉन के अँधेरे में, ज्योति के बेडरूम की खिड़की के बाहर खड़ा खिड़की पर लगे परदे की झिरी से ज्योति के बेडरूम में झांक रहा था। बेडरूम पूरी तरह खाली था, ज्योति वहां नहीं थी।

‘लगता है अभी तक नहा रही है।’ उसने अपने आप से कहा और परदे की झीरी से आँख सटाये अंदर झांकता रहा। तभी ज्योति ने बेडरूम में कदम रखा। करण के दिल की धड़कनें तेज हो गई और उसकी आँखों में वासना के डोरे तैरने लगे।

हमेशा की तरह ज्योति ने अपने बदन पर सिर्फ एक टॉवल लपेट रखा था। बेडरूम में आ कर ज्योति ने एक बार अपने आप को शीशे में देखा और फिर मुस्कराती हुई मुड़ी। उसके मुड़ते ही पता नहीं कैसे टॉवल उसके बदन पर से फिसल गया।

ज्योति थोड़ा हड़बड़ाई। पर उसने टॉवल उठाया और वापस अपने बदन पर लपेटने की बजाय आईने के सामने पड़ी एक कुर्सी पर सूखने के लिए फैला दिया। घर में वो अकेली थी, इसलिए उसको ये स्वतंत्रता थी।

टॉवल कुर्सी पर फैलाते समय उसने अपना नंगा जिस्म आईने में देखा और फिर कुछ सोच कर आईने के नीचे बनी छोटी सी ड्रेसिंग टेबल का ड्रावर खोल कर एक क्रीम की ट्यूब निकाली। बाहर से झांक रहे करण के मुंह में ज्योति को निर्वस्त्र देख कर पानी आ गया और वो काफी उत्तेजित हो उठा।

करण का एक हाथ नीचे उसकी पैंट के बटनों पर पहुंचा और उसने जल्दी जल्दी बटन खोल लिए। अंदर ज्योति अपने जिस्म पर जगह जगह क्रीम लगा कर अपने हाथों से क्रीम को धीरे धीरे बहुत नफासत से मलने लगी। बाहर से झांकते करण का हाथ भी तेजी से हिलने लगा।

अपने निर्वस्त्र जिस्म पर कुछ देर तक क्रीम मलने के बाद ज्योति आलमारी की तरफ जाने के लिए मुड़ी। उसका मनपसंद गाउन आलमारी में पड़ा था, जिसे निकाल कर वो पहनना चाहती थी।

उधर बाहर लॉन के अँधेरे में खड़े, खिड़की से झांकते करण के मुंह से वासना और जिस्मानी संतुष्टि मिलने पर एक सिसकारी सी निकली। रात के सन्नाटे में करण के मुंह से निकली धीमी सी सिसकारी भी अंदर बेडरूम में मौजूद ज्योति के कानों तक पहुंची। ज्योति ने चौंक कर खिड़की की तरफ देखा तो उसे वहां किसी की मौजूदगी का अहसास हुआ।

“कौन है वहां।” ज्योति घबरा कर चिल्लाई।

करण को भी पता चल गया था कि बाहर उसकी मौजूदगी का अहसास ज्योति को हो चुका था। वो घबरा गया और उसने पलट कर बाउंड्री वाल की तरफ दौड़ लगा दी। अपने पीछे लॉन में अचानक हुई थोड़ी सी रौशनी की वजह से उसे ये अहसास भी हो चुका था कि पीछे ज्योति ने खिड़की से पर्दा हटा कर बाहर लॉन में झाँका था।

करण तब तक चारदीवारी के पास पहुँच चुका था। उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वो चारदीवारी की दूसरी तरफ कूद गया। पेड़ों के नीचे फैले अँधेरे का फायदा

उठा कर वो अपनी कार तक पहुंचा और बिना कार की लाइटें जलाये उसने जल्दी से कार स्टार्ट की और वहां से भाग गया। थोड़ी देर बाद उसे एहसास हुआ कि उसकी पैंट के नीचे के बटन खुले हुए थे। उसने बटन बंद किये और अपनी सफलता तथा वहां से बच निकलने के कारण उसके होठों पर एक कुटिल सी मुस्कान आई।

उधर महेश के घर में सन्नाटा था और सभी गहरी नींद में थे। हमेशा की तरह महेश के मम्मी पापा अपने रूम में सोये हुए थे। महेश हॉल में लोहे के फोल्डिंग पलंग पर सोया हुआ था और महेश के बेडरूम में नया खरीदा हुआ पायजामा सूट पहन कर आभा भी गहरी नींद में थी।

अचानक आभा हड़बड़ा कर उठी। बाहर हॉल में बजते फोन की घंटी की वजह से उसकी नींद खुल गई थी। रात के सन्नाटे में फोन की घंटी की आवाज़ काफी तेज थी।

'जरूर कुछ बुरा हुआ है जिसकी वजह से किसी ने इतनी रात को फोन किया है।' इस आशंका के साथ आभा पलंग से उतर कर हॉल की तरफ दौड़ी। तब तक महेश ने उठ कर फोन उठा लिया था।

दूसरी तरफ से जो कुछ कहा गया, उसे सुन कर महेश चौंक कर जोर से बोला,

"क्या...?"

तब तक महेश के मम्मी पापा भी अपने कमरे से निकल कर हॉल में आ चुके थे। सिवाय महेश के कोई नहीं समझ पा रहा था कि क्या हो गया था। सभी के चेहरे पर घबराहट थी।

"मैं अभी आता हूँ।" महेश जल्दी से बोला और उसने रिसीवर रख दिया।

सभी घबराये हुए प्रश्नवाचक निगाहों से महेश की तरफ देखने लगे।

"ज्योति का फोन था। कोई बाहर से उसके बेडरूम की खिड़की से अंदर झांक रहा था। उसने पुलिस को भी फोन कर दिया है। पुलिस आती ही होगी। मैं वहां जा रहा हूँ।"

"हे भगवान।" महेश की माँ घबराये हुए स्वर में अपने मुंह पर हाथ रख कर बोली।

"अभी गोली मारता हूँ साले को।" महेश के पिताजी ने कहा और वो अपनी पिस्तौल लाने के लिए अपने कमरे की तरफ दौड़े।

"कोई फायदा नहीं पिता जी। वो जो भी था, भाग गया है। मैं ज्योति के घर जा रहा हूँ।"

“रुको, मैं भी साथ चलती हूँ। शायद उसे मेरी जरूरत हो।” आभा ने कहा।

“तुम दोनों चलो, हम भी आ रहे हैं।” महेश के पिता जी ने कहा।

महेश और आभा तेजी से ज्योति के घर की तरफ बढ़ गए। ज्योति एक पायजामा सूट पहने अपने घर के दरवाजे पर खड़ी थी। महेश और आभा ज्योति के पास पहुंचे तो वो डर के मारे थर थर कांप रही थी। आभा ने आगे बढ़ कर ज्योति को गले लगा कर सांत्वना दी और उसे ले कर घर के अंदर आ गई। हॉल में ज्योति और आभा पास पास और महेश उन दोनों के सामने कुर्सी पर बैठा था।

आभा दौड़ कर किचन में गई और एक गिलास में पानी ले कर लौटी।

“लो पानी पी लो। अब घबराने की कोई बात नहीं है। हम सब हैं ना यहाँ पर।” आभा ने ज्योति के सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

तब तक महेश के मम्मी पापा भी वहां पहुँच चुके थे। ज्योति ने जल्दी जल्दी पानी पीया। इसी बीच महेश के मम्मी पापा भी वहां पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए थे। अब ज्योति थोड़ा शांत नजर आ रही थी। उसकी घबराहट कम हो गई थी और कांपना भी बंद हो गया था।

“क्या हुआ था बेटी, आराम से बिना घबराये बताओ। क्या उसने घर में घुसने की कोशिश की थी?” महेश के पिता जी ने सवाल किया।

“नहीं। वो बाहर लॉन में खड़ा मेरे बेडरूम की खिड़की से अंदर झाँक रहा था। मैं बस रोज़ की तरह नहा कर आई थी और कपड़े पहन रही थी।”

“कीड़े पड़ेंगे पापी को।” महेश की मम्मी बोली।

तभी बाहर पुलिस की गाड़ी आ कर रुकी। उस में से एक सब इंस्पेक्टर उतर कर घर में आया। उसके साथ आये दो हवलदार दरवाजे पर ही खड़े रहे।

“मेरा नाम सब इंस्पेक्टर विल्सन है। पुलिस स्टेशन फोन किसने किया था?” सब इंस्पेक्टर ने उन सब की तरफ देखते हुए पूछा।

“मैंने किया था।” ज्योति ने जवाब दिया।

“जरा विस्तार से बताइये कि क्या हुआ था?” सब इंस्पेक्टर ने अपनी जेब से एक डायरी और पेन निकालते हुए कहा।

ज्योति ने पूरी घटना विस्तार से बयान की। सब इंस्पेक्टर ने कई बातें अपनी डायरी में नोट की और बीच बीच में कुछ सवाल भी किये, जिसका ज्योति ने जवाब दिया। ज्योति का पूरा बयान लेने के बाद सब इंस्पेक्टर विल्सन ने दरवाजे पर खड़े दो हवलदारों में से एक को इशारे से अपने पास बुलाया।

“बाहर लॉन का कोना कोना छान मारो। खास कर के इस बेडरूम की खिड़की से बाहर की जगह और वहां से सीधे बाउंड्री वाल तक। कुछ भी क्लू मिले तो मुझे बताना।”

दोनों हवलदार अपनी तेज रोशनी वाली टार्च लेकर बाहर लॉन में तलाशी में जुट गए।

अभी पांच मिनट ही बीते थे कि कमरे में दौड़ता हुआ करण प्रविष्ट हुआ। उस वक्त उसने अपनी पुलिस की वर्दी पहन रखी थी। जाहिर था कि उसने अपनी कार में अपने कपड़े उतार कर पुलिस की वर्दी पहन ली थी, ताकि ज्योति को उसके कपड़ों की वजह से शक ना हो। ज्योति ने उसका चेहरा तो नहीं देखा था, मगर भागते हुए उसके कपड़े जरूर देखे होंगे।

सब इंस्पेक्टर ने करण को देखते ही उसे सैल्यूट किया।

“क्या हुआ? ज्योति ठीक तो है ना?”

“हाँ, ज्योति ठीक है चिंता की कोई बात नहीं।” महेश ने जवाब दिया।

“मैं राउंड के लिए निकला था और यहाँ से गुज़र रहा था की ज्योति के घर के बाहर पुलिस की गाड़ी देख कर जरा घबरा गया था। हुआ क्या है यहाँ?”

महेश ने पूरी घटना करण के लिए दोहरा दी।

“तुम ने ज्योति का बयान दर्ज़ किया?” करण ने सब इंस्पेक्टर विल्सन से पूछा।

“हाँ सर।”

“कोई क्लू मिला? पता चला कि कौन था वो?”

“किसी क्लू के लिए लॉन में सर्च जारी है सर।”

करण बाहर निकल कर लॉन में तलाशी लेते हवलदारों के पास पहुंचा। पीछे पीछे सब इंस्पेक्टर विल्सन भी पहुंचा।

“कुछ मिला?”

“नहीं सर। कोई क्लू तो नहीं मिला।” उनमें से एक हवलदार ने जवाब दिया। “पर किसी के ठरकीपन का सबूत जरूर मिला है।”

कहते हुए हवलदार ने ज्योति के खिड़की के नीचे की दीवार पर एक गीले धब्बे और नीचे की तरफ बहती एक गीली लाइन की तरफ इशारा किया। सब समझ गए थे कि वो गीलापन किस चीज का था।

“हरामखोर, ठरकी।” विल्सन के मुंह से निकला।

करण के दिल की धड़कन एक बार तो तेज हो गई, मगर जल्दी ही संभल गया। करण सब इंस्पेक्टर विल्सन की तरफ मुड़ कर बोला,

“जो भी था, अब तक तो बहुत दूर निकल चुका होगा। ज्योति मेरी दोस्त है, इस केस को मैं हैंडल करूँगा। तुम अपने हवलदारों के साथ वापस थाने जा सकते हो।”

“यस सर।” कह कर सब इंस्पेक्टर विल्सन ने करण को सैल्यूट किया और दोनों हवलदारों के साथ वहां से रवाना हो गया।

करण फिर से घर के अंदर आया।

“बाहर लॉन में कुछ नहीं मिला।” वो ज्योति से बोला, “कुछ तो देखा होगा तुम ने? उसके चेहरे की एक झलक? उसकी कद काठी? उसके कपड़े?”

“मैंने कुछ नहीं देखा। जब मुझे एक हलकी सी आवाज़ की वजह से किसी के खिड़की के बाहर होने का एहसास हुआ तो मैंने घबरा कर आवाज़ लगाई थी, ‘कौन है वहां’ और मैं खिड़की के पास पहुंची। जब मैंने खिड़की का पर्दा हटा कर बाहर लॉन में देखा तो एक साये को बाउंड्री वाल की तरफ भागते हुए देखा। पलक झपकते ही वो बाउंड्री वाल पर चढ़ा और बाहर कूद गया। फिर वो मुझे नजर नहीं आया।”

“ठीक है। मैं खुद इस केस को देखूँगा और सुबह आस पास के घरों में पूछताछ करूँगा। शायद किसी ने कुछ देखा हो। तुम घबराओ मत। वो दोबारा यहाँ नहीं आने वाला। मेरे ख़याल से तो वो कोई मनचला लड़का होगा जिसे लड़कियों को छिप कर देखने का चस्का लगा होगा। मैं कल से यहाँ गश्त भी बढ़ा दूँगा। अगर अब उसने कहीं भी ऐसी हरकत की, तो वो हमारी गिरफ्त में होगा।”

करण की बात सुनकर सब ने चैन की साँस ली। ज्योति का डर भी दूर हो गया था और वो सामान्य नजर आ रही थी।

“आप लोग यहीं बैठो, तब तक मैं बेडरूम की खिड़की तक हो कर आता हूँ।” करण ने कहा और बेडरूम की तरफ बढ़ गया।

बेडरूम में आ कर उसने इधर उधर देखा और टहलता हुआ खिड़की तक गया। खिड़की पर पर्दा लगा हुआ था और बाहर अंधेरा होने की वजह से अंदर से बाहर का कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उसने पर्दा हटा कर बाहर लॉन में झाँका और आश्वस्त हो गया कि बाहर के उस अँधेरे में भागने वाले को बेडरूम के अंदर से पहचानना मुमकिन नहीं था। उसने संतोष की एक लंबी सांस ली और वापस बाहर आ गया।

“मेरे ख़याल से अब आप लोग आराम करें। वो जो कोई भी था, अब लौट कर नहीं आने वाला। मैं भी चलता हूँ।” कह कर करण ने महेश और ज्योति से हाथ मिलाया।

जब उसने अपना हाथ मिलाने के लिए आभा की तरफ बढ़ाया तो आभा को मजबूरन उस से हाथ मिलाना पड़ा। रेस्टोरेंट में उसने पहली मुलाकात पर जैसा किया था, करण ने आभा का हाथ जोर से दबाया। आभा का मन तो किया कि करण के गाल पर अपनी उँगलियों के निशान बना दे, मगर वो सब्र का घूँट पी कर रह गई।

करण वहां से बाहर निकल गया। महेश के पिताजी ने कहा,

“हालाँकि अब डरने की कोई बात नहीं है, फिर भी ज्योति की तसल्ली के लिए तुम दोनों आज की रात यहीं सो जाओ।” उन्होंने महेश और आभा से कहा। “ज्योति का पलंग काफी बड़ा है। ज्योति और आभा इस बेडरूम में सो जाएगी और महेश, तुम उस बेडरूम में सो जाओ।”

बिना किसी हिचकिचाहट के महेश और आभा ने बात मान ली। ज्योति भी इस से सहमत थी। महेश के मम्मी पापा जब वहां से चले गए, तो ज्योति ने महेश का बिस्तर दूसरे बेडरूम में लगा दिया और आभा के साथ अपने बेडरूम में आ गई।

“दरवाज़ा अंदर से बंद मत करना।” महेश दूसरे बेडरूम से बोला।

आभा और ज्योति के चेहरे पर एक साथ मुस्कान आई। ज्योति के साथ आभा ने बेडरूम में कदम रखा तो आभा को वही सुखद और अजीब सा महसूस हुआ, जो पहले भी कई बार हो चुका था। वो वही बेडरूम था, जो आभा 2010 में इस्तेमाल करती थी और उसमे दरी बिछा कर सोती थी।

बेडरूम के बीचों बीच एक बड़ा सा पलंग था, इतना बड़ा कि जरूरत पड़ने पर तीन लोग सो सकते थी, और दो जने तो बहुत आराम के साथ सो सकते थे। आभा पलंग

के एक सिरे पर लेट गई तो ज्योति ने लाइट बंद कर के नाइट बल्ब ऑन कर दिया। कमरे में नाइट बल्ब की धीमी और नीली रौशनी फ़ैल गई।

ज्योति चलती हुई पलंग के दूसरे सिरे पर पहुँच कर वहां लेट गई।

“गुड नाइट।” आभा बोली।

“गुड नाइट आभा और थैंक यू।”

“वो किस लिए?”

“यहाँ आने के लिए और मुझे हौसला देने के लिए मेरे पास सोने के लिए।”

“ये बातें करने का वक्त नहीं है। आराम से सो जाओ। सुबह जल्दी उठना है।” आभा ने प्यार की डांट लगाई।

थोड़ी देर बाद दोनों लड़कियां गहरी नींद में थी। रात को किसी वक्त बेडरूम का दरवाज़ा धीरे से खुला। हालाँकि बहुत मामूली से आवाज़ हुई थी, लेकिन आभा की आँख खुल गई। उसने धीरे से अपनी एक आँख थोड़ी सी खोल कर देखा, तो नाइट बल्ब की नीली रौशनी में उसे दरवाजे पर खड़ा महेश नजर आया।

आभा बिना हिले डुले वैसे ही पड़ी रही, जैसे कि ज्योति की तरह वो भी गहरी नींद में थी। लेकिन उसका दिल जोर जोर से धड़कने लगा। इतनी जोर से कि वो खुद अपने दिल के धड़कने की आवाज़ सुन सकती थी।

पहले तो आभा को लगा कि महेश वहां सिर्फ ये देखने आया था कि दोनों लड़कियां आराम से सो रही है या नहीं, और फिर वो दरवाज़ा बंद कर के वापस चला जायेगा। मगर उसका अंदाजा गलत निकला। धीरे धीरे दबे पांव महेश पलंग की तरफ बढ़ा। पहले वो आभा के नजदीक आया, क्यों कि पलंग पर दरवाजे की दिशा में आभा सोइ हुई थी।

फिर महेश घूम कर पलंग के दूसरी तरफ पहुंचा। आभा ने अंदाजा लगाया कि शायद मौके का फायदा उठाने के लिए महेश ज्योति को धीरे से जगा कर अपने साथ, अपने कमरे में ले जायेगा। महेश कुछ देर ज्योति के पास खड़ा उसे देखता रहा, और फिर उसने झुक कर ज्योति के माथे पर एक हल्का सा चुंबन दिया।

ज्योति कुनमुनाई, पर उसकी नींद नहीं खुली। आभा को भी अपने ललाट पर जैसे महेश के होठों की गर्मी का एहसास हुआ।

महेश पलटा और उसी तरह दबे पांव चलता हुआ बेडरूम से बाहर निकल गया। जाते हुए वो दरवाज़ा पहले की तरह भिड़ा गया।

आभा के दिल में महेश के लिए इज़्ज़त और प्यार और भी बढ़ गया था। उसने करवट बदली और मुस्कराते हुए फिर से सोने की कोशिश करने लगी।

=====

16

देहरादून में वो गुरुवार, 18 मई 1961 की सुबह थी।

वो आम सुबहों जैसी ही एक और सुबह थी। मगर आभा के लिए वो एक खास सुबह थी, जिसकी वजह सिर्फ आभा ही जानती थी। उस सुबह में आभा के लिए खास बात ये थी कि पिछली रात उसने 1961 में उसी घर में गुजारी थी, जो उसने 2010 में खरीदा था।

सुबह जब उस घर में उसकी आँख खुली, तो वो बहुत प्रफुल्लित थी। उसने देखा कि उसकी बगल में ज्योति गहरी नींद में सोइ थी और उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी। उसने खिड़की से बाहर झाँका तो देखा कि सुबह की रौशनी फैलनी शुरू हो चुकी थी।

समय का ठीक ठीक अंदाजा उसे नहीं हो रहा था, क्यों कि उसके पास कोई घड़ी नहीं थी, मगर इतना तो वो समझ चुकी थी कि उठने का वक्त हो चुका है। तभी उसे घड़ी का अलार्म सुनाई दिया तो उसने उस तरफ देखा, जहाँ से अलार्म की आवाज़ आ रही थी।

पलंग पर जिस तरफ ज्योति सोइ थी, उसके सिरहाने वहां एक छोटी सी टेबल पर एक एलार्म क्लॉक पड़ी थी जो अपने नियत समय पर बोला था। सुबह के छह बज चुके थे। अलार्म की आवाज़ सुन कर ज्योति की भी आँख खुल गई और उसने अलार्म बंद किया।

आभा बिस्तर से उतर गई और खड़ी हो गई। ज्योति भी बिस्तर से नीचे उतरी।

“गुड मॉर्निंग।” ज्योति ने कहा।

“गुड मॉर्निंग ज्योति।” आभा ने जवाब दिया।

ज्योति ने एक बड़े जोर की मादक सी अंगड़ाई ली तो महेश को उठाने के लिए जाने की सोचते ही आभा की नजर बेडरूम का दरवाज़ा खोलते महेश पर पड़ी। महेश ने

ज्योति को अंगड़ाई लेते देखा तो उसकी आँखें चमक उठी।

“मैं आप को उठाने ही आ रही थी।” आभा ने महेश से कहा।

महेश ने तो जैसे आभा के शब्द सुने ही नहीं। वो तो सम्मोहित सा अंगड़ाई लेती हुई ज्योति की तरफ ही देख रहा था। आभा की आवाज़ सुन कर ज्योति ने दरवाजे की ओर देखा और महेश को बिना पलकें झपकाए अपनी तरफ देखते पा कर शरमा गई।

“अभी समय है। जहाँ इतना सब्र किया है, वहां दो दिन और सब्र कर लीजिये प्रोफ़ेसर साहब। घर चलिए और तैयार हो जाइये। कॉलेज भी जाना है या अपनी होने वाली दुल्हन को इसी तरह ताकते ही रहना है?” आभा विनोद-पूर्ण स्वर में बोली।

“हाँ…. क्या कहा?” महेश चौंका।

“कुछ नहीं, मैं कहाँ कुछ बोली।” आभा ने मुस्कराते हुए कहा।

“चलो घर चलते हैं वरना कॉलेज के लिए देर हो जाएगी।” महेश जल्दी से आभा से बोला।

“मैं भी तैयार हो कर आती हूँ। साथ में ही चलेंगे।” ज्योति ने थोड़ा शरमाते हुए कहा।

महेश के साथ आभा उसके घर पर आ गई और तैयार होकर, नाश्ता करने के बाद सात बजे महेश के साथ घर से बाहर आ गई। बाहर आते ही उसने देखा कि ज्योति भी अपने घर के बाहर आ कर घर को ताला लगा रही थी।

कॉलेज पहुँचने तक तीनों के बीच छिटपुट और इधर उधर की बातें होती रही। रात वाली घटना का जिक्र ना तो महेश ने ही किया और ना ही आभा ने। ज्योति ने भी उस बारे में कोई बात नहीं की। सब को उस घटना का जिक्र ना करना ही बेहतर लगा था।

कॉलेज पहुँच कर महेश ने अपनी गाड़ी रोज़ की जगह पर पार्क की और तीनों उतर कर कॉलेज की इमारत की तरफ बढे। सब से पहले ज्योति उन से अलग हो कर अपने ऑफ़िस की तरफ बढ़ी और फिर आभा अपने ऑफ़िस की तरफ। महेश भी आभा के ऑफ़िस के पीछे जाने वाले रास्ते से अपने ऑफ़िस की तरफ चल दिया।

आभा अपने ऑफ़िस में पहुँच कर बैठी ही थी कि पीछे पीछे ही डॉक्टर ब्रह्मा ने ऑफ़िस में प्रवेश किया। आभा ने खड़े हो कर उनका अभिवादन किया तो अपने सर

को झटक कर उसके अभिवादन का जवाब देते डॉक्टर मुस्कराते हुए अपने कमरे में चले गए।

पांच मिनट बाद ही डॉक्टर अपने केबिन से बाहर आये तो उनके हाथों में कुछ किताबें थी और कुछ पेपर भी थे।

"मेरी क्लास है। पीछे से जो भी हो, संभाल लेना।" डॉक्टर ने कहा और अपने हाथ में पकडे पेपर आभा के देते हुए कहा कि "ये रूटीन डेली रिपोर्ट्स है। इन्हें टाइप कर के मेरी टेबल पर रख देना।"

आभा ने सहमति में सर हिलाया और डॉक्टर कमरे से बाहर निकल गए। तब तक आभा को टाइपिंग की काफी प्रैक्टिस हो चुकी थी। वो जानती थी कि अब उसके लिए टाइपिंग करना कोई मुश्किल काम नहीं था।

अचानक उसका दिमाग रात को ज्योति के साथ घटी घटना पर गया। वो सोचने लगी कि कौन हो सकता था वो सनकी आदमी जो लड़कियों के कमरे में ताक झांक करने का शौक पाले बैठा था।

हालांकि इसके पीछे कोई ठोस कारण तो नहीं था, मगर फिर भी पिछले दो तीन दिनों से, जब से वो करण से मिली थी, उसका अपने साथ व्यवहार देख कर आभा का ध्यान अनायास ही करण की तरफ गया। उसने करण की आँखों में हमेशा ही वासना नजर आई थी।

'क्या वो आदमी करण हो सकता है?' उसने विचार किया।

'हो तो सकता है। ऐसे गंदे विचारों वाला आदमी कुछ भी कर सकता है।'

'मगर वो महेश और ज्योति का बचपन का दोस्त है। ज्योति ने करण के उसके साथ पहले तो इस तरह के किसी व्यवहार का जिक्र तो नहीं किया था।'

'हो सकता है मेरा इस बारे में करण पर शक करना उसके साथ ज़्यादती हो, पर निश्चय ही वो गन्दा आदमी तो था, ज्योति के लिए नहीं तो दूसरी लड़कियों के लिए तो जरूर ही था।'

'महेश और करण, दोनों दोस्तों में कितना अंतर है? महेश कितना चरित्रवान व्यक्ति है, मगर करण में ये बात दूर दूर तक नजर नहीं आती।'

'छोड़ो, मुझे क्या करना है? करण जाने, ज्योति जाने और महेश जाने। मुझे इस से क्या मतलब? आज गुरुवार है और कल शुक्रवार की रात को मुझे ज्योति के साथ

रहना है ताकि मैं उसकी जान बचा सकूँ, और फिर शनिवार सुबह महेश और ज्योति की शादी हो जाने के बाद, रात को मैं अपनी दुनिया में लौट जाउंगी।'

आभा ने अपने दिमाग में आ रहे सवालों और विचारों को झटक दिया। अब उसका सिर्फ एक ही मकसद था, ज्योति की जान बचाना, ताकि दो सच्चे प्रेमी शादी कर के अपनी जिंदगी हंसी खुशी जियें और महेश को वैसी तनहा मौत नसीब ना हो जो उसे 2010 में मिली थी।

आभा अपनी सीट पर बैठी हुई डॉक्टर द्वारा दी गई रिपोर्ट्स टाइप कर रही थी। डॉक्टर अपने पहले लेक्चर के बाद दो मिनट के लिए अपने केबिन में आये थे और फिर तुरंत ही अपने अगले लेक्चर के लिए निकल गए थे।

आभा डॉक्टर की दी गई बाकी सभी रिपोर्ट्स टाइप कर चुकी थी और अंतिम रिपोर्ट टाइप कर रही थी।

तभी धीरे से दरवाज़ा खोल कर करण ने उसके ऑफिस में कदम रखा और दबे पांव चलता हुआ आभा के पास आया। एक तो आभा का पूरा ध्यान अपनी टाइपिंग पर था, और दूसरे, करण इतने दबे पांव उसके पास आया था कि आभा को करण के आने का आभास तक नहीं हुआ।

"हेल्लो आभा।" करण उसके पास आ कर बोला, तो आभा अचानक आई आवाज़ सुन कर जोर से चौंकी।

"ये क्या तरीका है मिस्टर करण?" आभा नाराज़गी दिखाते हुए बोली। "ये मेरा ऑफ़िस है, कोई मज़ाक करने या डराने की जगह नहीं है।"

"सॉरी आभा, मेरा इरादा तुम्हें डराने का नहीं था, सिर्फ अचानक पहुँच कर चौंका देने का था।" करण ने अपने व्यवहार पर खेद जताया।

"खैर, कहिये, क्या काम है?"

"क्या आभा....., पुलिस वाला हूँ तो क्या किसी काम से ही आऊंगा? मैं पुलिस वाला होने के साथ साथ महेश और ज्योति का बचपन का दोस्त भी हूँ, इसलिए तुम से भी दोस्ती करना चाहता हूँ, बस।"

"आप मेरे दुश्मन भी तो नहीं है?"

"बिलकुल नहीं। मैं तो ज्योति की तरह तुम्हारा भी दोस्त बनना चाहता हूँ। कल तो तुम ने लंच के लिए मेरा निमंत्रण नहीं माना, इसलिए आज फिर मैं तुम्हें अपने साथ

लंच के लिए इनवाइट करने आया हूँ।"

"आज भी संभव नहीं है मिस्टर करण। मुझे यहाँ बहुत काम है। मुझे जल्दी से जल्दी ये रिपोर्ट्स डॉक्टर ब्रह्मा को टाइप कर के देनी है।"

करण ने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला ही था, कि आभा की टेबल पर रखे टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी।

"हेल्लो।" आभा फोन उठा कर बोली।

फिर आभा ने वो सुना जो दूसरी तरफ से कहा गया। फोन पर बात करते हुए आभा ने जानबूझ कर करण को नज़रअंदाज़ किया और उसकी तरफ देखा तक नहीं। आभा कुछ ऐसे दिखा रही थी जैसे करण वहां मौजूद ही नहीं है या वो उसकी वहां मौजूदगी से कतई अनजान है।

"क्यों नहीं, जरूर।" आभा फिर से फोन पर बोली।

आभा को अपनी तरफ ध्यान नहीं दिए जाने के व्यवहार से करण ने अपने आप को अपमानित महसूस किया और उसे लगा कि आभा जानबूझ कर उसको आहत कर रही थी। वो भुनभुनाया और गुस्से में अपने पैर पटकता हुआ वहां से निकल गया।

"मैं पहुँच जाउंगी।" आभा ने फोन पर मुस्करा कर कहा और फोन रख दिया।

करण आभा के ऑफ़िस से बाहर निकल कर गुस्से में तेजी से बाहर की ओर चल दिया। बाहर हॉल में वो इतनी तेजी से चला जा रहा था कि अचानक सामने से आते हुए एक विद्यार्थी से जोर से टकराया।

"देख कर चल अंधे की औलाद।" करण ने गुस्से में उसे धक्का देते हुए कहा।

करण के इस तरह के अपमानित करने वाले शब्द सुन कर और धक्का मारने से उस नौजवान को गुस्सा आ गया और वो अपनी मुट्ठी का घूंसा बना कर करण को मारने के लिए आगे बढ़ा। करण ने जल्दी से अपनी जेब से अपना पुलिस इंस्पेक्टर का परिचय पत्र उस नौजवान की आँखों के सामने लहराया।

पुलिस का पहचान पत्र देख कर वो नौजवान अपनी जगह पर ही रुक गया और उसके चेहरे पर दहशत के भाव उभरे। उसे डर लगा शायद वो इंस्पेक्टर उसे गिरफ्तार कर लेगा।

"माफ़ कीजिये सर, गलती हो गई मुझ से।" नौजवान ने जल्दी से कहा और अपनी गिरफ़्तारी के डर से वहां से तेजी से एक तरफ चला गया।

करण भी गुस्से से आग बबूला हुआ वहां से बाहर चला गया।

कुछ देर बाद कॉलेज के भीड़ भरे कैंटीन में आभा और ज्योति आमने सामने बैठी थी। उन्होंने अपने दोपहर के खाने का आर्डर दे दिया था और टेबल पर खाना लगने का इंतज़ार करती हुई बातें कर रही थी।

दोनों इस बात से अनजान थी थी कि कैंटीन से बाहर खड़ा करण एक खिड़की के माध्यम से दोनों को घूर रहा था और उसकी आंखे गुस्से से लाल थी।

"महेश नहीं आने वाले क्या?" आभा ने ज्योति से पूछा।

"नहीं, वो अपने ऑफिस में ही कुछ साथी प्रोफेसरों के साथ लंच कर रहे हैं। एक तरह से अपने साथियों को अपनी शादी की पार्टी दे रहे हैं।" ज्योति ने बताया।

आभा ने नोटिस किया कि केंटीन के कर्मचारी, वहां मौजूद विद्यार्थी और प्रोफ़ेसर आश्चर्य से आभा और ज्योति की तरफ देख रहे थे। ज्योति तो वहां काफी समय से काम करती थी, इसलिए वे सब शायद उसे पहचानते थे। मगर उस दिन ज्योति की अपनी हमशकल लड़की के साथ उसकी मौजूदगी उनके आश्चर्य का कारण बनी हुई थी।

"कल की तरह करण आज फिर मेरे ऑफिस में आया था।" आभा ने ज्योति को बताया।

"कल तो वो तुम्हें अपने साथ लंच पर ले जाने आया था। आज किस लिए आया था?"

"आज भी लंच पर ले जाने के लिए आया था।"

"तो चली जाती उसके साथ? खामखा उस बेचारे का दिल तोड़ दिया तुम ने।"

"मैंने तुम लोगों को बताया था कि पता नहीं क्यों वो मुझे पसंद नहीं है। इस मामले में मेरी अपनी पसंद है, जिस पर करण किसी भी तरह खरा नहीं उतरता।"

"सिर्फ तुम ही नहीं, पता नहीं क्यों, आम तौर पर उसे कोई भी लकड़ी पसंद नहीं करती। शायद वो इतना आकर्षक नहीं है कि लड़कियां उसको पसंद करे। बेचारा।" ज्योति करण के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए बोली।

"मुझे तो लगता है कि ना सिर्फ वो काम आकर्षक है, बल्कि उसका पूरा व्यक्तित्व ही ऐसा है। तुम ने आँखें देखी उसकी? मुझे तो हमेशा उसकी आँखों में वासना नजर आती है। वो ऐसे घूरता है मानो आँखों से ही सामने वाली लड़की को खा जायेगा। हमेशा वो मुझे छूने की कोशिश करता है। शायद दूसरी लड़कियों के साथ भी ऐसा

ही करता होगा, तभी तो जैसा कि तुम ने बताया, कोई भी लड़की उसे पसंद नहीं करती।"

"तुम को पता नहीं है, उसने मुझ पर भी डोरे डालने की कोशिश की थी।" ज्योति ने बताया। "उसने मुझसे कहा था कि वो मुझ से बहुत प्यार करता है। मगर मैं तो बचपन से ही महेश के प्यार में डूबी हुई थी।"

"तो तुम ने भी उसे इनकार कर दिया?"

"करना ही था।" ज्योति ने कहा। "तुम्हें क्या लगता है? महेश मेरी सही पसंद है या नहीं?" ज्योति ने अचानक एक अजीब सा सवाल किया, वो भी महेश के साथ अपनी शादी से दो दिन पहले।

"ये कैसा सवाल है? तुम ने बताया कि महेश और तुम, दोनों बचपन से ही एक दूसरे को जानते हो और एक दूसरे को पसंद करते हो।"

"सच कहूं आभा, मुझे तो दो दिनों में ही लगने लगा है कि तुम भी महेश को पसंद करने लगी हो।" आखिर ज्योति ने अपने मन की बात कही और अपने मन में पल रहा डर बाहर निकाला। आखिर वो भी तो एक लड़की थी। उसने जरूर आभा की आँखों में महेश के लिए पैदा होते हुए उसके जज्बातों को पढ़ लिया होगा।

"हाँ, मैं महेश को पसंद करती हूँ। कौन ऐसा है जो महेश जैसे व्यक्ति को नापसंद करेगा? मगर उनको को पसंद करने का ये मतलब थोड़े ही है कि मैं उन से प्यार करती हूँ।" आभा ने कहा, मगर उसे लगा कि वो ज्योति के सामने झूठ बोल रही है।

"मतलब ये कि महेश के मामले में मुझे तुम से कोई खतरा नहीं है?" ज्योति ने मुस्कराते हुए कहा।

"अरे, बिलकुल भी खतरा नहीं है। दो दिनों में तुम लोगों की शादी होने वाली है और तुम्हारा इस तरह सोचना अच्छी बात नहीं है।"

"बुरा मत मानना आभा, मैं भी कितनी बेवकूफ़ हूँ जो तुम्हारे लिए ऐसी बात मेरे मन में आई।"

"नहीं ज्योति, इसमें बुरा मानने जैसी कोई बात नहीं है, बल्कि मुझे तो ख़ुशी है कि तुम बहुत साफ़ दिल की लड़की हो और साफ़ बात करना पसंद करती हो, बिलकुल मेरी तरह। भगवान तुम दोनों की जोड़ी हमेशा बनाये रखे।"

“मैं कितनी खुश-नसीब हूँ कि मुझे तुम्हारे जैसी सच्ची सहेली मिली है। अब तो मुझे लगता है कि तुम दिल्ली से यहाँ मेरी दोस्त बनने के लिए ही आई हो।’

तब तक वेटर ने उनका आर्डर किया हुआ खाना टेबल पर लगा गया। दोनों खाना खाने लगी, मगर उन दोनों के बीच में बातचीत का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा।

“तुम ने मुझे सहेली कहा? गलत कहा। देख नहीं रही हो कि हम दोनों के चेहरे कितने मिलते जुलते हैं? जो भी हमें साथ देखता है, हमें जुड़वाँ बहने समझता है और जो मुझे अकेले में देखता है, मुझे तुम, यानि कि ज्योति समझता है। महेश, उसके माता पिता और करण को भी मुझे देखते ही यही ग़लतफ़हमी हुई थी।”

“हाँ ये बात तो है।”

“तो तुम मुझे सहेली नहीं, अपनी बहन ही समझो।” आभा थोड़ी सी भावुक हुई।

“हाँ, क्यों नहीं। आज से तुम मेरी बहन ही हो।” ज्योति तुरंत बोली।

“सोच समझ कर फैसला लिया है ना मुझे बहन बनाने का?” आभा के स्वर में शरारत थी।

“हाँ, इसमें सोचने की क्या बात है?” ज्योति शायद आभा की शरारत समझ नहीं पाई थी।

“तुम्हारी बहन होने के नाते मैं महेश की साली हुई।” आभा ने उसी शरारत से बोली। “साली तो तुम्हारे अपने पति के घर आने से पहले ही जीजा के घर में रह रही है। भूलना मत, साली आधी घर वाली होती है।”

ज्योति आभा के मज़ाक पर मुस्कराई और उसकी आँखों में आभा के लिए ढेर सारा प्यार उमड़ आया।

“हाँ, एक बात और।” आभा उसी शरारत के साथ बोली।

ज्योति ने प्रश्नवाचक निगाहों से आभा की तरफ देखा। इतना तो वो समझ चुकी थी कि आभा पूरी तरह मस्ती मज़ाक के मूड में थी।

“अगर मैं भी बचपन से ही देहरादून में होती तो मैं तुम से पहले ही महेश पर डोरे डाल कर उनको पटा चुकी होती और फिर आज मैं तुम्हारी जगह और तुम मेरी जगह होती। मैं महेश की बीबी होती और तुम साली। मुझे तो लगता है कि अब तक तो मैं महेश के एक दो बच्चों की मां भी बन चुकी होती।” आभा फिर शरारत से बोली।

“हट बे-शर्म कहीं की, कैसी बातें करती है?”

आभा जोर से हंसी।

“अरे हाँ, बहन से याद आया।” अचानक ज्योति बोली। “यहाँ मेरे दूर के रिश्ते की बहन रहती है, मगर उसके मामा की तबियत अचानक बहुत ख़राब हो गई है जो गुजरात में रहते हैं। उसको उसके मामा ने ही पाल पोस कर बड़ा किया और उसकी शादी यहाँ कराई थी। उसको अचानक गुजरात अपने मामा के पास जाना पड़ गया है और मेरी शादी में मेरे घर से कोई नहीं है। मैं चाहती हूँ कि तुम इस शादी में मेरे घर की तरफ से, मेरी बहन बन कर मौजूद रहो।”

“इसमें पूछने वाली क्या बात है। मुझे ख़ुशी होगी कि मैं तुम्हारी शादी में अपने जीजा की इकलौती साली के रूप में रहूं।”

“तू बाज नहीं आएगी। चुपचाप खाना खाओ और अपने ऑफ़िस में जाओ। लंच टाइम ख़तम होने वाला है।” ज्योति मुस्कराते हुए बोली।

करण बाहर खड़ा खिड़की के रास्ते ज्योति को बातें करते और हँसते हुए देखता रहा। उन दोनों की हंसी जैसे उसके दिल पर छुरियां चला रही थी। भुनभुनाता सा वो वहां से हटा और कॉलेज से बाहर निकल गया।

दोपहर बाद, पुलिस स्टेशन में अपनी सीट पर बैठे करण ने दिल्ली पुलिस हेड क़्वार्टर में फोन लगाया।

“दिल्ली पुलिस। हम आप की क्या सहायता कर सकते हैं?” दूसरी तरफ से तुरंत जवाब मिला।

“मैं देहरादून से इंस्पेक्टर करण मल्होत्रा बोल रहा हूँ। हमारे शहर में एक लड़की आई है, जो अपना नाम आभा अरोड़ा बताती है और उसका कहना है कि वो दिल्ली से आई है। उसके बारे में ये जाँच मैं देहरादून कॉलेज के कहने पर कर रहा हूँ, जिन्होंने इस लड़की आभा अरोड़ा को बिना किसी पहचान पत्र और कागज़ों के नौकरी दी है। मुझे केवल ये पता लगाना है कि इस लड़की का कोई आपराधिक इतिहास तो नहीं है।”

“केवल नाम से ये पता लगाना बहुत वक्त खाऊ काम है इंस्पेक्टर करण। आप तो समझते हैं इस बात को। अगर आप कुछ और जानकारी दें तो काम जल्दी हो सकता है।”

“माफ़ कीजिये, मेरे पास उस लड़की के नाम के सिवाय और कोई जानकारी नहीं है। आप को सिर्फ नाम से ही ये पता लगाने की कोशिश करनी होगी कि क्या इस नाम की लड़की का दिल्ली में किसी तरह का कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड है?”

“ठीक है इंस्पेक्टर करण। मैं कोशिश करता हूँ। आप अपना फोन नंबर भी मुझे लिखा दीजिये। मैं शाम तक आप को जानकारी देता हूँ।”

करण ने पुलिस स्टेशन में अपनी टेबल पर लगे फोन का डायरेक्ट नंबर लिखाया और फिर धन्यवाद कह कर फोन काट दिया।

शाम साढ़े चार बजे कॉलेज से छुट्टी होने के बाद महेश, ज्योति और आभा कार पार्किंग में मिले।

“सब से पहले तो मैं तुम्हें ये बता दूँ कि आभा हमारी शादी में मेरी तरफ से, मेरी बहन बन कर उपस्थित रहेगी।” ज्योति महेश से मिलते ही बोली।

“ये तो बहुत अच्छी बात है। वैसे भी शक्ल सूरत से ये तुम्हारी बहन ही लगती है। वैसे तुम्हारी दूर की एक बहन यहाँ है ना, तुम ने एक बार बताया था। वो भी आ रही है ना?”

“नहीं, उसके मामा की तबियत अचानक ख़राब हो जाने की वजह से उसे गुजरात जाना पड़ा है।”

“ओह, भगवान करे उसके मामा जल्दी अच्छे हो जाये।” महेश ने अफ़सोस जताया।

“एक और बात, जो तुम्हें बताना जरूरी है। करण आभा के बहुत चक्कर लगा रहा है। कल भी वो यहाँ आभा को लंच पर बाहर ले जाने आया था, और आज भी आया था।”

“ये तो हमारे घर का रास्ता नहीं है?” अचानक कार को एक अनजान रास्ते पर जाते हुए देख कर आभा बोली।

“हाँ, हम सीधे घर नहीं जा रहे हैं। मैंने सोचा घर जाने से पहले मैं तुम्हें हमारे शहर की थोड़ी सी सैर करा दूँ।” महेश ने जवाब दिया।

हालाँकि आभा 2010 के देहरादून की सड़कों से काफी वाक़िफ़ थी, पर 1961 में वहां की सड़कें काफी संकरी थी और कुछ इस तरह थी कि आभा को अंदाजा नहीं लग रहा था कि वो शहर के किस हिस्से से गुज़र रही है। 1961 से ले कर 2010 तक

देहरादून में काफी विकास हो चुका था और शहर के हर हिस्से में सड़कों का जाल बिछ गया था।

“वो सामने जो इमारत नजर आ रही है, वो प्रतिभा इंटरनेशनल स्कूल है। मेरी और आभा की शुरूआती स्कूली पढाई यहीं, इसी स्कूल में हुई थी।” महेश ने बताया और कुछ पलों के लिए स्कूल के सामने गाड़ी रोकी।

आभा ने नजर उठा कर स्कूल को ध्यान से देखा। उसे तुरंत ऐसा लगा जैसे वो इस स्कूल को पहचानती थी। वो महसूस कर रही थी कि यहाँ वो कई बार आ चुकी थी। स्कूल को देख कर आभा को वही अजीब और सुखद आभास हुआ, जो पहले कई चीजों को देख कर हो चुका था।

आभा के कानों में जैसे दो छोटे छोटे बच्चों की आवाज़ गूँजी।

“मेरा नाम ज्योति है। तुम्हारा नाम क्या है?” आभा के दिमाग में छोटी ज्योति की आवाज़ आई, उसे लगा कि ये उसकी खुद की आवाज़ है।

“मेरा नाम महेश है।” उसके साथ खड़े बच्चे ने जवाब दिया।

आभा को महसूस हुआ कि बच्चे महेश का ये जवाब उसे आज भी याद है।

“ये वही जगह है जहाँ मैं मेरे प्यार महेश से पहली बार मिली थी।” ज्योति की आवाज़ ने आभा का ध्यान भंग किया।

“वो हमारी पहली कक्षा का पहला दिन था।” ज्योति आगे बोली। “इसके एक दिन पहले ही हम महेश के पड़ोस में हमारे नए घर में रहने आये थे। उसके पहले हम शहर के दूसरे हिस्से में रहते थे।”

आभा ने देखा कि ज्योति और महेश के चेहरे पर मुस्कान थी। आभा ने महसूस किया कि महेश की मुस्कान का साथ उसकी खुद की मुस्कान को देना था, ज्योति की मुस्कान को नहीं।

महेश ने फिर से गाड़ी स्टार्ट की और आगे बढ़ा। दो तीन मोड़ काटने के बाद महेश ने एक बड़े मैदान के सामने गाड़ी रोकी।

“यही वो जगह है जहाँ मेरी पहली मुलाकात करण से हुई थी, जो आज पुलिस इंस्पेक्टर बना घूम रहा है। हमारी पहली मुलाकात एक आपसी झगड़े से हुई थी।”

“झगड़े से दोस्ती की शुरुआत?” आभा आश्चर्य से बोली।

“हाँ, वो एक क्रिकेट मैच था। मैं अलग टीम में था और करण हमारी विरोधी टीम में। करण बेटिंग कर रहा था और मैं बोलिंग। मैंने अपने पहले ही ओवर में करण को शून्य पर आउट कर दिया था। करण को आउट होने के बाद मुझ पर बहुत गुस्सा आया था और वो बैट उठा कर मुझे मारने दौड़ा था, मगर मेरी टीम के साथियों ने उसे पकड़ लिया था। करण काफी देर तक भुनभुनाता हुआ बाहर मैदान पर बैठा रहा था और जब हमारी टीम बैटिंग करने उतरी तो करण मुझे भी अपनी बोलिंग के दम पर आउट करना चाहता था। मगर मैंने उसकी गेंदों की बहुत पिटाई की थी और हम ने वो मैच जीत लिया था।”

“तो फिर दोस्ती कैसे हुई?” आभा ने पूछा।

“मैच ख़तम होने के बाद करण खुद मेरे पास आया था और उसने अपने गलत व्यवहार के लिए मुझ से माफ़ी मांगी थी। वहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई, जो आज तक कायम है।” महेश ने बताया।

“करण थोड़ा शॉर्ट टेम्पर है और उसे बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है। लेकिन वो दोस्ती निभाना जानता है और ये उसने कई बार साबित भी किया है।” ज्योति ने बताया।

“ये सही बात है कि वो शॉर्ट टैम्पर है और उसे गुस्सा बहुत जल्दी आता है। लेकिन बहुत पहले उसने अपने गुस्से पर काबू करना सीख लिया है।” महेश ने आगे जोड़ा।

“करण दिल का बहुत अच्छा लड़का है, मगर आज तक उसे किसी लड़की ने पसंद नहीं किया। वो प्यार का भूखा है और उसे एक सच्चा प्यार करने वाली लड़की की जरूरत है। जो भी लड़की उसकी जिंदगी में आएगी, मुझे यकीन है कि करण उसे बहुत खुश रखेगा।” ज्योति ने आभा की तरफ देखते हुए कहा।

“अब तुम मुझ से ऐसी कोई उम्मीद मत करना। उसके बारे में मैं अपनी राय तुम्हें बता चुकी हूँ।” आभा ने भुनभुना कर कहा। उसकी बात सुनकर महेश और ज्योति के चेहरे पर बरबस ही एक मुस्कुराहट आ गई।

महेश ने कार आगे बढ़ाई और कुछ देर बाद एक पार्क के गेट के सामने कार रोकी। सब ने गेट के अंदर पार्क में झाँका। आभा को पार्क के अंदर झांकते ही वही अजीब और सुखद अहसास हुआ। उसे लगा कि वो पहले भी वहां आ चुकी थी।

“ये वो जगह है जहाँ महेश ने हिम्मत दिखाते हुए पहली बार मुझे चूमा था।” ज्योति शरमाती हुई सी बोली। बोलते हुए उसके गाल लाल लाल टमाटर जैसे हो गए थे।

“हाँ, मैंने बहुत हिम्मत कर के वो काम किया था। उस वक्त भी मैं काफी घबराया हुआ था, पर मैंने कर दिखाया।” महेश बोला। “मैं उस वक्त करीब उन्नीस बीस साल का था और तब तक मैं अपने आप में इसे किस करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था।”

आभा की नजर पार्क में एक बड़े पेड़ पर पड़ी। उसका दिल जोर से धड़का और वो अनजाने में ही बोल उठी,

“महेश ने तुम्हें उस पेड़ के पीछे किस किया होगा।”

“हाँ, मगर तुम्हें कैसे पता?” महेश ने आश्चर्य से पूछा।

आभा घबरा सी गई। वो अनजाने में ही ऐसा बोल उठी थी क्यों कि आभा को महसूस हुआ था कि महेश ने उसे ही उस पेड़ के पीछे चूमा था। उसने जल्दी से बात को संभाला।

“अनुभवी लोग अंदाजा लगा ही लेते हैं। मेरे मंगेतर ने भी मुझे पहली बार ऐसे ही एक पार्क में, एक बड़े पेड़ की आड़ में मुझे चूमा था।”

आभा का कहने का अंदाज ऐसा था कि महेश और ज्योति को वो बात बिना किसी शक के, आसानी से हजम हो गई।

“महेश के पिता जी का बंधन झील पर एक केबिन है। मैं और महेश दोस्त तो बचपन से ही थे, पर मन ही मन हम दोनों ना जाने कब से एक दूसरे से प्यार करने लगे थे। महेश ने पहली बार अपने प्यार का इजहार बंधन झील के उस केबिन में किया था, जब हम दोनों कॉलेज में थे।” ज्योति ने बताया।

“और यही वजह है कि हमने शादी के बाद अपनी पहली रात उसी केबिन में बिताने का निर्णय लिया है।” महेश ने बताया।

आभा को ना जाने क्यों, फिर अजीब सा आभास हुआ। कुछ देर की ड्राइव के बाद वो एक जगह पहुंचे तो महेश ने गाड़ी रोक कर इशारा किया और बोला,

“वो सूरज होटल है। खाने और विशेष तौर पर शराब के लिए वो देहरादून में एक प्रसिद्ध जगह है। अभी से देखो, वहां पार्किंग में कितनी गाड़ियां खड़ी है, इस से तुम वहां शाम को होने वाली भीड़ का अंदाजा लगा सकती हो।”

“और वो देखो बस स्टॉप।” महेश ने सूरज होटल के बायीं तरफ, करीब सौ मीटर की दूरी पर बने एक बस स्टॉप की तरफ इशारा किया। “ये तो याद होगा तुम्हें, तुम इसी

बस स्टॉप पर उतरी थी।"

आभा ने उस तरफ देखा। कुछ याद आने का तो सवाल ही नहीं था, जब वो यहाँ कभी आई ही नहीं थी।

"उस रात मौसम इतना ख़राब था कि मेरी नजर इस होटल पर पड़ी ही नहीं थी। बस स्टॉप पर ही मौजूद मैंने एक आदमी से यहाँ ठहरने के लिए किसी होटल के बारे में पूछा था।" आभा ने जवाब दिया।

"वैसे सूरज होटल सिर्फ एक रेस्टोरेंट ही है, यहाँ रहने के लिए कमरे नहीं है। इसी रोड पर आ कर तुम दांयी तरफ चली थी। अगर तुम पहले पड़े दाएं मोड़ पर मुड़ती तो तुम्हें वहां दो तीन होटल नजर आ जाते, मगर तुम ने वो मोड़ छोड़ कर आगे से दाएं मुड़ी थी और देहरादून स्ट्रीट, हमारे घर के पास पहुँच गई थी।" महेश ने बताया।

"इसी रोड पर अगले मोड़ पर जनरल मोटर्स की फ़ैक्टरी है जहाँ मेरे पिताजी काम करते हैं और उसके सामने की अमृतसर रोड़ पर आगे जाने पर बंधन झील है। मैं तुम्हें बंधन झील अभी जरूर दिखता, लेकिन अंधेरा होने को है और माँ घर बैठी हमारी चिंता कर रही होगी। वैसे भी आज हमारा डिनर का प्रोग्राम बंधन रेस्टोरेंट में है जो झील के काफी नजदीक है। उसके पहले हमें मार्केट जाना है और मेरे लिए शादी का सूट सलेक्ट करना है।" महेश आगे बोला।

"करण भी आ रहा है क्या डिनर के लिए?" ज्योति ने पूछा।

"हाँ, मैंने उसे ऑफ़िस से ही फोन कर दिया था, अगर समय मिला तो वो मार्केट में हमें ज्वाइन करेगा, क्योंकि वो जानता है कि सूट देखने हम कौन सी दुकान में जाने वाले हैं। और अगर उसको देर हुई तो वो हमें सीधा डिनर पर मिलेगा।" महेश ने जवाब दिया।

"मेरी सहेली गीता भी बाजार में हमें मिलेगी। मैंने उसे भी डिनर के लिए आमंत्रित किया है।" ज्योति ने बताया।

"ये तो बहुत अच्छी बात है।" महेश बोला।

करण के आने की बात सुन कर आभा को अच्छा तो नहीं लगा, मगर वो कुछ बोली नहीं। आखिर करण महेश और ज्योति का दोस्त था।

महेश ने गाड़ी स्टार्ट की और उसे देहरादून स्ट्रीट जाने वाली सड़क पर मोड़ दिया। करीब पंद्रह मिनटों बाद महेश अपने घर के सामने गाड़ी पार्क कर रहा था।

=====

17

शाम हो चुकी थी और अंधेरा होना शुरू हो चुका था।

करण पुलिस स्टेशन में बेचैन सा अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ दिल्ली से आने वाले फोन का इंतज़ार कर रहा था। दिन की ड्यूटी के उसके साथी पुलिस वाले अपने अपने घर जा चुके थे और रात की ड्यूटी के पुलिस वाले चार्ज ले चुके थे।

मगर करण अपनी कुर्सी पर बैठा चाय पर चाय पी रहा था। ये इंतज़ार उसे भारी लग रहा था। महेश के बुलावे पर उसे बाजार और बाद में उसके परिवार के साथ डिनर पर भी जाना था। आख़िरकार उसके इंतज़ार की घड़ियाँ ख़त्म हुई और फोन की घंटी बजी।

“इंस्पेक्टर करण हियर।”

“इंस्पेक्टर करण, मैं दिल्ली पुलिस से बोल रहा हूँ। आप ने आभा अरोड़ा नाम की लड़की की रिपोर्ट मांगी थी। मैं आप को बताना चाहता हूँ कि हमने दिल्ली के सभी पुलिस स्टेशनों पर पता कर लिया है और किसी भी पुलिस स्टेशन में आभा अरोड़ा नाम की लड़की का कोई क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं है। क्या आप को पूरा यकीन है कि वो दिल्ली से ही है?”

“हाँ ऑफिसर। उस लड़की ने यही बताया है कि वो दिल्ली से है।”

“तो फिर हमारी जाँच कहती है कि वो क्लीन है। अगर आप उस लड़की का फोटो हमें भेज सकें या दिल्ली में उसका कोई पता ठिकाना बता सकें तो हम और कोशिश कर सकते हैं। हो सकता है कि आभा अरोड़ा उस लड़की का असली नाम ना हो।”

“ठीक है ऑफिसर, मैं कोशिश करता हूँ कि कुछ और जानकारी के साथ उसकी तस्वीर भेज सकूँ। शुक्रिया।”

“मेरा सतपाल सिंह है, याद रखियेगा।”

“जी जरूर।” करण बोला।

और उसके बाद उसने फोन रख दिया। दिल्ली से कुछ हासिल नहीं हुआ था, अब जो करना था, उसे खुद करना था। उसने घड़ी देखी।

‘अभी समय है।’ वो जैसे अपने आप से ही बोला। ‘घर के सभी लोग बाजार जाएंगे और ये तलाशी के लिए अच्छा मौका है। मुझे मौके का फायदा उठाना चाहिए।’

उसने सोचा और अपनी कुर्सी से खड़े हो कर जैसे अपनी गाड़ी की तरफ दौड़ा। पुलिस स्टेशन में मौजूद उसके साथी पुलिस वाले करण के इस तरह दौड़ कर बाहर जाने से हैरान थे। सब ने सोचा कि शायद करण को कोई जरूरी केस आया होगा।

पार्किंग में आ कर करण अपनी कार में बैठा और सामान्य से अधिक रफ़्तार से कार चलाता हुआ पुलिस स्टेशन से बाहर निकल गया। तेजी से कार चलाते हुए वो अपनी उम्मीद से जल्दी महेश के घर के पास पहुंचा।

उसने महेश के घर के पास तक कार ले जाने की कोशिश नहीं की। महेश के घर से कुछ पहले उसने अपनी कार एक पेड़ के नीचे रोकी ही थी कि उसने ज्योति को अपने घर के मुख्य द्वार से निकल कर महेश के घर की तरफ जाते देखा।

ठीक उसी वक्त, उसने महेश, उसके माता पिता और आभा को अपने घर से निकल कर बाहर खड़ी महेश की कार की तरफ बढ़ते देखा। तब तक ज्योति भी महेश की कार के पास पहुँच चुकी थी।

करण अपनी कार में बैठा उन लोगों की तरफ देखता रहा। वो जानता था कि महेश की कार उसकी साइड से ना गुजर कर दूसरी साइड में बाजार की तरफ जाएगी, इसलिए वो किसी की नजरों में आने के डर से निश्चिंत था।

महेश ने पहले कार के आगे की सीट का दरवाज़ा खोला और ज्योति के आगे बैठ जाने के बाद वो दरवाज़ा बंद कर के पीछे की सीट का दरवाज़ा खोला तो आभा और महेश के माता पिता पीछे बैठ गए। दरवाज़ा बंद कर के महेश कार का चक्कर काट कर ड्राइविंग सीट पर पहुंचा।

“साला जेन्टलमैन।” करण नफरत से बड़बड़ाया। उसे महेश का दूसरों के लिए कार का दरवाज़ा खोलना शुरू से ही पसंद नहीं था।

महेश ने कार स्टार्ट की और जिस तरफ करण की कार थी, उस से उल्टी दिशा में रवाना हो गया। करण अपनी कार से उतरा और उसने आस पास का निरीक्षण किया। वहां आस पास कोई हलचल ना होती पा कर वो धीरे धीरे ज्योति के घर की तरफ बढ़ा।

अपनी जेब से चाबियों का एक गुच्छा निकाल कर उसने एक एक कर के ज्योति के घर के ताले में चाबियाँ घुमाई तो चौथी चाबी से ज्योति के घर का ताला खुल गया। उसने फिर से अपने पीछे और इधर उधर देखा। रास्ता साफ़ देख कर वो दरवाज़ा खोल कर ज्योति के घर का दरवाज़ा खोल कर अंदर घुस गया।

अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर के उसने बत्ती जलाई और ज्योति के घर की तलाशी लेने लगा। उसे कहीं से भी कुछ अपने काम की चीज ना मिली। तलाशी लेता हुआ वो ज्योति के बेडरूम में पहुंचा, वहां भी तलाशी में उसे कुछ हासिल नहीं हुआ।

बाहर निकल कर उसने बाथरूम में झाँका तो उसे एक हुक पर ज्योति के अंडरगारमेंट्स धोने के लिए लटके हुए देखे। उसकी आँखों में एक गंदी से चमक आई और बाथरूम के अंदर आ कर उसने उन अंडरगार्मेंट्स को सूंघा। उसे अपने अंदर उत्तेजना सी महसूस हुई और उसने फिर उन छोटे कपड़ों को सूंघा।

उसका हाथ बरबस ही अपनी कमर के निचले हिस्से पर पहुंचा तो उसे अपनी उत्तेजना का सबूत हासिल हुआ। तुरंत उसने सर झटक कर अपने दिमाग में आने वाले ख़यालों को निकला और ज्योति के छोटे कपड़े वापस हुक पर टाँग कर बाथरूम से बाहर निकल आया।

किचन में पहुँच कर उसने किचन की सरसरी सी तलाशी ली और फिर किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोल कर पीछे लॉन में आ गया। उसने किचन का दरवाज़ा वापस बंद किया, मगर इतना नहीं कि उसका आटोमेटिक लॉक बंद हो जाये।

करण को पता था कि ज्योति और महेश, दोनों की किचन में स्लाइडिंग दरवाजे थे थे जो पूरा बंद करने से ऑटोमेटिक लॉक हो जाते थे, जो अंदर से तो बिना चाबी के खुल सकते थे, पर बाहर से खोलने के लिए चाबी जरूरत होती थी।

उसे ये भी जानकारी थी कि लॉन के पिछले हिस्से में दोनों घरों के बीच बनी दीवार में आने जाने के लिए एक छोटा सा दरवाज़ा बना था। धीरे धीरे दीवार के साये में चलता हुआ वो उस दरवाजे के पास पहुँच गया और महेश के घर के कंपाउंड में आ गया।

उसी तरह वो दीवार के समानांतर चलता हुआ महेश की किचन के स्लाइडिंग दरवाजे तक पहुंचा। अपनी जेब से उसने वही चाबियों का गुच्छा निकला और उनकी मदद से दरवाज़ा खोलने का प्रयास करने लगा। जल्दी ही उसे सफलता मिली और वो दरवाज़ा खोल कर किचन में प्रवेश कर गया।

महेश के बताये उसे पता था कि आभा महेश का बेडरूम इस्तेमाल कर रही थी, इसलिए वो सीधा वहीँ पहुंचा। वहां बत्ती जला कर उसने कमरे का निरीक्षण किया। पलंग पर पड़े आभा के पायजामा सूट पर जब उसी नजर पड़ी, तो उसने उसे उठा कर अपने सीने से लगाया। करण को महसूस हुआ मानो उसने आभा को गले लगाया हो।

जब उसने आलमारी खोल कर देखी तो पाया कि एक तरफ महेश के कपड़े लटके हुए थे और दूसरी तरफ आभा के। आलमारी के निचले हिस्से पर उसकी नजर गई तो उसने देखा कि वहां कुछ चीजें रखी हुई है। पहली चीज जो उसने उठाई, वो प्लास्टिक की एक थैली थी, जिस पर छपा था, 'दीपा स्टोर' और उसमे सफ़ेद रंग के दो जोड़ी अंडरगार्मेंट्स थे, जो उसने सोचा कि शायद आभा ने अपने इस्तेमाल के लिए खरीदे थे, मगर अभी तक इस्तेमाल नहीं किये थे।

दूसरी चीज जो उसे वहां नजर आई, वो एक बैग था। वो एक अजीब सा बैग था, जो बाजार में उपलब्ध नहीं था। कंधे के ऊपर से, पीठ पर लटकाये जाने वाला उस तरह का बैग आम तौर पर आर्मी के लोग इस्तेमाल करते थे।

उसने वो बैग बाहर निकाला तो उसे उसके नीचे आभा के 2010 के सैंडल नजर आये। उसे वो सैंडल बहुत अजीब से लगे, क्यों कि वैसे सैंडल उसने पहले कभी नहीं देखे थे। उसने आभा के बैग के साथ उन सैंडलों को भी उठाया और आ कर पलंग पर बैठ गया।

'ये कैसे अजीब सैंडल है। मैंने तो ऐसे अजीब सैंडल पहले कभी नहीं देखे।' वो बड़बड़ाया। 'साली का बैग ऐसा और सैंडल ऐसे, जैसे किसी दूसरी दुनिया से आई हो। जरूर इसके पीछे कोई गहरा राज़ है, जिसका पता लगाना ही होगा। जो दिखती है, वो ये है नहीं।'

आभा को सैंडलों को उलट पुलट कर देखने के बाद उसने सैंडल ज़मीन पर डाल दिए।

'इसका बैग भी कितना अजीब किस्म का है। इस से मिलता जुलता बैग तो आर्मी वाले अपने मिशन पर इस्तेमाल करते हैं। आम लोगों के पास तो मैंने ऐसा बैग देखा ही नहीं।' आभा के बैग को उलट पुलट कर देखते हुए करण बड़बड़ाया।

फिर उसने बैग की चैन खोली। अंदर झांकते ही सबसे पहली चीज जो उसे नजर आई, वो आभा की जीन्स थी।

'लड़कियां भला ऐसे कपड़े की पैंट कहाँ पहनती है। लड़कियां क्या, लड़के भी नहीं पहनते।' मन ही मन कहते हुए उसने जीन्स भी ज़मीन पर पड़े सैंडल पर डाल दी।

अगली वस्तु जो उसने बैग से निकाली, वो था आभा का टॉप।

'ये भी अजीब बला है।' 2010 के टॉप को देख कर सोचते हुए उसने वो टॉप भी ज़मीन पर पड़ी जीन्स पर डाल दिया।

फिर उसको जो चीजें बैग में मिली, वो थी 2010 में महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले फैंसी अंडर गारमेंट।

'अरे वाह, कितनी फैशनेबल है ये। ये तो अंदर पहनने वाले कपड़े भी इतने डिजाइन वाले और सेक्सी पहनती है।' करण उन पर हाथ फेरता हुआ मन ही मन बोला।

फिर उसने वे छोटे कपड़े भी नीचे ज़मीन पर डाल दिए जो नीचे पड़े कपड़ों के ऊपर जा गिरे।

उसने फिर से बैग में झाँका, तो बैग खाली थी और उसमे कुछ नहीं था। मगर उसकी नजर बैग के अंदर लगी एक चैन पर पड़ी, तो उसने उस चैन को खोला।

'साला अंदर तो चोर पॉकेट है।' वो बड़बड़ाया।

उसने उस पॉकेट में अपना हाथ डाल कर उसमे पड़ी तीन तस्वीरों को बाहर निकाला। दो तस्वीरें वो थी, जो आभा ने 2010 में महेश का एलबम करण को देने से पहले उसमे से निकाल ली थी। एक तस्वीर में ज्योति और महेश बंधन झील के किनारे प्रेमियों की तरह बैठे हुए थे।

'ये तस्वीर तो मैंने ही खींची थी।' करण मन ही मन बोला।

दूसरी तस्वीर में महेश और ज्योति महेश की नई खरीदी गई कार के पास खड़े थे।

'ये भी मैंने ही निकाली थी। मगर इन तस्वीरों का आभा के पास क्या काम? ये तस्वीरें इसके पास कैसे आई? करण ने अपने आप से ही सवाल किया और फिर सोच में डूब गया।

दोनों तस्वीरें बिस्तर पर रख कर उसने तीसरी तस्वीर देखी। वो आभा और उसके मंगेतर रोशन की रंगीन तस्वीर थी को कि बॉम्बे में समुद्र के किनारे खींची गई थी।

'अब ये क्या है?' रंगीन तस्वीर को देख कर वो आश्चर्यचकित था। 'इसमें रंग कहाँ से आये?' उसको समझ नहीं आया।

'ये साली कहानी क्या है? कैसी कैसी अजीब सी चीजें है इसके पास। है कौन ये लड़की? जरूर इसमें और इस लड़की में कोई गहरा राज़ छुपा है जिसका पता लगाना ही पड़ेगा। और सब से खास बात ये कि साली की सूरत ज्योति से इतनी मिलती जुलती है कि कोई भी धोखा खा सकता है। कोई भी इसको ज्योति समझने की भूल कर सकता है। और साली आपने बारे में कुछ बताती भी तो नहीं। मुझे

किसी भी कीमत पर पता करना ही होगा।' करण बड़बड़ाया और उसने अपनी घड़ी पर नजर डाली।

फिर उसने जल्दी से वे तीनों तस्वीरें वापस बैग में अपनी जगह डाली और चैन बंद कर दी। फिर उसने नीचे पड़े कपड़े भी एक एक कर के बैग में वापस डाले और बैग की चैन बंद कर दी। उसने नीचे पड़ी सैंडल भी उठाई और दोनों चीजें आलमारी में अपनी जगह रख दी।

बैग और सैंडल आलमारी में अपनी जगह रखने के बाद जैसे ही वो आलमारी का दरवाज़ा बंद करने लगा, उसकी नजर आभा के आलमारी में टंगे कपड़ों के नीचे गड्डु मड्डु कर रखे गए एक जोड़ी आभा के इस्तेमाल किये गए छोटे कपड़ों पर पड़ी। आभा ने वो अंडरगारमेंट्स इस्तेमाल करने के बाद वहां शायद बाद में धोने के लिए रखे थे।

आदत से मजबूर करण ने आभा के इस्तेमाल किये हुए, बिना धोये हुए छोटे कपड़ों को उठा कर सूंघा।

'वही खुशबू जो ज्योति के छोटे कपड़ों में थी।' करण मन ही मन बोला और वासना से उसकी नसें खींचने लगी।

पहले की तरह ही उसने जल्दी से अपने आप पर काबू पाया और वे छोटे कपड़े वापस उसी जगह रख कर अलमारी बंद कर दी। बेडरूम की बत्ती बुझा कर वो जैसे वहां आया था, वैसे ही महेश के घर से बाहर निकल गया। किचन के स्लाइडिंग दरवाजे को उसने बाहर से खींच कर बंद कर दिया।

जिस रस्ते से वो महेश के घर में आया था, उसी रास्ते से वो वापस ज्योति के घर में पहुँच गया। ज्योति के किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोल कर वो उसके किचन में पहुंचा और दरवाज़ा वापस बंद कर दिया। सभी बत्तियां बुझाते हुए वो ज्योति के घर के बाहर आया और अपनी उसी चाबी का इस्तेमाल करते हुए उसने घर का ताला पहले की तरह ही बंद कर दिया।

वो जल्दी जल्दी अपनी कार के पास आया और अपने दिमाग में तूफ़ान सा लिए हुए कार में बैठ कर बाजार की तरफ रवाना हुआ। बाजार में उसे किस दुकान में जाना था, उसे पता था। दस मिनट बाद वो दुकान के बाहर महेश की कार के पीछे अपनी कार पार्क कर रहा था।

दुकान के अंदर पहुँचने पर करण को पता चला कि उन्होंने महेश के लिए सूट पसंद कर लिया था और महेश ज्योति के साथ ट्रायल रूम में था। उसकी नजर वहां मौजूद ज्योति की एक सहेली गीता पर भी पड़ी, जो ज्योति के घर से तीन घर छोड़ कर रहती थी।

करण गीता को भी पहचानता था, क्यों कि वो भी उसके साथ पढ़ती थी। दुकान में एक तरफ गीता महेश के माता पिता और आभा के साथ बैठी हुई थी। करण भी उन सब के पास जा कर बैठ गया।

तभी नया सूट पहने महेश ने ट्रायल रूम का दरवाज़ा खोल कर ज्योति के साथ बाहर कदम रखा। महेश और ज्योति के इस तरह साथ साथ देख कर करण को बहुत जलन हुई, मगर उसने अपने दिल के भाव चेहरे पर नहीं आने दिए।

"माफ़ करना यार, मुझे यहाँ आने में देर हो गई।" प्रत्यक्षतः वो महेश से बोला, "तुम तो जानते हो कि पुलिस की नौकरी कैसी होती है।"

"कोई बात नहीं, यही बहुत है कि तुम आ गए। कैसा लगा ये सूट?" महेश बोला।

"बहुत अच्छा है। बिलकुल फिट भी आया है तुम को।"

"तो फिर इसको फ़ाइनल कर के पैक करवा लेते हैं।" महेश ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

महेश के पिता जी ने हाँ में गर्दन हिलाई तो महेश वापस ट्रायल रूम में अपने कपड़े पहनने चला गया और ज्योति सब के पास आ कर बैठ गई। करण ने बहुत प्यार भरी नजरों से ज्योति को देखा, मगर ज्योति तो आभा से बात कर रही थी।

फिर करण शक भरी निगाहों से आभा को घूरने लगा। आभा की नज़रें करण से मिली, तो आभा तुरंत दूसरी तरफ देखने लगी। करण ने अपने आप को आभा की इस हरकत से बहुत अपमानित महसूस किया।

महेश के सूट का पेमेंट करने के बाद वे लोग डिनर के लिए बंधन रेस्टोरेंट के लिए रवाना हुए। महेश के मम्मी पापा करण की कार में बैठे और तीनों लड़कियों, ज्योति, आभा और गीता को महेश में अपनी कार में बिठाया।

बंधन रेस्टोरेंट में वे सातों एक बड़ी राउंड टेबल पर बैठे और सब एक दूसरे को अच्छी तरह देख पा रहे थे। आभा को याद आया कि वो 2010 में भी इस रेस्टोरेंट में आ चुकी थी, जब वो अपनी कार से पहली बार देहरादून आई थी।

रेस्टोरेंट 1961 में भी साफ सुथरा था और 2010 में भी। समय के अनुसार अंदर का डेकोरेशन बदल गया था, पर वातावरण वही था। शायद यही खास बात थी कि वो रेस्टोरेंट इतने लम्बे समय से चल रहा था।

आर्डर दिया गया खाना सर्व हुआ और आभा ने खाने में वही स्वाद महसूस किया, जो 2010 में किया था। खाने के बाद सब लोग कॉफी पीने लगे, पर महेश के पिता जी ने अपनी मन पसंद बीयर का आर्डर दिया था और वो मजे ले ले कर बीयर के घूँट भर रहे थे।

"आभा, अब तो तुम ओबेरॉय परिवार की एक सदस्य जैसी हो। पर तुम ने अपने बारे में हम को अधिक कुछ बताया नहीं।" करण ने अचानक आभा से सवाल किया।

"मेरे पास अपने बारे में बताने के लिए कुछ खास नहीं है, और जो कुछ है, वो मैं बता ही चुकी हूँ।" आभा ने बहुत सोच समझ कर जवाब दिया। करण का सवाल उसे पुलिस के सवाल जैसा लगा था।

"हाँ, ये बात सच है कि इतने कम समय में ही आभा हम लोगों में इतना घुल मिल गई है और ये इतनी प्यारी है कि हमें अपने परिवार का हिस्सा ही लगती है।" महेश की माँ बोली।

महेश के पिता जी ने भी अपनी बीयर का घूंट भरते हुए, सर हिला कर अपनी पत्नी की बात का समर्थन किया।

"फिर भी। तुम ने इन लोगों को सब कुछ बताया होगा, मगर मैं अभी भी तुम्हारे बारे में अनजान हूँ। इसलिए मेरे लिए तो अपने बारे में बता दो।" करण ने जिद सी की।

"जैसा कि मैंने आप को पहले भी बताया है, मैं दिल्ली की रहने वाली हूँ और वहीं से यहाँ आई हूँ। मेरे पिताजी बचपन में ही गुजर गए थे और मुझे मेरी माँ और दादा दादी ने पाल पोस कर बड़ा किया था। आज उन में से कोई जीवित नहीं है।" आभा बोली।

"वैसे दिल्ली में आप कहाँ रहती हो?" करण ने तुरंत अगला सवाल पूछा।

"डिफेंस कॉलोनी के पास।" आभा ने जवाब दिया।

"दिल्ली में आप काम करती थी?"

"हां।"

"कहाँ?"

“एक हॉस्पिटल में। मैं वहां के एक डॉक्टर की सेक्रेटरी थी।”

“कौन से हॉस्पिटल में?”

“गंगाराम हॉस्पिटल में।” आभा के मुंह से अनजाने में ही उस हॉस्पिटल का नाम निकल गया जहां वो 2010 में देहरादून आने से पहले अपने मंगेतर के साथ काम करती थी।

पर तुरंत ही उसको ख़याल आया कि 1961 में तो गंगाराम हॉस्पिटल का नाम निशान ही नहीं था। वो हॉस्पिटल तो 1980 के आसपास बना था। पर तीर तो कमान से निकल चुका था, अब क्या किया जा सकता था।

‘इसे कौन सा इतनी जल्दी पता चलने वाला है।’ आभा ने सोचा। ‘अगर इसने पता लगाने की कोशिश भी की तो मेरा क्या बिगाड़ लेगा? परसों रात को तो मैं यहाँ से हवा की तरह गायब हो जाने वाली हूँ।’ इस विचार से आभा का मन शांत हुआ।

आभा सहित बाकी सब लोग करण के उन सवालों से परेशान थे। ऐसा लग रहा था जैसे करण किसी केस के सिलसिले में आभा से पूछताछ कर रहा हो।

“करण, अब तुम्हारी ये पुलिसिया पूछताछ बंद करो। हम यहाँ डिनर करने आये हैं, कोई पुलिस स्टेशन में थोड़े ही बैठे हैं।” ज्योति ने थोड़ी नाराज़गी के साथ करण को टोका।

हालांकि ज्योति के टोकने की वजह से करण को गुस्सा तो बहुत आया मगर वो अपने गुस्से को पी गया। उसने हालात को समझा और तुरंत बोला,

“माफ़ करना आभा। पुलिस वाला हूँ ना। मैं अक्सर ऐसा कर बैठता हूँ।”

“कोई बात नहीं।” आभा ने छोटा सा जवाब दिया।

आभा ने करण की माफ़ी कबूल कर ली थी, पर अंदर से वो अपने आप को अभी भी असहज महसूस कर रही थी।

“मुझे लगता है कि आभा ने मुझे दिल से माफ़ नहीं किया है।” करण जैसे आभा के अंदर के भावों को पढता हुआ बोला। “अगर आभा को और आप सब को मंजूर हो तो यहाँ से जाते हुए मैं आभा को अपने साथ सूरज होटल में कॉफी के लिए ले जाना चाहता हूँ। मेरी मेहमाननवाज़ी देख कर ये शायद मुझे दिल से माफ़ कर दें।” करण बोला।

“मुझे कोई ऐतराज नहीं।” महेश के पिता जी ने कहा।

“मुझे भी मंजूर है।” महेश की माँ बोली।

“ठीक है, पर जल्दी इसे घर वापस छोड़ देना। वैसे भी काफी देर हो चुकी है।” महेश ने कहा, पर उसे ये बिलकुल पसंद नहीं आया कि करण आभा के साथ कुछ देर अकेला रहेगा।

“तुम क्या कहती हो आभा? मैं तुम्हारा दोस्त बनना चाहता हूँ और तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मेरा व्यवहार बहुत अच्छा रहेगा।”

“ठीक है। जब सब को मंजूर है तो मुझे भी मंजूर है।” आभा को कहना पड़ा।

“तुम्हारा ब्यूटी पार्लर कैसा चल रहा है गीता?” महेश की माँ ने विषय परिवर्तित करते हुए गीता से पूछा।

“अब तो अच्छा चलने लगा है आंटी।”

“तो अब तुम भी कोई अच्छा सा लड़का देख कर शादी क्यों नहीं कर लेती?”

“कर लूंगी आंटी, पहले कोई अच्छा सा लड़का तो मिल जाये।” गीता ने एक चोर नजर महेश पर डालते हुए जवाब दिया।

“मैं हूँ ना, क्या मैं तुम्हें नजर नहीं आ रहा?” करण जल्दी से बोला।

“लेकिन प्रॉब्लम ये है कि मुझे तुम्हारे जितना भी अच्छा लड़का नहीं चाहिए।” गीता मुस्कराते हुए बोली।

गीता की बात पर सभी लोगों ने ठहाका लगाया।

“डिनर बहुत अच्छा था। अब चलें?” महेश के पिता जी ने बीयर का आखिरी घूँट ले कर गिलास टेबल पर रखते हुए कहा।

“हाँ, अब हमें चलना चाहिए।” कहते हुए महेश खड़ा हो गया।

“ठीक है आभा। तुम से मिल कर बहुत अच्छा लगा।” गीता बोली और फिर धीरे से फुसफुसा कर आभा के कान में बोली, “तो फिर से मिलते हैं कल रात को।”

“कल रात को?” आभा ने भी फुसफुसाते हुए धीरे से सवाल किया।

“हाँ, कल रात मैं ज्योति के घर पर उसकी शादी के पहले बैचलर पार्टी जो दे रही हूँ। तुम आमंत्रित हो।” गीता मुस्कराते हुए बोली और जवाब ने आभा ने भी मुस्कराते हुए हाँ में गर्दन हिलाई।

सब चलते हुए बाहर पार्किंग में आ गए। आभा करण के साथ उसकी गाड़ी की तरफ बढ़ी और बाकी सब महेश की कार में बैठ गए। सब ने हाथ हिला कर आभा को बाय बाय कहा।

करण ने आभा के लिए पैसेंजर सीट का दरवाज़ा खोला। उसने वो काम किया जो वो कभी नहीं करता था। मगर समय की मांग थी कि वो अपने आप को बहुत जेंटलमैन और शरीफ दिखाता। फिर वो घूम कर ड्राइविंग सीट पर पहुंचा और उसने कार स्टार्ट कर के आगे बढ़ाई।

"डिनर पर अपने बिना मतलब के सवाल पूछने पर मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। उम्मीद है तुम ने दिल से मुझे माफ़ कर दिया है।" करण बाहर सड़क पर आते ही बोला।

"कोई बात नहीं करण। मैंने बुरा नहीं माना।"

आगे महेश की कार नजर आ रही थी जो थोड़ी दूर बाद देहरादून स्ट्रीट जाने वाली सड़क पर मुड़ गई थी और करण की कार उस मोड़ को छोड़ते हुए सीधा आगे चली गई। जल्दी ही करण सूरज होटल पहुंचा और अपनी गाड़ी पार्क की।

आभा ने महसूस किया कि वहां शायद करण का रोज़ाना का आना जाना था, क्यों कि होटल के स्टाफ सहित उसे वहां काफी लोग जानते थे। दोनों वहां एक केबिन में जा बैठे।

"तुम्हें बुरा ना लगे तो मैं अपने लिए एक ड्रिंक मंगा लूँ?" करण ने बहुत सभ्यता से पूछा।

आभा ने सहजता से सर हिला कर मंजूरी दी। करण ने अपने लिए एक ड्रिंक और आभा के लिए कॉफी का ऑर्डर दिया। हालाँकि आभा का दिल भी वाइन पीने का कर रहा था, मगर वो जानती थी कि 1961 में लड़कियां वाइन या बीयर नहीं पीती थी।

"मैंने तुम्हारे बारे में इतने सवाल किये, मगर अपने बारे में कुछ नहीं बताया।" अपने ड्रिंक का सिप लेते हुए करण बोला। "अगर तुम सुनना पसंद करो तो बता देता हूँ।"

"जरूर।"

"मेरा जन्म यहाँ से थोड़ी दूर एक छोटे शहर राज नगर में हुआ था। वहां मेरे पिता जी एक स्टील फ़ैक्टरी में काम करते थे। फिर उनकी नौकरी यहाँ जनरल मोटर्स में लग गई और हम यहाँ देहरादून आ गए। मैं जब स्कूल में था, तब मेरी मुलाकात महेश और ज्योति से हुई और हम तब से ही अच्छे दोस्त हैं।"

हालाँकि आभा को करण के बारे में कुछ भी जानने में दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी व्यवहारिकता के नाते उसने सब सुना। फिर करण ने आभा को अपनी पुलिस की नौकरी और अपने कुछ केसों के बारे में बताया। अंत में वहां से उठने से पहले करण ने आभा को अपने दिल की बात बताई।

“मैंने आज तक ये बात किसी को नहीं बताई, पर ना जाने क्यों, तुम्हें बताने का दिल कर रहा है। मैं ज्योति से बचपन से ही प्यार करता हूँ और आज भी करता हूँ। हालाँकि ज्योति महेश से प्यार करती है और मैं ये अच्छी तरह समझ सकता हूँ कि ज्योति के दिल में मेरे प्यार के लिए कोई जगह नहीं है। पर अब मैं इस दिल का क्या करूँ जो आज भी ज्योति को चाहता है।”

वहां वही कुछ हलकी फुलकी बातें होती रही और चालीस मिनट बाद वे दोनों वहां से उठे और घर के लिए रवाना हुए। करण ने एक बार फिर आभा के लिए कार का दरवाज़ा खोला।

आभा ने नोट किया कि वहां होटल में करण को जानने वाले मौजूद सभी लोग उसे करण की गर्लफ्रेंड समझ रहे थे और करण भी कुछ ऐसा ही शो कर रहा था।

आभा के लिए तो यही संतोष की बात थी कि करण का व्यवहार उसके लिए अच्छा था और करण ने उसे छूने की भी कोई कोशिश नहीं की थी।

थोड़ी देर बाद करण ने महेश के घर के सामने गाड़ी रोकी।

“थैंक्स आभा कि तुम ने मुझ पर यकीन किया और मेरा साथ दिया।”

“शाम की कॉफी के लिए धन्यवाद करण। गुड नाइट।” इतना कह कर आभा ने जैसे ही अपनी तरफ का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, करण ने कहा,

“सुनो आभा।”

आभा का हाथ कार के हैंडल पर ही था और उसने मुड़ कर करण की तरफ देखा। करण ने अचानक आभा का चेहरा अपनी हथेलियों में लिया और आभा को चूमना चाहा। आभा ने अपने दूसरे हाथ से करण को धक्का दिया और कार का दरवाज़ा खोल दिया।

कार से नीचे उतरने की कोशिश में आभा नीचे ज़मीन पर गिर पड़ी, पर उसने जल्दी ही अपने आप को संभाला और दौड़ कर महेश के घर में दाखिल हो गई।

“भाग गई साली। बहुत भाव खाती है।” कार में बैठा करण भुनभुनाया और फिर उसके मुंह से आभा के लिए एक गंदी सी गाली निकली।

उसने अपनी जेब से फ़्लास्क निकाल कर शराब के कुछ घूँट लिए और अपनी हालत को काबू में किया। फिर उसने फ़्लास्क वापस अपनी जेब में डाला और अपनी गाड़ी स्टार्ट की।

उधर महेश ने आभा के लिए घर का दरवाज़ा खुला रखा था और आभा ने बिना आवाज़ किये घर में प्रवेश किया और दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। सामने ही हॉल में महेश गहरी नींद में सोया हुआ था और आभा दबे पांव चलती हुई बेडरूम में आ गई।

अंदर आ कर जब आभा पलंग पर बैठी, तो उसे अहसास हुआ कि गिरने की वजह से उसके कूल्हे में हलकी सी चोट आई थी। आभा यही सोच रही थी कि अगर समय रहते उसने करण को धक्का नहीं दिया होता, तो करण उसे चूमने में कामयाब हो जाता। अपने इस ख़याल से ही आभा सिहर उठी। उसने

अपने कपड़े बदले और पलंग पर लेट कर सोने की कोशिश करने लगी।

=====

18

करण ने अपनी कार को वहां ले जा कर रोका, जहाँ वो अक्सर अपनी गाड़ी तब खड़ी करता था, जब वो ज्योति के बेडरूम में अक्सर रात को ताक झांक करने आता था। हालाँकि पिछली रात वो ज्योति की नजरों में आने से बाल बाल बचा था, फिर भी वो अपने मन पर काबू ना पा सका।

वो कार से उतरा और इधर उधर सावधानी से देखते हुए, छिपते छिपाते हुए ज्योति के बेडरूम की खिड़की तक पहुंचा। किसी के द्वारा देखे जाने और पकडे जाने की सूरत में उसके दिमाग में बहाना आ चुका था। वो कह सकता था कि वहां वो ताक झांक करने वाले की ताक में आया था, जो पिछली रात दीवार फलांग कर वहां से भाग गया था।

किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए वो पूरी तरह तैयार था। उसने खिड़की से अंदर झाँका। अंदर ज्योति अपना पसंदीदा और पारदर्शी गाउन पहने बिस्तर पर लेटी थी और गहरी नींद में थी। पारदर्शी गाउन में वैसे भी उसका अंग प्रत्यंग नाइट

बल्ब की रौशनी में नुमायां हो रहा था और ऊपर से उसका गाउन उसके घुटनों से ऊपर तक सिमटा हुआ था।

हमेशा की तरह उसे देखते ही करण उत्तेजित हो गया था और उसकी नसों में लावा सा दौड़ने लगा था। उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को पिछली रात जैसी स्वयं ही अपने आप को आनंदित करने वाली कोशिश से रोका।

वो सांस रोके ज्योति के अधनंगे बदन को देखता हुआ उसके साथ अपने सहवास की कल्पना करने लगा। उसकी उत्तेजना इतनी बढ़ चुकी थी कि उसने अपने आप को ज्योति के घर में प्रवेश कर के, उसके साथ सचमुच ही सहवास करने की कोशिश करने से बहुत मुश्किल से रोका।

उत्तेजना के मारे जैसे उसकी नसें फटने लगी और वो अपना मन मार कर कुछ देर बाद वापस अपनी कार में आ कर बैठ गया। कार में बैठते ही उसने तुरंत कार स्टार्ट नहीं की। उसका हाथ एक हाथ काफी देर तक कार में अश्लील तरीके से हिलता रहा और उसके बाद उसने अपनी पैंट के बटन बंद करते हुए अपनी कार को स्टार्ट किया और वहां से रवाना हो गया।

उधर महेश के बेडरूम में लेटी और नींद लेने की कोशिश करती आभा को नींद नहीं आ रही थी। उसके दिमाग में अलग अलग तरह के ख़याल आ जा रहे थे।

अचानक नाइट बल्ब की रौशनी में उसकी नजर अलमारी पर पड़ी। आलमारी पूरी तरह बंद नहीं थी। उसके दोनों पल्ले एक दूसरे से थोड़ा अलग थे।

‘शायद महेश ने अपने कपड़े निकालते वक्त या रखते वक्त पल्ले खुले छोड़ दिए होंगे।’ आभा ने सोचा।

फिर वो बिस्तर से उतर कर आलमारी के पास उसे बंद करने पहुंची। ना जाने क्या सोच कर उसने पल्ले बंद करने के बजाय उन्हें खोल कर भीतर झाँका। पहली नजर में ही उसने भाँप लिया कि उसकी बैग को किसी ने छेड़ा है। जिस तरह से और जहाँ उसने बैग अलमारी रखा था, वो वहां और वैसा नहीं था।

‘कौन छेड़ सकता है मेरा बैग? निश्चय ही वो महेश तो नहीं हो सकता।’ उसने मन ही मन विचार किया। ‘महेश को उसकी बेग छेड़ने की क्या जरूरत है? वो ऐसे स्वाभाव का है ही नहीं। फिर कौन हो सकता है?”

तुरंत उसका ध्यान करण की तरफ गया। आभा ने अनुमान लगाया कि सिर्फ करण ही ये काम कर सकता था। एक तो वो पुलिस वाला था, और ऊपर से वो आभा पर

शक भी करता था।

‘जरूर करण ने सभी घर वालों की अनुपस्थिति ने मेरे बैग की तलाशी ली होगी, शायद तब, जब शाम को सब सब लोग बाजार गए थे।’ आभा ने अनुमान लगाया।

आभा ने तुरंत बैग खोल कर चेक किया। बैग से कुछ निकाला नहीं गया था, मगर आभा को यकीन हो गया कि उसकी बैग की तलाशी अवश्य ली गई थी। ना जाने क्या सोच कर आभा ने ज्योति और महेश की तस्वीर निकाल कर फिर से देखी।

अचानक उसकी आँखों के सामने अंधेरा सा छा गया और उसे धुँधला धुँधला सा दिखने लगा।

‘ये अचानक मेरी आँखों को क्या हो गया है?’ उसने सोचते हुए अपनी आँखें मसली।

जब उसे थोड़ा थोड़ा साफ़ दिखाई देने लगा, तो उसने उन तस्वीरों पर नजर डाली। उसने देखा कि उन दोनों तस्वीरों में महेश के साथ ज्योति नहीं, वो खुद थी। अचानक उसके शरीर ने एक ज़ोरदार झुरझुरी ली और उसको पहले की तरह सब कुछ साफ़ साफ़ नजर आने लगा।

उसने तस्वीरों पर नजर डाली, तो उनमे पहले की तरह महेश और ज्योति ही दिख रहे थे। उसने तस्वीरें फिर से बैग में डाली और बैग फिर से अपनी जगह रख कर अलमारी बंद कर दी। वो वापस अपने पलंग पर आ कर बैठ गई।

‘ये क्या माजरा है?’ उसने सोचा। ‘उन तस्वीरों में मुझे ज्योति की जगह मैं खुद क्यों दिखाई दी थी? मेरी नजर कुछ देर के लिए धुँधली क्यों हो गई थी? कुदरत मुझे क्या संदेश देने की कोशिश कर रही है?”

और जो जवाब उसके दिमाग ने दिया वो हिलाने वाला था। उसका शक यकीन में बदल गया।

‘क्या मुझे धुँधला इसलिए दिखाई दे रहा था? क्या इसलिए कि ज्योति की नजर कमजोर थी और वो चश्मा लगाती थी। क्यों मेरी सूरत ज्योति से इतनी मिलती है? क्यों मुझे वो सपना आया था, जिसमे ज्योति की जगह मैंने खुद को कार सहित पानी में डूबते हुए देखा था? क्यों मेरे दिल ने कहा और मैं 1961 में आ गई? क्यों महेश मुझे अपना सा लगा था, जब मैंने उसको पहली बार 2010 में देखा था? क्यों मुझे महेश की स्कूल देखने पर अपनी खुद की बचपन की आवाज़ सुनाई दी थी? क्यों हर बार मुझे कई चीजों को देख कर अजीब सा, सुखद सा अहसास होता है? क्या ये मेरे लिए कोई संकेत है?”

सोचते सोचते उसके दिमाग ने बस एक ही उत्तर दिया।

“मैं ज्योति का पुनर्जन्म हूँ।” आभा के दिमाग में धमाका सा हुआ। “मैं खुद ज्योति हूँ। मेरे साथ ये सब कुछ इसलिए हो रहा है कि 1961 में ज्योति के डूब कर मर जाने के बाद उसका दूसरा जन्म मेरे रूप में हुआ है। इसलिए मेरे साथ ऐसा हो रहा है। मैं यहाँ खुद को मरने से बचाने आई हूँ।”

सोचते सोचते आभा का दिमाग थक गया था और वो ना जाने कब सो गई, उसे पता भी नहीं चला।

उधर साल 2010 में, महेश के घर में, उसके गैरेज के सामने बूढा करण खड़ा था। गैरेज के दरवाजे पर ताला नहीं लगा हुआ था, पर उस दिन के देखे भयानक मंजर की वजह से उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वो दरवाज़ा खोल कर अंदर जाये।

उस दिन के बाद उसे आभा कहीं नजर नहीं आई थी। हर बार करण ने उसके घर पर ताला लटका हुआ देखा। कॉलेज में पूछने से पता चला कि आभा छुट्टी पर है। आखिर हिम्मत जुटा कर उसने गैरेज का दरवाज़ा थोड़ा सा खोला और अंदर झाँका। अंदर उसे वही अजीब सी चीज दिखाई दी, जिसमें उसने आभा को बैठे हुए देखा था।

उस दिन तो उस चीज से लाल नीली रोशनियां निकल रही थी और वो चीज बुरी तरह हिल रही थी। मगर उस दिन वो शांत खड़ी थी। हिम्मत कर के वो टाइम मशीन के पास गया। डरते डरते उसने टाइम मशीन का दरवाज़ा खोला और उसके अंदर झाँका।

‘साली को मैंने इसके अंदर बैठे हुए देखा था। अब वो गायब कैसे हो गई?’ करण ने सोचा।

टाइम मशीन के डैशबोर्ड पर ‘डेस्टिनेशन’ के नीचे जो तारीख दिख रही थी, वो थी 14 मई 1961. ‘पिक अप तारीख के नीचे था, 19 मई 2010.

‘कहीं ये टाइम मशीन तो नहीं, जिसके बारे में ज्योति की मौत के बाद अफवाहें उड़ रही थी कि महेश कोई टाइम मशीन बना रहा था? और अगर ये सच है तो आभा इसमें बैठ कर 1961 में क्यों गई है?’

करण को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसने टाइम मशीन का दरवाज़ा बंद किया और अपना सर खुजाता हुआ गैरेज के बाहर आ गया। महेश के घर के लॉन के पिछवाड़े से होता हुआ वो आभा के घर के पास पहुंचा। बेडरूम से झांक कर उसने

अंदर देखा तो पहले की ही तरह नाइट बल्ब जल रहा था और ज़मीन पर बिछी दरी पर वही पुराना समाचार पत्र पड़ा था, जिस में ज्योति की मौत की खबर छपी थी।

'साला समझ में नहीं आ रहा है कि ये हो क्या रहा है।' बड़बड़ाते हुए वो वहां से निकल गया। अचानक ही उसके दिमाग में धमाका सा हुआ। उसे याद आई टाइम मशीन में इंगित तारीख़े और आभा के कमरे में पड़ा वो अख़बार जिसमे ज्योति की मौत की खबर छपी थी।

एक ही झटके में करण को सारा माजरा समझ में आ गया।

'साली 1961 में इसलिए गई है कि मेरा काम ख़राब कर सके, अन्यथा महेश और ज्योति की शादी की तारीख से खुश कुछ ही दिन पहले वहां उसकी मौजूदगी का क्या कारण हो सकता है।' सोचते सोचते वो बहुत चिंतित हो उठा।

उधर 1961 में महेश के बेडरूम में सोई आभा फिर से एक बार वही सपना देख रही थी। उसने सपने में देखा कि वो कार चलाते हुए बंधन झील पर बने लकड़ी के पुल की तरफ जा रही थी। उसकी कार जैसे ही पुल पर चढ़ कर कुछ दूर पहुंची, आभा ने एक गोली चलने की आवाज़ सुनी और साथ ही उसकी कार को किसी दूसरी कार ने पीछे से ज़ोरदार टक्कर मारी।

आभा के मुंह से चीख निकली और उसे किसी दूसरी औरत के भी चीखने की आवाज़ सुनाई दी। कार पर से आभा का नियंत्रण निकल गया और उसकी कार पुल पर बने लकड़ी की रेलिंग को तोड़ती हुई, नीचे बंधन झील के गहरे पानी में जा गिरी।

झील में गिरते ही कार के अंदर पानी भरना शुरू हो गया और कार झील के पानी में डूबने लगी। आभा ने कार के दरवाजे और खिड़किया खोलने की कोशिश की मगर वो नाकाम रही। कार में पानी भर गया था और आभा ने अपनी सांस रोक ली थी।

वो कोशिश करती रही, मगर किसी भी तरह कार के बाहर आने में कामयाब नहीं हुई। कुछ ही देर बाद, सांस लेने की कोशिश में उसके नाक और मुंह के रास्ते उसके फेफड़ों में बहुत सारा पानी घुस गया और उसकी आँखें फट पड़ी। उसका निर्जीव बदन कार के अंदर भरे पानी में तैरने लगा।

आभा ने हड़बड़ा कर अपनी आँखें खोली। उसका पूरा बदन पसीने में भीगा हुआ था। और जो सब से पहला ख़याल उसके दिमाग में आया, वो ये था कि आभा के रूप ने ज्योति ने दूसरा जन्म लिया है और इसी लिए आभा के साथ ऐसा हो रहा है।

=====

19

आखिर शुक्रवार, 19 मई की सुबह हुई। फिजां में सुबह का उजाला फैलना शुरू हुआ।

महेश के घर में हमेशा की तरह सब से पहले महेश की माँ उठ कर किचन में अपने रोज़ सुबह के काम में लग गई। किचन में बर्तनों की आवाज़ सुन कर हॉल में सोये महेश की भी आँख खुल गई। महेश उठते ही बाथरूम गया और उसने वापस आ कर आभा को जगाया।

आभा जब तक बाथरूम से नहा कर आई, महेश बेडरूम में अपने कपड़े बदल कर आ चुका था। आभा तैयार होने के लिए बेडरूम में आई तो महेश के पिता जी बाथरूम में घुस गए। तीनों काम पर जाने वाले, महेश, उसके पिताजी और आभा डाइनिंग टेबल पर बैठे नाश्ता करने लगे।

"करण के साथ कल की शाम कैसी रही?" महेश की माँ ने आभा से सवाल किया।

एक बार तो आभा का मन किया कि वो करण की गंदी हरकत का पर्दा फाश कर दे, पर कुछ सोच कर उसने उसके बारे में कुछ नहीं कहा। उसने बस इतना ही कहा,

"ठीक ठाक रही। उसने सूरज होटल में शराब पी और मैंने कॉफी।"

"करण जैसा आदमी तुम्हें डेट पर ले जाये और वो कुछ बेजा हरकत ना करे, यकीन नहीं होता।" महेश ने शक भरी निगाहों से आभा की तरफ देखते हुए कहा। "लड़कियों के मामले में वो बहुत बदनाम है। तुम कुछ छिपा तो नहीं रही हो?"

"दरअसल मैं आप लोगों को ये बात बता कर परेशान नहीं करना चाहती थी।" आभा ने कहा तो सभी आभा के चेहरे की तरफ देखने लगे।

"बात ये है कि पूरे समय तक उसने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, मगर यहाँ घर के बाहर, मेरे कार से उतरते समय उसने मुझे चूमने की कोशिश की।" आभा ने बताया।

"मुझे भी करण से कुछ ऐसी ही उम्मीद थी।" महेश ने थोड़ी परेशानी से कहा। "आगे से तुम उसके साथ अकेली कहीं मत जाना।"

"ठीक है।" आभा ने छोटा सा जवाब दिया। महेश के माँ और पिता जी के चेहरे से भी ये जाहिर हो रहा था कि उन्हें भी करण की गंदी हरकत पसंद नहीं आई थी।

“आज तुम ज्योति के साथ कॉलेज चली जाना और उसी के साथ वापस आ जाना। मैं पहले तो झील वाले केबिन में जाऊंगा और बाद में रात को करण की पार्टी में।” महेश ने आभा से कहा। “तुम भी तो पार्टी में ज्योति के घर जाने वाली हो रात को। वहां तुम्हें ज्योति की दूसरी सहेलियाँ भी मिलेगी, तुम्हारी जान पहचान बढ़ जाएगी। हम शायद सीधे कल सुबह ही मिलेंगे।”

“ठीक है, लेकिन तुम करण की पार्टी में कहीं ज्यादा मत पी लेना।” माँ ने हँसते हुए महेश से कहा।

“अरे नहीं माँ, तुम चिंता मत करो।” महेश ने भी हंस कर जवाब दिया। “मैं तो जाना ही नहीं चाहता, मगर करण ने बहुत जिद की थी।”

नाश्ता कर के महेश और ज्योति घर से निकले, तो पीछे पीछे महेश के पिता जी भी अपना टिफिन ले कर निकले। बाहर आ कर महेश के पिता जी अपनी मोटरसाइकल ले कर फ़ैक्टरी के लिए रवाना हो गए तथा महेश और आभा कार के पास ज्योति का इंतज़ार करने लगे। ज्योति जल्दी ही आई।

उसके बाद महेश अपनी गाड़ी में बैठ कर रवाना हो गया और आभा ज्योति के साथ उसकी कार में बैठ कर कॉलेज की तरफ रवाना हो गई। कॉलेज पहुँच कर ज्योति ने अपनी कार पार्क की और दोनों लड़कियां कार से बाहर आ गई।

“याद है ना, शाम को तुम्हें मेरे घर पर पार्टी में आना है।” ज्योति ने चलते चलते आभा से कहा। “पर उसके पहले मैं तुम्हें लंच के लिए फोन करती हूँ।”

आभा ने अपना सर हाँ में हिलाया और फिर दोनों अलग हो कर अपने अपने ऑफिस की तरफ चल दी।

करण पुलिस स्टेशन में बैठा हुआ, सोच में डूबा हुआ चाय पी रहा था। फिर उसने फोन अपनी तरफ खींच कर दिल्ली पुलिस हेड क्वार्टर का नंबर डायल किया। दूसरी तरफ से फोन उठाये जाने पर करण बोला,

“जी, मेरा नाम इंस्पेक्टर करण मल्होत्रा है और मैं देहरादून पुलिस स्टेशन से बोल रहा हूँ। एक केस के सिलसिले में कल मेरी बात आप के यहाँ सतपाल सिंह जी से हुई थी। क्या मैं उन से बात कर सकता हूँ?”

“मेरा नाम सब इंस्पेक्टर नरेंद्र सिंह है जनाब। मैं सतपाल सिंह जी का जूनियर हूँ। सतपाल सर एक केस के सिलसिले में बाहर गए हुए हैं और उनके लौटते ही मैं उन से आप की बात करवाता हूँ। आप अपना नंबर मुझे लिखवा दें।”

“मेरा नंबर उनके पास है, फिर भी आप नोट कर लो।” और करण ने अपना नंबर बता कर लाइन काट दी।

करण बेचैनी से दिल्ली से आने वाले फोन का इंतज़ार करता हुआ अपने दूसरे काम निपटाने लगा। काफी देर बाद, जब करण के फोन की घंटी बजी, तो उस वक्त चाय का कप उसके हाथ में था। फोन उठाने की जल्दी में थोड़ी सी चाय छलक कर उसकी पैंट पर गिर पड़ी।

“इंस्पेक्टर करण स्पीकिंग।” वो जल्दी से फोन उठा कर बोला। “मैं सतपाल सिंह, दिल्ली से। कहिये जनाब, आप ने मेरे लिए फोन किया था।”

“हाँ जी। मुझे रात को उस लड़की आभा अरोड़ा के बताये पता चला है कि वो दिल्ली में गंगाराम हॉस्पिटल में किसी डॉक्टर की सेक्रेटरी के तौर पर काम करती थी।” करण ने जल्दी से बताया।

थोड़ी देर दूसरी तरफ से फोन पर ख़ामोश छाई रही और फिर एक लंबी सांस के साथ सतपाल सिंह की आवाज़ आई।

“इंस्पेक्टर करण। ये लड़की, जिसका नाम आप आभा अरोड़ा बता रहे हैं, पता नहीं इसका नाम भी सच है या नहीं। ये कोई बहुत चालाक लड़की है। मैं आप को बता दूँ कि पूरे दिल्ली में और दिल्ली के आसपास में गंगाराम हॉस्पिटल नाम का कोई हॉस्पिटल नहीं है। लड़की झूठ बोल रही है। झूठ बोलने की वजह का पता लगाना आप का काम है।”

“और एक बात, इस लड़की ने बताया कि वो डिफेंस कॉलोनी के पास कहीं रहती है।”

“करण जी, डिफेंस कॉलोनी के आसपास करीब तीन हजार घर होंगे। और फिर हम तो ये भी नहीं जानते कि इस लड़की का नाम आभा अरोड़ा ही है, या कुछ और।” सतपाल सिंह ने जवाब दिया।

“ठीक है सतपाल जी, मैं कुछ और जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश करता हूँ और जरूरत पड़ी तो आप को फिर से तकलीफ़ दूँगा।”

“इसमें तकलीफ़ की कोई बात नहीं करण जी। अपने डिपार्टमेंट का ही काम है। आप जब चाहें मुझे फोन कर सकते हैं।”

“धन्यवाद सतपाल जी।” करण ने कहा और फोन रख दिया।

करण को अब कोई शक नहीं रहा था कि आभा जो अपने आप को दिखाने की कोशिश कर रही है, असल में वो कोई और है। उसके बेग की तलाशी से भी जाहिर हो चुका था कि वो बहुत कुछ छिपा रही है। करण को अब अफ़सोस हो रहा था कि उसने आभा की किसी लड़के के साथ जो रंगीन तस्वीर थी, वो अपने क़ब्ज़े में क्यों नहीं ली। उस तस्वीर को वो दिल्ली भेज कर आभा के बारे में सच्चाई पता करने की कोशिश कर सकता था।

करीब साढ़े बारह बजे करण के फोन की घंटी बजी।

"हेल्लो, इंस्पेक्टर करण दिस साइड।"

"इंस्पेक्टर साहब, मैं दीपा स्टोर से बनवारी लाल बोल रहा हूँ।"

"हाँ बनवारी लाल जी, बोलिए। मैं बाजार में आप की दुकान से वाकिफ हूँ।"

"वैसे बात कोई बहुत बड़ी नहीं है इंस्पेक्टर साहब, पर कोई मेरी दुकान में दस दस रुपयों के आठ जाली नोट चला गया है?"

"मैं जल्दी ही आप की दुकान पर आता हूँ।" करण ने कहा और लाइन काट दी।

आधे घंटे बाद करण दीपा स्टोर के मालिक बनवारी लाल के सामने बैठा हुआ था। बनवारी लाल ने करण के सामने दस दस रुपयों के कुछ नोट निकाल कर रखे। करण ने उन नोटों को उठा कर एक एक नोट को चेक किया।

"मुझे तो इनमे कोई ख़राबी नजर नहीं आती। सभी नोट असली है बनवारी लाल जी। सब सिक्योरिटी फीचर्स भी सही है।"

"पहले मुझे भी ऐसा लगा था। अब आप जरा इन नोटों पर छपे साल पर नजर डालिए।"

करण ने देखा तो नोटों पर 1999 से लेकर 2009 तक के साल छपे थे।

"पहली बात तो ये कि कोई भी नोट जाली नहीं लग रहा। अगर इस पर 1960 छपा होता तो ये हर प्रकार से बिलकुल असली नजर आते हैं। अब सवाल ये है कि अगर ये नोट जाली हैं, तो इन्हें बहुत सफाई के साथ छापा गया है। और जब बहुत सफाई के साथ छापा गया है तो साल छापने में गलती क्यों कर हुई?"

"ये सब मैं नहीं जानता। ये पता लगाना आप का काम है। मुझे इन अस्सी रुपयों की परवाह नहीं है, मगर मैं कानून की नजर में एक अपराध उजागर करना चाहता हूँ।

जाली नोटों का चलन बहुत खतरनाक चीज है, ये तो आप समझ सकते ही है।" बनवारी लाल बोला।

"आप की बात ठीक है लाला जी। अब क्या आप बता सकते है कि कौन ये नोट आप के यहाँ चला गया?"

"अब निश्चित तौर से तो कुछ नहीं कहा जा सकता, पर ये नोट हमारे लेडीज सेक्सन से मिले हैं, और वहां की केशियर को एक लड़की पर शक है। मैं अभी उसे बुलवा देता हूँ।"

बनवारी लाल ने इंटरकॉम कर के एक लड़की को बुलाया।

"क्या आप मुझे उस लड़की का हुलिया बता सकती हैं, जिस पर कि आप को शक है कि ये जाली नोट शायद उसी ने दिए हैं।"

"हाँ, याद है मुझे उसका हुलिया। उसकी उम्र कोई पच्चीस के आसपास की होगी। काले बाल, बिना मेकअप के भी वो सुन्दर दिख रही थी। उसके ऊपर के होंठ पर शायद एक तिल था।"

"क्या खरीदा था उसने यहाँ से?"

"उसने कुछ ड्रेस, एक पजामा सूट और कुछ अंडरगारमेंट्स खरीदे थे।"

करण ने वो सब अपनी डायरी में नोट किया जो उस लड़की ने बताया। फिर वो सभी नोट उठा कर अपनी जेब में डालता हुआ बोला,

"ठीक है बनवारी लाल जी। ये नोट मैं अपने साथ लिए जा रहा हूँ। आप का शुक्रिया कि आप कानून की मदद करना चाहते हैं। एक तकलीफ़ और कीजियेगा। जब भी आपको समय मिले, पुलिस स्टेशन आ कर रिपोर्ट जरूर लिखवा दें, ताकि जांच का आधार बने।"

"मैं आज ही शाम होने से पहले वहां आ कर रिपोर्ट लिखा दूँगा।"

"धन्यवाद, मैं चलता हूँ।"

करण बाहर आ कर अपनी गाड़ी में सवार हुआ तो उसको ध्यान आया।

'आभा भी मेकअप नहीं करती है और बिना मेकअप के ही सुन्दर दिखती है। ध्यान से देखने पर पता चलता है कि उसके ऊपरी होंठ पर एक तिल है। उसकी आलमारी

में दीपा स्टोर की थैली पड़ी थी। थैली में नए खरीदे छोटे कपड़े थे। पलंग पर एक बहुत कम इस्तेमाल किया हुआ पजामा सूट भी पड़ा था।'

'ये साली चीज क्या है? क्या चाहती है ये? इसकी असलियत क्या है?' करण परेशानी में बड़बड़ाया।

उसने अपनी कार देहरादून कॉलेज जाने वाली सड़क पर मोड़ दी।

=====

20

आभा अपनी सीट पर बैठी हुए तेजी से एक पत्र टाइप करने में जुटी हुई थी। टाइपराइटर पर अब तक उसका हाथ अच्छी तरह बैठ चुका था और उसे टाइप करने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

तभी उसके फोन की घंटी बजी। उसने फोन उठाया तो दूसरी तरफ ज्योति थी।

"आ रही हो ना कैंटीन में लंच के लिए?" ज्योति ने तुरंत कहा।

"हाँ, अभी आती हूँ।" आभा ने कहा और फोन रख दिया।

उस दिन वो इतना व्यस्त थी कि लंच टाइम कब हुआ, उसे पता ही नहीं चला। टाइपराइटर पर लगे पत्र को वैसे ही लगे रहने दे कर वो खड़ी हुई और कैन्टीन की तरफ रवाना हुई। अभी वो रास्ते में ही थी कि करण की कार कॉलेज में प्रविष्ट हुई।

करण ने आभा को कैंटीन की तरफ जाते हुए देखा। विज़िटर्स पार्किंग में अपनी कार पार्क करने के बाद करण भी कैंटीन की तरफ चल दिया। उसने कैंटीन के बाहर से, खिड़की से झांक कर अंदर देखा तो उसकी नजर एक टेबल पर खाना खाती हुई ज्योति और आभा पर पड़ी।

करण एक पेड़ के पीछे छिप कर खड़ा हो गया, मगर उसकी नज़रें आभा और ज्योति पर टिकी हुई थी। कैंटीन के बाहर करण की उपस्थिति से अनजान, आभा और ज्योति खाना खाती हुई आपस में बातें भी कर रही थी।

ज्योति ने अनुमान लगाया कि आभा कुछ परेशान सी है।

"क्या बात है आभा। थोड़ी परेशान लग रही हो?" आखिर ज्योति ने पूछ ही लिया।

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं है ज्योति। बस जरा काम ज्यादा है आज।"

"कुछ तो है, बताओ क्या बात है?"

“कुछ नहीं, बस मुझे तुम से एक बहुत जरूरी बात करनी है।”

“बोलो, मैं सुन रही हूँ।”

दरअसल आभा ज्योति को उसकी मौत के बारे में आगाह करना चाहती थी। लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो ये बात ज्योति को कैसे बताये? उसने सोचा कि हो सकता है ज्योति को ये बात बताने से कुछ फायदा होने की बजाय उलटे नुकसान हो जाये। उसने तुरंत अपने आप को संभाला और बोली।

“ज्योति, मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हारी शादी महेश से हो रही है। मेरे ख़याल से तुम्हारी पसंद बहुत अच्छी है और महेश तुम्हें हमेशा खुश रखेगा।”

“ये बात तुम पहले ही कह चुकी हो। तुम बहुत खुश हो, ये मैं जानती हूँ। महेश के माता पिता भी बहुत अच्छे हैं। जानती हो, मैं दिल से चाहती हूँ कि तुम को रहने के लिए कोई और जगह ना मिले और तुम हमारे साथ ही रहो।” ज्योति ने आभा के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए कहा।

आभा की आंखों में आंसू आ गये और ज्योति की आँखें भी गीली हुए बिना नहीं रह सकी। खाना ख़तम होने के बाद आभा वहां से जल्दी से ये कह कर उठ गई कि उसे कुछ जरूरी खत टाइप करने है। ज्योति आश्चर्य से उसकी तरफ देखती रही और आभा उठ कर अपने ऑफ़िस की तरफ चल दी।

‘पगली।’ ज्योति बड़बड़ाई। बाहर खड़े करण ने जैसे ही आभा को उठ कर अपने ऑफ़िस की तरफ जाते हुए देखा, वो भी आभा के पीछे पीछे चल पड़ा। आभा अपनी कुर्सी पर बैठी ही थी कि दरवाज़ा खोल कर करण ऑफ़िस में आया।

“करण प्लीज।” आभा ने करण पर नजर पड़ते ही कहा। “मुझे परेशान मत करो। मुझे तुम से कोई बात नहीं करनी। और खास करके तुम्हारी कल की गंदी हरकत के बाद तो बिलकुल भी नहीं।”

करण ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने पहले डॉक्टर ब्रह्मा के ऑफ़िस में झांक कर देखा। डॉक्टर को वहां नहीं पा कर उसने ऑफिस का दरवाज़ा अंदर से बंद किया तो किसी अनिष्ट की आशंका से आभा चिल्लाई।

“ये दरवाज़ा क्यों बंद किया तुम ने? ये मेरा ऑफ़िस है। चले जाओ यहाँ से, वरना मैं शोर मचा दूंगी।” आभा के स्वर में गुस्सा था।

“चला जाऊंगा। ये दरवाज़ा मैंने तुम्हारे अच्छे के लिए बंद किया है। मैं यहाँ ड्यूटी पर हूँ और तुम से कुछ सवाल पूछने आया हूँ। तुम से पुलिस की पूछताछ की खबर आम ना हो, इसलिए मैंने दरवाज़ा बंद किया है। अब क्या कहती हो? खोल दूँ दरवाज़ा, ताकि यहाँ सब को पता चले कि पुलिस तुम से पूछताछ कर रही है।’

करण की बात सुन कर आभा घबरा गई और उसकी ज़ुबान पर जैसे ताला लग गया। करण धीरे धीरे चलता हुआ आभा के पास आया और उसके सामने पड़ी कुर्सी पर बैठ गया।

“कौन हो तुम?” करण ने सख्ती से पूछा।

“क्या मतलब?”

“मतलब ये कि तुम्हारा असली नाम क्या है? यहाँ तुम किस मकसद से आई हो?”

“तुम्हारा दिमाग ख़राब है करण। ये सब तुम पहले ही पूछ चुके हो और मैं बता चुकी हूँ।”

“इंस्पेक्टर करण बोलो, और तमीज से बात करो।”

“सॉरी।”

“मैंने तुम्हारे बारे में दिल्ली पुलिस से संपर्क किया था।” करण आभा को तीखी नजरों से घूरते हुए बोला।

“ओह।” आभा को माजरा समझ में आया।

“वहां तुम जिस हॉस्पिटल में काम करते होने का दावा करती हो, दिल्ली में उस नाम का कोई हॉस्पिटल नहीं है।”

“मुझे पता है कि नहीं है। मैं नहीं चाहती कि किसी को पता चले कि मैं कहाँ काम करती थी।”

“और किसी से झूठ बोलने और पुलिस से झूठ बोलने में फर्क है। इतना तो तुम समझती ही होगी।”

आभा कुछ नहीं बोली।

“ओके, ये भी कोई बड़ा अपराध नहीं है। कोर्ट तुम्हें वार्निंग दे कर छोड़ सकता है। पर जाली नोट चलाने की कोशिश करना एक गंभीर अपराध है जिसके लिए तुम्हें लंबी सजा हो सकती है।”

“जाली नोट, और मैं?” आभा मामला कुछ कुछ समझ चुकी थी।

“हाँ।” करण ने अपनी जेब से दस दस के नोट निकाल कर हवा में लहराते हुए कहा। “ये वो नोट है जो तुमने दीपा स्टोर में दिए थे। अब ये मत कहना कि तुम ने नहीं दिए हैं। स्टोर की कैशियर को तुम्हारा हुलिया याद है। उसने ये भी बताया कि मंगलवार शाम को तुम ने स्टोर से पजामा सूट, कुछ ड्रेस और अंडरगारमेंट्स खरीदे हैं।”

आभा निरुत्तर हो गई।

“अब ये मत कहना कि तुम ने ये चीजें वहां से नहीं खरीदी या वहां जाली नोटों से पेमेंट नहीं किया। स्टोर की केशियर तुम्हें तुरंत पहचान लेगी। मैं अगर अभी तुम्हें गिरफ्तार कर लेता हूँ तो मुझे महेश के कमरे से तुम्हारे खरीदे हुए कपड़े भी मिल जायेंगे और मुझे यकीन है कि तुम्हारे पर्स से भी और भी बहुत से नक़ली नोट बरामद होंगे।”

आभा के पास कोई जवाब नहीं था। वो फंस चुकी थी।

“पुलिस का तुम पर चार्ज है कि तुम जाली नोट छापने वाले गिरोह की एक सदस्य हो यहाँ अपनी असली पहचान छिपा कर जाली नोटों का व्यापार करने के सिलसिले में यहाँ आई हो।”

“ऐसा बिलकुल भी नहीं है।” आभा ने जोर देकर कहा।

“तो फिर ये जाली नोट तुम्हारे पास कहाँ से आये?”

“मुझे नहीं पता।”

“हर अपराधी पहले यही कहता है। अब तुम अदालत में खुद को बेगुनाह साबित करना। मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूँ।”

“नहीं।” आभा सचमुच घबरा गई।

“अगर तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें गिरफ्तार नहीं करूँ और ये केस यहीं रफा दफा कर दूँ, तो मैं तुम्हारे लिए ऐसा कर सकता हूँ।”

“कितना पैसा चाहिए तुम्हें?”

“नहीं, कोई पैसा नहीं चाहिए। तुम्हारे लिए मैं ये काम मुफ्त में कर दूँगा। पर तुम्हें मेरा कहना मानना पड़ेगा।”

“क्या करना होगा मुझे?”

“कुछ नहीं। जो करना होगा, वो मैं खुद कर लूँगा। बस तुम्हें मेरा साथ देना होगा।” कहते हुए करण अपनी कुर्सी से उठा और आभा की तरफ बढ़ा।

आभा ने करण को अपने पास आते देखा तो वो अपनी कुर्सी से खड़ी हो गई और पीछे हटी। पीछे दीवार होने की वजह से उसके पास हिलने की अधिक गुंजाईश नहीं थी। करण ने आगे बढ़ कर आभा के बदन से अपना बदन सटा दिया और अपना चेहरा आभा के चेहरे के पास ले गया।

करण की सांसों और उसके मुंह से आती सिगरेट की बदबू से आभा का जी मिचलाया।

“अगर तुम अपना थोड़ा समय मेरे साथ बिताने को तैयार हो तो मैं ये केस यहीं ख़तम करने को तैयार हूँ।” करण ने फुसफुसाते हुए कहा।

आभा कुछ ना बोल सकी और सोचने लगी कि उसे क्या कहना या करना चाहिए। आभा की खामोशी को करण ने आभा की मंजूरी समझा और एक झटके से आभा को अपने बाँहों में भर लिया। आभा कसमसाई, मगर करण की मर्दाना पकड़ से छूट नहीं पाई।

करण ने अपने होंठ आभा के होठों पर रखे और एक लम्बा चुंबन लिया। आभा ने उस चुंबन में कोई सहयोग नहीं दिया, पर कोशिश करने पर भी वो अपने होंठ करण के होठों की पकड़ से छुड़ा नहीं सकी।

करण के मुंह से आती सिगरेट की दुर्गन्ध नाक के जरिये आभा के दिमाग में पहुंची और उसका जी बहुत जोर से मिचलाने लगा। थोड़ी देर बाद करण ने आभा को अपनी बाहों से आज़ाद किया, तो आभा खड़ी खड़ी कांपने लगी।

“तो फिर कल शाम को पहले हम कोई रोमांटिक फिल्म देखेंगे और उसके बाद मैं बिस्तर पर तुम प्यार करूँगा। उधर महेश शादी के बाद अपनी पत्नी ज्योति के साथ सुहागरात मना रहा होगा और इधर मैं भी ज्योति की हमशक्ल के साथ बिना शादी किये अपनी सुहागरात मनाऊंगा।”

करण की बात सुन कर आभा जैसे आसमान से गिरी।

“नहीं।” आभा भयभीत हो कर चीखी।

“तुम्हारे पास और कोई रास्ता नहीं है आभा। तुम्हें एक बार, सिर्फ एक बार मेरी बनना है। किसी को पता नहीं चलेगा और फिर तुम मेरी तरफ से हमेशा के लिए

आजाद हो। तुम पर कोई केस नहीं बनेगा। अगर तुम अपनी मर्जी से मेरी बात मानने से मना करती हो, तो भी मेरा काम तो हो कर रहेगा। मैं तो तुम्हारे साथ हवालात में भी वो सब कर सकता हूँ जो मैं चाहता हूँ। फिर तुम्हें जेल भी जाना होगा और जब तुम जेल से बाहर आओगी तो तुम्हारे सर के बाल सफ़ेद हो चुके होंगे।" करण ने धमकी देते हुए खतरनाक स्वर में कहा।

आभा कुछ भी नहीं बोल सकी। वो तो डर के मारे थर थर कांप रही थी।

"एक बार मेरे साथ हम-बिस्तर तो तुम्हें होना पड़ेगा आभा। तुम्हारे पास बचने का कोई रास्ता नहीं है। अब ये तुम पर निर्भर करता है कि तुम अपनी रजामंदी से मेरी बन कर आजाद रहना चाहती हो या हवालात में मुझ से जबरदस्ती अपनी इज़्ज़त लुटवा कर जेल जाना चाहती हो।"

इतना कह कर करण आभा से दूर हुआ। आभा तो जैसे शिकारी के जाल में फंसी हिरणी की तरह डरी डरी आँखों से करण की तरफ देख रही थी। उसका जी बहुत जोरों मिचलाने लगा था। दरवाजे की तरफ बढ़ता हुआ करण बोला,

"तो फिर कल शाम साढ़े छह बजे तुम मुझे करण के घर के बाहर मिलो।" और ये कह कर करण ने दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गया।

आभा के बदन में डर की ठंडी लहर सी दौड़ गई। उसका डर उसके रोम रोम से छलक रहा था और आंखे चौड़ी हो गई थी। अचानक उसका जी बहुत जोर से मिचलाया और वो तीर की तरह गैलरी में बने लेडीज टॉयलेट की तरफ दौड़ी।

वाश बेसिन के पास पहुँच कर वो उल्टियां करने लगी।

=====

21

करण के जाने के बाद उल्टी करने से आभा का जी कुछ हल्का हुआ, मगर उसकी परेशानी कम नहीं हुई। अधिकतर समय सोच में ही डूबी हुई वो अपना काम निपटाती रही। वो दिन उसे काफी बड़ा लग रहा था, मगर अंत में शाम के साढ़े चार बज ही गए।

आभा ने सोचा कि अगर सब ठीक रहा और उसका प्लान कामयाब रहा तो उसे उस दिन के बाद 1961 में अपने ऑफ़िस आने की जरूरत नहीं पड़ने वाली थी।

उस दिन शुक्रवार था, और उसे उसी रात को ज्योति की जान बचानी थी ताकि अगले दिन उसकी शादी महेश से हो जाये। उसका काम पूरा होने के बाद शनिवार की रात को दस बजे जब टाइम मशीन उसे लेने आएगी, तो उसे उसमे बैठ कर 2010 के लिए रवाना हो जाना था।

मगर आभा के रास्ते में जो सब से बड़ा रोड़ा था, वो था करण। करण अगले दिन शाम को साढ़े छह बजे आभा को लेने महेश के घर के बाहर अवश्य आने वाला था। अब आभा के सामने ज्योति की जान बचाने के अलावा एक और जरूरी काम था।

उसे किसी भी तरह करण को वहां से टालना था और सब की नजरों से छुप कर रात के दस बजे से कुछ पहले महेश के गैरेज में पहुंचना था जहाँ टाइम मशीन उसे लेने आने वाली थी।

आभा अपनी कुर्सी से खड़ी हुई, सभी फाइलें और क़ागज़ात उसने अपनी जगह पर रखे और टाइपराइटर पर कवर चढ़ा कर, अपना पर्स ले कर वो ऑफ़िस से बाहर आ गई। बाहर आ कर, सोच में डूबी हुई वो पार्किंग की तरफ चल दी।

पार्किंग में अपनी कार की ड्राइविंग सीट पर बैठी ज्योति की नजर पार्किंग की तरफ आती आभा पर पड़ी। आभा का चिंतित होना और उसकी उदासी ज्योति से छिपी नहीं रही। आभा आ कर ज्योति के बगल में बैठ गई।

“लंच टाइम में तुम्हें क्या हो गया था?” ज्योति ने सवाल किया।

“अरे वो?” आभा जबरन मुस्कराती हुई बोली। “मैं खुद नहीं समझ पा रही हूँ कि मुझे क्या हो गया था। शायद तुम्हारी शादी को ले कर मैं थोड़ा भावुक सी हो गई थी।”

“वो तो मैं समझ सकती हूँ।” ज्योति ने गाड़ी स्टार्ट करते हुए कहा। “कुछ और बात तो नहीं है ना?”

“नहीं और कोई बात नहीं है।”

अपनी कार को देहरादून स्ट्रीट की तरफ जाती सड़क पर मोड़ते हुए ज्योति बोली,

“मुझे लगता है कि कोई ना कोई बात जरूर है, जो तुम्हें परेशान कर रही है। तुम बताना नहीं चाहती तो दूसरी बात है, मगर तुम्हारा चेहरा बता रहा है कि तुम किसी चीज या बात को ले कर बहुत परेशान हो।”

आभा के चेहरे पर चिंता की लकीरें बढ़ गई।

“नहीं ज्योति, मैं तुम से कुछ छिपाना नहीं चाहती। मगर बता कर तुम्हें भी परेशान नहीं करना चाहती थी।”

“अब बता भी दो।”

“मुझे दो बातें परेशान कर रही है।”

“और वे दो बातें क्या है?” आभा ने हिम्मत कर के बताया,

“पहली बात तो ये है कि कल रात को मैंने एक बहुत डरावना सपना देखा था।”

“अच्छा तो सपने की वजह से डरी हुई हो।” ज्योति हँसते हुए बोली।

“मैंने देखा कि एक लड़की कार चलाते हुए बंधन झील पर लकड़ी से बने पुल पर से गुजर रही थी। फिर अचानक एक गोली चली और साथ ही उसकी कार को पीछे से किसी दूसरी गाड़ी ने टक्कर मारी। उस लड़की की कार पुल का रेलिंग तोड़ती हुई झील में गिर गई। वो लड़की कार से बाहर नहीं निकल सकी। कार में पानी भर गया और वो लड़की अपनी कार में भरे हुए पानी में ही डूब कर मर गई।”

“तुम्हारा देखा गया सपना वाकई बहुत डरावना है। मगर सपनों से क्या डरना?”

“ठीक कहती हो तुम। यही सपना मुझे दूसरी बार आया था। आठ दस दिन पहले भी मैंने बिलकुल यही सपना देखा था।”

“मतलब तुम्हारे देहरादून आने से पहले? दिल्ली में?”

“हाँ।”

“एक ही सपना दो बार आने का कुछ मतलब तो हो सकता है। तुम्हारा चिंतित होना वाजिब है। मगर इसका मतलब क्या है?”

“मतलब ये है कि डूबने वाली कार की ड्राइविंग सीट पर जो लड़की थी, वो तुम थी।”

“मैं?” ज्योति चौंकी। “मगर देहरादून तुम्हारे आने से पहले हम एक दूसरे को जानते तक नहीं थे, कभी मिले भी नहीं थे। फिर दिल्ली में तुम्हें ये सपना कैसे दिखा?”

“यही तो मैं कह रही हूँ। क्या मतलब है इसका?” आभा चिंतित स्वर में बोली।

आभा की बात सुन कर ज्योति भी सोच में डूब गई। उसके माथे पर भी चिंता की लकीरें उभर आई।

“मुझे नहीं पता। पर मुझे तुम्हारी चिंता हो रही है।”

“तुम चिंता मत करो आभा। अपनी शादी से पहले मैं उस पुल की तरफ नहीं जा रही हूँ। शादी के बाद मैं महेश के साथ बंधन झील पर उसके केबिन में जा रही हूँ, तब रास्ते में वो लकड़ी का पुल पड़ेगा। तुम ने सपने में मुझे कार में अकेली देखा था, पर उस वक्त महेश मेरे साथ होगा।” ज्योति ने आभा को आश्वस्त करने की कोशिश की।

“फिर भी मेरा कहना ये है कि तुम अपने हनीमून के लिए उस केबिन के अलावा कहीं और चली जाओ तो अच्छा रहेगा।”

“नहीं आभा। सपने आखिर सपने होते हैं। अब तक तो सारी तैयारियाँ हो चुकी है। आनन फानन में हनीमून की जगह बदलने से सब चिंतित हो जायेंगे और पता नहीं इसका क्या मतलब निकालेंगे। तुम निश्चिंत रहो, मुझे कुछ नहीं होगा।” ज्योति ने आभा को विश्वास दिलाने की कोशिश की।

कुछ देर कार में खामोशी रही। “और वो दूसरी बात क्या है जो तुम्हें परेशान किये दे रही है?” थोड़ी देर बाद ज्योति ने आभा से सवाल किया।

करण को याद कर के आभा का मन कड़वा हो गया।

“मैं सोच रही हूँ कि अगले हफ्ते मैं देहरादून छोड़ कर वापस दिल्ली चली जाऊं।” आभा ने सोच समझ कर कहा।

“अभी तो तुम्हें यहाँ आये एक हफ्ता भी नहीं हुआ है। वापस क्यों चली जाओगी? हुआ क्या है?”

“आज लंच के तुरंत बाद करण फिर मेरे ऑफिस में आया था। उसने मुझे ऑफिस में जबरदस्ती कर के, मेरी मर्जी के खिलाफ चूमा। कल रात भी उसने मुझे चूमने की कोशिश की थी, मगर कामयाब नहीं हो पाया था। आज कामयाब हो गया। मैंने पहले भी कहा है कि मैं उसे बिल्कुल पसंद नहीं करती।”

“तुम चिंता मत करो। मैं उस से बात करुँगी। अब वो तुम्हें कभी परेशान नहीं करेगा।”

“कल वो मुझे अपने साथ मेरी मर्जी के खिलाफ बाहर ले जाना चाहता है।”

“कल शादी में मिलने दो उसे। मैं बात करुँगी।” ज्योति ने कहा।

ज्योति ने कार अपने घर के सामने रोकी। आभा कार से उतरने लगी तो ज्योति ने उसका हाथ पकड़ कर उसे रोक लिया।

“आभा, मैं चाहती हूँ कि तुम यहीं, देहरादून में ही रहो। करण से डरने की जरूरत नहीं है। मैं उस से बात करुँगी और यकीन करो मेरा, वो तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा।”

“ठीक है ज्योति। मैं इस बारे में दोबारा सोचूंगी। और हाँ, कितने बजे आना है मुझे तुम्हारे घर?”

“तुम साढ़े छह बजे तक आ जाओ। सब लड़कियां इसी समय आ रही है। फिर हम सब साथ में थोड़ी देर के लिए बाहर घूमने जायेंगे और उसके बाद रात को मेरे घर पर पार्टी है।”

“ठीक है, मैं साढ़े छह बजे आ जाउंगी।” आभा ने कहा और कार का दरवाज़ा खोल कर नीचे उतर गई।

आभा ने घर में कदम रखा तो देखा कि महेश की माँ किचन के कुछ काम कर रही थी।

“आप की सहायता करने के लिए मैं अभी कपड़े बदल कर आती हूँ।”

“अरे कोई बात नहीं बेटा। वैसे भी काम करीब करीब निपट गया है। तुम तो ये बताओ कि ऑफिस में तुम्हारा दिन कैसा रहा?”

“अच्छा रहा मां जी।” आभा ने नकली मुस्कुराहट के साथ कहा और कपड़े बदलने के लिए रूम में घुस गई।

आभा कपड़े बदल कर जैसे ही हॉल में पहुंची तो सामने से आती माँ ने सवाल किया,

“पार्टी के लिए तुम्हें ज्योति के घर कितने बजे जाना है?”

“साढ़े छह बजे।”

“ठीक है बेटा। भूखे पेट मत जाना। कुछ खा लो।” कह कर महेश की माँ आभा के लिए कुछ खाने के लिए लेने के लिए फिर से किचन में घुस गई।

लगभग उसी समय, करण सूरज होटल के मैनेजर के कमरे में बैठा हुआ था।

“लड़की कितने बजे तैयार चाहिए आप को?” मैनेजर ने चापलूसी से पूछा। करण ने एक निगाह अपनी घड़ी पर डाली और बोला।

“ठीक नौ बजे मैं उसे लेने के लिए आऊंगा।” कह कर करण उठ खड़ा हुआ।

“मेरा कमीशन साहब।” मैनेजर करण को उठता देख जल्दी से अपना एक हाथ फैलाता हुआ बोला।

करण ने उस पर एक पुलिसिया निगाह डाली और फिर अपनी पैंट से दीपा स्टोर से मिले अस्सी रुपयों को निकाला और उनमे बीस रुपये और मिला कर सौ रुपये मैनेजर की फैली हुई हथेली पर रख दिए। करण फिर सूरज होटल से बाहर निकल गया।

उधर आभा ने अपने कपड़े बदली किये और ज्योति के घर जाने के लिए तैयार हो गई।

“बेटी, आज तुम बहुत चुप चुप लग रही हो। क्या बात है?” महेश की माँ ने आखिर पूछ ही लिया।

“नहीं माँ जी। कोई खास बात नहीं है। आज ऑफ़िस में काम थोड़ा ज्यादा था, इसलिए जरा थक गई हूँ।”

“पार्टी में जब ज्योति की सहेलियों से मिलोगी तो तुम्हारी सारी थकान दूर हो जाएगी। उसकी सभी सहेलियाँ बहुत अच्छी है।”

“पार्टी में काफी देर हो जाएगी माँ जी। मैं रात को ज्योति के पास ही रुक जाउंगी। महेश भी तो रात को घर नहीं आने वाले। आप और पिताजी दोनों आराम से सो जाइये। सुबह मुलाकात होगी।

लगभग उसी वक्त पर करण अपनी कार में देहरादून स्ट्रीट पहुंचा और महेश तथा आभा के घर से थोड़ी दूरी पर अपनी गाड़ी पार्क कर के उसके अंदर ही बैठा रहा। उसने अपनी जेब से शराब की फ़्लास्क निकाली और दो तीन घूँट भरे। महेश के घर की तरफ देखते हुए वो गहरी सोच में डूबा हुआ था।

=====

22

आभा ने ज्योति के घर पर जाने के लिए अपने कदम आगे बढ़ाये ही थे कि वो कुछ सोच कर रुक गई।

“क्या हुआ आभा?” महेश की माँ ने उसे ठिठकते हुए देखा तो पूछ बैठी।

“मैं तो भूल ही गई माँ जी। मुझे ज्योति के लिए कुछ तोहफ़ा लेना था, मगर मुझे याद ही नहीं रहा।” आभा अफ़सोस से बोली।

“कोई चिंता की बात नहीं बेटी। माँ है ना। तुम एक मिनट रुको, मैं अभी आती हूँ।” कह कर माँ अपने कमरे में चली गई।

उधर बाहर अपनी कार में बैठा करण महेश और ज्योति के घर पर नज़रें गड़ाए बैठा था। बीच बीच में वो अपने फ़्लास्क से शराब का घूँट भर लेता था, पर उसकी नज़रें महेश और ज्योति के घर पर टिकी रही।

तभी महेश ने देखा कि एक बड़ी सी गाड़ी ज्योति के घर के सामने आ कर रुकी और उसमे से एक एक कर के पांच खूबसूरत लड़कियां उतरी और ज्योति के घर के दरवाजे की तरफ बढ़ी। सभी लड़कियों की उम्र छब्बीस सताइस साल थी और सब के हाथों में तोहफे के पैकेट थे।

करण उन पांचों लड़कियों को जानता था, जो या तो स्कूल में या कॉलेज में उसके साथ पढ़ती थी। वे लड़कियां थी, गीता, तारा, समीरा, लीला और दीना।

पांचों लड़कियां बहुत खुश थी और चहक रही थी।

महेश के घर में, महेश की माँ जब अपने कमरे से बाहर आई तो उसके हाथ में रंगीन पेपर में लिपटा एक पैकेट था। वो पैकेट आभा को देती हुई बोली,

“इसमें एक बहुत अच्छी किताब है। ज्योति को पढ़ने का बहुत शौक है और उसे ये पुस्तक पसंद आएगी।”

आभा ने पैकेट पकड़ा और बहुत प्यार से महेश की माँ की तरफ देखा।

“कुछ कहने की जरूरत नहीं है। तुम मेरी बेटी हो। अब जाओ, देर हो रही है तुम्हें।” माँ ने प्यार से कहा।

आभा ने माँ के गाल पर चुम्बन दिया और बाहर निकल गई। करण ने देखा कि आभा महेश के घर से निकल कर ज्योति के घर की तरफ बढ़ रही थी और उसके हाथ में भी एक तोहफ़ा था। उसने ज्योति के घर का दरवाज़ा खटखटाया तो ज्योति ने तुरंत दरवाज़ा खोला और आभा के गले मिली। ज्योति आभा को ले कर घर के अंदर आ गई तो आभा ने अपने हाथ में पकड़ा पैकेट उसे थमाते हुए कहा,

“मेरी तरफ से छोटी सी भेंट।” ज्योति ने प्यार से आभा का तोहफ़ा कबूल किया और उसे वहां रख दिया, जहाँ पहले से ही पांच तोहफे पड़े थे।

सभी लड़कियां हॉल में बैठी हुई थी। ज्योति आभा का हाथ थामे वहां पहुंची और बोली,

“लड़कियों, ये है मेरी नई दोस्त आभा। फिलहाल ये महेश के घर रह रही है। और आभा, ये है मेरी बचपन की सहेलियाँ, गीता से तो तुम मिल ही चुकी हो।” ज्योति इशारा करते हुए बोली, ये दीना है, ये समीरा है, ये लीला है और ये तारा।”

ज्योति की सभी सहेलियाँ प्यार से आभा से मिली।

“मैं सब को बता दूँ की आभा मेरे ही साथ कॉलेज में है और ये डॉक्टर ब्रह्मा की सेक्रेटरी है।” ज्योति ने बताया।

“ज्योति, आभा का चेहरा तुम से इतना मिलता है कि ये तुम्हारी जुड़वाँ बहन लगती है।” लीला बोली।

“हाँ, तुम ही नहीं, मेरी पहचान वाला जो भी आभा को देखता है, यही कहता है। और अनजान लोग जब हम दोनों को साथ साथ देखता हैं तो ये मान कर चलते हैं कि हम दोनों जुड़वाँ बहने ही हैं।” ज्योति हंसती हुई बोली।

“चलो, बाहर एक चक्कर लगा कर आते है।” ये कह कर गीता खड़ी हो गई।

करण ने अपनी कार में बैठे बैठे देखा कि सातों लड़कियां बाहर आ कर बड़ी गाड़ी में बैठ रही थी। जब सब लड़कियां गाड़ी में बैठ गई तो करण ने अपनी गाड़ी का इंजन स्टार्ट किया। सभी लड़कियों के साथ बड़ी गाड़ी वहां से निकली तो करण सावधानी से उन लड़कियों का पीछा करने लगा।

लड़कियों की गाड़ी महात्मा गाँधी पार्क के बाहर रुकी और सभी लड़कियां गाड़ी से उतर कर खिलखिलाती हुई पार्क के अंदर चली गई। करण अपनी गाड़ी से नीचे नहीं उतरा और अपनी गाड़ी में बैठा बैठा ही लड़कियों के लौटने का इंतज़ार करता रहा।

महेश सावधानी से अपनी गाड़ी चलता हुआ बंधन झील पर बने लकड़ी के पुल को पार करता हुआ झील के दूसरे किनारे पर बने अपने केबिन में पहुंचा। केबिन बहुत छोटा था, पर बहुत खूबसूरत था। सामने एक बरामदा था और अंदर ग्राउंड फ्लोर पर एक हॉल और किचन था। हॉल के दूसरे कोने में एक बाथरूम था।

पहली मंजिल पर दो बेडरूम थे, जिन में से एक बेडरूम में बालकनी थी, जो झील की तरफ खुलती थी। उस बेडरूम के अंदर ही बाथरूम संलग्न था। दूसरा वाला बेडरूम थोड़ा छोटा था।

दरअसल वो ज़मीन अपने ज़माने में महेश के दादा जी ने खरीदी थी और महेश के पिता जी ने अपनी कमाई से थोड़ी थोड़ी बचत कर के वहां वो खूबसूरत घर बनाया

था। झील के किनारे पर बने ऐसे घरों को देहरादून की बोल चाल की भाषा में केबिन कहा जाता था।

महेश ने अपनी गाड़ी अंदर, बरामदे के बाहर पार्क की। उसने कार की पिछली सीट पर पड़े एक सूटकेस को उठाया और अंदर दाखिल हो गया। उस सूटकेस में उसके और ज्योति के कुछ कपड़े थे। शादी के बाद हनीमून के लिए दोनों का कुछ दिन उसकी केबिन में रहने का प्रोग्राम था।

वो सूटकेस ऊपर बड़े वाले बेडरूम में रख कर वापस नीचे आया और कार की डिक्की खोल कर उसके अंदर रखा खाने पीने का सामन एक एक कर के किचन में पहुँचाया। रात को करण की तरफ से उसी केबिन में पार्टी थी और पार्टी में दोस्तों के लिए खाने का इंतज़ाम करने की ज़िम्मेदारी करण ने महेश को दी थी।

फ्रिज में रखने वाले सामान को महेश ने फ्रिज में रखा और बाकी सामन किचन प्लेटफॉर्म पर रखा। उसके बाद महेश ऊपर बेडरूम में आ गया और नहाने के लिए बाथरूम में घुस गया।

उधर करीब एक घंटे से भी ज्यादा समय पार्क में बिताने के बाद ज्योति की सभी सहेलियाँ और आभा वापस अपनी गाड़ी के पास पहुंची। अपनी गाड़ी में बैठा करण चौकन्ना हुआ और उसने अपनी गाड़ी स्टार्ट की। वो फिर से लड़कियों का पीछा करने लगा। लड़कियां पार्क से निकलने के बाद और कहीं नहीं गई, बल्कि वापस ज्योति के घर आ गई।

उधर झील के पास वाले अपने केबिन में नहाने के बाद महेश ने सूटकेस से निकाल कर कुरता पायजामा पहना और किचन में आ कर अपने लिया चाय बनाई। महेश बरामदे में बैठ कर चाय पीने लगा। जैसे ही उसकी चाय ख़तम हुई, उसने एक गाड़ी को अपने केबिन की तरफ आते देखा।

गाड़ी केबिन के बाहर आ कर रुकी और उस में से महेश के चार दोस्त जय चौहान, जगदीश पुरोहित, मनोज और वहीद निकले। महेश सब से गले मिला और सब ने महेश को शादी की बधाई दी। करण की तरह वे चारों भी महेश के बचपन के मित्र थे। जय ने कार की डिक्की खोली और सब ने उसके अंदर रखी काफी सारी बीयर की बोतलें और नमकीन के पैकेट निकाल कर किचन में ले आये।

“फ्रिज में कुछ खास सामान नहीं है। बीयर की बोतलें ठंडी करने के लिए रख देते है।” जगदीश फर्ज़ खोलते हुए बोला।

“ये करण साला कहाँ रह गया। मुझे ये बोतलें देते हुए कहा था कि मैं इन्हें यहाँ ले आऊं।” वहीद बोला।

“पुलिस वाला है ना यार, जरूर किसी मुज़रिम के पीछे पड़ा होगा।

“नहीं, मुझे तो लगता है कि पार्टी में नाचने के लिए किसी लड़की का इंतज़ाम करने गया है।” मनोज बोला।

“ठीक है दोस्तों।” जगदीश पुरोहित खड़े होते हुए बोला। “करण को जब आना होगा, आ जायेगा। हम तो पार्टी शुरू करते हैं।”

सभी किचन में पहुंचे और सब ने एक एक बीयर की बोतल उठा ली। महेश ने कुछ नमकीन के पैकेट खोल कर, कुछ प्लेटों में नमकीन डाल कर प्लेटें हॉल के बीच पड़ी एक टेबल पर रख दी।

=====

23

रात को, साढ़े आठ बजे अपने घर में छ सहेलियों से घिरी ज्योति अपने घर के हॉल में बैठी एक एक तोहफ़ा खोल कर देख रही थी और अपनी सहेलियों को भी दिखा रही थी।

तोहफे में उसे इत्र, सौंदर्य प्रसाधन आदि मिले थे। आभा की दी गई पुस्तक सचमुच ज्योति को बहुत पसंद आई थी।

सभी लड़कियों के हाथों में बीयर के गिलास थे और वो सब बहुत आनंदित थी। उधर अपनी कार में बैठे करण ने अपनी घड़ी पर एक नजर डाली और कार से नीचे उतरा। छिपता छिपाता वो ज्योति के घर के किचन के पास पहुंचा।

करण ने देखा कि किचन की लाइट जल रही थी और स्लाइडिंग दरवाज़ा भी आधा खुला हुआ था। आधे खुले दरवाजे से उसने धीरे से किचन में प्रवेश किया। अंदर आ कर उसने किचन की लाइट बंद कर दी, ताकि हॉल से किसी लड़की की नजर उस पर ना पड़े।

करण खुद नहीं जानता था कि वो ज्योति के किचन में क्यों आया था। उसे तो पार्टी में मनोरंजन के लिए सूरज होटल से लड़की को साथ ले कर महेश के झील वाले कॉटेज भी पहुंचना था। मगर शायद लड़कियों की बातें सुनने का मोह वो संवरण नहीं कर पाया था।

करण बिलकुल किचन और हॉल के बीच वाले दरवाजे के पास अँधेरे में सिमट कर खड़ा खड़ा हॉल में लड़कियों को ताड़ रहा था। अचानक करण के कान में किसी लड़की की आवाज़ पड़ी।

“ज्योति, तुम महेश से शादी कर रही हो, पर मैंने करण की आँखों में तुम्हारे लिए हमेशा ही एक अजीब सी भूख देखी है। मुझे तो लगता है कि वो तुम्हें पाने के लिए तड़प रहा है।”

“लड़कियों, जब तुम ने सवाल कर ही लिया है तो मेरा जवाब भी सुन लो।” बीयर के असर की वजह से ज्योति थोड़ा झूमते हुए बोली। “ये सच है कि करण ने मुझ से अपने प्यार का इजहार किया था, मगर मैं तो महेश से बचपन से ही प्यार करती हूँ, इसलिए मैंने उसे मना कर दिया।”

“अच्छा किया ज्योति।” वो गीता की आवाज़ थी। “मुझे तो करण कोई ठरकी लगता है। लड़की देखी नहीं कि उसके मुंह से लार टपकने लग जाती है।”

“मुझे तो उसके छछूंदर जैसी शक्ल से ही नफरत है। कॉलेज में उस कमीने ने कई बार मेरे बदन पर इधर उधर हाथ लगाने की कोशिश की थी।” वो लीला की आवाज़ थी।

“मेरे साथ भी उसने एक बार कॉलेज में अश्लील हरकत करने की कोशिश की थी। मैंने अपने भाई को बताया तो मेरे भाई ने करण को धुन कर रख दिया था।” अबकी बार समीरा बोली।

“ठीक कहती हो लड़कियों।” ज्योति बोली। “वो मेरा दोस्त सिर्फ इसलिए है कि वो महेश का दोस्त है। वरना उस मुंहासे भरे चेहरे वाले करण से मुझे कोई लगाव नहीं है। उसकी सूरत ही ऐसी है कि कोई लड़की उसे पसंद तो क्या, घास तक नहीं डालेगी।” ज्योति ने हँसते हुए कहा और उसकी हंसी में सब लड़कियों ने उसका साथ दिया।

किचन के दरवाजे के पीछे अँधेरे में छिपे हुए करण के बदन में लड़कियों की बातें सुन कर जैसे आग सी लग गई और वो गुस्से में लाल हो गया। उसका मन तो किया कि वो अभी हॉल में जाये और एक एक लड़की के साथ बलात्कार कर के अपने अपमान का बदला ले।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने जज्बातों पर काबू पाया और तब तक उसके दिमाग में अपने अपमान का बदला लेने की योजना आ चुकी थी।

“तुझे तो मैं आज ही मजा चखा कर रहूँगा कुतिया।” करण ने अपने दिल में निश्चय किया। “महेश से तो तेरी शादी कल है, पर मैंने आज ही तेरे साथ सुहागरात नहीं मनाई तो मेरा नाम करण नहीं।”

और गुस्से में वो धीरे से किचन से वैसे ही बाहर निकल गया, जैसे आया था। ज्योति के घर से बाहर निकल कर करण अपनी गाड़ी की ओर बढ़ा। गुस्से के मारे उसका बदन कांप रहा था। ज्योति के लिए उसके मन में अब तक जो प्यार था, वो धीरे धीरे नफरत में बदल रहा था।

करण ने उसी रात ज्योति से अपने अपमान का बदला लेने के इरादे को और मजबूत तथा पक्का किया। धीरे धीरे उसका तनाव कम होने लगा और वो मन ही मन अपनी योजना को अंतिम रूप देने लगा।

‘अभी तो मेरा महेश के केबिन में पहुंचना जरूरी है।’ करण ने मन ही मन कहा और अपनी कार स्टार्ट करने के पहले उसने एक नजर ज्योति के घर पर डाली।

“साली कुतिया।” उसके मुंह से नफरत में डूबे शब्द निकले और उसने अपना फ़्लास्क निकाल कर जल्दी जल्दी शराब के दो तीन घूँट लिए। फिर उसने कार स्टार्ट कर के आगे बढ़ा दी।

अपनी कार चलाते हुए करण जब महेश के घर के सामने से गुजरा, तो लगभग उसी वक्त महेश के गैरेज में रौशनी का एक झमाका सा हुआ, जिस पर करण की नजर नहीं पड़ी या उसका ध्यान उधर नहीं गया। महेश के गैरेज के बंद दरवाजे के नीचे से रंग बिरंगी रोशनियाँ बाहर आ रही थी।

उधर महेश के केबिन में संगीत गूँज रहा था और महेश के सभी दोस्त बीयर पीते हुए नाच रहे थे। महेश को बीयर पीने का इतना शौक नहीं था, इसलिए वो बहुत धीरे धीरे और छोटे छोटे घूँट ले रहा था।

“ये साला करण का बच्चा कहाँ रह गया। मेजबान बन कर हम सब को यहाँ बुलाया, और खुद ही गायब है।” जय चौहान बोला।

“तुम तो जानते हो यार उसे। साला आज तक कभी भी, किसी भी जगह टाइम पर पहुंचा है पहले जो आज यहाँ टाइम पर पहुँचेगा?” जगदीश पुरोहित ने जवाब दिया।

और लगभग उसी समय दरवाजे पर दस्तक हुई जो संगीत के शोर में किसी ने नहीं सुनी। फिर जब दरवाज़ा भड़भड़ाया गया, तो महेश का ध्यान उस तरफ गया और उसने उठ कर दरवाज़ा खोला।

बाहर करण अपने दोनों हाथों में महंगी शराब की दो बोतलें लिए खड़ा था। उसके पीछे एक सुन्दर सी, करीब बीस साल की, गोरी चिट्टी लड़की खड़ी थी। लड़की अपने बदन पर लम्बा सा कोट पहने हुए थी।

महेश के सभी दोस्तों के चेहरे पर लड़की को देख कर मुस्कराहट आई।

“बस आज तेरी लेटलतीफी इसीलिए माफ़ की जाती है है कि तू यहाँ माल के साथ आया है।” मनोज अपनी आँखें सेकता हुआ बोला।

“यारों, ये बिजली है जो आज रात हम सब पर गिरने वाली है। ये यहाँ हमारे खास मनोरंजन के लिए है।” करण अश्लीलता से बोला। “तो तुम बाहर क्यों खड़ी हो बिजली रानी। अंदर आओ और हम पर गिरो, घायल करो हम सब को।” वहीद बोला।

करण और बिजली अंदर आये तो महेश ने दरवाज़ा बंद कर लिया। बिजली मादक अंदाज में अपने कूल्हे मटकाते हुए कमरे के बीच में पहुंची। उसके चेहरे पर कातिल मुस्कान थी।

“तुम ये कोट पहने हुए ही हम पर गिरोगी?” जय चौहान बिजली को घूरते हुए बोला।

“जरा दिखा दो बिजली इन सब को कि कोट के नीचे भड़कता हुआ शोला है।” करण ने कहा।

बिजली ने धीरे धीरे कोट के सामने लगे बटन खोले और कोट के दोनों पल्ले पकड़ कर फैलाते हुए घूम कर वहां मौजूद सभी लोगों को अपने खूबसूरत और सांचे में ढले जिस्म की एक झलक दिखाई। महेश को छोड़ कर सभी की आँखों में जैसे चमक आ गई।

कोट के नीचे बिजली ने सिर्फ दो छोटे छोटे कपड़े पहन रखे थे, जो उन अंगों को भी पूरी तरह छिपाने में सक्षम नहीं थे, जिन पर पहने गए थे। उसके बदन पर वे दो छोटे छोटे कपड़े सिर्फ नाम के लिए ही थे, वरना वो पूरी तरह नंगी ही थी।

“ये तो एटम बम है यार।” मनोज अपने सूख चुके होठों पर अपनी ज़ुबान फेरते हुए बोला।

“करण साहब को तो मैंने बता दिया है और आप लोगों को भी बता दूँ। मैं यहाँ सिर्फ नाच कर आप लोगों का मनोरंजन करने आई हूँ। मेरे साथ सहवास करने के सिवाय आप मेरे साथ कुछ भी कर सकते हैं, मुझे कहीं भी छू सकते हैं, मुझे कोई ऐतराज

नहीं है। मगर किसी को, या सब को मेरे साथ सहवास करना है तो मैं उसके अलग से पैसे लूंगी। मंजूर?"

"मंजूर है मेरी रानी, अब ये लबादा उतारो और चमकाओ बिजलियाँ।" जय पुरोहित अधीरता से बोला।

बिजली चलती हुई हॉल में एक तरफ गई और वहां जा कर उसने अपना कोट उतार कर खूंटी पर टाँग दिया। अपना कोट टाँग कर औ मादक और अश्लील तरीके से पलटी, तो महेश के दोस्तों के दिलों पर जैसे छुरियां चल गई।

उसका अंग अंग रोशनी में चमक उठा। वहीद ने हॉल के कोने में चल रहे ग्रामोफ़ोन का रिकॉर्ड बदल कर हेलन के गानों का रिकॉर्ड लगा दिया और उस गाने पर बिजली हेलन की तरह ही थिरकने लगी। महेश के दोस्तों के मुंह से जैसे लार टपकने लगी।

पहला गाना ख़तम होने के बाद मनोज ने बिजली को बीयर की पेशकश की तो दूसरे गाने पर वो बीयर पीते पीते ही थिरकने लगी।

"ये कल होने वाला दूल्हा है। तुम्हें इसका खास ख़याल रखना है।" करण ने महेश की तरफ इशारा किया।

बिजली ने महेश की तरफ देख कर एक ज़ोरदार अंगड़ाई ली और नाचती हुई कुर्सी पर बैठे हुए महेश की तरफ बढ़ी और उसकी गोद में बैठ गई। महेश ने बड़ी सभ्यता से उसको उठा कर खड़ा किया तो बिजली समझ गई थी कि वहां उसकी दाल नहीं गलने वाली थी।

उधर ज्योति के घर पर लड़कियां बीयर की चुस्कियां ले रही थी और ज्योति को सुहागरात पर अपनी तरफ से टिप दे रही थी। समीरा ने अपने पर्स में से सिगरेट का एक पैकेट निकाला और उसे लाइटर से जलाया।

"अरे, तुम कब से सिगरेट पीने लगी?" ज्योति ने पूछा।

"कहाँ यार। हम लड़कियों को कहाँ अपनी मन की करने का मौका मिलता है। अगर इस समय हमारे घर वाले हम को यहाँ बीयर और सिगरेट पीते देख ले तो हंगामा खड़ा हो जाये और घर पर पिटाई अलग से होगी। ये सिगरेट का पैकेट और भैया का है, जो मैंने आज ही के लिए पिछले हफ्ते चुराया था।' समीरा ने हँसते हुए जवाब दिया।

“कमीनी।” लीला बोली।

“वो तो मैं हूँ।” समीरा तुरंत बोली।

उसकी बात पर लड़कियों का मिला जुला ठहाका गूँज उठा। एक एक सिगरेट नीला और गीता ने भी जलाई और धीरे धीरे कश लगाने लगी।

हालांकि आभा बीयर की काफी शौक़ीन थी, मगर उस रात वो अधिक बीयर नहीं पीना चाहती थी और पूरी तरह होश में रहना चाहती थी ताकि ज्योति पर आने वाली मुसीबत से अच्छी तरह से निपट कर उसकी जान बचा ले तथा होनी को अनहोनी में बदल दे।

हॉल में बीयर की कुछ खाली बोतलें पड़ी थी। आभा ने उन खाली बोतलों को उठाया और किचन में आई। किचन में अंधेरा था, ये देख कर आभा को आश्चर्य हुआ। “किचन की लाइट शाम से ही चालू थी और वो खुद तब से किचन में कई बार आ चुकी थी, फिर लाइट किसने बंद की?” उसने सोचा।

आभा ने किचन की बत्ती जलाई बीयर की खाली बोतलें फ्रिज के पास, पीछे की तरफ रख दी। बोतलें रख कर जैसे ही वो पलटी, उसे लगा कि उसने टाइम मशीन की आवाज़ सुनी थी।

अपना भ्रम मिटाने के लिए वो किचन का स्लाइडिंग डोर खोल कर बाहर आई और महेश के गैरेज की तरफ देखा। गैरेज के बंद दरवाजे के नीचे से उसने एक पल के लिए कुछ रौशनी आती देखी, जो निश्चय ही टाइम मशीन से निकलने वाली रोशनी थी।

‘ये मशीन आज ही कैसे वापस आ गई? इसे तो कल आना था।’ आभा बड़बड़ाई और तुरंत महेश के घर की तरफ दौड़ी।

महेश के घर में पूरी तरह सन्नाटा पसरा था। शायद उसके माता पिता गहरी नींद में थे। दबे पांव चलती हुई वो किचन के स्लाइडिंग डोर तक पहुंची। उसकी उम्मीद के मुताबिक वो दरवाज़ा बंद था, मगर ताला नहीं लगा हुआ था। आभा ने धीरे से किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खोला और हुक पर टंगी गैरेज की चाबी उठाई। किचन का स्लाइडिंग डोर उसने धीरे से बंद किया और गैरेज की तरफ बढ़ी।

गैरेज के पास पहुँचते ही उसकी नजर गैरेज के ऊपर की तरफ बनी खिड़की पर पड़ी। वो खिड़की खुली थी। आभा को अच्छी तरह याद था कि महेश ने वो खिड़की

बंद की थी। उसने जल्दी से गैरेज का ताला खोला और दरवाज़ा खोल कर गैरेज के अंदर गई।

अंदर आकर जैसे ही उसने बत्ती जलाई, उसकी आँखें आश्चर्य के मारे फट गई। आभा ने देखा कि गैरेज के बीचों बीच टाइम मशीन खड़ी थी।

'ये तो सचमुच आ गई। मगर इसे तो कल आना था। मैंने इसकी वापसी की तारीख बराबर देखी थी।' आभा ने अपने आप से कहा।

आभा तो जैसे अपनी जगह बुत बन कर खड़ी थी। उसका दिमाग सुन्न हो चुका था। आखिर कुछ पलों बाद वो हिम्मत जुटा कर मशीन की तरफ धीरे धीरे बढ़ी। उसने धीरे से मशीन का दरवाज़ा खोला और भीतर झाँका। मशीन के 'डेस्टिनेशन' सेक्शन पर उसकी नजर गई तो वो 19 मई 1965 दिखा रहा था। आभा सन्न रह गई।

पूरा माजरा एक झटके में उसकी समझ में आ चुका था। वो समझ चुकी थी कि टाइम मशीन पिछले रविवार को उसे 1961 में छोड़ कर वापस 2010 में महेश गैरेज में पहुँच गई थी। मशीन को 1961 की 20 मई को वापस आना था, मगर उसके पहले ही शायद महेश के गैरेज में खड़ी वो मशीन किसी की नजर में आ चुकी थी और कोई उस मशीन में बैठ कर 1961 में आया है।

"कौन हो सकता है वो शख्स?" आभा ने अंदाजा लगाने की कोशिश की, पर सफल नहीं हुई।

आभा ने सोचा कि 'इतना तो इतना तो पक्का है कि मशीन किसी गलत आदमी के हाथों में पड़ चुकी है। पता नहीं वो कौन है, और वो क्या चाहता है?'

आभा का दिमाग तेजी से चलने लगा और वो सोचने लगी कि उसे अब क्या करना चाहिए। कई ख़याल उसके दिमाग में आये।

'जो कोई भी इस मशीन में बैठ कर यहाँ आया है, वो शायद ये जानता है कि मैं यहाँ आई हूँ और उसको पता है कि मुझे वापस कब लौटना है, क्यों कि उसने मशीन पर मेरे वापस लौटने की तारीख जरूर देखी होगी।'

'जो भी यहाँ आया है, वो जानता है कि मैं यहाँ हूँ, मगर मैं नहीं जानती कि वो कौन है जो अभी अभी 2010 से 1961 में पहुंचा है।'

'अब मेरे सामने क्या उपाय है? एक रास्ता तो ये है कि मैं अभी इसी मशीन में बैठ कर 2010 में पहुंच जाऊं और जो भी इस मशीन से अभी यहाँ आया है, वो हमेशा के

लिए यहीं, 1961 में ही रह जायेगा।'

'ऐसा करने से मेरा यहाँ आने का मकसद पूरा नहीं होगा। ज्योति की जान नहीं बचाई जा सकेगी। और हो सकता है, जो इस मशीन में यहाँ आया है, वही 1961 में ज्योति का हत्यारा हो।'

'दूसरा उपाय ये है कि मैं इस मशीन को यहीं खड़ी रहने दूँ और ज्योति की जान बचा कर तुरंत इसमें बैठ कर वापस 2010 में चली जाऊं।'

'लेकिन ये तो एक बहुत बड़ा खतरा उठाना होगा। हो सकता है वो शख्स मुझ से पहले ही इस मशीन में बैठ कर वापस चला जाये। उस सूरत में तो मैं खुद हमेशा के लिए 1961 में ही रह जाउंगी और ये मशीन हमेशा के लिए गलत हाथों में चली जाएगी।'

'एक रास्ता ये भी है कि मैं इस मशीन को खाली ही अभी यहाँ से भेज देती हूँ और दो दिन बाद की पिक अप तारीख सेट कर देती हूँ। मैं दो दिन बाद यहाँ से चली जाउंगी।'

'अगर मैंने ऐसा किया तो वो शख्स जो इस मशीन में यहाँ आया है, वो मशीन को यहाँ ना पर समझ जाएगा कि मैंने ही मशीन को यहाँ से भेजा है और वो मुझ पर हमेशा नजर रखेगा। हो सकता है कि ऐसे में जब मशीन वापस यहाँ आएगी तो वो मुझे घायल कर सकता है, मार सकता है और खुद वापस रवाना हो सकता है। इसमें तो बहुत रिस्क है।'

'फिर मैं क्या करूँ?'

सोचते सोचते आभा के सिर में दर्द होने लगा और वो ये सुनिश्चित नहीं कर पा रही थी कि वो क्या करे।

'अब मेरे सामने दो ही रास्ते बचे हैं। या तो मैं अभी 2010 में लौट जाऊं या हमेशा के लिए 1961 में ही रह जाऊं। अगर मैं अभी 2010 में लौट जाती हूँ तो ज्योति की जान बचाने का मेरा मकसद पूरा नहीं होगा।'

'क्यों ना मैं 1961 में ही रह जाऊं?' पहली बार आभा ने बहुत गंभीरता से इसके बारे में सोचा। '2010 में मेरा है ही कौन? यहाँ 1961 में इतना अच्छा वातावरण है, इतने अच्छे लोग हैं, महेश है, ज्योति है और महेश के माता पिता हैं जो मुझे बेटी की तरह प्यार करते हैं।'

जल्दी ही आभा ने निर्णय कर लिया कि उसे 1961 में ही रहना है।

‘तो अब इस मशीन का क्या करूँ?’ आभा के सामने ये बड़ा सवाल था। ‘मैं इस मशीन को यहाँ से खाली किसी भी साल में भेज सकती हूँ, पर ये फिर से किसी गलत हाथ में पड़ गई तो?’

लेकिन तुरंत ही आभा के दिमाग में इसका हल आ गया। उसने मशीन का दरवाज़ा खोला और सब से पहले इंजन स्टार्ट किया। ‘डेस्टिनेशन’ सेक्शन का डायल घुमा कर उस पर तारीख सेट की, 01 जनवरी 1061.

ऐसा आभा ने इसलिए किया कि एक हजार साल पहले, जहाँ ये मशीन उस समय खड़ी थी, शायद कोई बस्ती ना हो और सिर्फ जंगल हो। ऐसी सूरत में धूप और बरसात में खड़ी खड़ी वो मशीन शायद किसी की नजरों में आने से पहले ही ख़राब हो जाये। और अगर बदकिस्मती से ये मशीन किसी के हाथ लग भी जाती है, तो वो ये समझ ही नहीं पायेगा कि ये क्या बला है? और ऊपर से इस मशीन में अंग्रेजी में लिखे शब्द तो किसी की समझ में आने से रहे।

‘डेस्टिनेशन’ डायल के नीचे 01 जनवरी 1061 की तारीख फीड करने के बाद उसने बाकी के सभी डायल 00 पर किये। मतलब ये मशीन जहाँ पहुँचेगी, वहीँ खड़ी रहेगी। अब उसको दो काम करने थे। एक तो मशीन का ‘गो’ बटन ऊपर करना था और तुरंत ही मशीन का दरवाज़ा बंद करना था।

आभा ने अंदाजा लगाया कि हाथ से वो काम करना संभव नहीं था। उसने गैरेज में इधर उधर देखा तो उसे एक लकड़ी मिली। लकड़ी ले कर वो मशीन के पास आई, तो उसने अंदर के इंडिकेटर को देखा। मशीन जाने के लिए तैयार थी और वाइब्रेट कर रही थी।

उसने एक हाथ से मशीन का दरवाज़ा पकड़ कर उतना बंद किया कि उसमे से सिर्फ लकड़ी ही अंदर जा सके। उसने दूसरे हाथ में पकड़ी लकड़ी मशीन के अंदर डाली और उसे ‘गो’ बटन तक ले गई। एक लंबी सांस ले कर उसने ‘गो’ बटन एक झटके से ऊपर किया और जल्दी से लकड़ी बाहर निकाल कर दरवाज़ा बंद कर दिया। दरवाजे से ऐसी आवाज़ आई मानो वो लॉक हो गया हो।

इतना कर के आभा जल्दी से मशीन के पास से हटी और मशीन से दूर कोने में जा कर, सिमट कर बैठ गई। मशीन के इंजन की आवाज़ तेज हुई और साथ ही मशीन का वाइब्रेशन भी।

मशीन से लाल नीली रोशनियां निकलने लगी और मशीन ज़मीन से ऊपर उठ कर गोल गोल घूमने लगी। मशीन के घूमने की रफ़्तार बढ़ती गई और अचानक मशीन वहां से गायब हो गई। आभा ने चैन की एक लंबी सांस ली और खड़ी हो गई। एक काम तो हो चुका था, मगर सब से अधिक महत्वपूर्ण काम बाकी था, जिसके लिए वो 1961 में आई थी।

'अब मुझे यहीं 1961 में ही रहना है।' आभा ने सोचा। 'और यहीं पर अपनी बाकी की जिंदगी गुजारनी है।'

आभा को अपने फैसले पर कोई मलाल नहीं था, बल्कि वो तो खुश थी कि उसको यहाँ एक प्यार करने वाला परिवार मिल गया था। वो धीरे धीरे चलते हुए गैरेज के दरवाजे तक आई, तो उसे आभास हुआ कि उसने कम्पाउंड की दीवार के पास एक साया देखा था।

लेकिन तभी उसको याद आया कि गैरेज की खिड़की अभी तक खुली थी। वो वापस पलटी और टेबल पर चढ़ कर उसने खिड़की बंद कर दी और फिर से गैरेज के दरवाजे पर पहुंची। उसने गैरेज की बत्ती बंद कर के गैरेज को ताला लगाया और जल्दी से जा कर चाबी को महेश की किचन में हुक पर टांगा।

दौड़ कर आभा लॉन के पिछले हिस्से में पहुंची और दरवाज़ा पार कर के ज्योति के लॉन में पहुंची। उसे महसूस हुआ कि कोई दबे पांव उसके पीछे आ रहा था। उसने एक दो बार मुड़ कर देखा तो उसे अँधेरे के सिवाय कुछ और नजर नहीं आया।

आभा ज्योति के किचन में पहुंची। ज्योति फ्रिज से कुछ निकाल रही थी। उसने मुड़ कर आभा की तरफ देखा और बोली,

"अरे आभा, कहाँ चली गई थी तुम?"

एक पल के लिए तो आभा को कुछ समझ में नहीं आया कि वो क्या जवाब दे। पर तुरंत उसके दिमाग ने काम किया और वो बोली,

"मैं कहीं नहीं गई थी ज्योति। अंदर लड़कियां सिगरेट पी रही है ना, तो मेरी आँखों में सिगरेट के धुएँ की वजह से जलन होने लगी थी। इसलिए मैं बाहर की ताज़ी हवा में आ गई थी।"

"ठीक है तुम अंदर आ जाओ, मैं लड़कियों से कहती हूँ कि जिसको भी सिगरेट पीनी हो, वो बाहर लॉन में आ कर पिये।" ज्योति ने कहा।

दौड़ कर आने की वजह से आभा की साँस थोड़ी फूली हुई थी। ज्योति का ध्यान तुरंत इस बात पर गया और वो बोली,

“तुम्हारी तबियत तो ठीक है ना? क्या हुआ? हांफ क्यों रही हो?”

“नहीं, कुछ नहीं। वो जरा लॉन में थोड़ी सी दौड़ लगाई थी।” आभा हँसते हुए बोली।

फिर आभा ज्योति के साथ हॉल में आ गई।

=====

24

दूसरी तरफ, बंधन झील के किनारे महेश के कॉटेज में उसके दोस्त बीयर पर बीयर पीये जा रहे थे और बिजली का अश्लील नाच देख रहे थे। करण बीयर नहीं, शराब पी रहा था और वो भी धीरे धीरे, बहुत सावधानी के साथ कि कहीं उसे नशा ना हो जाये। अपना काम पूरा करने तक वो पूरी तरह होश में रहना चाहता था, क्योंकि वो जानता था कि ऐसा मौका उसे बाद में कभी नहीं मिलने वाला था।

बिजली को ये पता चल चुका था कि महेश पर उसका कोई जादू नहीं चलने वाला, इसलिए वो महेश के बाकी दोस्तों को लुभाने में लग गई थी। नाचते नाचते उसने अपने पहने हुए ऊपरी कपड़े को अपने तन से अलग कर दिया, तो महेश के सभी दोस्तों के मुंह से ठंडी आहें निकलने लगी।

बिजली के बदन पर अब सिर्फ एक छोटा सा कपड़ा, उसकी कमर के नीचे वाले भाग पर रह गया था। महेश और करण के सिवाय सभी लड़के पूरी तरह से उत्तेजित हो गए थे और बिजली के करीब करीब नग्न शरीर से अपने शरीर रगड़ रगड़ कर नाचने लगे।

उत्तेजित तो करण भी काफी हो चुका था बिजली को उस हालत में नाचते हुए देख कर, पर वो अपने आप पर काबू रखे हुए था। महेश के दोस्त, जो बिजली के साथ नाच रहे थे, वो सब पूरी कोशिश कर रहे थे कि बिजली अपने बदन पर मौजूद वो एकमात्र छोटा कपड़ा भी उतार दे।

पर बिजली ये अच्छी तरह जानती थी कि कैसे मर्दों को उत्तेजित कर के उनकी जेबें हल्की की जा सकती है। वो बार बार उनके हाथों से फिसल जाती थी और अपने अश्लील नाच से उनको और अधिक मदहोश, और अधिक उत्तेजित करते जा रही थी।

उधर ज्योति के घर पर भी लड़कियां ग्रामोफ़ोन पर एक रोमांटिक गाना लगा कर डांस करने लगी थी। सब के हाथों में बीयर के गिलास थे, पर कोई भी नशे में नहीं लग रही थी। वो जानती थी कि पार्टी ख़तम होने के बाद उनको अपने अपने घर जाना है, इसी लिए सभी संभाल संभाल कर पी रही थी।

बाहर लॉन अचानक चाँद की रोशनी से जगमगा उठा था क्यों कि आसमान पर छाए काले बादल ना जाने कहाँ चले गए थे। ऐसे में एक साया ज्योति की किचन के पास अचानक प्रकट हुआ और उसने धीरे से किचन में कदम रखा।

वो साया और कोई नहीं, 2010 का बूढ़ा करण था। बूढ़े करण ने किचन से झांक कर हॉल में लड़कियों को नाचते हुए देखा। उसने एक एक कर के सभी लड़कियों को पहचाना। कुछ देर तक वो यूं ही छिप कर लड़कियों को नाचते हुए देखता रहा और फिर अपने चेहरे पर दृढ़ निश्चय के भाव लिए किचन से निकल कर वापस लॉन में आ गया।

उधर महेश के कॉटेज में महेश और करण को छोड़ कर उनके बाकी चारों दोस्त बिजली की अश्लील अदाओं से इतने उत्तेजित हो चुके थे कि कभी कोई, तो कभी कोई बिजली को खींच कर बेडरूम की तरफ ले जाने की कोशिश करने लगे। बिजली के होठों पर मुस्कराहट आती और वो उनकी पकड़ से फिसल कर फिर से हॉल के बीच में आ कर नाचने लगती।

अनुभवी बिजली ये अच्छी तरह समझ चुकी थी कि उसका तीर सही निशाने पर लगा था और वे चारों मर्द उसके जाल में फंस चुके थे। बिजली जानती थी कि कुछ देर बाद उन मर्दों की ऐसी हालत हो जाएगी कि वो उसकी हर मांग पूरी करेंगे।

करण को देख कर लग रहा था कि वो बिजली का नाच देख रहा था, मगर वास्तव में वो अपनी योजना को अंतिम रूप देने में लगा हुआ था। उसकी योजना के अंतर्गत अपने चारों दोस्तों और बिजली को किसी भी तरह वहां से रवाना करना था।

उधर ज्योति के घर पर सभी लड़कियां मस्ती में नाच रही थी और आभा कुछ देर उनके साथ नाचने के बाद सोफे पर बैठ कर उन सब का नाच देखने लगी। आभा ने मानसिक रूप से अपने आप को 1961 से एक नई और शानदार जिंदगी शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार कर लिया था। अपने फैसले पर उसको कोई पछतावा नहीं हो रहा था, बल्कि वो तो खुश और रोमांचित थी।

अचानक आभा की नजर फर्श पर पड़ी बीयर की एक खाली बोतल पर पड़ी। उसने सोचा कि नाचते नाचते अगर बेध्यानी में किसी लड़की का पैर उस पर पड़ गया तो अच्छा नहीं रहेगा। लड़की गिर सकती है और अगर बोतल टूट गई तो घायल भी हो सकती है।

वो अपनी जगह से उठी और ग्रामोफ़ोन पर बज रहे गाने के साथ साथ उसके बोल गुनगुनाते हुए वो बोतल उठाई और किचन में आ गई। फ्रिज के पीछे की तरफ पड़ी दूसरी खाली बोतलों के पास वो बोतल रख ही रही थी कि उसे अपने पीछे किसी के होने का एहसास हुआ।

जैसे ही आभा पलटी, उसने 2010 वाले बूढ़े करण को अपने सामने पाया। करण को देखते ही उसका सस्पेंस ख़तम हो चुका था। उसे पता चल गया कि वो बूढ़ा करण ही था जो टाइम मशीन में बैठ कर वहां 1961 में पहुंचा था।

आभा बूढ़े करण को वहां अचानक अपने सामने देख कर डर गई थी और जैसे ही आभा ने चिल्लाने के लिए अपना मुंह खोलने की कोशिश की, करण किसी बाज की तरह उस पर झपटा और उसका हाथ जैसे ढक्कन की तरह आभा के मुंह पर चिपक गया।

अपने दूसरे हाथ में पकड़ी हुई रिवाल्वर आभा की आँखों के सामने लहराते हुए बूढ़ा करण खतरनाक स्वर में बोला,

“मुंह से बिल्कुल आवाज़ ना निकले। वरना मुझे तुम्हें हमेशा के लिए खामोश कर देना पड़ेगा और आवाज़ भी नहीं होगी, क्यों कि तुम देख ही रही हो कि रिवाल्वर पर साइलेंसर लगा हुआ है।”

आभा ने अपने छूटने के संघर्ष को त्याग कर अपना बदन ढीला छोड़ दिया, मगर उसकी आँखों में किसी भयभीत हिरणी जैसे भाव थे।

“मुझे तुम पर उस दिन से ही शक था जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था। और देखो, मेरा शक कितना सही निकला। तुम मेरा काम खराब करने यहाँ तक भी पहुंच गई। मगर मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।” वो धीरे से जैसे आभा के कान में गुर्राया।

आभा तो बस आँखें फाड़े करण को डर के मारे घूरती रही। वो चाह कर भी कुछ नहीं बोल सकती थी।

“यहाँ कोई भी आ सकता है। मेरे साथ बाहर चलो, और कोई होशियारी की तो परिणाम तुम्हें मालूम है।” करण रिवाल्वर की नाल आभा की पसलियों में गड़ाते हुए

बोला।

करण के बंधन में मजबूर आभा धीरे धीरे चलते हुए उसके साथ बाहर लॉन में आ गई। किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा खुला ही था। करण ने उसे बंद करने की कोशिश नहीं की।

लॉन में आ कर, किचन की दीवार के पास आ कर करण धीरे से बोला, "मैं तुम्हारे मुंह से हाथ हटा रहा हूँ, अगर चिल्लाना चाहती हो तो चिल्ला सकती हो, मगर उसका नतीजा तुम को पता है।" और इसके साथ ही करण ने आभा के मुंह से अपना हाथ हटा लिया, मगर उसकी रिवाल्वर तब भी आभा की पसलियों में चुभ रही थी।

"चलो।" उसने आभा को लॉन के पिछवाड़े में चलने का संकेत किया। "तुम अभी मेरे साथ वापस चल रही हो। तुम को कोई अधिकार नहीं है कि इस तरह गुज़रे ज़माने में पीछे आ कर तुम किसी भी हो चुकी घटना के साथ छेड़छाड़ करो।"

"मगर ज्योति तो तुम्हारी दोस्त है। क्या तुम ये नहीं चाहते कि मैं उसे मरने से बचाऊं? क्यों?" आभा ने पूछा।

करण ने आभा के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। वो आभा की पीठ पर अपने रिवाल्वर की नली सटा कर उसे आगे धकेल कर चलने का इशारा करता रहा।

"तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो?" अचानक आभा ने पूछा। ये पूछते हुए उसके होठों पर रहस्यमय मुस्कान थी।

"ज्यादा सवाल नहीं, चुपचाप चलती रहो।" करण रिवाल्वर की नाल आभा को चुभाते हुए बोला।

आभा के साथ उसने दोनों घरों के बीच के दरवाजे को पार किया और दोनों महेश के गैरेज के पास पहुंचे। जब नजर उठा कर करण ने चांदनी की रोशनी में गैरेज की खिड़की की तरफ देखा तो वो चौंक गया। उसके मुंह से एक भद्दी सी गाली निकली और आभा के होठों पर वही रहस्य भरी मुस्कान।

"चुपचाप यहाँ खड़ी रहना। अगर थोड़ा सा भी हिली, तो गोली मार दूँगा।" बूढ़ा करण बोला और उसने गैरेज की खिड़की खोलने की कोशिश की, पर नाकाम रहा।

उसके मुंह से फिर एक भद्दी सी गाली निकली। आभा जानती थी कि उस खिड़की को बाहर से खोलना बहुत मुश्किल काम है, पर अंदर से वो आसानी से खुल जाती है।

करण तुरंत गैरेज के दरवाजे की तरफ भागा। इस हड़बड़ाहट में वो गिरते गिरते बचा। आभा मुस्कुराते हुए करण की घबराहट का मज़ा ले रही थी। उसने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, पर नाकाम रहा क्योंकि दरवाजे पर ताला लगा था।

आभा करण की परेशानी का कारण समझ रही थी। करण वापस 2010 में जाने को लेकर चिंतित था। उसकी हालत का मज़ा लेते हुए आभा के होठों पर शैतानी मुस्कराहट थी।

"चाबी कहाँ है?" उसने गुस्से से आभा को पूछा।

"मुझे नहीं पता।" आभा ने छोटा सा उत्तर दिया।

"बता कमीनी चाबी कहाँ है? बता कुतिया।" ऐसा लग रहा था जैसे करण अपना मानसिक संतुलन खोते जा रहा है।

करण भाग कर वापस खिड़की पर पहुंचा और अपनी एड़ियां उठा कर उसने गैरेज में झाँका। हालांकि गैरेज के अंदर अंधेरा था पर करण को इतना तो नजर आ ही चुका था कि वो गैरेज खाली है। टाइम मशीन उस गैरेज के अंदर नहीं है।

"अब ये मशीन कहाँ चली गई?" बड़बड़ाते हुए करण ने परेशानी में अपने दाँत किटकिटाए।

"जल्दी बता कुतिया की औलाद की ये टाइम मशीन कहाँ गई? क्या किया तूने उसका? कहाँ छुपाया है उसे? जल्दी बता कमीनी वरना गोली मार दूँगा।" उसने अपना रिवाल्वर आभा पर तानते हुए पूछा।

आभा करण की हालत देख कर लगातार मुस्कुरा रही थी। आभा की मुस्कुराहट करण के गुस्से की आग में घी का काम कर रही थी।

"मार दो गोली।" आभा निडरता से बोली।

"फिर पता कर लेना कि टाइम मशीन मैंने कहाँ छिपाई है या कहाँ भेजी है।" "साली रंडी, बता नहीं तो सचमुच गोली मार दूँगा।" करण गुस्से में गुर्राया।

"मैंने पहले ही कह दिया है कि मार दो गोली मुझे और फिर खुद हमेशा यहीं, भिखारी की तरह 1961 में ही रहना।" आभा बोली।

करण की समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे? वो तो 1961 में वापस इसलिए आया था कि उसके कुकर्मों पर पर्दा पड़ा रहे। आभा को वो अपने साथ फिर से 2010 में इसलिए ले जाने आया था कि उसका रहस्य कभी भी उजागर ना हो, और

जो 1961 में हुआ था, उसका पता जैसे पहले किसी को नहीं चला था, वही स्थिति बरकरार रहे।

मगर आभा ने जैसे उसके पूरे प्लान पर पानी फेर दिया था। उसका 2010 में वापसी का रास्ता तो बंद हो ही चुका था, ऊपर से 1961 की सच्चाई सबके सामने आ जाने का खतरा भी था। गुस्से में भरे हुए कारण ने एक ज़ोरदार थप्पड़ आभा को मारा तो आभा नीचे गिर पड़ी। पर करण की बेबसी देख कर उसकी मुस्कान और भी गहरी हो गई थी।

उधर आभा को काफी देर से ना देखने का एहसास होते ही ज्योति ने जोर से आवाज़ लगाई,

“अरे आभा, कहाँ हो तुम? कहाँ चली गई फिर से?”

आभा की तरफ से कोई जवाब ना मिलने की वजह से वो आभा को देखने किचन में आई। ज्योति की नजर किचन के खुले हुए स्लाइडिंग डोर पर पड़ी तो उसने बाहर लॉन में आ कर आभा की तलाश में इधर उधर देखा तो उसकी नजर बरबस ही महेश के गैरेज की तरफ गई।

चांदनी की रौशनी में ज्योति ने गैरेज के पास आभा को ज़मीन पर पड़ी देखा और उसके सामने एक आदमी को खड़े देखा जिसके हाथ में शायद पिस्तौल थी। ज्योति भाग कर वापस हॉल में पहुंची और बोली,

“लड़कियों, ध्यान से सुनो। आभा मुसीबत में है। हमें उसकी सहायता करनी है।”

उधर आभा फिर से अपने पैरों पर खड़ी हुई और उसने गैरेज की दीवार पर सहारे के लिए अपनी पीठ टिका दी।

“मैंने जब से तुमको देखा है, तब से ही तुम पर फ़िदा हूँ। 2010 में तो मुझे मौका नहीं मिला, क्यों कि तुम भाग कर यहाँ 1961 में आ गई। अब भले ही मैं वापस ना जा पाऊंगा, पर तुम्हारे बदन से अपनी प्यास जरूर बुझाऊंगा।” अचानक करण का स्वर बदल गया।

करण का इरादा भाँप कर आभा के बदन में डर के मारे सिहरन की लहर दौड़ गई। वो उम्मीद कर रही थी कि ज्योति के घर में लड़कियों को उसकी गैर-मौजूदगी का पता चले तो बात बन सकती है। वो करण के चंगुल से निकल सकती है।

प्रत्यक्ष में दिखावे के लिए आभा हंसी और बोली,

“तुम कहते हो कि तुम को मौका नहीं मिला। अगर मौका मिल भी जाता तो क्या कर लेते? ताकत है तुम में कुछ करने की?”

आभा की बात सुनकर करण के गुस्से का पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। वो आभा पर झपटा और उसे चूमने की कोशिश की। उसके एक हाथ में रिवाल्वर थी और एक हाथ से वो आभा का चेहरा पकड़ कर अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पा रहा था। जैसे ही करण अपना चेहरा आगे करता, आभा या तो अपना चेहरा घुमा लेती या नीचे कर लेती।

करण का चेहरा अपने नजदीक होते ही आभा के नथुनों में वही दुर्गन्ध प्रविष्ट हुई जो दोपहर को हुई थी।

“हिल मत रंडी की औलाद, वरना गोली मार दूँगा।” करण गुर्राया।

“हाँ मार दे गोली कमीने और फिर अपने मन की मुराद मेरी लाश के साथ पूरी करना। फिर सड़ना हमेशा यहीं पर।”

“अपनी ज़ुबान बंद रख कुतिया।” “हाँ, मुझे गोली मार कर मेरी लाश के साथ कुकर्म करने में तेरा एक फायदा और है। किसी को पता नहीं चलेगा कि तू नामर्द है।”

“अभी दिखाता हूँ तुझे मेरी मर्दानगी साली रंडी की औलाद।”

करण को इतना गुस्सा आया कि वो ये भी भूल गया कि वो कहाँ था और किन परिस्थितियों में था। उसने अपनी पिस्तौल अपनी पैंट की जेब में डाली। अपने एक हाथ से उसने आभा का गला पकड़ा और उसका दूसरा हाथ आभा के सीने पर पहुंचा। करण बूढ़ा हुआ तो क्या, था तो मर्द ही।

आभा के गले पर उसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि आभा लाख चाहने पर भी हिल नहीं पा रही थी और करण का दूसरा हाथ उसकी छातियों पर मनमानी कर रहा था। करण का हाथ नीचे सरका और जैसे ही उसका हाथ आभा के पैरों के बीच पहुँचने वाला था, आभा ने अपना घुटना मोड़ कर करण की टांगों के बीच एक ज़ोरदार चोट की।

लगभग उसी समय ज्योति ने वहां पहुँच कर करण को एक ज़ोरदार धक्का दिया। इस दोहरी मार को करण सहन नहीं कर पाया और दर्द को दबाने की कोशिश में अपने दोनों हाथ अपनी टांगों के जोड़ पर दबाये ज़मीन पर ढेर हो गया।

ज्योति जल्दी से आभा के पास पहुंची और उसने आभा की बाहें थाम कर पूछा,

“तुम ठीक हो ना आभा।” धीरे धीरे खांसती हुई आभा ने अपना सिर सहमति में हिलाया।

करण ने ज़मीन से उठने की कोशिश की कोशिश की तो लीला और समीरा ने एक साथ दाएं बाएँ करण की पसलियों पर लात मारी। लड़कियों के पहने हुए सैंडल की चोट ऐसी थी कि दर्द के मारे करण कराह उठा। करण ने किसी तरह अपनी पैंट की जेब से अपना रिवाल्वर निकाला।

उधर झील के किनारे महेश के कॉटेज पर शराब के छोटे छोटे घूँट भरते करण को पहले अपनी टांगों के जोड़ पर और फिर अपनी पसलियों के दोनों तरफ दर्द का आभास हुआ। बैठे बैठे अचानक हुए उस दर्द का कारण करण को समझ में नहीं आया। उसके चेहरे पर दर्द की रेखाएं उभरी।

“तुम ठीक तो हो?” महेश ने करण को दर्द में पा कर पूछा।

“हाँ, मैं ठीक हूँ। तुम चिंता मत करो। शायद फ्रिज से कुछ निकालते या रखते वक्त कोई नस खिंच गई है।” करण को जितना समझ में आया, उसने कहा।

“ठीक है, अब वजन मत उठाना और नीचे मत झुकना।”

करण ने सहमति में सिर हिलाया।

उधर महेश के घर में, उसके गैरेज के पास करण ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकाल कर लड़कियों पर तानी। सभी लड़कियां डर के मारे आभा के पास, दीवार से लग कर खड़ी हो गई। सभी की आँखों से भय झाँक रहा था।

“अब सभी सहेलियाँ एक साथ नर्क में जाने को तैयार हो जाओ।” कह कर करण ने आभा पर निशाना साधा।

“अगर तुम्हारी ऊँगली जरा भी हिली तो तुम्हारी खोपड़ी में छेद हो जायेगा। मुझे ये तो पता नहीं तुम्हारा निशाना कैसा है,पर मेरा निशाना बहुत पक्का है। अपनी ऊँगली हिला कर ट्रिगर दबाने की कोशिश करते ही, ट्रिगर दबने से पहले ही तुम ज़मीन पर मरे पड़े होंगे।” गैरेज के पीछे से, महेश के घर की तरफ से आते हुए महेश के पिता की आवाज़ गूँजी। उनके हाथ में उनकी लाइसेंस शुदा पिस्तौल थी।

“अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो अपनी पिस्तौल फेंक दो और हाथ ऊपर करो। मैंने पुलिस को भी फोन कर दिया है और पुलिस यहाँ पहुँचती ही होगी।” महेश के पिता ने फिर कहा।

तभी फिजां में पुलिस सायरन की आवाज़ गूँजी और बूढ़े करण ने अपनी पिस्तौल ज़मीन पर फेंक दी। करण के दिमाग में एक नई योजना जन्म ले चुकी थी। सब इंस्पेक्टर विल्सन दौड़ता हुआ उन लोगों की तरफ आ रहा था।

“आभा, क्या हुआ था? कौन है ये आदमी? क्या तुम इसे जानती हो?” ज्योति ने एक साथ कई सवाल किये।

तब तक सब इंस्पेक्टर विल्सन एक हवलदार के साथ दौड़ कर वहां पहुँच चुका था। आभा के दिमाग में करण को कानून में उलझाने की योजना आ चुकी थी। महेश के पिता जी तब तक अपने पिस्तौल से बूढ़े करण को कवर किये हुए थे।

“क्या हुआ?” सब इंस्पेक्टर विल्सन ने पूछा।

“इंस्पेक्टर साहब, पहले इसे गिरफ्तार कीजिए। नीचे पड़ी हुई पिस्तौल भी इसी आदमी की है।”

विल्सन ने इशारा किया तो हवलदार ने आगे बढ़ कर करण के हाथों में हथकड़ी पहना दी। विल्सन ने करण का नीचे पड़ा रिवाल्वर अपने रुमाल की सहायता से उठा कर अपनी जेब में डाल लिया।

“हुआ क्या है?” विल्सन ने सब की ओर बारी बारी देखते हुए पूछा। सब की नज़रें आभा पर टिक गई, क्योंकि एक वही थी जो उस घटना के बारे में बता सकती थी।

“ये वही आदमी है जो ज्योति के बेडरूम में ताकझांक किया करता है। मैंने इसे लॉन में खड़े हो कर ज्योति के बेडरूम में झांकते हुए अपनी आँखों से देखा है और इसे रंगे हाथों पकड़ा है।” आभा ने कहा।

“ये लड़की झूठ बोल रही है ऑफिसर। मुझे अभी तुम्हारे सीनियर ऑफिसर से बात करनी है।” करण ने अधिकार से कहा।

“पहले मुझ से तो निपट लो। तुम्हारे जैसे के लिए तो मैं ही काफी हूँ।” विल्सन व्यंग से बोला।

“तुम इस लड़की से पूछो कि ये यहाँ क्या कर रही है?” करण ने विल्सन से कहा।

इससे पहले कि विल्सन कुछ बोलता, आभा ने कहा,

“मुझे तो ये आदमी कोई मानसिक रोगी लगता है सर। जब मैंने इसे ज्योति के घर में झांकते हुए पकड़ा और इस से पूछा कि ये कौन है, तो ये मुझ से कहने लगा कि ये

यहाँ टाइम मशीन में आया है जो इस गैरेज में खड़ी है।" आभा ने महेश के गैरेज की तरफ इशारा करते हुए कहा।

वहां मौजूद लोग ये सुन कर हंसने हुए करण की तरफ देखने लगे। करण अंदर से जल-भुन गया। आभा तो उसकी पूरी योजना पर पानी फेरने पर उतारू थी। दरअसल करण पुलिस के किसी सीनियर ऑफिसर से मिल कर अपने हक़ में यही बात कहना चाहता था कि वो ही नहीं, आभा भी टाइम मशीन का इस्तेमाल कर के 2010 से 1961 में आई है। मगर आभा ने तो उस सच्ची बात का मज़ाक बना कर रख दिया।

"क्यों मिस्टर? क्या तुम अभी भी ये कहते हो कि तुम यहाँ टाइम मशीन में बैठ कर आये हो?" विल्सन ने पूछा।

करण कुछ नहीं बोला। वो बस अपनी बेबसी पर कसमसा कर रह गया।

'कम्बख्त टाइम मशीन भी तो गैरेज में नहीं थी। पता नहीं आभा ने उसका क्या किया है?' करण ने जैसे अपने आप से ही कहा।

"ले चलो इसे पुलिस स्टेशन। दो डंडे पड़ेंगे तो अपने बारे में सब कुछ गा गा कर सुनाएगा।" विल्सन हवलदार से बोला।

"इसकी शक्ल कुछ जानी पहचानी नहीं लग रही है क्या?" गीता बोली।

"मुझे तो हर गंदी शक्ल करण जैसी दिखती है। ध्यान से देखो इसे। करण जब बूढ़ा होगा तो उसकी शक्ल भी इसके जैसी गंदी होगी।" समीरा हँसते हुए बोली।

महेश की माँ किचन के पास खड़ी वो सारा नजारा देख रही थी। उसके माथे पर चिंता की लकीरें थी। बूढ़े करण को हवलदार ने ले जा कर बाहर खड़ी पुलिस जीप में बिठा दिया और विल्सन एक एक कर के सब के बयान लेने लगा।

सब से महत्वपूर्ण आभा का बयान था। आभा ने विल्सन को बताया कि,

"मैंने उस आदमी को ज्योति के घर के अंदर झांकते हुए देखा तो मैंने उस आदमी से सवाल जवाब किया। उस आदमी ने बताया कि वो टाइम मशीन में बैठ कर वहां आया था। मैंने जब उसको जब पकड़ने की कोशिश की तो उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल ली और मुझे पिस्तौल से डरा कर यहाँ तक ले आया। यहाँ आ कर उसने मेरे साथ गंदी हरकत करने की कोशिश की तो ये सभी लड़कियां यहाँ आ

गई। उसने हम सब पर पिस्तौल तानी तो महेश के पिता जी ने आप को फोन कर दिया और इसको पिस्तौल नीचे फेंकने के लिए मजबूर किया।"

महेश पिता जी ने भी अपना बयान दर्ज कराया।

"हरीश जी और आभा जी, आप दोनों कल सुबह पुलिस स्टेशन आ कर रिपोर्ट लिखा दीजिये। मैं देखूँगा कि दूसरों के घर में ताकझांक करने और लड़की के साथ जबरदस्ती करने के जुर्म में इसे कड़ी से कड़ी सजा मिले।"

"कल सुबह हम कैसे आ सकते हैं इंस्पेक्टर। सुबह तो मेरे लड़के महेश की शादी है ज्योति के साथ।"

"ओह," विल्सन मुस्कुराते हुए बोला। "आप को बधाई हो हरीश जी, और आप को भी बधाई ज्योति जी। कोई बात नहीं, आप दोपहर बाद आ जाना।" इतना कह कर विल्सन वहां से रवाना हो गया।

"कुछ नहीं हुआ लड़कियों। जाओ और अपनी पार्टी इंजॉय करो।" महेश के पिताजी ने कहा और वो मुड़ कर अपने घर की तरफ चल दिए।

हवलदार ने बूढ़े करण को ले जा कर हवालात में बंद कर दिया। करण ने देखा कि पुलिस स्टेशन में कोई भी सीनियर अफ़सर नहीं है। सब इंपेक्टर विल्सन भी शायद करण को गिरफ्तार करने के बाद घर चला गया था।

"सुनो जरा।" करण ने हवलदार को आवाज़ लगाई।

"चुप कर साले। तुझे नहीं सोना है तो हमारी नींद क्यों खराब कर रहा है।"

"मेरी बात तो सुनो। बहुत जरूरी बात है।" करण ने जिद भरे स्वर में कहा।

"तुम मानोगे नहीं। मेरी नींद ख़राब कर के रहोगे। बोलो, क्या बोलना है?" हवलदार जम्हाइयां लेता हुआ करण के पास आते हुए बोला।

"देखो, मैं एक रिटायर्ड पुलिस अफ़सर हूँ। मुझे अभी थाना इंचार्ज से बात करनी है।"

"तुम रिटायर्ड पुलिस अफ़सर हो?" हवलदार ने उसे घूरा।

"हाँ। यकीन करो मेरा।"

"तो ये बात तुम ने विल्सन साहब को क्यों नहीं बताई?"

"सब के सामने मैं ये बात नहीं बता सकता था। समझो जरा।"

"रास्ते में तो तुम्हारे साथ सिर्फ पुलिस वाले ही थे, तब क्यों नहीं बोला?"

बूढ़े करण को हवलदार पर गुस्सा आ रहा था, मगर वो कुछ नहीं कर सकता था। मजबूर था और हवालात में बंद था। फिर भी वो हवलदार को समझाने वाले भाव से बोला,

“देखो, मेरी बात समझने की कोशिश करो। मैंने सोचा कि थाने पहुँच कर थाना इंचार्ज से बात करूँगा, मगर यहाँ पहुँच कर देखा तो थाना इंचार्ज यहाँ नहीं है। तुम सिर्फ मेरा संदेश थाना इंचार्ज या दूसरे किसी सीनियर पुलिस अफ़सर तक पहुंचा दो कि एक रिटायर्ड पुलिस अफ़सर उन से बात करना चाहता है। ये बहुत जरूरी है।”

“साबित कर सकते हो?” हवलदार पूछा।

“क्या?”

“यही कि तुम रिटायर्ड पुलिस अफ़सर हो।”

करण ने जल्दी जल्दी अपनी जेबें टटोली, मगर उन में कुछ रुपयों के अलावा कुछ भी नहीं था।

“अभी तो साबित नहीं कर सकता, मगर किसी सीनियर से बात करने के बाद मुझे कुछ साबित करने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। तुम किसी तरह मेरी किसी भी सीनियर अफ़सर से बात करा दो।”

“देखो मिस्टर। अभी तक हम ने तुम्हारे विरुद्ध कोई केस दर्ज़ नहीं किया है। लेकिन तुम्हारे ऊपर गंभीर धाराएं लगने वाली है। हत्या और बलात्कार की कोशिश का इल्जाम है तुम पर। अपनी जेब में रखे रुपये मुझे दिखाने की कोशिश मत करो, वरना ड्यूटी पर मौजूद पुलिसकर्मी को रिश्वत देने की कोशिश का केस भी ठोक दूँगा। अब चुपचाप पड़े रहो यहाँ। सुबह यहाँ सब लोग होंगे। थाना इंचार्ज भी और दूसरे सीनियर अफ़सर भी। जो बात उन से करनी हो, सुबह कर लेना।” कह कर हवलदार जाने के लिए मुड़ा।

“लेकिन?” बूढ़ा करण जैसे गिड़गिड़ाया।

“लेकिन वेकिन कुछ नहीं। अब चुप रहो। अब मुझे आवाज़ लगाई, तो मैं डंडा लगाऊंगा।” करण कसमसा कर रह गया।

करण ये अच्छी तरह जानता था कि जो वो कहना चाहता है, उस पर शायद पुलिस का कोई सीनियर अफ़सर यकीन कर ले। एक अफ़सर को करण कई तर्क दे

सकता था कि वो उसकी बात का यकीन करे। मगर उस मोटी बुद्धि वाले हवलदार से सिर खफा कर कोई फायदा नहीं था।

रात को जो भी होने वाला था, उसको रोकना अब उसके बस की बात नहीं थी। अब तो वो हमेशा के लिए 1961 में अटक गया था। अब सब से पहले तो उसको इस हवालात से निकलना था और उसके बाद अपने रहने, खाने और जीने का कोई साधन ढूंढना था। वो हवालात एक कोने में सिमट कर बैठ गया और खामोशी से सुबह होने का इंतज़ार करने लगा।

=====

25

पार्टी के दौरान घटी उस घटना ने सभी लड़कियों का मूड थोड़ा ख़राब सा कर दिया था और उसके बाद पार्टी ज्यादा देर तक नहीं चली। करीब आधे घंटे बाद गीता, लीला, दीना, समीरा और तारा घर के दरवाजे के पास खड़ी ज्योति और आभा से विदा ले रही थी।

“एक बहुत शानदार पार्टी देने के लिए गीता और और उसमे शिरकत करने के आप सभी सहेलियों को धन्यवाद।” ज्योति ने कहा।

“अगर वो घटना नहीं घटती तो शायद हम और थोड़ी देर साथ में होते। आप सब की यहाँ मौजूदगी ने मेरी जान बचा ली, वरना पता नहीं क्या होता?” आभा ने खेद प्रकट किया।

“इतना विचार करने की जरूरत नहीं है आभा। अब तुम भी तो हमारी सहेली हो। हम तो खुश हैं कि हम तुम्हारे किसी काम आ सके।” गीता बोली।

“सही कह रही हो तुम।” लीला बोली। “मुझे तो बहुत मजा आया। मेरा तो कब से सपना था कि मैं किसी ठरकी आदमी को लात मारूं। तुम्हारी वजह से आज मेरा सपना पूरा हो गया।” और वो जोर से हंसी।

सभी लड़कियों ने हंसी में उसका साथ दिया।

“बात तो तुम्हारी ठीक है लीला।” समीरा तुरंत बोली, “वास्तव में उसे लात मार कर बहुत मज़ा आया।”

“ठीक है ज्योति, आभा। अब इजाज़त दो।” गीता ने कहा।

“ठीक है फिर। सुबह मिलते हैं मंदिर में शादी पर।” ज्योति बोली।

फिर सब लड़कियां आपस में गले मिली और ज्योति की पांचों सहेलियाँ गाड़ी में बैठ कर वहां से रवाना हो गई। सब लड़कियों के जाने के बाद ज्योति और आभा को घर व्यवस्थित करने में करीब पंद्रह मिनट और लगे।

“तुम्हारा पजामा सूट तो महेश के घर में रह गया होगा, मैं अपना पजामा सूट देती हूँ तुम्हें सोते वक्त पहनने के लिए।” ज्योति ने कहा और अलमारी से एक पजामा सूट निकाल कर आभा को दिया।

“तुम क्या पहनोगी?” आभा ने पूछा।

“मैं तो अपना फेवरेट गाउन ही पहनती हूँ रोज़ रात को। ये महेश ने मुझे गिफ्ट किया था।” कहते हुए ज्योति ने अलमारी से अपना पारदर्शी गाउन निकाल कर आभा को दिखाया।

“तुम यहीं सोना पसंद करोगी मेरे साथ, या दूसरे बेडरूम में सोना चाहती हो।” ज्योति ने पूछा।

“नहीं, तुम यहाँ आराम से अकेली सो जाओ। मैं दूसरे बेडरूम में सो जाउंगी। मुझे जल्दी नींद नहीं आने वाली और मेरे करवटें बदलने से तुम्हारी नींद में खलल पड़ेगा।” आभा बोली।

“ठीक है। वहां बिस्तर लगा हुआ है और किसी चीज की जरूरत है तो बोलो।”

“नहीं ठीक है। गुड नाइट। कुंवारेपन की आखिरी रात मुबारक हो।” आभा ने कहा और मुस्कुराती हुई ज्योति के कमरे से बाहर निकल गई।

दूसरे बेडरूम में आ कर आभा ने ज्योति का पजामा सूट पहना, तो वो उसे फिट आया। आभा के लिए तो वो रात क़यामत की रात थी। भविष्य आभा को पता था। उस रात ही ज्योति की जान बचानी थी आभा को। अपने बिस्तर पर लेटी आभा सोच रही थी कि अभी तक तो ऐसा कोई चांस नहीं लग रहा था कि ज्योति को गाड़ी में बैठ कर झील की तरफ जाना पड़े।

लेकिन आभा को यकीन था कि हालत जरूर ऐसे बनने वाले थे कि ज्योति को अपनी गाड़ी में बैठ कर झील की तरफ जाना पड़ेगा। वही मौका था ज्योति की जान बचाने का।

‘ज्योति को किसी भी तरह, किसी भी हालात में झील की तरफ जाने से रोकना होगा, तभी उसकी जान बच पायेगी।’ आभा ने सोचा।

उधर दूसरी तरफ महेश के कॉटेज में महेश और करण को छोड़ कर उनके चारों दोस्त बिजली के लगातार अश्लील नाच को देख कर अपने आप को रोक नहीं पा रहे थे। वे चारों तो जैसे बिजली के साथ सहवास करने के लिए मरे जा रहे थे।

बिजली भी उन लोगों का इरादा भाँप चुकी थी। उसका तो काम भी यही था कि वो इस काम के अतिरिक्त पैसे कमा सके।

"मेरे ख़याल से अब मुझे चलना चाहिए करण साहब। मुझे घर तक कौन छोड़ेगा?" बिजली बोली।

"रात को यहीं रुक जाओ ना मेरी जान। हम सुबह तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देंगे।" मनोज बिजली की तरफ आँख मारते हुए बोला।

"मुझे कोई ऐतराज नहीं है साहब। आप चाहते हैं तो मैं रुक जाउंगी। मगर रात को मैं यहाँ रुक कर क्या करुँगी?"

"रात को यहाँ रुक कर तुम हमारी रात और रंगीन कर सकती हो।" जय चौहान बोला।

"कमीने, तुझे अकेले अपनी ही पड़ी है। हम क्या तुम्हारे कमरे के बाहर बैठ कर भजन करेंगे?" जगदीश पुरोहित बोला।

"चिंता क्यों करते हैं साहब।" बिजली ने मर्दों को अपने जाल में फंसते हुए देख कर कहा। "बिजली में इतना दम है कि वो आप सब की सेवा कर सकती है। बारी बारी, या एक साथ, जैसे आप चाहें। मगर मैंने पहले ही कह दिया था कि इस सेवा के अलग से पैसे लगेंगे।" कहते हुए बिजली के चेहरे पर व्यापारिक मुस्कान थी।

मनोज ने आशा भरी नजरों से महेश की तरफ देखा। मगर इस से पहले कि महेश कुछ बोल पाता, करण बोला,

"सालों, शर्म नहीं आती तुम सबको। तुम लोगों को बिजली के साथ अगर सोना है तो कोई और जगह देखो। यहाँ ये सब नहीं चलेगा।"

"क्यों, तुम्हारा मन नहीं है क्या?" वहीद बोला।

"नहीं, इस काम में मैं तुम लोगों के साथ नहीं हूँ। तुम चारों बिजली को कहीं और ले जाओ और उसकी जो फीस है वो दे देना उसको।" करण निर्णायक स्वर में बोला।

करण ने ये सब अपनी योजना के तहत कहा। वो नहीं चाहता था कि उसके दोस्तों में से कोई भी रात को वहां महेश के कॉटेज में रुके। इस से उसकी योजना खटाई में

पड़ सकती थी। महेश खुद भी नहीं चाहता था कि उसके कॉटेज में ऐसा कोई काम हो। वो तो मन ही मन में करण का शुक्रगुज़ार था कि उसने समस्या हल कर दी।

“ठीक है, मेरे घर पर कोई नहीं है।” वहीद जल्दी से बोला। “वहीं चलते हैं। कौन कौन आ रहा है मेरे और बिजली के साथ?’ मनोज, जय चौहान और जगदीश पुरोहित ने तुरंत अपने अपने हाथ खड़े किये।

“तो चलो फिर।” वहीद ने बिजली की कमर में हाथ डाल दिया और उसको दरवाजे की तरफ घसीटते हुए बोला।

“अरे, रुको एक मिनट।” बिजली ने छिटक कर दूर होते हुए कहा, “मुझे मेरा कोट तो लेने दो।” और उसने खूँटी पर टंगा अपना कोट और कुर्सी पर पड़ा अपना ऊपरी छोटा वस्त्र, अपनी अंगिया उठाई।

जब उसने अपनी अंगिया पहनने को कोशिश की तो वहीद ने झपट कर दोनों कपड़े उस से छीन लिए और बोला, “जब इनको फिर से उतारना ही है, तो पहन क्यों रही हो? ऐसे ही चलो। रात बहुत हो गई है, इसलिए रास्ते में कोई नहीं मिलेगा।” बिजली ने कुछ नहीं कहा और वो उनके साथ हो ली।

“सुबह इसको इसके घर छोड़ देना और इसके पूरे पैसे दे देना।” पीछे से करण चिल्लाया। बिजली चारों के साथ गाड़ी में बैठ कर वहां से रवाना हो गई।

“दोनों मिल कर थोड़ी सी सफाई कर देते हैं। सुबह समय नहीं मिलेगा।” करण बोला।

“थैंक्स करण।” महेश बोला, “मेरे कुछ भी कहने से पहले ही तुम ने समस्या से निपट लिया।”

“अरे, इसमें थैंक्स की क्या बात है? मैं क्या अपने दोस्तों को जानता नहीं? मुझे पता था कि साले सब के सब ठरकी हैं और लड़की देख कर उन से रहा नहीं जायेगा। इसलिए मैंने पहले ही सोच रखा था कि मुझे क्या करना है।” करण बोला।

लगभग पंद्रह मिनट में उन दोनों ने मिल कर हॉल को पूरा साफ़ कर दिया।

“तुम अपने बेडरूम में आराम से सो जाओ, सुबह तुम्हारी शादी है। मैं दूसरे बेडरूम में सो जाता हूँ।”

“ठीक है। गुड नाइट।” महेश ने कहा और अपने बेडरूम में आ गया।

करण महेश के सामने वाले बेडरूम में आ गया। अब उसको इंतज़ार था महेश के सोने का, ताकि वो अपनी योजना पर अमल कर सके। अपने पूरे कपड़े और जूते पहने हुए ही वो पलंग पर लेट गया। उसके कानों में ज्योति के घर में पार्टी के दौरान ज्योति और उसकी सहेलियों द्वारा खुद के बारे में कहे गए अपमान-जनक शब्द गूँजने लगे। उसकी आँखें गुस्से से लाल हो गई।

एक घंटा बीत गया। आभा ने उठ कर, ज्योति के बेडरूम का दरवाज़ा खोल कर देखा कि ज्योति गहरी नींद में सो रही थी।

'ऐसा क्या होने वाला है कि ज्योति को झील की तरफ जाना पड़ेगा?' वो सोचने लगी। 'मुझे सोना नहीं चाहिए और रात भर ज्योति की निगरानी करनी चाहिए। लेकिन अगर मेरी आँख लग गई और ज्योति चुपके से घर से निकल गई तो?'

ये ख़याल मन में आते ही वो बिस्तर से खड़ी हो गई। उसने घर के दरवाजे पर अंदर की तरफ से ताला लगाया और किचन का स्लाइडिंग दरवाज़ा भी अच्छी तरह से बंद कर दिया। इसके बाद वो आ कर अपने बिस्तर पर लेट गई। बीयर के प्रभाव से ना चाहते हुए भी आभा की आँख लग गई।

महेश के कॉटेज के बेडरूम में करण बिस्तर से उतरा और दबे पांव महेश के बेडरूम तक पहुंचा। उसने धीरे से दरवाज़ा खोल कर देखा तो महेश को गहरी नींद में पाया। धीरे धीरे सीढ़ियां उतरता हुआ वो हॉल में आया और वहां पड़ी शराब की एक आधी खाली बोतल उठाई। उसने दो घूँट भरे और बोतल के अपनी जैकेट की जेब में डाल लिया।

दबे पांव चलता हुआ वो दरवाजे तक पहुंचा और दरवाज़ा खोल कर बाहर आ गया। अपने पीछे उसने दरवाज़ा भिड़ा दिया। लॉन पार कर के वो बाहर आया। अपनी योजना पर अमल करने के लिए वहां आते वक्त ही अपनी गाड़ी महेश के कॉटेज से थोड़ी दूर ही पार्क की थी, ताकि गाड़ी स्टार्ट होने की आवाज़ सोते हुए महेश के कानों तक ना पहुंचे।

अपने कार में बैठ कर उसने कार का दरवाज़ा धीरे से बंद किया और गाड़ी स्टार्ट की। धीरे धीरे गाड़ी चलाते हुए वो गली से निकल कर सड़क पर आया और फिर उसने अपनी गाड़ी पूरी रफ़्तार से ज्योति के घर की तरफ दौड़ा दी। शराब की बोतल अपनी जैकेट की जेब से निकाल कर अपने पैरों के बीच फंसाई और गाड़ी चलते हुए बीच बीच में शराब के छोटे छोटे घूँट भरने लगा।

अपमान और बदले की आग में उसका बदन सुलग रहा था और गुस्से से उसकी आँखें लाल हो रही थी। दाँत पर दाँत दबाये वो ड्राइव करता रहा।

ज्योति के घर में ज्योति और आभा दोनों सोइ पड़ी थी और झील वाले कॉटेज में महेश गहरी नींद में था।

अपनी उम्मीद से जल्दी करण ज्योति के घर के पास पहुंचा, क्यों कि रात को रास्ते सुनसान थे और वो कार को पूरी रफ़्तार के साथ दौड़ाता हुआ वहां पहुंचा था। ज्योति के घर से थोड़ी दूर, उसने अपनी कार वहीँ पार्क की, जहाँ कि वो ज्योति के घर में झाँकने के लिए आते समय करता था।

शराब की बोतल से उसने दो तीन बड़े बड़े घूँट भरे और बोतल पर ढक्कन लगा कर साथ वाली सीट पर रख दिया। अपनी जैकेट के अंदर की तरफ बने जेब से उसने एक मास्क निकाला और उसे पहना। मास्क से उसका पूरा चेहरा ढँक गया था, सिर्फ उसकी लाल लाल दो आँखें ही नजर आ रही थी।

इसके बाद करण अपनी कार से उतरा और धीरे धीरे दबे पांव ज्योति के घर की तरफ बढ़ा। ज्योति के घर का देखते ही उसे पता चल गया कि वो अंदर से बंद है। वो किचन के स्लाइडिंग दरवाजे पर आया। वो भी बंद था। उसने अपनी जेब से चाबियों का गुच्छा निकला और दरवाज़ा खोलने में जुट गया।

तीन चार मिनट की मेहनत के बाद करण ने वो दरवाज़ा आसानी से खोल लिया। धीरे धीरे चलते हुए पहले उसने किचन पार की और फिर ज्योति के बेडरूम दरवाजे पर आ गया। उसने हल्का सा धक्का दिया तो दरवाज़ा खुलने लगा। मास्क के अंदर उसके होठों पर गंदी सी मुस्कान रेंगी।

नाइट बल्ब की रौशनी में उसने देखा कि ज्योति बिस्तर पर गहरी नींद में थी। उसके बदन पर हमेशा वाला पारदर्शी गाउन था जो उसके पैरों पर से घुटनों के ऊपर सिमटा हुआ था। गाउन के अंदर ज्योति ने कुछ नहीं पहन रखा था।

करण की आँखों में वासना के डोरे तैरने लगे और वो ज्योति के साथ सहवास के लिए आतुर हो गया। इस बात से कतई अनजान कि आभा भी उस घर में मौजूद थी, दबे पांव चलता हुआ करण सोती हुई ज्योति के पास पहुंचा।

उसने अपनी पिस्तौल निकाल कर बिस्तर पर रखी और अपने जूते खोले। अपने जुराबों को उतारने की उसने कोई कोशिश नहीं की। फिर उसने अपनी पैंट के बटन खोले और अपनी पैंट को नीचे गिर जाने दिया। उसने अपनी अंडरवियर भी नीचे की

और पैंट के साथ उसे भी अपने बदन से अलग कर के एक तरफ डाल दिया। उन्हीं कपड़ों के ऊपर उसने अपना शर्ट निकाल कर डाला।

करण अब पूरी तरह नग्न हो चुका था। कपड़े के नाम पर बस उसके चेहरे पर मास्क था। उसने झुक कर ज्योति के बदन को सूंघा। फिर उसने ज्योति के गाउन की डोरी खोल कर उसके पल्ले जितने हो सकते थे, अलग किये।

ज्योति अपनी पीठ के बल सोइ हुई थी। करण ज्योति के नग्न बदन को देखता हुआ मास्क के अंदर अपने होठों पर ज़ुबान फिराने लगा।

अपने हाथ में पिस्तौल ले कर करण पलंग के ऊपर चढ़ गया और अपने दोनों पैर ज्योति के दोनों तरफ रखते हुए अपने घुटनों पर आया और अपने दोनों हाथ ज्योति के कन्धों के दोनों तरफ रखे। करण की इस हरकत से ज्योति की आँख खुल गई और अपने आप पर किसी को झुका पा कर जैसे ही उसने चीखने के लिए मुंह खोला, करण ने अपने हाथ में थमी हुई पिस्तौल की नली उसके खुले मुंह में डाल दी। डर के मारे ज्योति की आँखें चौड़ी हो गई।

ज्योति को आभास हो चुका था कि जो आदमी उस पर सवार था, वो पूरी तरह से नंगा था और उसके खुद के गाउन की डोरी खुली हुई थी। वैसे भी उस गाउन का ज्योति के बदन पर होना या ना होना बराबर था।

मास्क पहने होने की वजह ज्योति पहचान नहीं पाई कि वो आदमी कौन था। वो क्या चाहता था, ये तो जाहिर था। ज्योति ने तुरंत अपने पैर भींच लिए। पिस्तौल की नली ज्योति के मुंह में डाले करण उसके पांव चौड़े करने की कोशिश करने लगा। ज्योति की आँखों में आंसू छलक आये।

उधर हवालात के फर्श पर लेटे बूढ़े करण को अपने बदन में उत्तेजना का एहसास हुआ और उसने आनंद से अपनी आँखें बंद कर ली।

एक तो ज्योति ने अपने पैर भींच रखे थे और ऊपर से वो इतना दाएं बाएँ हिल रही थी कि करण अपनी कोशिश में सफल नहीं हो पा रहा था।

दूसरे बेडरूम में सोइ आभा को ऐसा लगा जैसे कोई उसके पैरों को जबरदस्ती फैलाना चाहता था। उसे ऐसा भी लगा था कि उसके मुंह में कुछ घुसा हुआ है। घबरा कर, हड़बड़ा कर आभा ने अपनी आँखें खोली। उसे आभास हुआ जैसे कोई आदमी उसके साथ जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहा था।

आभा को तुरंत कुछ ख़याल आया और उसके मुंह से निकला

“ज्योति, ज्योति मुसीबत में है।”

और वो एक झटके से पलंग से उतरी और ज्योति के बेडरूम की तरफ दौड़ी। ज्योति के बेडरूम का दरवाज़ा खुला हुआ था और अंदर जो दृश्य उसने देखा तो आभा अपनी जगह जड़ हो गई।

उसने देखा कि ज्योति के ऊपर चढ़ा हुआ एक नंगा आदमी, जिसने अपने चेहरे पर एक नकाब पहन रखा था, ज्योति के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश कर रहा था। ज्योति छटपटा कर उसके चंगुल आज़ाद होने की पूरी कोशिश कर रही थी, मगर सफल नहीं हो पा रही थी।

तभी आभा की नजर उस आदमी के हाथ में थमी पिस्तौल पर पड़ी, जिसकी नली उसने ज्योति के मुंह में घुसाई हुई थी। ज्योति की इज़्ज़त और जान दोनों खतरे में थी। आभा को जो करना था, जल्दी करना था। तब तक उस आदमी या ज्योति की नजर आभा पर नहीं पड़ी थी।

“कमीने.....” आभा जोर से चिल्लाई और ज्योति के पलंग की तरफ दौड़ी। अचानक वहां किसी और की मौजूदगी जान कर करण थोड़ा सा घबराया, थोड़ा सा हड़बड़ाया। उसका ध्यान आवाज़ की तरफ गया तो मौके का फायदा उठाते हुए ज्योति ने करण की कलाई अपने दोनों हाथों से पकड़ी और उसका हाथ खींचा तो पिस्तौल की नली ज्योति के मुंह से निकल गई।

ज्योति ने अपनी पूरी ताकत से उसकी कलाई उमेठ कर पिस्तौल की नली को छत की तरफ कर दिया। लगभग उसी समय, आभा ने साइड टेबल पर रखी स्टील की अलार्म घड़ी उठाई और अपनी पूरी ताकत से नकाबपोश के सिर पर सामने की तरफ पर दे मारी।

करण के हाथ से पिस्तौल छूट गई और उसने अपने दोनों हाथों से अपना सिर थाम लिया। ज्योति ने उसका मास्क पकड़ा और उसे जोर का एक धक्का दिया। वो औंधे मुंह जा कर नीचे ज़मीन पर पड़ा। जैसे ही उसने अपना चेहरा उठाया, ज्योति और आभा दोनों ये देख कर चौंक गई कि वो करण था और उसके ललाट पर बने घाव से खून बह रहा था।

उधर हवालात में अपनी उत्तेजना से आनंदित होते बूढ़े करण को लगा मानो उसके सिर सामने के हिस्से पर किसी ने जोर से वार किया था। उसकी सारी उत्तेजना ना

जाने कहाँ रफूचक्कर हो गई और उसके चेहरे पर भयंकर दर्द हुआ। उसका हाथ अपने ललाट पर गया तो उसने महसूस किया कि उसके सिर से खून बह रहा है।

बूढ़े करण को तो ये समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसे चोट लगी तो लगी कैसे? उसके आसपास तो कोई नहीं था जो उसको चोट पहुंचा सकता। वो दोनों हाथों से अपना सिर थामे बैठे रहा।

"करण तुम?" ज्योति आश्चर्य और गुस्से से चिल्लाई। करण बेशर्मों की तरह नंगा ही खड़ा हुआ। उसने अपने कपड़े पहनने की भी कोशिश नहीं की। उसे नंगा देख कर दोनों लड़कियों को शर्म आ रही थी पर करण के चेहरे पर एक मुस्कान आई।

चेहरे पर बहता खून और ऊपर से उसकी मुस्कराहट, ये दोनों चीजें करण के चेहरे को बहुत खतरनाक बना रही थी। नाइट बल्ब की रौशनी में वो किसी डरावने प्रेत की तरह लग रहा था।

"तो तुम भी यहाँ हो?" उसने आभा की तरफ देखते हुए कहा। "मुझे पहले पता होता तो ये कोशिश मैं पहले तुम्हारे साथ करता।" वो बेशर्मी से बोला।

"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे साथ ये हरकत करने की?" ज्योति बोली।

उसको अभी भी यकीन नहीं हो रहा था कि करण उसका दोस्त था, फिर भी उसने उसके साथ ऐसी नीच और गिरी हुई हरकत की।

"जब तुम अपनी सहेलियों के बीच बैठ कर मेरे बारे में अपमान भरी बातें कर और सुन सकती हो, तो मुझ से तुम्हें ऐसी ही उम्मीद होनी चाहिए।"

करण की बात सुन कर आभा और ज्योति दोनों चौंक पड़ी।

"मतलब तुम हम लड़कियों की पार्टी में छिप कर हमारी बातें सुन रहे थे। मुझे नहीं पता था कि तुम इतने कमीने हो, वरना तुम से दोस्ती करना तो दूर, मैं पर थूकती भी नहीं।" ज्योति बोली।

"मैं तुम्हें बचपन से चाहता हूँ ज्योति, मगर तुम ने मेरे प्यार का अपमान किया और महेश का हाथ पकड़ लिया।" करण थोड़ा भावुक हो कर बोला।

"तुम्हारी इस हरकत के बारे में मैं महेश को बताउंगी और तुम्हारी कंपलेंट पुलिस में भी करुँगी। फिर मैं देखती हूँ कि पुलिस अफ़सर होने के बावजूद तुम कैसे जेल की हवा खाने से बचते हो। जेल तो मैं तुम्हें भिजवा कर रहूँगी।" ज्योति ने कहा।

करण के चेहरे पर भूचाल सा नजर आया।

“नहीं, तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी।” उसने खतरनाक स्वर में कहा।

“मैं ऐसा ही करुँगी और अभी करुँगी। मैं अभी केबिन में जा कर महेश को तुम्हारी करतूत बताती हूँ।” ज्योति ने कहा और पलंग से नीचे उतरी और अपने गाउन की डोरी बाँधी।

करण ने गुस्से में आ कर ज्योति के चेहरे पर एक ज़ोरदार तमाचा मारा तो ज्योति फिर से पलंग पर गिर पड़ी। उसकी आँखों में आंसू छलछला आये। करण ने नीचे पड़ी अपनी पिस्तौल उठाई और ज्योति पर तान दी।

“कमीनी.... साली कुतिया। मैं तुम को जिन्दा छोडूंगा तो तुम महेश और पुलिस को बताओगी ना।”

उस हड़बड़ाहट में करण भूल सा गया था कि आभा भी वहां थी और उसके पीछे ही खड़ी थी। करण ने जैसे ही ज्योति पर पिस्तौल तानी, आभा ने सोच लिया था कि उसे क्या करना है।

“अभी तो तुम कह रहे थे कि तुम मुझ से प्यार करते हो। हिम्मत है तो चलाओ गोली। मैं भी देखती हूँ कि जिसको मैंने अपना सच्चा दोस्त माना, वो और कितना नीचे गिर सकता है।” ज्योति फिर से खड़ी होती हुई बोली।

“ये सच है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ। मगर अब ये मेरी मजबूरी है कि मैं तुम्हें गोली मारुं। मगर तुम चिंता मत करो, मैं यहाँ से सीधा झील वाले केबिन में जाऊंगा और महेश को भी गोली मार दूँगा। जो मैं तुम्हारे साथ नहीं कर सका, वो मैं आभा के साथ करूँगा और बार बार करूँगा। कहाँ है आभा?” उसने पीछे मुड़ कर आभा की तरफ देखना चाहा तो उसकी पिस्तौल का निशाना ज्योति पर से पल भर के लिए हटा।

“साले, कुत्ते की औलाद।” आभा चिल्लाई और उसने करण को एक जोर का धक्का दिया। करण के हाथ से पिस्तौल छूट कर दूर जा गिरी और वो खुद भी बेडरूम की खिड़की के पास जा कर गिरा।

“चलो आभा, महेश की जान खतरे में है। इस से पहले कि ये कमीना वहां केबिन में पहुंचे, हमें वहां पहुँच कर महेश को सावधान करना है।” ज्योति ने कहा और आभा का हाथ पकड़ कर बाहर की ओर दौड़ी।

बेडरूम से निकल कर उन्होंने दरवाज़ा बाहर से बंद किया और हॉल में दीवार पर टंगी अपने कार की चाबी उठाती हुई आभा का हाथ पकडे हुए दरवाजे की तरफ

दौड़ी।

“इधर से नहीं, किचन से।” अचानक आभा ने उसका हाथ पकड़ कर भागती हुई ज्योति को रोका। “दरवाजे पर मैंने अंदर से ताला लगा दिया था और चाबी बेडरूम में है। किचन से निकलो।” उसने जल्दी से कहा और वे दोनों किचन के के स्लाइडिंग दरवाजे को पार कर के सामने की तरफ दौड़े, जहाँ ज्योति की कार खड़ी थी।

अचानक आभा को ख़याल आया कि बंधन झील के पुल पर ज्योति के जाने की परिस्थिति बन चुकी थी और करण किसी भी तरह वहां पहुँच कर ज्योति पर जानलेवा हमला करने वाला था। आभा की समझ में आ चुका था कि क्या होने वाला है।

‘मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगी ज्योति।’ आभा ने अपने मन में दृढ़ निश्चय किया।

ज्योति जब कार के पास पहुंची तो आभा ने अचानक कहा,

“महेश के पापा को साथ ले लेते हैं, उनके पास पिस्तौल भी है।”

“इतना समय नहीं है आभा। वो कमीना जल्दी ही किसी तरह बाहर निकल आएगा। हमें बस उसके केबिन तक पहुँचने से पहले पहुंचना है। हमें वहां ना पा कर करण हमें यहाँ की सड़कों पर ढूंढेगा और हम वहां से निकल कर किसी पुलिस स्टेशन पहुँच जायेंगे। जल्दी करो, गाड़ी में बैठो।” ज्योति दरवाज़ा खोल कर ड्राइविंग सीट पर बैठते हुए बोली।

आभा का दिमाग अचानक काम किया और उसने ज़मीन पर पड़ा एक पत्थर उठाया और महेश के मम्मी पापा के बेडरूम की खिड़की पर दे मारा। पत्थर सही निशाने पर लगा।

पीछे, ज्योति के बेडरूम में बंद करण ने अपने कपड़े पहने और अपनी पिस्तौल उठा कर दरवाजे पर पहुंचा तो उसने दरवाज़ा बाहर से बंद पाया। अचानक उसे बाहर किसी गाड़ी के स्टार्ट होने की आवाज़ सुनाई दी। सिर पर चोट लगी होने के बावजूद करण जैसे पुलिस वाले के लिए वो दरवाज़ा खोलना ज्यादा मुश्किल नहीं था। उसने दरवाजे के दोनों हैंडल पकड़ कर अंदर की ओर पूरा दम लगा कर खींचा और दो तीन झटके दिए। दरवाजे की कुण्डी उखड़ गई और दरवाज़ा खुल गया। करण तुरंत बाहर की ओर भागा।

पुलिस स्टेशन की हवालात में बंद बूढ़े करण ने महसूस किया कि उसके ललाट से खून बहना तो बंद हो गया था, मगर दर्द अभी भी था। उसने अपनी जेब से रुमाल

निकाल कर अपने घाव पर बांध लिया तथा अपनी आँखें बंद कर ली।

महेश के मम्मी पापा अपने बेडरूम में गहरी नींद में थे। अचानक खिड़की का शीशा टूटने की आवाज़ से दोनों की आँख खुल गई। महेश के पापा जल्दी से खिड़की पर पहुंचे और बाहर झाँका। उनको गाड़ी में बैठ कर जाती हुई ज्योति और आभा की एक झलक मिली। तभी उन्होंने किसी को ज्योति के घर से किसी आदमी को उसी दिशा में भागते हुए देखा जिधर ज्योति की गाड़ी गई थी। किसी अनिष्ट की आशंका से उन्होंने अपनी पिस्तौल उठाई और अपने मोटरसाइकल की चाबी उठा कर बाहर की तरफ भागते हुए अपनी पत्नी से बोले।

“ज्योति और आभा शायद किसी मुसीबत में है। मैं उनके पीछे जा रहा हूँ। तुम मेरे फोन का इंतज़ार करना।”

=====

26

ज्योति जितना कंट्रोल कर सकती थी, उतनी रफ़्तार से अपनी कार को बंधन झील की तरफ दौड़ा रही थी। उसकी आँखों से तब भी आंसू बह रहे थे।

“मुझे अभी भी यकीन नहीं होता कि करण इतना कमीना निकलेगा और मेरे साथ ऐसी शर्मनाक हरकत करेगा।” अचानक ज्योति नफरत से बोली।

आभा ने कोई जवाब नहीं दिया। वो गहरी सोच में डूबी हुई थी। करण ज्योति के घर से निकला और तेजी से दौड़ता हुआ अपनी कार तक पहुंचा। कार में बैठ कर उसने यू टर्न लिया और अपनी कार को उसी दिशा में पूरी रफ़्तार के साथ दौड़ा दिया, जिस तरफ ज्योति की कार गई थी।

उसने पास की सीट से शराब की बोतल उठाई और दो घूँट मारे। शराब की थोड़ी मात्रा पेट में जाते ही जैसे उसमे नई शक्ति का संचार हुआ। उसे किसी भी हाल में ज्योति और आभा को बंधन झील के पार महेश के कॉटेज तक पहुँचने से रोकना था। हालाँकि उसने महेश को भी मारने की बात की थी, मगर एक पुलिस वाला होने के नाते उसे मालूम था कि किसी की हत्या करना तो आसान था, मगर किसी की लाश को हमेशा के लिए छिपाना बहुत मुश्किल काम था।

करण कार को इतनी तेजी से चला रहा था कि मोड़ काटते हुए उसकी कार सड़क पर फिसल गई थी और बड़ी मुश्किल से फिर से काबू में आई थी। मगर उसने

रफ़्तार कम नहीं की। एक बार तो उसकी कार सामने से आती एक कार से टकराते टकराते बची थी।

ज्योति भी अपनी कार तेजी से चला रही थी। वो भी जल्दी से जल्दी बंधन झील के पार कॉटेज में महेश के पास पहुँच जाना चाहती थी। उसने पीछे देखा और करण की कार को अपने पीछे आती ना पा कर एक गहरी सांस ली।

"क्या ये सड़क बंधन झील पर बने लकड़ी के पुल की तरफ जाती है?" अचानक आभा ने ज्योति से सवाल किया।

"हाँ, क्यों?"

आभा कुछ पल तो चुप रही। फिर वो बोली,

"क्या महेश के कॉटेज तक जाने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है जिस के बीच में झील पर बना लकड़ी का पुल ना पड़े?"

"नहीं। कॉटेज पर पहुँचने के लिए हमें उस पुल पर से गुजरना ही पड़ेगा। दूसरा कोई रास्ता नहीं है। मगर तुम ये क्यों पूछ रही हो?" "याद है मैंने तुम्हें अपने सपने के बारे में बताया था। लकड़ी का पुल, दुर्घटना और कार में डूब कर मौत।"

ज्योति भी थोड़ी देर के लिए सोच में डूब गई। मगर तुरंत संभल कर बोली,

"वो सिर्फ सपना था आभा। हकीकत से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। और अगर कोई सम्बन्ध है भी तो उसके डर से मैं महेश के पास जाने का अपना इरादा नहीं बदल सकती। जो होगा देखा जायेगा।" ज्योति दृढ़ स्वर में बोली।

ज्योति की कार शहर की सीमा से बाहर निकल आई थी। थोड़ी ही देर में वो बंधन झील पर पहुँचने वाली थी। आभा ने अचानक ज्योति को चौंकते हुए देखा।

"क्या हुआ?" आभा ने घबरा कर पूछा।

"एक गाड़ी तेजी से हमारे पीछे आ रही है। हो सकता है वो करण हो।" ज्योति बोली और उसने कार की रफ़्तार थोड़ी और बढ़ा दी।

आभा के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभरी। होनी तो शायद होने जा रही थी। उसका दिमाग तेजी से दौड़ने लगा मगर उसकी समझ में अब तक नहीं आ रहा था कि आखिर वो ज्योति की जान कैसे बचाएगी। अचानक उसकी आँखों में चमक आई। उसको ख़याल आया कि ज्योति को तैरना नहीं आता था, इसलिए वो डूब कर मर गई

थी। कार के दरवाजे और शीशे बंद होने की वजह से वो बचने की कोशिश करने के लिए कार से बाहर भी नहीं निकल पाई थी।

मगर वो खुद अच्छी तैराक थी। उसे पूरी उम्मीद थी कि वो ज्योति को डूबने नहीं देगी और उसे बचा लेगी। अपनी उसी योजना पर अमल करते हुए उसने अपनी तरफ की खिड़की का शीशा नीचे कर लिया, ताकि उसके रास्ते वो ज्योति को ले कर डूबती हुई कार से निकल सके।

आभा ने मुड़ कर देखा तो पीछे आने वाली कार तेजी से उनके पास आ रही थी और दोनों कारों के बीच का अंतर लगातार कम होता जा रहा था।

=====

27

20 मई 1961.

सूर्य बस उदय होने ही वाला था और महेश के झील वाले कॉटेज के एक बेडरूम में सोये करण की आँख खुली। वो उठ कर बैठ गया। उसकी आँखों में अभी भी नींद थी। एक मिनट बाद उसके दिमाग ने काम करना शुरू किया तो रात की घटनाएँ तेजी से उसके दिमाग में घूमने लगी।

अचानक उसकी नजर अपने शर्ट पर पड़ी। उसकी शर्ट पर खून के धब्बे थे।

'सत्यानाश!' उसने अपने आप से कहा और बेडरूम से बाहर आया। महेश के बेडरूम का दरवाज़ा करण ने बंद पाया तो उसने संतोष की एक साँस ली। उसके ललाट में अभी भी थोड़ा दर्द हो रहा था और घाव के आसपास खून जमा हुआ था।

लेकिन वो खुश था कि उसकी गंदी हरकत की पोल खोलने के लिए ना तो अब आभा ही जिन्दा थी, और ना ही ज्योति दोनों गाड़ी सहित झील में डूब चुकी थी। वो काफी देर तक पुल पर रेलिंग के पास खड़ा हुआ नीचे झील के पानी में नजर गड़ाए हुए था, मगर उसको कोई भी की सतह से ऊपर आता नहीं दिखा। उसे यकीन हो चुका था कि दोनों डूब कर मर चुकी।

तभी उसकी नजर दूर से आती हुई किसी मोटरसाइकल की हेड-लाइट पर पड़ती है और वो जल्दी से अपनी गाड़ी में बैठ कर वहां से रवाना हो जाता है। उसने राहत की एक लंबी सांस ली।

अपना शर्ट उतरता हुआ करण तेजी से सीढ़ियां उतरने लगा और फिर अपना शर्ट हाथ में लिए अपनी कार की तरफ भागा। कार की डिक्की खोल कर उसने शर्ट डिक्की में फेंकी और वहां पड़ा एक ब्रीफ़केस उठाया। ब्रीफ़केस ले कर वो वापस कॉटेज में आ गया।

हार्ट केयर हॉस्पिटल के एक कमरे में ज्योति बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसने अपनी आँखें खोली और इधर उधर देखा। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था और वो असमंजस में नजर आ रही थी। उसको आँखें खोलते देख कर उसके बिस्तर के पास ही खड़ी नर्स मैरी आगे आई और मुस्कुराते हुए बोली,

“गुड मॉर्निंग ज्योति। अब आप को अपनी तबियत कैसी लग रही है?”

ज्योति का असमंजस नर्स की बात सुन कर और भी ज्यादा बढ़ गया। उसने आँखें मिचमिचाते हुए धीरे से कहा,

“मैं ज्योति नहीं, आभा अरोड़ा हूँ।”

उसकी बात सुन कर नर्स मुस्कराई।

“मैंने इसी हॉस्पिटल में मिस आभा का भी इलाज किया है। अब मुझे पता है कि आप दोनों की शक्लें आपस में कितनी मिलती है। लेकिन मुझे आभा और ज्योति के बीच का अंतर पता है। लगता है आप के सिर पर लगी चोट गहरी है। मैं अभी डॉक्टर को बुलाती हूँ।” कह कर जैसे ही नर्स मैरी मुड़ने को हुई, ज्योति ने उसका हाथ पकड़ने के लिए जैसे ही अपना हाथ आगे करना चाहा, वो ऐसा नहीं कर सकी।

ज्योति के मुंह से जोर की कराह निकली क्यों की उसके कंधे में भयंकर दर्द हुआ। ज्योति की कराह सुन कर बाहर जाने के लिए कदम उठती नर्स मैरी रुक गई। पलट कर वो फिर से ज्योति के पास आई और उसके सिर पर हाथ रखते हुए बोली,

“गोली तुम्हारे कंधे को छू कर निकल गई है। घबराने की कोई बात नहीं है। चार पांच दिन में घाव भर जायेगा। तब तक अपना हाथ ना हिलाओ तो अच्छा है।”

ज्योति ने देखा कि उसके कंधे और हाथ के ऊपरी हिस्से पर पट्टी बंधी हुई है।

रात की घटना ज्योति की आँखों के आगे तैर गई। वो जल्दी से बोली,

“नर्स, पुलिस को सूचना दो उनको यहाँ आने को कहो। इंस्पेक्टर करण ने रात को ज्योति का बलात्कार करने की कोशिश की थी, पर हम दोनों उसके चंगुल से छूट कर बंधन झील के केबिन में महेश के पास जा रहे थे, तो उसने गोली चला कर

ज्योति को घायल कर दिया और पीछे से अपनी कार की टक्कर हमारी कार को मारी तो हमारी कार पुल की रेलिंग तोड़ती हुई झील में जा गिरी।"

"हम ने पुलिस को पहले ही फोन कर दिया है और पुलिस अभी बस आती ही होगी। बाहर मिस्टर हरीश और उनकी पत्नी भी बैठे हैं। मिस्टर हरीश आप को यहाँ लाये थे। पर, आप अपने आप को बार बार आभा क्यों कह रही हैं? आप तो ज्योति हैं?" नर्स मैरी कुछ परेशान सी बोली।

"मैं अपने आप को आभा इसलिए कह रही हूँ कि मैं आभा हूँ। आप मुझे बार बार ज्योति कह के क्यों बुला रही हैं?" आभा खुद परेशान थी कि नर्स उसे ज्योति क्यों कह रही है?

"लगता है आप के सिर में किसी खास जगह चोट आई है। मैं अभी डॉक्टर को चेक अप के लिए बुलाती हूँ, और हरीश जी तथा उनकी पत्नी को भी अंदर भेजती हूँ।" नर्स जल्दी से बोली।

अचानक आभा को वही अजीब सा और सुखद आभास हुआ हुआ जो पहले भी कई बार हो चुका था। उसके साथ रात को घटी की एक खास घटना उसके दिमाग में कौंधी।

"लेकिन मैं पहले बाथरूम जाना चाहती हूँ।" अचानक कुछ सोच कर आभा ने कहा।

"आइये मैं आप को सहारा दे कर ले चलती हूँ।"

आभा बिस्तर से उतरी और बिना लड़खड़ाए अपने पैरों पर खड़ी हो गई तो नर्स के होठों पर मुस्कान आई। "मैं ठीक हूँ। खुद से जा सकती हूँ।" आभा ने कहा और धीरे धीरे बाथरूम के दरवाजे की तरफ बढ़ी, जो कमरे में संलग्न था। नर्स कमरे से बाहर की तरफ चल दी।

बाथरूम में आते ही आभा ने सब से पहले बाथरूम में लगे शीशे में अपना चेहरा देखा। आभा को एक जोर का झटका लगा। वो शीशे में अपने आप को नहीं, ज्योति को देख रही थी। अचानक आभा को लगा कि उसकी नजर भी थोड़ी कमजोर है। उसने फिर से अपने आप को शीशे में ध्यान से देखा। उसके ऊपर के होंठ का तिल गायब था, उसके बाल भी भूरापन लिए काले थे। उसे देख कर कोई नहीं कह सकता था कि वो आभा है। अब तो उसे खुद भी शक हो रहा था कि वो ज्योति है। फिर वो अपने आप को आभा क्यों कह रही है।

आभा को याद आया कि ज्योति को गोली लगने के बाद करण ने उनकी कार को पीछे से एक ज़ोरदार टक्कर मारी थी और उनकी कार पुल का रेलिंग तोड़ती हुई नीचे झील में गिर गई थी। गोली लगने और सिर पर चोट लगने की वजह से कार ज्योति बेहोश हो चुकी थी। कार में पानी भर गया था और कार झील में डूब रही थी।

आभा ने कार में अपने तरफ की खिड़की पहले ही खोल रखी थी ताकि वो ज्योति को ले कर उस खिड़की के रास्ते बाहर निकल सके। आभा ने कार का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की तो वो नाकाम रही।

उसने ज्योति को अपने हाथों में उठाया और बड़ी मुश्किल से उसे खिड़की के रास्ते कार के बाहर निकाल कर खुद भी डूबी हुई कार से बाहर आ गई थी। बाहर आ कर एक अच्छे तैराक की तरह उसने ज्योति के बाल जोर से पकड़े और पानी से बाहर निकलने के लिए ऊपर की तरफ तैरने लगी।

अचानक उसे लगा कि ज्योति के बालों पर उसकी पकड़ छूट रही थी। उसने अपनी पकड़ और मजबूत की और बेहोश ज्योति की तरफ देखा। उसके देखते देखते ही ज्योति जादू के जोर से जैसे पानी में पिघल गई और पूरी तरह गायब हो गई। उसने ज्योति की तलाश में इधर उधर देखा, पर कोई नतीजा नहीं निकला। ज्योति तो गायब हो चुकी थी।

उसने ऊपर की ओर तैरते हुए पानी की सतह से अपना सिर ऊपर निकाला और जोर से सांस ली। तभी उसे पता नहीं कैसा अजीब सा झटका लगा और वो अपनी चेतना खोने लगी। लेकिन बेहोश होने से पहले उसने देखा कि किसी ने पुल पर से झील में छलांग लगाई थी।

सारा माजरा आभा की समझ में आ चुका था। वो आभा नहीं ज्योति थी। आभा शायद मर चुकी थी और आभा की आत्मा ने ज्योति के शरीर में प्रवेश कर लिया था। या शायद ज्योति मर चुकी थी और उसकी आत्मा ने आभा के शरीर में प्रवेश कर लिया था।

वो अब इस बात से भी संतुष्ट थी कि महेश का कुछ नहीं बिगड़ने वाला था। होनी हो चुकी थी। महेश को तो जिन्दा ही रहना था।

‘अब अगर मैं आभा हूँ, तो भी मुझे अब ज्योति बन कर रहना होगा।’ आभा ने सोचा।

तभी बाहर से महेश की माँ ने बाथरूम का दरवाज़ा खटखटाया और साथ ही उसकी आवाज़ भी आई,

“ज्योति बेटा, तुम ठीक तो हो। बहुत समय लगा रही हो अंदर?”

“मैं ठीक हूँ आंटी।” आभा के मुंह से अपने आप ही महेश की माँ के लिए ‘आंटी’ शब्द का संबोधन निकला, जब की वो तो हमेशा उनको माँ जी कह के बुलाती थी। “आ रही हूँ।” उसने तुरंत अपना वाक्य पूरा किया।

‘मैं ज्योति हूँ।’ उसने दृढ़ता से सोचा।

एक मिनट बाद ‘ज्योति’ बाथरूम से बाहर आई तो उसके चेहरे पर एक अजीब सी चमक थी। उसने देखा कि उसके पलंग के पास महेश के माता पिता, नर्स मैरी और डॉक्टर खड़े थे। मुस्कराती हुई वो धीरे धीरे चलते हुए अपने पलंग पर आ कर बैठ गई।

“सर, देखिये ना, जब से होश में आई है, अपने आप को आभा बता रही है।” नर्स ने जल्दी से डॉक्टर से कहा। उसकी बात पर महेश के माता पिता भी चौंक पड़े।

डॉक्टर ज्योति को चेक करने के लिए आगे बढ़ा और महेश के माता पिता अपने चेहरे पर चिंता की लकीरें लिए ज्योति की तरफ देख रहे थे। अचानक ज्योति के चेहरे पर एक शरारती मुस्कराहट आई और वो बोली।

“मैं ठीक हूँ डॉक्टर। मुझे पता है है कि मैं ज्योति हूँ। मैं तो नर्स के साथ मज़ाक कर रही थी।” सभी के मुंह से एक आह और लंबी सांस निकली। महेश की माँ ज्योति के पास आई और उन्होंने ज्योति के सर पर प्यार से हाथ फेरा।

“वैसे आभा की तबियत कैसी है? वो कौन से कमरे में है?” ज्योति ने पूछा।

“हमारे गोताखोर मिस आभा को झील में तलाश कर रहे हैं।” सब इंस्पेक्टर विल्सन ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा। “वैसे ये सम्भावना है कि वो तैर कर झील के दूसरे किनारे की तरफ चली गई हो और शायद राजनगर के किसी हॉस्पिटल में भर्ती हो। आप चिंता ना करें। हम पता लगा लेंगे। अभी तो मैं यहाँ आप का बयान लेने के लिए आया हूँ।”

“सर, इंस्पेक्टर करण ने रात को मेरे साथ बलात्कार करने की कोशिश की। लेकिन आभा की मेरे घर पर मौजूदगी की वजह से वो अपने गंदे इरादे में कामयाब नहीं हो पाया।”

ज्योति बताने लगी और सब इंस्पेक्टर विल्सन ज्योति का बयान कलमबद्ध करता गया। करण की करतूत के बारे में जान कर महेश के माता पिता की आँखों में खून

उतर आया।

“आभा ने करण के सिर पर चोट की और फिर घर से निकल कर मैं और आभा मेरी कार में बैठ कर झील के किनारे वाले केबिन की तरफ भागने लगे। घायल करण को हम मेरे घर के बेडरूम बंद कर आये थे।” इतना कह कर ज्योति सांस लेने के लिए रुकी।

“भागते वक्त खिड़की पर पत्थर तुम ने फेंका था?” महेश के पापा ने पूछा।

“नहीं। आभा ने फेंका था। दरअसल आभा चाहती थी कि हम केबिन पर ना जा कर आप के पास जाएँ। मगर मैंने ही आभा की बात नहीं मानी क्यों कि मुझे लगा कि हमारे पास इतना समय नहीं था। मुझे लगा कि अपनी गंदी कोशिश में ना-कामयाब रहने बाद, अपनी पोल खुलने के डर से करण जरूर महेश को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा। लेकिन आभा ने दिमाग से काम लिया और आप की खिड़की पर पत्थर फेंक कर आप को भी चौकन्ना कर दिया।” ज्योति ने बताया।

“मैं तो पहले से ही कहता रहा हूँ कि वो लड़की बहुत समझदार है।” महेश के पिता जी ने कहा। “उसी वजह से तुम अभी यहाँ सही सलामत हो। मैंने तुम लोगों का पीछा किया था, मगर मैं तुम लोगों से बहुत पीछे था। मुझे पता नहीं था कि करण भी तुम्हारा पीछा कर रहा था। मैंने तो दूर से गोली चलने की आवाज़ सुनी और फिर देखा कि तुम्हारी कार पर पीछे से किसी ने टक्कर मारी और तुम्हारी कार झील में गिर गई थी। टक्कर मारने वाला वहां से भाग गया था। मैं जब पुल पर पहुंचा तो मुझे पानी में तुम्हारी एक झलक मिली और मैंने झील में छलांग लगा दी। तब तक तुम बेहोश हो चुकी थी और डूबने लगी थी। बड़ी मुश्किल से मैं तुम्हें साथ ले कर किनारे तक आया और तुम्हारे पेट का पानी निकालने के बाद तुम को अपने साथ बांध कर मोटरसाइकल पर यहाँ ले आया।”

“आप अपना बयान बाद में लिखवा दीजियेगा हरीश जी।” विल्सन जल्दी से बोला। “आप अपना बयान पूरा कीजिये ज्योति जी, ताकि इस से पहले कि इंस्पेक्टर करण कहीं भाग जाये, मैं उसे गिरफ्तार कर सकूँ। वैसे इसकी सम्भावना ना के बराबर है। क्यों कि वो सोच रहा होगा कि उसकी करतूत बताने वाला अब कोई जिन्दा नहीं है।”

“हमें नहीं पता था कि करण हमारा पीछा कर रहा था। झील के पुल पर पहुँचने से थोड़ी देर पहले ही हम ने देखा कि वो हमारे पीछे आ रहा था। उसकी गाड़ी की रफ़्तार बहुत तेज थी और वो जल्दी ही हमारे काफी नजदीक पहुँच गया। अचानक उसने मुझ पर गोली चला दी, जो मेरे कंधे पर लगी। गोली लगने की वजह से मेरा

नियंत्रण कार से छूट रहा था, और इस से पहले कि मैं अपनी कार पर काबू पाती, करण ने पीछे से मेरी कार पर एक ज़ोरदार टक्कर मारी और मेरी कार पुल का रेलिंग तोड़ती हुई झील में जा गिरी।" कहते कहते ज्योति हांफने सी लगी।

"अभी के लिए आप का इतना बयान बहुत है ज्योति जी। आप का बयान भी मैं बाद में दर्ज़ करूँगा हरीश जी, पहले मैं बलात्कार और हत्या की कोशिश करने के जुर्म में करण को गिरफ्तार करने जा रहा हूँ।" विल्सन उठते हुए बोला।

"अगर आप जल्दी करेंगे तो महेश और करण आप को मेरे झील वाले केबिन में ही मिलेंगे। दोनों का रात में वहीँ रुक कर शादी के लिए सीधे मंदिर आने का प्रोग्राम है।" महेश के पिताजी ने जल्दी से कहा। सब इंस्पेक्टर विल्सन जैसे दौड़ता हुआ बाहर की ओर लपका।

विल्सन के जाने के बाद ज्योति को कुछ अजीब सा अनुभव होने लगा। उसके सर में भी दर्द होने लगा। नर्स मैरी जैसे हालात को समझ चुकी थी।

"आप को आराम की जरूरत है ज्योति जी। जितना आराम करेंगी, उतनी जल्दी आप की तबियत ठीक होगी और उतनी जल्दी आप यहाँ से घर जा सकेंगी।"

"मैं बाहर ही हूँ बेटी। तुम्हारी आंटी को घर भेज रहा हूँ।" महेश के पिता जी ने कहा और अपनी पत्नी के साथ कमरे से बाहर चले गए। नर्स ने ज्योति को लिटाया, उसके बदन पर चद्दर ओढ़ाया और वो खुद भी बाहर चली गई। ज्योति के दिमाग में एक फिल्म सी चलने लगी।

उधर महेश के झील वाले कॉटेज में महेश ने उठ कर सब से पहले शेव की और फिर वो नहाने के लिए बाथरूम में घुस गया। महेश बहुत खुश था कि आज उसके बचपन के प्यार ज्योति के साथ उसकी शादी थी। शादी हो जाने के बाद महेश को ज्योति के साथ शाम को उसी कॉटेज में अपनी विवाहित जिंदगी शुरू करने के लिए वापस उसी कॉटेज में आना था। एक प्रेम भरा गीत गुनगुनाते हुए वो नहाने लगा।

नहाते नहाते महेश को याद आया कि उसका दोस्त करण भी वहां उसके साथ, उसी कॉटेज में था। नहाने के बाद वो अपनी कमर पर तौलिया लपेट कर बाहर आया।

'पता नहीं अभी तक उठा है या नहीं।' सोचता हुआ वो दूसरे बेडरूम में पहुंचा। महेश ने देखा कि बिस्तर पर एक ब्रीफ़केस पड़ा था।

'शायद इसमें शादी में पहनने के लिए उसके कपड़े होंगे।' महेश ने सोचा, मगर उसे करण कमरे में कहीं नजर नहीं आया। 'शायद नीचे नहा रहा होगा।' उसने सोचा।

सीढ़ियों के पास आ कर उसने ध्यान से सुना तो नीचे बाथरूम से पानी गिरने की आवाज़ आई।

अपने चेहरे पर मुस्कान लिए महेश तैयार होने के लिए वापस अपने कमरे में आ गया।

उधर हॉस्पिटल में, अपने बिस्तर पर लेती ज्योति को बार बार वही अजीब सा एहसास हो रहा था। उसके दिमाग में एक फिल्म सी चलने लगी।

उसने देखा कि स्कूल खुलने से कुछ ही दिन पहले ज्योति अपने माता पिता के साथ देहरादून स्ट्रीट में खरीदे गए अपने नए घर में रहने आते हैं।

साढ़े तीन साल की ज्योति की मुलाकात स्कूल के पहले दिन पहली बार महेश से होती है। दोनों में परिचय होता है और स्कूल छूटने पर ज्योति को लेने उसकी मम्मी और महेश को लेने के लिए उसकी मम्मी स्कूल आती है तो ज्योति और महेश की मम्मियों के साथ ज्योति को भी ये पता चलता है कि महेश उसका पड़ोसी है।

उसने देखा कि चार साल की ज्योति महेश के साथ, उसके घर में खिलौनों से खेल रही थी। शाम को ज्योति के पापा काम पर से वापस आए तो उन्होंने ज्योति को एक चॉकलेट दी।

“एक चॉकलेट और पापा।” ज्योति ने अपना नन्हा सा हाथ फैलाया।

“ज्यादा चॉकलेट नहीं खाते बेटा। दांत खराब हो जाते हैं। बाकी की चॉकलेट में आलमारी में रख देता हूँ। अपनी मम्मी से कह कर रोज़ एक चॉकलेट खा लिया करो।” पापा ने प्यार से कहा।

“मैं अपने लिए नहीं मांग रही हूँ पापा। महेश के लिए मांग रही हूँ।” ज्योति अपनी प्यारी से आवाज़ में बोली।

“अच्छा..... महेश के लिए? ये लो।” पापा ने उसको एक चॉकलेट और दी तो वो दौड़ती हुई महेश के घर चली गई।

ज्योति जब चार साल की होती है तो अचानक उसकी माँ का देहांत हो जाता है। ज्योति कम उम्र होते हुए भी ये समझ जाती है कि उसकी माँ उसको हमेशा के लिए छोड़ कर भगवान के पास चली गई है।

ज्योति के पापा अपनी पत्नी की मौत से टूट जाते हैं उन्हें हर दम अपनी बेटी ज्योति की चिंता सताती रहती है। ऐसे में महेश के माँ बाप किसी फ़रिश्ते की तरह ज्योति

की ज़िम्मेदारी उठाते हैं।

ज्योति हमेशा महेश के घर पर ही खाना खाती है, वहीं पढाई करती है और वहीँ शाम तक महेश के साथ खेलती है, जब तक कि उसके पापा काम पर से वापस नहीं आ जाते।

इसी बीच स्कूल में ज्योति की कुछ सहेलियाँ भी बन जाती है। महेश के भी स्कूल में कुछ दोस्त बन जाते हैं। महेश ज्योति का परिचय अपने दोस्तों से करवाता है। ज्योति को महेश के सभी दोस्त अच्छे लगे, केवल करण को छोड़ कर।

करण वैसे तो बहुत बदसूरत नहीं था, पर बचपन में ही उसके चेहरे की फुंसियां उसे बदसूरत बना रही है। ज्योति को करण का साथ कभी भी पसंद नहीं आया, पर वो उसके साथ सिर्फ इसलिए खेलती है कि वो महेश का दोस्त है।

महेश की माँ ज्योति को कभी अपनी माँ की कमी महसूस नहीं होने देती और ज्योति भी मन ही मन महेश की माँ को अपनी माँ की तरह मानती है।

दस साल की ज्योति महेश के साथ स्कूल जा रही है। शाम को वो महेश के साथ ही वापस स्कूल से घर आ रही है।

स्कूल में दसवीं का रिजल्ट आता है। महेश और ज्योति को बराबर के नंबर मिले। दसवीं क्लास में ही ज्योति को महसूस होता है जैसे करण उसकी तरफ आकर्षित है। वो बार बार उस से बात करने की, उसको छूने की कोशिश करता है।

पर ज्योति को तो महेश पसंद है, उसका साथ पसंद है, उसके माँ बाप पसंद है और उसका घर पसंद है। पंद्रह साल की ज्योति अब समझने लगी कि प्यार क्या होता है। वो चाहती है कि महेश अपने मुंह से कबूल करे कि वो ज्योति को पसंद करता है।

मगर महेश ने कभी भी अपनी भावनाओं से ज्योति को अवगत नहीं करवाया।

महेश और ज्योति एक ही कॉलेज, देहरादून कॉलेज में एडमिशन लेते हैं। महेश की रूचि साइंस में होती है, इसलिए उसने अपने लिए साइंस विषय चुना। ज्योति आर्ट्स चुनती है।

ज्योति और महेश दोनों जवान हो चुके हैं। महेश को ज्योति का और ज्योति को महेश का साथ बहुत पसंद है। ज्योति इंतज़ार कर रही होती है कि महेश कब अपने प्यार का इजहार ज्योति के सामने करे। ज्योति इतना तो समझ ही जाती है कि महेश

भी उसे प्यार करता है, मगर वो अपने प्यार का इज़हार करने की हिम्मत नहीं जुटा पता रहा है।

कॉलेज के फ़ाइनल ईयर में एक दिन शाम को महेश और ज्योति महात्मा गाँधी पार्क में घूमने जाते हैं हुए वहां एकांत में एक बेंच पर बैठ जाते हैं। उसी पार्क में महेश ज्योति के सामने अपने प्यार इजहार करता है और ज्योति को तो जैसे जमाने भर की ख़ुशियाँ मिल जाती है।

पार्क से वापस घर की तरफ आते हुए, पार्क में ही एक बड़े पेड़ के पीछे महेश ज्योति का चेहरा अपनी हथेलियों में ले कर पहली बार ज्योति को चूमता है।

दो तीन दिन बाद, कॉलेज के केंटीन में करण ज्योति के सामने अपने प्यार का इजहार करता है तो ज्योति उसे बताती है कि वो महेश से प्यार करती है और महेश भी उस से प्यार करता है। ज्योति साफ़ साफ़ महसूस करती है कि करण का दिल टूट जाता है और उसकी आँखों में आंसू आ जाते हैं।

पर ऊपर से करण अपने आप को सामान्य दिखाने का प्रयत्न करता है।

कॉलेज का रिजल्ट आ जाता है और महेश को बहुत अच्छे नंबर मिलते हैं। महेश बी-एड में एडमिशन लेता है, क्यों कि उसे प्रोफ़ेसर बनना होता है। समय बिताने के लिए ज्योति भी टाइपिंग क्लास में एडमिशन लेती है। करण अपनी पुलिस ट्रेनिंग ले रहा होता है।

महेश, करण और ज्योति एक शनिवार शाम को बंधन झील के किनारे बने महेश के पिताजी द्वारा पिछले साल ही बनाये गए कॉटेज में पिकनिक मनाने जाते हैं। करण अपने पिताजी द्वारा दिए गए नये कैमरे से महेश और ज्योति की कई तस्वीरें खींचता है। करण के कहने पर महेश भी करण और ज्योति की कई तस्वीरें खींचता है।

महेश अपने कमरे में कुछ पढ़ रहा होता है, तभी ज्योति उसके लिए चाय ले कर आती है। ज्योति को आपने सामने इस तरह अकेले में देख कर महेश से रहा नहीं जाता और वो ज्योति को पकड़ कर चूम लेता है।

“क्या हो रहा है ये?” अचानक दरवाजे से महेश की माँ की आवाज़ आती है।

ज्योति तो शर्म के मारे पानी पानी हो जाती है और महेश भी नज़रें झुका कर खड़ा रहता है। दोनों की चोरी पकड़ी जाती है और उनके प्यार का भांडा फूट जाता है। अचानक महेश की माँ के चेहरे पर मुस्कान देख कर दोनों का डर कुछ कम होता है।

“मुझे ज्योति पसंद है। मैं तो कब से तुम दोनों की शादी का सपना देख रही थी। मुझे ये रिश्ता मंजूर है, पर शादी से पहले मेरे सामने ये सब नहीं चलेगा।”

माँ की बात सुन कर ज्योति और महेश दोनों शरमा गए और ज्योति वहां से भाग निकली। महेश के पापा ने जब ज्योति के पापा से उनके रिश्ते की बात की तो ज्योति किचन में खड़ी हो कर, छिप कर उनकी बातें सुन रही है। उसका चेहरा शर्म से लाल हुआ जा रहा है और आँखों में चमक है।

महेश देहरादून कॉलेज में प्रोफेसर बन गया था। ज्योति के पापा और महेश के मम्मी पापा दोनों की शादी जल्दी से जल्दी कर देना चाहते थे, पर महेश और ज्योति चाहते थे कि दो तीन साल में उनकी उम्र जब ज़िम्मेदारी उठाने के काबिल हो जाएगी, तब वे शादी करेंगे।

समय बिताने के लिए ज्योति ने भी देहरादून कॉलेज में इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के डीन की सेक्रेटरी के तौर पर नौकरी कर ली है।

करीब करीब रोज़ शाम को खाना खाने के बाद महेश और ज्योति आपस में हाथ पकडे नज़दीकी पार्क में कुछ देर के लिए जाते हैं। मोहल्ले में सब को पता चल गया था कि दोनों की शादी होने वाली है।

अपनी कमाई से और बाकी का बैंक से लोन ले कर महेश अपने लिए पहली गाड़ी खरीदता है और सब बहुत खुश होते हैं। महेश के पिताजी अपना पुराना कैमरा निकाल कर महेश और ज्योति की कार के साथ फोटो लेते हैं।

एक दिन अचानक ही ज्योति के पिता जी को दिल का दौरा पड़ता है। सभी उनके आसपास खड़े हैं और सब की आँखों में आंसू है। महेश तुरंत हार्ट केयर हॉस्पिटल में एम्बुलेंस के लिए फोन करता है। ज्योति के पापा कुछ बोल नहीं पाते, पर उन्होंने इशारे से महेश और ज्योति को अपने पास बुलाया। ज्योति का हाथ महेश के हाथों में दे कर एम्बुलेंस पहुँचने के पहले ही वे अपने प्राण त्याग देते हैं।

ज्योति अपनी कमाई से गाड़ी खरीदती है तो सभी खुश होते हैं।

ज्योति की जिंदगी की एक एक, छोटी से छोटी बात हॉस्पिटल में अपने बिस्तर पर लेटी ज्योति या आभा, जो भी कह लो, को याद आती है और आश्चर्यजनक रूप से उसका सिरदर्द गायब हो जाता है।

बिस्तर पर लेटी ज्योति समझ जाती है कि ये कुदरत का कानून था, जो ज्योति अपनी मौत के बाद गायब हो जाती है और उसके बदले में आभा को ज्योति की जिंदगी

मिल जाती है, जो ज्योति का पुनर्जन्म थी। आभा के रूप में उसकी यादें धुँधली हो जाती है और ज्योति के जीवन की एक एक बात उसे पता चल जाती है।

उधर महेश के झील के किनारे वाले कॉटेज में महेश जब तैयार हो कर नीचे आया तो करण हॉल में बैठा सिगरेट फूंक रहा था। महेश ने वही सूट पहन रखा था, जो उसने खास तौर पर शादी के लिए खरीदा था। करण खुद भी नए कपड़े पहन कर तैयार था।

"अच्छा हुआ तुम भी वक्त पर तैयार हो गए। हमारे पास काफी वक्त है। हम समय से काफी पहले मंदिर पहुँच जायेंगे।" महेश सीढ़ियां उतरते हुए बोला।

करण ने चेहरा उठा कर महेश की तरफ देखा तो महेश चौंक गया।

"ये तुम्हारे सिर पर चोट कैसे लगी?" करण के ललाट पर घाव देख कर महेश ने पूछा।

करण ने अपने हाथ में पकड़ी सिगरेट ऐश ट्रे में बुझाई और शांति से बोला,

"कुछ नहीं यार, हलकी सी चोट है, एक दो दिन में ठीक हो जाएगी।"

"मगर चोट लगी कैसे? रात को तुम अच्छे भले सोये थे।"

"मेरी ही गलती है यार। रात को ज्यादा हो गई थी और जब बाथरूम के लिए नीचे आ रहा था तो पांव फिसल गया और सीढ़ी का कोना लग गया।"

"तुम ठीक तो हो? कहो तो पहले किसी डॉक्टर के पास चलते हैं।" "अरे नहीं। मैं ठीक हूँ। डॉक्टर की जरूरत नहीं है। मैंने दवा लगा ली थी। अब बिलकुल ठीक है।

"कौन सी दवा?"

"दारू।" कहते हुए करण मुस्कुराया।

"तू नहीं सुधरेगा साले। चल चलते हैं। मेरे साथ आएगा या अपनी कार में?"

"मैं अपनी कार में तुम्हारे पीछे पीछे आता हूँ।"

दोनों आगे पीछे चलते हुए बाहर आये। महेश ने कॉटेज पर ताला लगाया और चाबी अपनी जेब में डाली।

"ये तुम्हारी कार को क्या हुआ? आगे से ठुकी हुई है।" महेश ने करण की कार की तरफ देखते हुए पूछा।

"कुछ नहीं यार, कल थोड़ा ठुक गई थी।"

महेश कुछ नहीं बोला और दोनों अपनी अपनी गाड़ियों में बैठे। महेश आगे था और करण उसके पीछे। झील के किनारे किनारे पतली सड़क से होते हुए वे अमृतसर रोड पर आ गए और देहरादून की तरफ चल पड़े।

झील पर बने लकड़ी पुल पर चढ़ते ही दोनों को कुछ पुलिसवाले और गोताखोर नजर आये, जो झील में कुछ तलाश कर रहे थे। महेश ने तो उन्हें देखा अनदेखा कर दिया, मगर करण जनता था कि मामला क्या था।

पुल पर थोड़ा आगे आने पर एक तरफ की रेलिंग टूटी हुई देख कर महेश ने पुलिस वालों और गोताखोरों की झील पर उपस्थिति के बारे में अंदाजा लगाया।

'शायद कोई एक्सीडेंट हुआ है और कोई कार झील में गिरी है।' महेश ने अपने आप से कहा।

करण तो अच्छी तरह से जानता ही था। उसके होठों पर एक शैतानी मुस्कराहट आई। पुल पार कर के दोनों अमृतसर रोड़ पर जब सूरज होटल के पास पहुंचे, तो पहले महेश को और बाद में करण को सामने से एक पुलिस की जीप आती दिखाई दी।

महेश और करण दोनों ने ही सोचा कि पुलिस की गाड़ी शायद पुल पर हुए हादसे की पड़ताल करने जा रही थी। महेश ने अपनी गाड़ी की रफ़्तार धीमी कर के, पुलिस की जीप को बगल से गुजरने के लिए जगह दी। करण ने भी वैसा ही किया।

मगर पुलिस की जीप ने करण की गाड़ी के बगल से गुजरने को कोई कोशिश नहीं की। जीप से सब इंस्पेक्टर विल्सन ने करण को रुकने का इशारा किया और जीप करण की गाड़ी के सामने खड़ी हो गई। करण का दिल जोर से धड़का।

महेश थोड़ा आगे निकल गया था, मगर उसने जब पुलिस की जीप और करण की कार को आमने सामने रुकते देखा तो उसने भी करण का इंतज़ार करने के लिए अपनी गाड़ी साइड में रोक ली।

सब इंस्पेक्टर विल्सन और एक हवलदार जीप से उतर कर करण की गाड़ी के पास आये तो करण कार की खिड़की से मुंह बाहर निकाल कर बोला,

"मुझे पता है विल्सन कि पुल पर कोई एक्सीडेंट हुआ है। पर मेरे पास अभी बिलकुल भी वक्त नहीं है। मुझे की शादी में शामिल होना है।"

“उसी एक्सीडेंट के सिलसिले में आप से कुछ पूछताछ करनी है मिस्टर करण। आप मेरे साथ चल कर पुलिस जीप में बैठिये और पुलिस स्टेशन चलिए। आप की कार हवलदार ले आएगा।” विल्सन सख्त स्वर में बोला।

“मगर क्यों?” डर के मारे करण का दिल जोर से धड़का।

“मिस्टर करण, मैं आप को मिस ज्योति के साथ बलात्कार करने की कोशिश और बाद में उसकी हत्या करने की कोशिश तथा मिस आभा की हत्या करने के जुर्म में गिरफ्तार करता हूँ।’ विल्सन ने जवाब दिया।

करण का चेहरा डर के मारे पसीने से भीग गया।

‘सत्यानाश। खेल ख़तम।’ तुरंत उसके दिल में विचार आया।

मगर इस से पहले कि सब इंस्पेक्टर विल्सन कुछ और कह पता या कर पाता, करण ने जल्दी से अपनी कार बैक की और एक खतरनाक यू टर्न ले कर अपनी कार फिर से बंधन नदी के पुल की तरफ दौड़ा दी। विल्सन करण के अचानक भागने की कोशिश करने की वजह से चौंका और वो भी अपनी जीप में बैठ कर करण को पकड़ने के लिए उसका पीछा करने लगा।

उधर महेश ने अपनी कार में बैठे बैठे वो नज़ारा देखा तो वो भी चौंक गया। उसे करण वहां से इस तरह भागने का कारण समझ में नहीं आया।

‘क्या किया है इसने ऐसा जो ये अपने ही डिपार्टमेंट से भाग रहा है?’ सोचते हुए महेश ने भी अपनी कार मोड़ी और पुलिस जीप के पीछे अपनी कार दौड़ा दी।

करण तूफ़ानी रफ़्तार से अपनी कार दौड़ाता हुआ चला जा रहा था। वो जल्दी से जल्दी राजनगर जाने वाली सड़क पर पहुँच जाना चाहता था। वहां उसको जंगल में कुछ ऐसे छिपे हुए रास्ते पता थे, जो सड़क से नजर नहीं आते थे।

वहां किसी मोड़ पर, जब उसकी कार पुलिस की जीप में बैठे विल्सन की नजरों से एक मिनट के लिए ओझल होती, तो करण उन्ही में से किसी छिपे हुए रास्ते का इस्तेमाल कर के पुलिस से अपना पीछा छुड़ा सकता था।

करण को इस तरह आंधी तूफ़ान की तरह कार चला कर भागते देख कर विल्सन को लगा कि इस तरह तो वो करण जल्दी ही उसकी नजरों से ओझल हो जायेगा। करण की कार जैसे ही पुल पर चढ़ी, विल्सन ने उसकी गाड़ी के टायर का निशाना लगा

कर गोली चलाई। गोली सही निशाने पर लगी और टायर फट जाने की वजह से करण की कार पुल पर खतरनाक ढंग से लहराई।

मगर करण ने दक्षता से कार पर काबू पाया और कार को रोका। उसने देखा कि वो पुल की टूटी हुई रेलिंग से ज्यादा दूर नहीं था। वो कार से उतरा और टूटी हुई रेलिंग की तरफ दौड़ा। अब उसका विचार झील में छलांग लगा कर तैरते हुए पहाड़ी की तरफ जा कर जंगल में गायब हो जाने का था।

करण को इस तरह भागते हुए देख कर विल्सन उसका इरादा भांप चुका था। वो जानता था कि अगर करण झील में छलांग लगाने में कामयाब हो गया, तो उसे पकड़ना मुमकिन नहीं होगा।

“रुक जाओ मिस्टर करण, नहीं तो मैं गोली मार दूँगा।” विल्सन ने चिल्ला कर उसे वार्निंग दी।

करण ने विल्सन की वार्निंग को अनसुना किया और बिना रुके भागता रहा। विल्सन ने भागते हुए करण की टांगों का निशाना ले कर गोली चला दी। इधर विल्सन की पिस्तौल से गोली निकलने के साथ ही करण वहां पड़े एक पत्थर से ठोकर खा कर नीचे गिरा। विल्सन की चलाई गोली ने उसका भेजा उड़ा दिया।

तब तक महेश भी वहां पहुँच चुका था। कुछ दूरी पर पुलिस की गोली खा कर करण मरा पड़ा था। विल्सन के हाथ में थमी पिस्तौल की नाल से धुवां निकल रहा था।

“माजरा क्या है सर?” महेश ने विल्सन से पूछा।

“आप शायद मिस्टर महेश है।”

“हाँ।”

“मैंने आप को उस रात मिस ज्योति के घर देखा था, जब मैं वहां आया था।”

“वो तो ठीक है सर, पर बात क्या है? आप ने करण को गोली क्यों मार दी? करण खुद पुलिस इंस्पेक्टर है, फिर वो किस तरह भाग क्यों रहा था?”

“मिस्टर महेश, करण पुलिस डिपार्टमेंट पर ही नहीं, दोस्ती के नाम पर भी धब्बा था।” विल्सन बोला, “इसने पहले आप की मंगेतर ज्योति के साथ बलात्कार करने की कोशिश की और फिर उनको आभा के साथ जान से मारने की कोशिश की। ज्योति को आप के पिताजी ने बचा लिया और हमें अभी भी आभा की तलाश है।”

ये सुन कर महेश तो जैसे आसमान से गिरा। उसे अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। वो हक्का बक्का सा सब इंस्पेक्टर विल्सन की तरफ देख रहा था।

“ये जो आप टूटी हुई रेलिंग देख रहे हैं, ये रेलिंग ज्योति और आभा के कार सहित झील में गिरने की वजह से टूटी है। करण ने पहले ज्योति को गोली मारी और गिर उनकी कार को पीछे से ज़ोरदार टक्कर मारी, जिसकी वजह से उनकी कार रेलिंग तोड़ती हुई झील में गिर गई।”

“गोली मारी? ऑफिसर, ज्योति ठीक तो है ना?”

“चिंता मत कीजिये मिस्टर महेश। मिस ज्योति बिलकुल ठीक है और अभी हार्ट केयर हॉस्पिटल में है। शुक्र है कि गोली सिर्फ उनके कंधे को छू कर निकल गई। कोई गहरा घाव नहीं है। आप हॉस्पिटल चलिए, मैंने भी पहले पुलिस स्टेशन हो कर वहां पहुँचता हूँ।’ विल्सन बोला।

महेश को ख़याल आया कि उसने करण की कार का अगला हिस्सा पिचका हुआ देखा था। पूछने पर करण ने झूठ बोल दिया था, मगर अब उसे असलियत पता चल गई थी।

“कमीना, दोस्ती के काबिल ही नहीं था।” महेश नफरत से बोला और हॉस्पिटल में जा कर ज्योति को देखने के लिए अपनी कार की तरफ दौड़ा।

उधर पुलिस स्टेशन की हवालात में सुबह की ड्यूटी पर पहुंचे हवलदार शंकर अपने हाथ में एक चाय का गिलास ले कर पहुंचा। उसने देखा कि वो बूढ़ा आदमी, जिसे देर रात सब इंस्पेक्टर विल्सन ने गिरफ्तार किया था, एक दीवार की तरफ मुंह कर के लेटा हुआ था। उसके सिर पर एक रुमाल बंधा हुआ था।

“उठो भाई, ये लो, चाय पी लो। अभी साहब आते ही होंगे, उसके बाद तुम से पूछताछ कर के केस रजिस्टर करेंगे।” हवलदार शंकर बोला।

बूढ़ा करण पलटा तो हवलदार शंकर ने उसके ललाट और आँखों के आसपास सूख चुके खून के धब्बे देखे तो वो चौंक गया। उसने सोचा की शायद इसी वजह से उसने अपने सिर पर रुमाल बांध रखी थी।

“अरे, ये चोट कैसे लगी तुम्हें?” हवलदार चौंकता हुआ बोला।

“कुछ नहीं, हलकी सी चोट है, पता नहीं कैसे लग गई, जब की मैं तो यहाँ चुपचाप बैठा था।” कह कर करण ने अपने सिर पर बंधी रुमाल खोल कर नीचे ज़मीन पर

डाल दी।

जैसे ही करण चाय का गिलास लेने के लिए उठने को हुआ, अचानक उसके दोनों हाथ अपने सिर पर पहुंचे और पीड़ा की वजह से उसकी आँखें बाहर निकल आई।

और फिर हवलदार शंकर के आश्चर्य का ठिकाना ना रहा जब उसके देखते देखते ही उस बूढ़े आदमी का शरीर वहां से गायब हो गया। पीछे रह गई ज़मीन पर खून से भरी हुई रुमाल। दहशत के मारे हवलदार जोर से चिल्लाया। ये तो गनीमत थी कि उस खौफनाक दृश्य को देख कर वो बेहोश नहीं हो गया। गिरता पड़ता वो इसकी सुचना देने के लिए अपने साथियों की तरफ भागा।

हार्ट केयर हॉस्पिटल के कमरे में ज्योति पलंग पर लेटी हुई थी और उसके पास महेश के मम्मी पापा बैठे हुए थे। ज्योति अब काफी अच्छा और अपने आप को स्वस्थ महसूस कर रही थी। उसने आंखे खोली और महेश की माँ से बोली,

“आंटी, आप तो घर चली गई थी ना?”

“हाँ, तेरे अंकल ने मुझे घर जाने को कहा था, पर तुझे इस हालत में छोड़ कर मेरा घर जाने का मन नहीं हुआ, इसलिए नीचे से ही वापस तुम्हारे पास आ गई। अब कैसा लग रहा है बेटी?”

“मैं काफी अच्छा महसूस कर रही हूँ आंटी, आप तो नाहक ही परेशान हो रही है।” कहते कहते ज्योति उनका प्यार देख कर थोड़ी भावुक हो गई और उसकी आँखें नम हो गई।

तभी भागता हुआ और हांफता हुआ चिंतित महेश कमरे में दाखिल हुआ।

ज्योति को सही सलामत और बातें करते देख कर उसका मन थोड़ा शांत हुआ और वो धीरे धीरे चलता हुआ ज्योति के पास आया।

“कैसी हो ज्योति?”

“अरे मैं बिलकुल ठीक हूँ। बस कंधे पर हल्का सा दर्द है, और कुछ नहीं। आप लोग इतना चिंतित क्यों हो रहे हैं? मैं बिलकुल ठीक और सही सलामत हूँ।”

“शुक्र है भगवान का कि तुम बिलकुल ठीक हो, वरना तुम्हारे बारे में सुन कर जैसे मेरी तो जान ही निकल गई थी।

“महेश, ये सब करण की वजह से हुआ है।” ज्योति बोली।

“पता है मुझे ज्योति। सब इंस्पेक्टर विल्सन ने मुझे सब बता दिया है और करण को उसके किये की सजा मिल चुकी है। मेरी आँखों के सामने ही वो पुलिस की गोली से मारा गया है।” महेश उसकी बात काटता हुआ बोला।

ये सुन कर ज्योति और महेश के माता पिता ने एक चैन की सांस ली।

“भगवान सब का न्याय करता है। बड़ा दोस्त बनता फिरता था वो तुम लोगों का। कोई दोस्त भला अपने दोस्त के साथ ऐसा करता है? अच्छा हुआ पुलिस की गोली से मर गया राक्षस, अगर जिन्दा रहता तो उसके बदन में कीड़े पड़ते।” महेश की माँ ने अपने दिल की भड़ास निकाली।

“आभा भी तुम्हारे साथ थी ना?” महेश ने पूछा।

“हाँ, वो अचानक ही झील के पानी में गायब हो गई, जैसे पानी में घुल गई हो। विल्सन का कहना था कि पुलिस उसको तलाश कर रही है। मगर अब तक ना तो वो मिली और ना ही उसका शरीर।”

“लगता है आभा और हमारा साथ इतने दिनों का ही था। वो तो बस जैसे तुम्हारी जान बचाने ही यहाँ आई थी और अपना काम कर के अंतर-ध्यान हो गई।”

“मुझे तो उसके लिए बहुत बुरा लग रहा है। कितनी अच्छी लड़की थी वो? लगता ही नहीं था कि वो हमारे घर में मेहमान थी, मुझे तो हमेशा अपनी बेटी की तरह ही लगी।’ कहते हुए महेश की माँ रो पड़ी।

“मैं मंदिर जा कर पंडित जी से मिलता हूँ। और उन्हें ये घटना बता कर शादी की अगली तारीख निकलवाता हूँ। तुम लोगों के दोस्त भी वहां तुम्हारी आज की शादी के लिए पहुँचते होंगे। उन्हें भी हालात से अवगत कराता हूँ।” इतना कह कर महेश के पापा वहां से उठे और कमरे से बाहर निकल गए।

“तुम ने पुलिस को अपना पूरा बयान दे दिया?”

“हाँ।” ज्योति ने जवाब दिया।

एक घंटे बाद सब इंस्पेक्टर विल्सन हॉस्पिटल पहुंचा। उसके चेहरे पर परेशानी के बादल थे।

“समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा कैसे हो सकता है?” वो परेशान सा बोला।

“अब क्या हुआ ऑफिसर?” महेश ने चौंकते हुए पूछा।

“उधर लगातार तलाश के बाद भी झील में आभा का पता नहीं चल रहा है। अगर आभा झील में कहीं भी, किसी भी हालत में होती तो अब तक हमें जिन्दा या मुर्दा मिल जाती। उधर हवालात में भी एक कांड हो गया है। रात को आप के घर से हम ने जिस बूढ़े को गिरफ्तार किया था, वो भी आश्चर्यजनक रूप से हवालात से गायब हो गया।”

महेश समझ नहीं पा रहा था कि विल्सन किस बूढ़े की बात कर रहा था, जिसे उसने रात को गिरफ्तार किया था। ज्योति ने संक्षेप में महेश को सारी घटना बताई।

“मतलब वो हवालात से भाग निकला?” महेश ने पूछा।

“नहीं, मैंने ऐसा नहीं कहा। मैंने कहा कि वो आश्चर्यजनक रूप से हवालात से गायब हो गया।”

“मतलब?” महेश अभी भी नहीं समझा था।

“करण की लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के बाद मैं पुलिस स्टेशन पहुंचा। वहां मौजूद सभी पुलिसकर्मी घबराये हुए थे। फिर उन्होंने घटना की पूरी जानकारी मुझे दी। हवलदार शंकर ने मुझे बताया कि जब सुबह वो चाय ले कर उस कैदी के पास पहुंचा तो उस कैदी के सिर पर एक घाव था, जो कैदी को भी नहीं पता कि कैसे हुआ। फिर जब वो चाय लेने के लिए खड़ा होने ही वाला था, उसने अचानक अपने सिर को थामा और उसका शरीर हवालात से ऐसे गायब हो गया जैसे वो वहां कभी था ही नहीं। पीछे रह गई तो सिर्फ उसकी खून में डूबी रुमाल।”

ज्योति के होठों पर एक रहस्य भरी मुस्कान आई, जो उसने सब से छिपा ली थी। वो अच्छी तरह से समझ गई थी कि क्या और कैसे हुआ था। ज्योति को याद आया अलार्म घड़ी का वार, जो उसने करण के सिर पर किया था। बूढ़ा करण, क्यों कि जवान करण का ही बुढ़ापा था, इसलिए उसके माथे पर भी चोट अपने आप ही लग गई थी। जवान करण क्यों कि गोली खा कर मर चुका था, इसलिए अगर वो जिन्दा ही नहीं रहा, तो बूढ़ा कैसे हुआ होगा। इसीलिए उसका शरीर हवा में गायब हो गया था।

“कहीं ऐसा तो नहीं ऑफिसर कि वो हवालात से भाग गया हो और पुलिस स्टेशन के कर्मचारी अपनी लापरवाही छिपाने के लिए झूठ बोल रहे हों कि वो गायब हो गया था।” महेश ने सवाल किया।

“नहीं वे लोग झूठ नहीं बोल रहे है। हवालात की चाबी रात से ही मेरे पास थी। और ताला बराबर बंद था। उसके भाग जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। पर साथ ही

साथ ऐसा कैसे हो सकता है कि एक जिन्दा इंसान अचानक हवा में गायब हो जाये।" विल्सन बोला।

"हम लोगों ने उसके ऊपर अभी तक कोई केस रजिस्टर नहीं किया है।" विल्सन ज्योति की तरफ देख कर बोला, "अगर आप लोग रात वाली घटना को नज़रअंदाज़ कर देते हैं और चुप रहते हैं, तो कई पुलिस वाले सस्पेंड होने से बच जायेंगे। वैसे मेरी तरफ से कोई दबाव नहीं है।"

"कौन सी रात वाली घटना ऑफिसर? क्या हुआ था रात को हमारे घर? हमें तो इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। किस घटना की बात कर रहे हैं आप?" ज्योति मुस्कुराते हुए बोली।

ज्योति की बात सुन कर सभी के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। विल्सन वहां थोड़ी देर ठहरने के बाद चला गया।

ज्योति ने विस्तार से महेश को बताया जो उसके साथ बीती थी। तब तक दोपहर के करीब बारह बज चुके थे। तभी महेश के पिता जी ने हॉस्पिटल के कमरे में कदम रखा।

"मेरी समझ में ये नहीं आ रहा है कि तुम तो पानी से इतना डरती हो, तुम्हें तो तैरना भी नहीं आता, फिर तुम एक बार पानी की ऊपरी सतह तक कैसे पहुँच गई?"

"बेटा, जब जान पर बन आती है ना, तो सब कुछ हो जाता है।" ज्योति कुछ कहने के पहले ही महेश के पिताजी ने कहा।

उनकी बात पर सभी का मिला जुला ठहाका गूंजा।

"मेरी पंडित जी से बात हो गई है। जब मैं मंदिर पहुंचा तो तुम दोनों के सभी दोस्त वहां पहले से मौजूद थे। तुम्हारे कॉलेज के कुछ प्रोफ़ेसर भी वहां थे और सब हमारा ही इंतज़ार कर रहे थे। मैंने सब को बताया कि हमारे साथ क्या हुआ है। सब चिंतित थे, मगर ज्योति सही सलामत है, ये जान कर सभी खुश थे। पंडित जी ने शादी का मुहूर्त 03 जून का निकाला है। शाम को तुम लोगों के सभी दोस्त तुम से मिलने के लिए यहाँ आएँगे।" महेश के पिता जी ने बताया।

"तुम हॉस्पिटल में ही लंच करो, मैं मम्मी पापा को लंच के लिए बाहर ले जाता हूँ।" महेश बोला।

लंच के दौरान महेश की मम्मी ने बार बार आभा को याद किया।

03 जून 1961 को महेश और ज्योति की शादी बहुत ही सादगी से, जैसे वो चाहते थे, मंदिर में संपन्न हुई। शादी के दौरान सभी लोग आभा को बहुत याद कर रहे थे। आभा को सब से ज्यादा याद किया महेश की माँ और डॉक्टर ब्रह्मा ने।

“वो इतनी अच्छी लड़की थी कि बहुत ही कम समय में मुझे उस लगाव हो गया था। हर काम वो बड़ी समझदारी से करती थी। ऐसा लगता ही नहीं था कि वो नौकरी कर रही थी। उसने हर काम अपनी ज़िम्मेदारी समझ कर किया। मुझे उस जैसी सेक्रेटरी अब कहाँ मिलेगी।”

महेश के पिताजी ने शादी बाद बंधन रेस्टोरेंट में सभी को दावत दी।

=====

उपसंहार

पचास साल बाद, वो शुक्रवार, 03 जून 2011 की सुबह थी। महेश और ज्योति का घर वैसा ही था, जैसा पचास साल पहले था। अपने बचपन की यादों को हमेशा ताज़ा रखने के लिए उन्होंने घरों में कोई बदलाव नहीं किया था।

मगर 2011 में दोनों घरों के बीच में कोई दीवार नहीं थी। दोनों घरों के बीच की जगह पर एक आधुनिक दो मंजिला बँगला था। दोनों घरों के पीछे का संयुक्त लॉन अब एक बड़े हरे भरे बगीचे का रूप ले चुका था। वहां कई तरीके के फूल लहलहा रहे थे और एक तरफ कई तरह की सब्जियों के पौधे थे। महेश और ज्योति, जो अब लगभग 77 साल के हो चुके थे, अब भी दोनों मिल कर बगीचे की देखभाल करते थे।

बगीचे में एक कुर्सी पर बैठी हुई ज्योति फूलों बड़े प्यार से निहार रही थी। उसके बाल पूरे सफ़ेद हो चुके थे, पर वो अब भी काफी खूबसूरत लग रही थी। उसकी नाक पर एक खूबसूरत चश्मा अटका हुआ था। अपनी उम्र के हिसाब से उसकी सेहत बहुत अच्छी कही जा सकती थी।

तभी बंगले का पिछला दरवाज़ा खोल कर महेश ने बगीचे में कदम रखा। महेश की सेहत भी बहुत अच्छी थी, पर बाल तो उसके भी सफ़ेद हो चुके थे। पहले के मुकाबले उसका वजन थोड़ा सा बढ़ गया था, पर उसे मोटा तो हरगिज भी नहीं कहा जा सकता था।

महेश भी ज्योति के पास रखी दूसरी कुर्सी पर बैठ गया। महेश ने हाथ बढ़ा कर ज्योति का हाथ पकड़ा और बोला,

“कब हमारी शादी को पचास साल पूरे हो गए, पता ही नहीं चला।”

“हाँ।” ज्योति ने कहा और मुस्कराई। उसकी नजर बरबस ही उस गैरेज की तरफ उठ गई जहाँ टाइम मशीन थी। वो गैरेज अब बाग़वानी का सामान, बीज और औजार रखने के काम आता था।

“इन पचास सालों में मैं कभी भी उस लड़की को नहीं भुला पाया, जिसको पुलिस नहीं ढूंढ पाई। ना जिन्दा, ना मुर्दा।”

“आभा की बात कर रहे हो?”

“हाँ। उसकी सूरत तुम से कितनी मिलती थी। कैसे कोई ऐसे गायब हो सकता है, ये मेरी समझ में आज तक नहीं आया।”

“उसकी मर्जी के आगे किसकी चलती है?” ज्योति ने आसमान की तरफ हाथ उठा कर कहा। “याद तो मुझे भी उसकी बहुत आती है। वो हमेशा खुद को मेरी बहन और तुम्हारी साली कहती थी।”

“दादा जी… दादी जी…. “ उनके पीछे से एक छोटी लड़की की आवाज़ आई।

दोनों पलट कर देखा तो पीछे उनकी नौ साल की पोती करुणा खड़ी थी। महेश को याद आया कि उस उम्र में ज्योति भी बिलकुल वैसी ही दिखती थी।

“अरे मेरा बच्चा।” महेश ने उसे गले लगा लिया। महेश की पकड़ से वो छूटी तो ज्योति के गले लग गई।

“दादा जी… , दादी जी… .” तुरंत ही दूसरी मीठी सी आवाज़ आई।

वो उनका सात साल का पोता चिन्मय था। चिन्मय भी अपनी अपनी बड़ी बहन की तरह महेश और ज्योति से लिपट गया। तभी चिन्मय और करुणा की मम्मी, उनकी बहू चारुलता वहां आई और अपने सास ससुर के पैर छूते हुए बोली,

“शादी की पचासवीं साल गिरह मुबारक हो मम्मी पापा।”

दोनों ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।

“अभी अभी रवीना दीदी का फोन आया था। दीदी और जीजा जी बच्चों के साथ दोपहर के खाने तक यहाँ पहुँच जायेंगे।” चारुलता बोली। वो महेश और ज्योति की लड़की रवीना, उसके पति राजेश और उनके आठ साल के दो जुड़वाँ लड़कों राम और श्याम की बात कर रही थी।

“अरे, ये तो बड़ी अच्छी बात है। दिसंबर के बाद पूरा परिवार फिर से एक साथ होगा।” ज्योति बोली।

“रोशन कहाँ है? उठा या नहीं अभी तक?” महेश ने पूछा। रोशन उनका पैंतालीस वर्षीय बेटा था।

“उठ गए हैं पिता जी। नहाने गए हैं। आज बच्चों ने अपनी स्कूल और उन्होंने अपनी ऑफ़िस से छुट्टी ले रखी है।” बहू चारुलता ने मुस्कुराते हुए बताया।

“आप की शादी की साल गिरह के उपलक्ष में शाम को डिनर के लिए सब बाहर चलें पिताजी?” चारुलता ने पूछा।

“हाँ, हाँ। क्यों नहीं।”

“वहीँ चलें? आप की पसंदीदा जगह, बंधन रेस्टोरेंट?”

“बिलकुल, हम दोनों को ही वो जगह बहुत पसंद है।” ज्योति ने जवाब दिया।

शाम को डिनर पर जाने से पहले, महेश ने ज्योति के साथ बंगले के बाहर कदम रखा और वे दोनों साथ साथ टहलते हुए पास के गार्डन की तरफ बढे। दो तीन घर छोड़ कर, एक घर के बाहर दो आदमी, जिनकी उम्र करीब पचास पचपन साल की रही होगी, आपस में बातें कर रहे थे। महेश और ज्योति को अपने सामने से गुजर जाने के बाद, उनमे से एक बोला,

“मैंने हमेशा, अपने बचपन से इन अंकल और आंटी को शाम के समय साथ साथ गार्डन में जाते देखा है। कितना प्यार है दोनों के बीच में।”

“बेटा, शादी से पहले मैंने तुम्हारी आंटी से वायदा किया था कि शाम को इसी तरह इसे हमेशा गार्डन घुमाने ले जाऊंगा।” महेश ने पलट कर कहा। उसकी बात सुन कर दोनों आदमी ही नहीं, ज्योति के होठों पर भी मुस्कराहट आ गई।

=====